॥ श्री हरिः ॥

स्रनामस्तोत्रम्

ाथीयविवृत्तिसहितम्

विवृत्तिकारः

कर्मकाण्डरत्न-श्रीकेदारनाथजैतली

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

केदारनाथीयविवृत्तिसहितम्

विवृत्तिकारः

कर्मकाण्डरत्न-श्रीकेदारनाथजैतली

प्रकाशक :

देवेन्द्रनाथ जैतली

वाराणसी

प्रकाशक–

श्रीदेवेन्द्रनाथ जैतली

के०, २३।७९ मङ्गलागौरी, वाराणसी

मूल्य–१२ रुपये मात्र

प्रथमावृत्तिः

संवत् २०३४

प्राप्तिस्थान–

(१) कर्मकाण्डरत्न श्रीकेदारनाथ जैतली

के० २३।७९, मङ्गलागौरी, वाराणसी

(२) श्रीशम्भुनाथ जैतली काशीवाले

कटरादूलो, अमृतसर।

मुद्रक :

ज्योतिष प्रकाश प्रेस,

कालभैरव मार्ग, वाराणसी–१

पूज्यपाद परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्य
अनन्तश्रीविभूषित स्वामी हरिहरानन्दसरस्वती

करपात्रीजी महाराज,

जिनकी अनुकम्पा के फलस्वरूप दिव्य
विष्णुसहस्रनामस्तोत्र की यह टीका
प्रस्तुत हो सकी,

को

सविनय सादर सश्रद्ध

समर्पित

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये
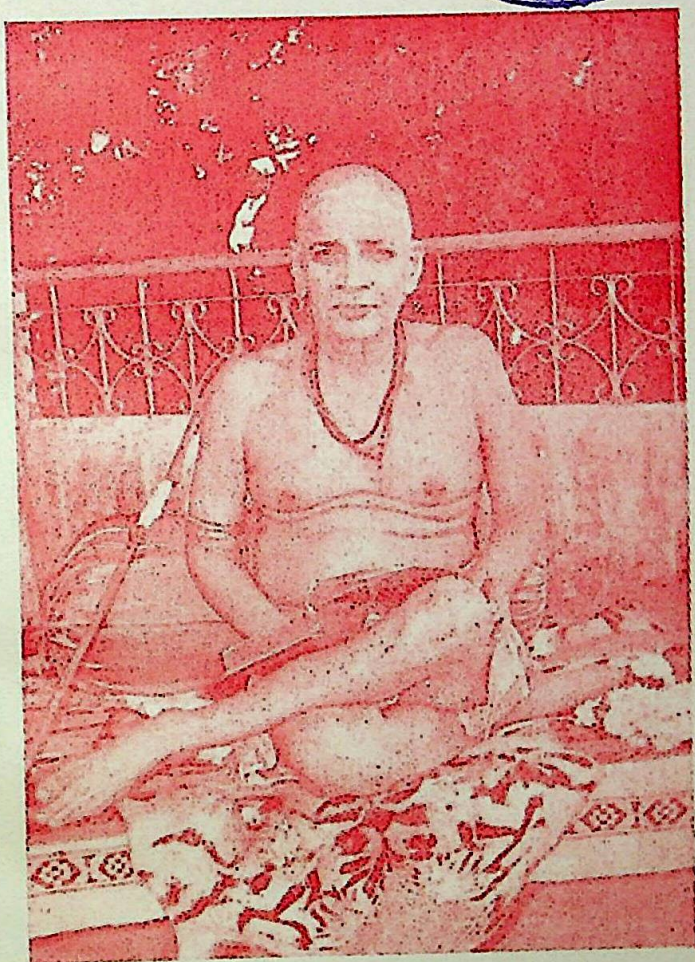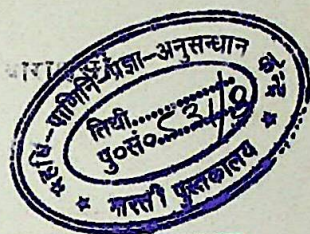
पू० पा० अनन्तश्रीविभूषित स्वामीकरपात्रीजी महाराज

डॉ० गोपालचन्द्र मिश्र जी
वेदविभागाध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी
द्वारा प्रदत्त

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

आत्म-निवेदन

पूर्वजन्म के पुण्यपुञ्ज से मुझे महाभारत के अध्ययन एवं मनन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनुशासन पर्व में श्रीविष्णुसहस्रनाम की नीलकण्ठी टीका देखी तो प्रभुप्रेरणा से मन में यह सङ्कल्प उदित हुआ कि नीलकण्ठी टीका के अनुसार विष्णुसहस्रनाम की टीका लिखी जाय। यद्यपि विष्णुसहस्र नाम की अनेक टीकाएँ हैं जिनमें श्रीजगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्यजी की टीका तो अनुपम है ही, पर उसे सर्वसाधारणजन समझ नहीं पाते। लोकमङ्गल तथा सर्वसाधारण की हितदृष्टि से विष्णुसहस्रनाम की केदारनाथीय टीका प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। सर्वसाधारण लोग इस दिव्य विष्णुसहस्रनाम का रहस्य समझें और ऐहलौकिक तथा पारलौकिक सुख प्राप्त करें, यही इस टीका के प्रणयन का उद्देश्य है। ये सहस्र नाम सर्वकल्याणप्रद हैं। इनका अर्थ समझकर पाठ करना विशेष फलप्रद है। भगवान् के एक नाम में पापनाश करने की असीम शक्ति है। ब्रह्माण्डपुराण उत्तरखण्ड ३ अध्याय १६ में इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है—"अत्रैकनाम्नो या शक्तिः पातकानां निवर्तने। तन्निवर्त्यमघं कर्तुं नालं लोकाश्चतुर्दश॥" आशय यह है कि भगवान् के एकनाम में पापनाश करने की जितनी शक्ति है उतने पाप प्राणी कर ही नहीं सकते। किसी भी स्तोत्र में दिव्य शब्द का निर्देश नहीं है, पर विष्णुसहस्रनाम में दिव्य शब्द का स्पष्ट निर्देश है। निश्चय ही इस दिव्य स्तोत्र का जिस किसी कामना और भावना से जो पाठ करेगा, उसकी सब मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। कहा है—

मन्त्रे तीर्थे द्विजे दैवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥

इस विष्णुसहस्रनाम भाष्य के प्रकाशन में जिन विद्वानों तथा सज्जनों ने तन, मन, धन से सहायता की है उन सभी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ पं० लालबिहारीजी मिश्र शास्त्री, पं० शेषराजजी शास्त्री, पं० श्रीकृष्ण पन्तजी शास्त्री, डाक्टर पं० जनार्दन शास्त्री रटाटे, पं० कोमल शास्त्री व्याकरणाचार्य आदि का मैं विशेष रूप से आभारी हूं, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस ग्रन्थ के प्रणयन एवं प्रकाशन में हार्दिक सहयोग प्रदान किया है। मैं ज्योतिष प्रकाश प्रेस के संचालक तथा कार्यकर्ताओं का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इसके मुद्रण में तत्परता से सहयोग दिया। अनवधानता वश इसमें जो त्रुटियाँ रह

गई हैं उन्हें विद्वान् सुधार कर पाठ करने की कृपा करें, ऐसी मेरी करबद्ध प्रार्थना है।

"गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ।।"

रथयात्रा २ या, सं० २०३४ वि०
के०, २३।७९ मङ्गलागौरी
वाराणसी—१

विद्वज्जनानुरागी
केदारनाथ जैतली

विशेष सूचना—पृष्ठ १०८, नाम संख्या ५७४ में 'त्रिसामा' (त्रिसामन्) है। के आगे का अंश, जो छूट गया था, उसको पाठक सम्मिलित कर लेने की कृपा करें—

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कृष्णकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृष्णकर्मा इस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृष्णकर्मा सामवेद के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।४४।१४ में उल्लिखित है।
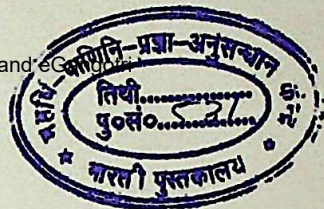
ग्रन्थकार कर्मकाण्डरत्न पं० श्रीकेदारनाथ जैतली

सम्मतियाँ

जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य गोवर्द्धनपीठाधीश्वर निरञ्जनदेव तीर्थ महाराज की सम्मति

स्वस्ति श्रीजैतलीजी, शुभाशीः। आपकी भेजी टीका देखी, अच्छी है। आशीर्वाद देने जैसी शक्ति का संचय तो अभी हुआ नहीं। भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वे आपको इस पवित्र कार्य में सफलता प्रदान करें।

श्रीनिरञ्जन—ज० गु०·गो० म० पु०

भाद्रपद शु० ९ सं० २०३२ पटना से

❀ ❀ ❀

अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज की सम्मति

श्रीहरिः

विष्णुसहस्रनाम पण्डित केदारनाथ जैतली के पुण्य सत्प्रयत्न के फलस्वरूप यह दिव्य ग्रन्थरत्न पाठकों को सुलभ हुआ है। इसमें प्रसिद्ध श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र के एक एक विष्णु के नामों का लोकोत्तर महत्त्व वर्णन किया गया है। किस मन्त्र से किन किन ऋषियों ने किस परिस्थिति में किस नाम का जप करके किस प्रकार सिद्धि प्राप्त की है इत्यादि विषयों का सम्यक् वर्णन है। ग्रन्थ परम उपादेय है, अवश्य पढ़ना चाहिये।

करपात्री स्वामी

सं० २०३२ भाद्रपद शुक्ल-११ भृगुवार।

श्रीगुरुः शरणम्

पण्डितराजश्रीराजेश्वरशास्त्रिद्राविडशास्त्ररत्नाकर-पद्मभूषणमहोदयानां सम्मतिः

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रे पठितानि नामानि "यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मभिः। ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्याम्यशेषतः।" इत्युक्तत्वात्पृथक्-पृथङ्मन्त्ररूपाणि ऋषिभिः समुपासितानीति शेषः नीलकण्ठीयविष्णुसहस्रनाम-टीकायां तादृशप्रमाणवचनोद्धरणेन स्फुटीकृत इति सर्वे विजानन्त्येव। वैदिक-विद्वत्प्रवरैः श्रीकेदारनाथजैतलीमहोदयैः तत्रत्यप्रमाणवचनोपोद्बलकवेदभाग-प्रदर्शनेन स्वकृतटीकायां तानि समुपबृंहितानि। अतः इयं टीका अभिनन्दनार्हे-त्यस्माकं मतम्।

श्रीराजेश्वरशास्त्रीद्राविडः

के०, २०।१५४ राजमन्दिर

वाराणसी।

दि० १०-९-७५

श्री पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्रजी की सम्मति

श्रीभगवन्नाममन्त्र

महात्मा तुलसीदासजी ने नाममाहात्म्य का उल्लेख करते हुए कलियुग में नाम को ही एकमात्र साधन बताया है—रामनाम अवलंबन एकू। साथ ही नाम को मन्त्र भी कहा—

मन्त्रमहामनि विषयव्याल के। मेटत कठिन कुअङ्क भाल के॥

उन्होने नाम को उपमेय और मन्त्र को यहाँ उपमान माना है। नाम मन्त्र ही है और अमिट भाग्यलिपि को मिटाने में समर्थ है। मन्त्र की विशेषता यह बताई गई है कि जप करने से जापक का त्राण होता है। मन्त्र में छन्द होता है, उसका प्रयोक्ता ऋषि होता है और किस बाधा से त्राण या किस मनोरथ-लाभ के लिए विनियोग है उसका सङ्कल्प में कथन करना पड़ता है। तुलसीदास ने नाम को मन्त्र काव्यात्मकपद्धति पर ही नहीं कह दिया है प्रत्युत यह परंपरा में अनुभूत, प्रयुक्त और प्रचलित स्थिति का आख्यान है, इसका पक्का प्रमाण श्रीयुत पं० केदारनाथजी जैतली के इस प्रयास से मिल जाता है। नाम मन्त्र है। अर्थात् दोनों में उपमेय-उपमान-भाव है। सामान्यतया यही धारणा प्रवाह में रही है। श्रीविष्णुसहस्रनाम के प्रत्येक नाम का मन्त्ररूप में प्रयोग किया गया है और प्रत्येक नाम के मन्त्र रूप के साथ उसके ऋषि और विनियोग का विवरण गहरे अनुसंधानपूर्वक देकर इन्होने भक्तों का परम उपकार किया है। मन्त्र का छन्द होता है, देवता होता है, ऋषि होता है और उसका किसी प्रयोजन के लिए विनियोग होता है। यहां छन्द और देवता सर्वत्र एक ही हैं। ऋषि और विनियोग पृथक् पृथक् हैं। आशा है, भक्तजन इस परम कल्याणकारी रचना से यथेच्छ लाभ उठाएँगे। इस कार्य के लिए श्रीजैतलीजी धार्मिकक्षेत्र में परम धन्यवादार्ह हैं।

रथयात्रा २ या
सं० २-३४ वैक्रम,

विश्वनाथप्रसाद मिश्र
वाणी वितान भवन
ब्रह्मनाल-वाराणसी
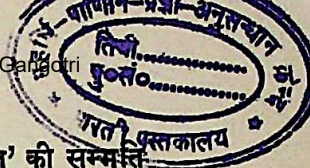
श्रीलक्ष्मीशङ्करजी व्यास, सम्पादक, दैनिक 'आज' की सम्मति

श्रीविष्णुसहस्रनाम की इस टीका में सहस्रनामस्तोत्र के एक-एक विष्णु के नामों का महत्त्व वर्णन किया है। किस मन्त्र से किस परिस्थिति में सिद्धि प्राप्त हो सकती है, इसका भी इसमें स्पष्ट उल्लेख किया गया है। किस ऋषि ने किस मन्त्र को जपा और कैसी सिद्धि प्राप्त की, इसका सप्रमाण विवरण एवं व्याख्या विष्णुसहस्रनाम की इस अभिनव टीका की विशेषता है। नीलकण्ठी टीका के आधार पर इसकी रचना करते हुए इसमें अनेकानेक विशेषताओं, माहात्म्यवर्णन एवं अद्भुत सिद्धि प्रदाता मन्त्रों के महत्त्व को सरल ढंग से स्पष्ट किया गया है। विष्णुसहस्रनाम एक प्रकार से वेदों का नवनीत है। किस वेद में किस मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने विष्णु की उपासना की है, इसका अनुसंधान अभिनन्दनीय है। कलियुग में नामजप का ही सर्वोपरि महत्त्व है। इस दृष्टि से इस ग्रन्थ का असाधारण महत्त्व है। इसलिए अनन्त श्रीविभूषित स्वामी करपात्रीजी महाराज ने इसे दिव्यग्रन्थरत्न की संज्ञा देते हुए इसकी रचना की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है और इसे परम उपादेय माना है। पण्डितराज राजेश्वरशास्त्री द्राविड़जी ने वैदिक विद्वत्प्रवर पण्डित केदारनाथजी जैतली महोदय की इस विष्णुसहस्रनामटीका को अभिनन्दनीय माना है। अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्रीजी महाराज तथा पण्डितराज श्रीराजेश्वरशास्त्री द्राविड़जी की ग्रन्थविषयक सम्मतियों से इस ग्रन्थ के असाधारण महत्त्व, लोकमङ्गलकारी और इसके सिद्धिप्रदायकस्वरूप का प्रामाणिक परिचय प्राप्त हो जाता है! श्रीगोवर्द्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी ने इस टीका की प्रशंसा करते हुए इसके शीघ्र प्रकाशन कार्य की कामना की है।

ग्रन्थकार श्री पं० केदारनाथजी जैतली का वंश परिचय—पञ्जाब अमृतसर निवासी सारस्वत पञ्चज्ञातीय जैतिलीवंश में राजमान्य विद्वत्प्रवर श्रीहीरानन्दजी के वंशज पं० हरनाथजी के पुत्र पं० श्रीतीर्थनाथजी काशी आये। वे भगवती के अनन्यभक्त थे। ५५ वर्ष श्री संकटाजी की आराधना कर काशी में ही श्रीशङ्करजी के चरणों में लीन हो गये। उनके पुत्र श्री पं० केदारनाथजी जैतिली हैं, जो वेद, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, पुराण एवं मन्त्रशास्त्र का अध्ययन कर वर्तमान समय में भगवती के भजन में लीन रहते हैं। उन्होंने भजन के प्रभाव से ही यह दिव्य विष्णुसहस्रनाम की केदारनाथीय टीका लिखकर पूर्ण की।

—निवेदक श्रीलक्ष्मीशंकर व्यास

भूमिका

नामोपासना का आदि स्रोत

'विष्णुसहस्रनामस्तोत्र' ताप-तप्त प्राणी की शान्ति के लिए भगवान् व्यास का अतीव सदय अवदान है। इसकी महत्ता वर्णनातीत है। नामोपासना का आदि स्रोत वेद हैं। ऋक्संहिता की ऋचा है—

"तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद
ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन।
आस्य जानन्तो नाम चिद्विवक्तन
महस्ते विष्णो सुमतिं यजामहे॥"
(ऋग्वेद० १।१५६।३)

अर्थात् (स्तोतारः) हे स्तोता गणो, आप (तमु उ) उन्हीं विष्णु को (यथा विद) ठीक-ठीक जानने का प्रयास कीजिये। जो (पूर्व्यम्) अनादि सिद्ध हैं तथा (ऋतस्य गर्भम्) यज्ञरूप से अवतीर्ण होते हैं। जैसे-जैसे उनके महत्त्व को जानते जाइये वैसे-वैसे (जनुषा पिपर्तन) स्तोत्र आदि से उन्हें प्रसन्न करते जाइये। (अस्य नाम) विष्णु भगवान् के नाम को (जानन्तः) पुरुषार्थप्रद जानकर (आविवक्तन) अच्छी तरह से संकीर्तन करते जाइये। सायण ने आविवक्तन का "समन्तात् सङ्कीर्तयत" अर्थ किया है। आचार्य शङ्करने अपने विष्णुसहस्रनाम के भाष्य में इस ऋचा को उद्धृत किया है और इसे नामोपासनापरक माना है। अन्य आचार्यों ने भी इस अंश में आचार्य शङ्कर का अनुसरण किया है। ऋग्वेद की दूसरी ऋचा से पता चलता है कि भगवान् के नामों का सतत उच्चारण अपेक्षित है—

"मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे।"
(ऋक्० ८।११।४१)

सायण ने 'मनामहे' का 'उच्चार्यामः' अर्थ किया है। श्रुति ने मनुष्य के लिए मर्ता तथा भगवान् के लिए 'अमर्त्यस्य' पद देकर सूचित किया है कि 'मनुष्य का शरीर क्षण-भङ्गुर है, अतः बुद्धिमानी इसी में है कि मरणधर्मा शरीर में अमर के नाम की उपासना कर अमरता प्राप्त की जाय।

"एषा बुद्धिमतां बुद्धिर्मनीषा च मनीषिणाम्।
यत्सत्यमनृतेनेह मर्त्येनाप्नोति मामृतम्"॥ १॥

माण्डूक्य उपनिषद् ने तो अपने समग्र अंशों को ही नाममहिमा के प्रतिपादन से पूर्ण कर रखा है। उसने नाम को परब्रह्म से अभिन्न माना है।

कहा है 'ॐ' यह नामाक्षर ही परब्रह्म है । भूत, भविष्य और वर्तमान के समग्र पदार्थ नाममहिमा के प्रख्यापक हैं—

"ओमित्येतदक्षरमिदꣳसर्वम्, तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद् भविष्यदिति ।" (माण्डूक्य उप० १) । इसके बाद ब्रह्म में चार पादों की कल्पना कर ओम् के अ, उ, म्, इन तीन अक्षरों में ब्रह्म के तीन पादों से एकता बतलाथी है और ओंकार का जो मात्रारहित वाणी का अविषय स्वरूप है उसे पूर्ण ब्रह्म का चौथा पाद माना है । इस तरह माण्डूक्य उपनिषद् का यह अभिप्राय है कि साधक परब्रह्म और उसके नाम को समझकर नामोपासना में लग जाय तो वह परमात्मा को पा जाता है—

"अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एव ओङ्कार आत्मैव संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद" (मां० उप० १२) । मुण्डकोपनिषद् ने नाम को परमात्मा की प्राप्ति का शीघ्रतम साधन माना है । उसने 'नाम' के लिए धनुष का रूपक प्रस्तुत किया है और बतलाया है कि जीव बाण की तरह यदि इस धनुष का आश्रयण करे, तो धनुष जिस तरह बाण को लक्ष्य तक पहुँचा देता है, उसी तरह नाम भी साधक को अपने लक्ष्य तक शीघ्र पहुँचा देता है ।

"प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥"
(मुण्डक उप० २।४) ।

वेद में नामोपासना का महत्त्व कहाँ-कहाँ लिखा है यह ढूँढ़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती । कठोपनिषद् ने स्पष्ट कर दिया है कि-समस्त वेदों में नाम की उपासना भरी पड़ी है—

"सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति ।"
(कठ उप० २।१४) ।

कठोपनिषद् ने साफ शब्दों में बतला दिया है कि नाम ही पर तथा अपर ब्रह्म दोनों है ।

"एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म ह्येतदेवाक्षरं परम् ।" (कठ उप० २।१६)

तथा इस बात का भी स्पष्टीकरण किया है कि नाम समस्त साधनों में श्रेष्ठ है, इससे बढ़कर दूसरा साधन नहीं है—

(क) "एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।" (कठ उप० २।१७)

(ख) "नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते ।" (कलिसन्तरणोपनिषद्) ।

नामोच्चारण से षोडश कलाओं से आवृत जीव के आवरण का नाश हो जाता है और तब जैसे मेघ के न रहने पर सूर्य की किरणें प्रकाशित हो उठती हैं वैसे ही पर ब्रह्म का स्वरूप प्रकाशित हो उठता है—

"इति षोड़शकलस्य जीवस्यावरणविनाशनम् ।
ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघाये रविरश्मिमण्डलीवेति ॥"

(कलिसन्तरणोपनिषद्)

सहस्रनाम का आधार

भगवान् के हजार नामों के पाठ का भी आधार वेद ही कहा है—

"नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे ।"

(ऋक्० ३।३४।३)

विष्णुसहस्रनाम भगवान् के नाम के बाद नाम ही नाम प्रस्तुत करता चला जाता है। वेद ने इस पद्धति को नाम के साथ नाम की उपासना कहा है—

"नाम नाम्ना जोहवीति" (अथर्व. १०।७।३१)

वेद ने स्पष्ट कर दिया है कि वहाँ देवताओं के जितने नाम आये हैं वे सब के सब एक ईश्वर की संज्ञाएँ हैं—

"यो देवानां नामधा एक एव ।" (ऋक् १०।८२।३)

इसी बात को ऋक्संहिता ने दूसरी जगह और स्पष्ट कर दिया है। कहा है कि इन्द्र, वरुण, अग्नि, गरुत्मान्, यम, मातरिश्वा आदि नाम एक तत्त्व के ही वाचक हैं—

"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥"

(ऋक्० १।१६४।४६)

वेद में भिन्न भिन्न स्थलों में भगवान् के अन्य नाम मिलते जाते हैं। जैसे, कलिसन्तरणोपनिषद् ने "हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥" नाम दिये हैं।

प्रस्तुत टीका में विद्वान् टीकाकार ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि विष्णुसहस्रनाम में आये हुए नामों में कौन-सा नाम वेद के किस मन्त्र में आया है।

वेद में भगवान के लिए 'सर्वहुतः' पद प्रयुक्त है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि हम उस अद्वैत तत्त्व को सब नामों से पुकार सकते हैं। 'अन्य नाम' कह कर भी उसे पाया जा सकता है। नाम-विशेष में विशेष शक्ति होती है, यह बात दूसरी है—

"वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।"

(ऋक्० १०।११४।५)।

भगवान् की महिमा अनन्त है। उनके प्रख्यापन के लिए अनन्त नामों का होना भी तो आवश्यक है—

"सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् विष्ठितं तावती वाक्"
(ऋक्० १०।११४।८)

इस तरह हम देखते हैं कि नामोपासना के साथ-साथ विष्णुसहस्रनाम का नामकरण भी शुद्ध वेद पर आश्रित है।

नाम की अद्भुत शक्ति

आचार्यों ने नाम की अद्भुत शक्ति के रहस्य को बुद्धिगम्य कराने के लिए प्रयास किया है। नैष्कर्म्यसिद्धिकार ने एक घटना का सहारा लिया है। रात में बहुत से लोग सो रहे हैं। आपने उनमें से एक को नाम लेकर पुकारा उस समय और लोग तो सोते रहते हैं। परन्तु जिसका नाम लेकर पुकारा जाता है वह उठ बैठता है। ऐसा इसलिए होता है कि नामोच्चारण नामी के हृदय पर सीधा प्रभाव डालता है—

"शयानाः प्रायशो लोके बोध्यमानाः स्वनामभिः।
सहसैव प्रबुध्यन्ते यथैवं प्रत्यगात्मनि ॥"
(नैष्कर्म्यसिद्धि)

आचार्य शङ्कर ने दूसरी घटना का सहारा लिया है। बतलाया है कि जैसे प्रिय नाम लेने से लोग प्रसन्न हो जाते हैं—वैसे भगवान् भी अपने नाम से प्रसन्न हो जाते हैं—

"ओमित्येदक्षरं परमात्मनोऽभिधायकं नेदिष्ठम्।
तस्मिन् हि प्रयुज्यमाने स प्रसीदति प्रियनामग्रहण इव लोकः ॥"
(छा० उप० शा० मा० १।१।१)

सच पूछा जाय तो भगवान् के नाम की शक्ति उन्हीं की तरह अचिन्त्य है। लौकिक नाम और नामी में वह शक्ति नहीं होती है, क्योंकि लौकिक नाम और नामी में भेद-सहिष्णु अभेद होता है। जब कि भगवान् और उनके नाम में वास्तविक-अभेद होता है। अतः लौकिक नाम और नामी से भगवान् और उनके नाम की तुलना करना अनुचित है। वेद के उपरिनिर्दिष्ट प्रमाणों से सिद्ध है कि अग्नि आदि जितने नाम हैं ये सब के सब एकमात्र परमात्मा के वाचक हैं। अग्नि आदि देवता के लिए जो अग्नि शब्द का प्रयोग किया जाता है वह आरोपित है। अतः नामरूप सब आरोपित हैं। यही कारण है कि अग्नि शब्द के उच्चारण से मुख नहीं जलता और रोटी के उच्चारण से पेट नहीं भरता। परन्तु भगवान्, उनके नाम, उनकी लीलाएँ, उनके धाम सब चिन्मय हैं। सब अभिन्न हैं। यही कारण है कि एक ही नाम में पापों के विनाश की उतनी शक्ति होती है, जितने पाप चौदहों भुवनों के निवासी मिलकर भी नहीं कर सकते हैं।

"अत्रैकनाम्नो या शक्तिः पातकानां निवर्तने।
तन्निवर्त्यमघं कर्तुं नालं लोकाश्चतुर्दश ॥"
(ब्रह्माण्डपु० उत्तर खं. ३ अ. १६)

नाम नामी को खींच लाता है

कहा जा चुका है कि समस्त नाम एकमात्र भगवान् के वाचक हैं। और अन्य देवताओं में वे कल्पित हैं। अतः लौकिक नाम भले ही दूरस्थ नामी को खींचकर उपस्थित न कर सके, परन्तु भगवान् का चिन्मय नाम उनको खींच लाता है। भरी सभा में द्रौपदी की लाज जाने को ही थी। एक बलवान् व्यक्ति के लिए असहाय अबला को विवस्त्रा करने में कितनी देर लगती। द्रौपदी ने झट नाम का सहारा लिया। पूरा-पूरा गोविन्द कह भी नहीं पायी थी कि नामी सशरीर वहाँ आ उपस्थित हुआ। इस बार बहुरूपिये ने वस्त्र का रूप धारण कर रखा था। दुःशासन खींचता गया–खींचता गया। कितना खींचता। जिन्दगी भर खींचता रहता फिर भी अनन्त का क्या अन्त होता? प्रिय नाम के उच्चारण से नामी आ धमका था। उसके इशारे से जड़ वर्ग भी विद्रोह कर उठा। आकाश गरज उठा। अनभ्र वज्रपात होने लगा। हवा फुफकार बन बैठी। जल में खलबली मच गयी। पृथ्वी में भयानक गड़गड़ाहट की आवाज होने लगी? भवन डोल उठे। लगा कि पृथ्वी फटी और अत्याचारी उसमें विलीन हो जायेंगे। किन्तु वे समय से चेत गये। द्रौपदी और उसके पतियों की शरण-ग्रहण की। उत्पात शान्त हो गया। हारती हुई द्रौपदी जीत गयी।

यह सब आधे नाम का चमत्कार था। नाम ने द्रौपदी के लिए इतना ही नहीं किया। उसने नामी के हृदय में ऐसी कसक पैदा कर दी। बेचारा नामी अपने को सदा के लिए द्रौपदी का ऋणी मान बैठा! द्रौपद्री की वह करुण पुकार उनके हृदय को सदा शालती ही रहेगी—

"यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम्।
ऋणं प्रवृद्धमेतन्मे हृदयान्नापसर्पति ॥"

नाम का मूल्य नामी भी नहीं चुका सका। नामी ने द्रौपदी की लाज बचायी। उसके पतियों को दासता के बन्धन से मुक्त किया। राजपाट लौटवाया। आकाश-पाताल एक कर दिया गया। पर नाम का ऋण चुक नहीं पाया। धन्य हो नाम!

पाठ के साथ अर्थज्ञान की अपेक्षा

विष्णुसहस्रनाम के पाठ के साथ-साथ यदि उन-उन नामों के अर्थ का भी स्मरण होता रहे तो पाठ में रस मिलने लगता है। मन का भटकना भी

रुक जाता है। उसके बिना पाठ की पूर्णता नहीं होती। योगदर्शन में भगवान् पतञ्जलि ने कहा है—

"तज्जपस्तदर्थभावनम्" (यो० सू० १।२)

ऋक्संहिता में जो "आस्य जानन्तो नामचिद विवक्तन" वाक्य आया है, उसका भी यही अर्थ है कि भगवान् के नाम का अर्थ समझ कर पाठ किया जाय।

प्रत्येक नाम का अर्थ समझ कर पाठ करने से भगवान् के विविध रूपों, लीलाओं और धर्मों का स्मरण होता है। इस तरह के पाठ में 'स्मरण' और ध्यान भी गतार्थ हो जाते हैं।

भगवान् शङ्कर ने कहा है—

"मनसा वा अग्रे सङ्कल्पकात्मकं वाचा व्याहरति", "यद्धि मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति" इति श्रुतिभ्यां स्मरणं ध्यानञ्च नामसंकीर्तनेऽन्तर्भूतम्" (विष्णुसहस्रनामभाष्य १४) एक उदाहरण है। 'शब्दातिगः शब्दसहः' का यदि बिना अर्थ समझे पाठ करते चले जाते हैं, तो हृदय में वह भाव नहीं उठता जो अर्थ समझ कर पाठ करने में उठता है। जब यह समझ में आता है, भगवान् शब्द से अतीत हैं, पर भक्तों के लिए शब्द को सह लेते हैं। तो, हृदय, भगवान् के प्रति कृतज्ञता से दब जाता है।

प्रस्तुत टीका एक आचारनिष्ठ अधिकारी विद्वान् के द्वारा लिखी गयी है। नीलकण्ठी जैसी प्रामाणिक टीका इसका आधार है। किस नाम को किस महापुरुष ने जपा, इसकी भी खोज इसमें की गई है। यह भी प्रयास किया गया है कि विष्णुसहस्रनाम का प्रत्येक नाम वेदों के किस-किस ग्रन्थ में उपन्यस्त है। विनियोग की योजना भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

अन्त में प्रार्थना है कि वर्णाश्रम का पालन एवं नामापराधों का वर्जन करते हुए विधि-विधान से विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

ललिताघाट, वाराणसी — लालबिहारी शास्त्री मिश्र
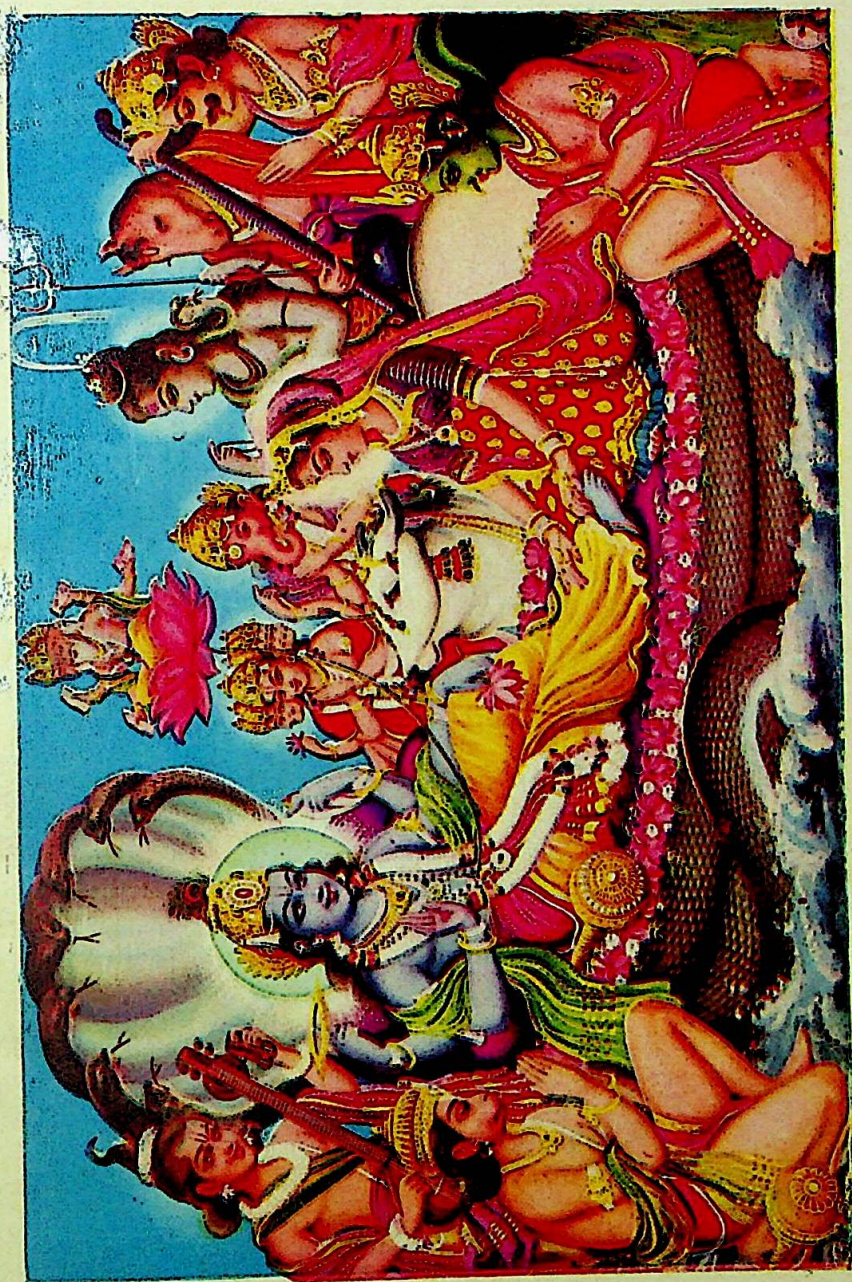
श्रीहरिः

अथ विष्णुसहस्रनामविधिः

ब्रह्मलोके समासीनं सुरासुरगुरुं प्रभुम् ।
अगस्त्यश्च पुलस्त्यश्च दुर्वासारण्यकादयः ॥ १ ॥
एवमादिमुनीन्द्राणां वृन्दमध्ये पितामहम् ।
पप्रच्छ तं मुनिश्रेष्ठो ह्यगस्त्यश्च महात्मवान् ॥ २ ॥

एक समय ब्रह्मलोक में देवता और असुरों के पूजनीय ब्रह्माजी अगस्त्य, पुलस्त्य, दुर्वासा, अरण्यादि मुनिश्रेष्ठों के मध्य में विराजमान थे। उस समय मुनियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी ने ब्रह्माजी से पूछा ॥१,२॥

अगस्त्य उवाच

केनोपायेन देवेश ! महदैश्वर्यसम्पदः ।
शास्त्रज्ञानं कवित्वं च शत्रुनिग्रहणं तथा ॥ ३ ॥
वश्याकर्षणविद्वेषस्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
मारणं परसैन्यस्य स्वसैन्यस्य च रक्षणम् ॥ ४ ॥
एतत्सर्वं सुनिश्चित्य वद मे सुरपूजित ! ॥ ५ ॥

हे देवताओं के पूज्य पितामहजी ! ऐसा कौन सा उपाय है, जिससे महान ऐश्वर्य और सम्पत्ति प्राप्त हो तथा शास्त्रज्ञान, कविता करने की शक्ति, शत्रु का पराजय, वश करना, चित्त का आकर्षण करना, विद्वेषी का स्तम्भन, मन का उच्चाटन, शत्रु की सेना का संहार एवं अपनी सेना की रक्षा हो, यह सब भली भाँति विचार कर हमें बतलाने की कृपा कीजिए ॥ ३-५ ॥

ब्रह्मोवाच

साधु पृष्टं त्वया विप्र वक्ष्यामि सकलं तव ।
पार्वत्यै परमप्रीत्या शम्भुना कथितं पुरा ॥ ६ ॥
कैलाशशिखरे रम्ये पार्वत्या सह संस्थितः ।
सर्वलोकोपकारार्थं प्रोवाच वृषभध्वजः ॥ ७ ॥

तब ब्रह्माजी बोले—हे विप्र, तुमने सुन्दर प्रश्न किया है, मैं सब तुमको बतलाऊँगा। प्राचीन समय में पार्वतीजी पर प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करजी ने यह कहा था ।६। कैलाश के शिखर पर पार्वतीजी के सङ्ग विराजमान वृषभध्वज भगवान् शङ्कर ने सब लोगों के उपकार के लिये कहा—

विष्णोः स्तवो महाभागे ! स्तवराजविधानतः ।
स्तवराजविधानं तदुपर्य्युपरि वर्धते ॥ ८ ॥
महत्तराणि कार्याणि कुरुते यो नरो यदा ।
तदा तस्य प्रकुर्वन्ति विष्णोर्नामसहस्रकम् ॥ ९ ॥

हे महाभागे ! भगवान् विष्णु का जो स्तोत्र है वह स्तवराज है । उसके करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं । उसका फल उत्तरोत्तर वृद्धिगत होता है । मनुष्य जब बड़े बड़े कार्य करे तब उसे विष्णुसहस्रनाम का पाठ अवश्य करना चाहिए ॥ ८,९ ॥

एकावृत्त्यादयः पाठाः सर्वेऽमी सर्वकामदाः ।
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ॥१०॥
नाशुभं प्राप्नुयात् सोऽपि शुभं च परिविन्दति ।
एकावृत्त्या त्रिरावृत्त्या पञ्च सप्त यथाक्रमम् ॥११॥
उपसर्गादिकं कर्म क्षयं याति न संशयः ।

इस पाठ की एक आवृत्ति भी सब कामनाएँ पूर्ण करती है । जो इसको नित्य सुनता है या पढ़ता है उसका अशुभ कभी नहीं होता, वह शुभ फल प्राप्त करता है । इसकी एक आवृत्ति से या तीन आवृत्तियों से या पाँच अथवा सात आवृत्तियों से बड़े बड़े उपसर्ग पीडादि क्षीण हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १०,११ ॥

वारत्रयं प्रजप्येत स्तवराजमनुत्तमम् ॥१२॥
सप्तावृत्त्या च पाठानां फलमेतच्छुभं तथा ।
वारं चाष्टादशं जप्याच्छ्रियमाप्नोति मानवः ॥१३॥

इस सर्वश्रेष्ठ स्तवराज का तीन बार जप करने से तथा सात बार जप करने से शुभ फल होता है, इसके अठारह बार जप करने से मनुष्य श्री को प्राप्त करता है ॥ १२,१३ ॥

व्रणकुष्ठादिकं सर्वं नश्येद् द्वाविंशतिस्तवात् ।
पञ्चविंशतिजाप्येन संग्रामविजयी भवेत् ॥१४॥
धर्मार्थी लभते धर्मं सप्तविंशतिसंख्यया ।
अर्थकामो लभेदर्थमेतत्संख्याविधानतः ॥१५॥

इसके बाईस पाठ करने से व्रण (घाव) या कुष्ठ रोग भी नष्ट हो जाता है, पचीस पाठ करने से संग्राम में विजय प्राप्त होती है, सत्ताईस पाठ करने से

धर्मार्थी के धर्म की वृद्धि होती है। इसी प्रकार धन की इच्छा रखनेवाले को (अर्थ) धन प्राप्त होता है ॥ १४,१५ ॥

शत्रोरुच्चाटने घोरे परसैन्य-प्रभञ्जने।
प्राणान्तिके महोत्पाते कुलनाशे धनक्षये ॥१६॥
शतवारं पठेद् यस्तु शमं याति न संशयः।
राष्ट्रप्राप्तिं धनैश्वर्यं लभते च शतत्रयात् ॥१७॥

किसी शत्रु का उच्चाटन करना हो, या घोरसङ्कट हो, या शत्रु की सेना का संहार करना हो, प्राण-सङ्कट आया हो, महान् उत्पात हो, कुल का नाश दीखता हो या धन का क्षय हो रहा हो तो इस स्तोत्र के सौ पाठ करने से सब शान्त हो जाता है। इसी प्रकार तीन सौ पाठ करने से अपने राष्ट्र की प्राप्ति और धन तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ॥ १६,१७ ॥

विशेषेणैव पुत्रार्थी पौनःपुन्यं दशावधि।
सहस्रं प्रजपेद् यस्तु सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥१८॥
संकटादिककष्टं तु नाशमायाति तत्क्षणात्।
वैरवृद्धौ वैरनाशे सहस्रावर्तकेन च ॥१९॥
राज्यलक्ष्मीमवाप्नोति सहस्रावर्तनान्नरः।
शत्रवश्च पलायन्ते रटन्ते काकवद् दिवि ॥२०॥

विशेषरूप से पुत्र की इच्छा रखनेवाले को दश दश पाठ करने चाहिए। एक सहस्र पाठ करनेवाले की सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं। सभी कष्टों का तत्क्षण नाश हो जाता है। कहीं वैरवृद्धि हो तो उसे शान्त करने के लिए भी एक हजार आवृत्ति करनी चाहिए। ऐसे ही एक सहस्रावृत्ति से राज्य-लक्ष्मी को प्राप्त करता है। सभी शत्रु आकाश में कौओं के समान कांव कांव करते हुए भाग जाते हैं ॥ १८,२० ॥

व्याधिवृद्धिं बन्धनं च शीघ्रं नाशयति ध्रुवम्।
तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके ॥२१॥
यशःप्राप्तेः समारम्भो नित्यं भक्तिसमन्वितः।
इत्यन्तमेवमादीनि सर्वाण्यावर्तयेद् यदि ॥२२॥

किसी व्याधि की वृद्धि हुई हो या बन्धन प्राप्त हुआ हो तो छूट जाता है। इसी प्रकार आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक त्रिविध तापों के निवारण

के लिए अथवा अतिपातक हो जाने पर उसके निवारणार्थं तथा यश: की प्राप्ति के लिए नित्य भक्ति से युक्त हो सम्पूर्ण आवृत्ति नित्य करे तो अवश्य: लाभ होता है ॥ २१,२२ ॥

पुनः पुनरहं वक्ष्ये विश्वासात्फलमुत्तमम् ।
अविश्वासो न कर्तव्यो यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥२३॥

मैं यह बार बार कहता हूँ कि विश्वास से ही फल प्राप्त होता है। अतः यदि सिद्धि की इच्छा हो तो अविश्वास न करे ॥ २३ ॥

अथ प्रयोगान् वक्ष्यामि लोकानां प्रियकाम्यया ।
बिल्वमूलं समाश्रित्य मासं राज्यमवाप्नुयात् ॥२४॥
हुत्वा बिल्वफलैर्मासं मधुरत्रययोगतः ।
राज्यलक्ष्मीमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२५॥

अब इसके प्रयोगों को परोपकार के लिए कहते हैं। बेल के पेड़ के नीचे बैठकर एक मास इसका पाठ करे तो राज्य को प्राप्त करता है और यदि एक मासपर्यन्त मधुरत्रय के साथ बिल्व फल का हवन करे तो राज्यलक्ष्मी प्राप्त करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ २४,२५ ॥

हुत्वा दशांशतो होमं कमलैः क्षीरसंयुतैः ।
धनदेन समां लक्ष्मीं प्राप्नुयादुत्तमां ध्रुवम् ॥२६॥
हुत्वा प्रतिऋचं दिव्यैरुत्पलैर्घृतमिश्रितैः ।
देवराजसमां लक्ष्मीं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥२७॥

पाठ का दशांश दूध से युक्त कमलों से हवन करे तो कुवेर की जैसी उत्तम लक्ष्मी को निश्चित ही प्राप्त करता है। ऐसे ही प्रतिमन्त्र (नाम से) घृतमिश्रित कमल से हवन करे तो निःसन्देह देवराज इन्द्र की लक्ष्मी प्राप्त करता है ॥ २६,२७ ॥

तद्विधिश्च प्रवक्ष्यामि शृणुष्व वरवर्णिनि ।
निमन्त्रयेच्च पूर्वेद्युर्विप्रान् विधिसमन्वितान् ॥२८॥
अलोलुपानृजून् दान्तान् शिष्टान् भक्तिसमन्वितान् ।
शुभलक्षणसंयुक्तान् ब्राह्मणान् परियोजयेत् ॥२९॥

भगवान् शिव कहते हैं—हे सुन्दरि! मैं इसकी विधि कहता हूं, इसको सुनो—पहले दिन ब्राह्मणों को निमन्त्रित करे। वे लोलुप न हों, सरल हों,

इन्द्रियसंयमी हों, शिष्ट तथा भक्तियुक्त, शुभलक्षणों से युक्त तथा विद्यावान् हों, ऐसे ब्राह्मणों को एकत्रित करे ॥ २८,२९ ॥

ज्ञार्केन्दुभृगुजीवे च सुयोगे सुतिथौ तथा ।
कर्के च यमघण्टादिदोषहीने स्थिरोदये ॥३०॥
वज्रकेतुग्रहोत्पाते गुर्वादित्यादिके तथा ।
महागुरौ विपन्ने च सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि ॥३१॥
प्रयोगं न तु कुर्वीत इत्यादावतिदूषणे ।

बुध, रवि, सोम, शुक्र, बृहस्पति वार हों, शुभ योग हो, उत्तम तिथि हो, यमघण्टादि दोषों से रहित स्थिरोदय कर्क लग्न हो, वज्रयोग, केतुपात, ग्रह उत्पात हो गुरु अथवा सूर्य नष्ट हों या किसी श्रेष्ठ पुरुष का नाश हो गया हो या कार्यवस्तु में सन्देह हो तो ये सब दूषण होने पर इसका प्रयोग न करे ॥३०,३१॥

हविष्याशी जपं कुर्यात् कारयेद्वाऽप्यनन्यधीः ॥३२॥
सहस्रत्रितयेनैव सर्वसम्पत्तिमाप्नुयात् ।
कलौ प्राप्ते विशेषेण नान्योपायोऽस्ति कश्चन ॥३३॥

और अनुष्ठान के दिनों में हविष्यान्न का भोजन करे या दूसरे से अनुष्ठान कराये तो भी हविष्यान्न का ही भोजन कराये, इस विधि से तीन सहस्र पाठ होने से सब प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त होती है । विशेष करके कलियुग में और कोई दूसरा उपाय नहीं है ॥ ३२, ३३ ॥

इत्यगस्त्यसंहितायां ब्रह्मागस्त्यसंवादे महाभारतोक्त-
विष्णुसहस्रनामविधानम् ॥

दिव्यविष्णुसहस्रनामशापविमोचनम्

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामशापविमोचनमन्त्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरुद्रानुग्रहशक्तिर्देवता, सुरेशः शरणं शर्मेति बीजम्, अनन्तो हुतभुग्भोक्तेति शक्तिः, सुरेश्वरायेति कीलकं रुद्रशापविमोचने विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः--श्रीमहादेवर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीरुद्रानुग्रहशक्तिदेवतायै नमः हृदये। सुरेशः शरणं शर्मेति बीजाय नमः गुह्ये। अनन्तो हुतभुग्भोक्तेति शक्तये नमः पादयोः। सुरेश्वरायेति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः		अङ्गन्यासः
ॐ क्लीं ह्राँ	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अथ ध्यानम्—तमालश्यामलतनुं पीतकौशेयवाससम्।
वर्णमूर्तिमयं देवं ध्यायेन्नारायणं विभुम्॥

ॐ क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हं सं सुरेश्वराय स्वाहा इति मन्त्रं शतं वा दशवारं वा जप्त्वा किञ्चिज्जलं क्षिप्त्वा प्रार्थयेत्।

अस्य श्रीविष्णोः सहस्रनामस्तव रुद्रशापविमुक्तो भव। सततन्तदनन्तरं सहस्रनामपठनं कुर्यात्। विष्णोः सहस्रनामयोन कृतशापमोचनः। पठेच्छुभानि सर्वाणि तस्य स्युर्निष्फलानि तु॥ इति अगस्तिसंहितायां विष्णोः सहस्रनाम्नां रुद्रशापविमोचनविधिः समाप्तः। शुभमस्तु।

॥ अथ ॥

विष्णुसहस्रनाम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्॥
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे
॥१॥ नमः समस्तभूतानामादिभूताय
भूभृते ॥ अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभ-
विष्णवे ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥
श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः॥
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत
॥३॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमेकं दैवतं
लोके किं वाप्येकं परायणम् । स्तुवन्तः
कं कमर्चन्तःप्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥४॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः॥
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्
॥५॥ भीष्म उवाच ॥ जगत्प्रभुं देवदेव-
मनन्तं पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण

पुरुषः सततोत्थितः ॥६॥ तमेव चार्च-
यन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ॥ ध्या-
यंस्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च
॥७॥ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकम-
हेश्वरम् ॥ लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्व-
दुःखातिगो भवेत् ॥८॥ ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं
लोकानां कीर्तिवर्धनम् ॥ लोकनाथं मह-
द्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥९॥ एष मे
सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ॥ य-
द्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा
॥१०॥ परमं यो महत्तेजः परमं यो मह-
त्तपः ॥ परमं यो महद् ब्रह्म परमं यः
परायणम् ॥११॥ पवित्राणां पवित्रं यो
मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥ दैवतं देवतानां
च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥ यतः
सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ॥
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये
॥१३॥ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य
भूपते विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभ-

यापहम् ॥१४॥ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः॥ ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१५॥ ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः॥ छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥१६॥ विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभुविष्णुं महेश्वरम्। अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥ १७ ॥

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य श्रीभगवान् वेदव्यास ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता। आत्मयोनिः स्वयंजात इति बीजम्। देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः। उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः। शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्। त्रिसामा सामगः सामेति कवचम्। शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्। ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति ध्यानम्। श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे दिव्यविष्णुसहस्रनामपाठे विनियोगः।

ॐ शिरसि वेदव्यास ऋषये नमः। मुखे। अनुष्टुप्छन्दसे नमः। हृदि। श्रीकृष्णः परमात्मेति देवतायै नमः। गुह्ये। अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजाय नमः। पादयोः। देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तये नमः। सर्वाङ्गे। शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकाय नमः करसम्पुटे। मम श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः।

करन्यासः	अङ्गन्यासः
१ ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	७ हृदयाय नमः
२ अमृतांशूद्भवो भानुः तर्जनीभ्यां नमः	८ शरसे स्वाहा
३ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा मध्यमाभ्यां नमः	९ शिखायै वषट्
४ सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः अनामिकाभ्यां नमः	१० कवचाय हुम्
५ आदित्योज्योतिरादित्यः कनिष्ठिकाभ्यां नमः	११ नेत्राभ्यां वौषट्
६ शार्ङ्गधन्वा गदाधरः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	१२ अस्त्राय फट्

श्रीपुरुषोत्तमाराधने सर्वपापक्षयार्थे दिव्यसहस्रनामस्तोत्र-पाठे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥ भूतकृद् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः । अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ २ ॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादि-

र्निधिरव्ययः ॥ संभवो भावनो भर्ता प्र-
भवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥ स्वयंभूः शम्भुरा-
दित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ॥ अनादि-
निधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ॥
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थवि-
रो ध्रुवः ॥६॥ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो
लोहिताक्षः प्रतर्दनः ॥ प्रभूतस्त्रिककु-
ब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥७॥ ईशानः
प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः। हि-
रण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥८॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः
क्रमः ॥ अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृति-
रात्मवान् ॥९॥ सुरेशः शरणं शर्म वि-
श्वरेताः प्रजाभवः ॥ अहः संवत्सरो व्यालः
प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥ अजः सर्वेश्वरः
सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ॥ वृषा-
कपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥
॥ ११ ॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा

संमितः समः ॥ अमोघः पुण्डरीकाक्षो
विश्वकर्मा वृषाकृतिः ॥१२॥ रुद्रो बहुशि-
रा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः । अमृतः
शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥१३॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः॥
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः
॥१४॥ लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः
कृताकृतः ॥ चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्र-
श्चतुर्भुजः ॥१५॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता
सहिष्णुर्जगदादिजः ॥ अनघो विजयो
जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥१६॥ उपेन्द्रो
वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ॥
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो
यमः ॥१७॥ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वी-
रहा माधवो मधुः ॥ अतीन्द्रियो महा-
मायो महोत्साहो महाबलः ॥१८॥ महा-
बुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रि-
धृक् ॥१९॥ महेष्वासो महीभर्ता श्रीनि-

वासः सतां गतिः ॥ अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥२०॥ मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥२१॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ॥ अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥२२॥ गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ॥ निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ ॥२३॥ अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ॥ सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२४॥ आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ॥ अहः संवर्त्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५॥ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ॥ सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥२६॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ॥ सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ २७ ॥ वृषाही

वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ॥ वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥ सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ॥ नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥२९॥ ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ॥ ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥ अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ॥ औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥३१॥ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः॥कामहा कामकृत् कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥३२॥ युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः । अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥३३॥ इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ॥ क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥ अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ॥ अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥३५॥स्कन्दः

स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ॥
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ॥ अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥ पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ॥ महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ३८ ॥ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ॥ सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ॥३९॥ विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ॥ महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ४० ॥ उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ॥ करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ।४१। व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ॥ परर्द्धिः परमः स्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥४२॥ रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः ॥ वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥४३॥ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः

प्राणदः प्रणवः पृथुः॥ हिरण्यगर्भः शत्रु-
घ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ४४ ॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः॥
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वद-
क्षिणः ॥४५॥ विस्तार स्थावरः स्थाणुः
प्रमाणं बीजमव्ययम् ॥ अर्थोऽनर्थो
महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥४६॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्मयूपो महा-
मखः ॥ नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः
समीहनः ॥४७॥ यज्ञ इज्यो महेज्यश्च
क्रतुः सत्रं सतां गतिः ॥ सर्वदर्शी विमु-
क्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥४८॥ सुव्रतः
सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ॥
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः
॥४९॥ स्वापनः स्ववशो व्यापी नैका-
त्मा नैककर्मकृत् ॥ वत्सरो वत्सलो वत्सी
रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥ धर्मगुब्धर्म-
कृद्धर्मी सदसत् क्षरमक्षरम् ॥ अविज्ञाता
सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥गभ-

स्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद् गुरुः
॥५२॥ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः
पुरातनः ॥ शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो
भूरिदक्षिणः ॥५३॥ सोमपोऽमृतपः सोमः
पुरुजित् पुरुसत्तमः ॥ विनयो जयःसत्यस-
न्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥५४॥ जीवो
विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः॥
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽ-
न्तकः ॥ ५५ ॥ अजो महार्हः स्वाभा-
व्यो जितामित्रः प्रमोदनः ॥ आनन्दो
नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः
॥ ५६ ॥ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो
मेदिनीपतिः ॥ त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो म-
हाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥५७॥ महावराहो
गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ॥ गुह्यो
गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्ष-
णोऽच्युतः ॥ वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्करा-

क्षो महामनाः ॥ ५९ ॥ भगवान् भगहा-
नन्दी वनमाली हलायुधः ॥ आदित्यो ज्यो-
तिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥६०॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ॥
दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयो-
निजः ॥६१॥ त्रिसामा सामगः साम
निर्वाणं भेषजं भिषक् ॥ संन्यासकृच्छमः
शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥६२॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवले-
शयः ॥ गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो
वृषप्रियः ॥६३॥ अनिवर्ती निवृत्तात्मा
संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ॥ श्रीवत्सवक्षाः
श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥६४॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्री-
विभावनः ॥ श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँ-
ल्लोकत्रयाश्रयः ॥६५॥ स्वक्षः स्वङ्गः श-
तानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ॥ विजि-
तात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः
॥६६॥ उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शा-

श्वतः स्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्वि-
शोकः शोकनाशनः ॥६७॥ अर्चिष्मा-
नर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः॥
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्र-
मः ॥६८॥ कालनेमिनिहा वीरः शौरिः
शूरजनेश्वरः ॥ त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः
केशवः केशिहा हरिः॥६९॥कामदेवः का-
मपालः कामी कान्तः कृतागमः॥ अनि-
र्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः॥७०॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः॥
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मण-
प्रियः ॥७१॥ महाक्रमो महाकर्मा महा-
तेजा महोरगः ॥ महाक्रतुर्महायज्वा
महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥ स्तव्यः
स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रण-
प्रियः ॥ पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकी-
र्तिरनामयः ॥७३॥ मनोजवस्तीर्थकरो
वसुरेता वसुप्रदः ॥ वसुप्रदो वासुदेवो
वसुर्वसुमना हविः ॥७४॥ सद्गतिः स-

त्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ॥
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः
॥ ७५ ॥ भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनि-
लयोऽनलः ॥ दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरो-
ऽथापराजितः ॥ ७६ ॥ विश्वमूर्तिर्म-
हामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ॥ अनेक-
मूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७॥
एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्त-
मम् ॥ लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो
भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥ सुवर्णवर्णो हेमा-
ङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ॥ वीरहा विषमः
शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥७९॥ अमानी
मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ॥
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः
॥८०॥ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां
वरः ॥ प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो
गदाग्रजः ॥८१॥ चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतु-
र्व्यूहश्चतुर्गतिः ॥ चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वे-
दविदेकपात् ॥८२॥ समावर्तो निवृत्तात्मा

दुर्जयो दुरतिक्रमः ॥ दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥८३॥ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ॥ इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥८४॥ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ॥ अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥८५॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ॥ महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥ कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ॥ अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥८७॥ सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥८८॥ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ॥ अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ ८९ ॥ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ॥ अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥९०॥ भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वका-

मदः ॥ आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो
वायुवाहनः ॥ ९१ ॥ धनुर्धरो धनुर्वेदो
दण्डो दमयिता दमः ॥ अपराजितः
सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ॥९२॥
सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः
॥ अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीति-
वर्धनः ॥ ९३ ॥ विहायसगतिर्ज्योतिः
सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ॥ रविर्विरोचनः सूर्यः
सविता रविलोचनः ॥ ९४ ॥ अनन्तो
हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ॥
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानम-
द्भुतः ॥ ९५ ॥ सनात् सनातनतमः
कपिलः कपिरव्ययः ॥ स्वस्तिदः स्वस्ति-
कृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः
॥९६॥ अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्र-
म्यूर्जितशासनः ॥ शब्दातिगः शब्दसहः
शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ९७ ॥ अक्रूरः
पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ॥
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः

॥ ९८ ॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः॥ वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥ अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ॥ चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥१००॥ अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः॥जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥१०१॥ आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः ॥ ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥१०२॥ प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः॥ तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥ भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ॥ यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥१०४॥ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१०५॥ आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः॥ देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापना-

शनः ॥१०६॥ शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ॥ रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०७ ॥ सर्वप्रहरणायुधः ॥ ॐ नमो इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ॥ नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १०८ ॥ य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् । नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ १०९ ॥ वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत् ॥ वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ ११० ॥ धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात् प्रजाः ॥ ॥१११॥ भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः । सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥११२॥ यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ॥

अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥११३॥ न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ॥ भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥११४॥ रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥११५॥ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ॥ स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥११६॥ वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥११७॥ न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११८ ॥ इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ ११९ ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ॥ भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥ द्यौः

सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ॥
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः
॥१२१॥ ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगरा-
क्षसम् ॥ जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सच-
राचरम् ॥१२२॥ इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः
सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ॥ वासुदेवात्मकां-
न्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव हि ॥१२३॥ सर्वाग-
मानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ॥ आचा-
रप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१२४॥
ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥
॥१२५॥ योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः
शिल्पादि कर्म च। वेदाः शास्त्राणि विज्ञा-
नमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥१२६॥ एको
विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः। त्रीन्
लोकान् व्याप्य विश्वात्मा भुङ्क्ते विश्व-
भुगव्ययः ॥१२७॥ इमं स्तवं भगवतो
विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ॥ पठेद् य इच्छेत्
पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१२८॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ॥
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभ-
वम् ॥१२९॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ पद्म-
पत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ॥ भक्ता-
नामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन॥१३०॥
श्रीभगवानुवाच ॥ यो मां नामसहस्रेण
स्तोतुमिच्छति पाण्डव ॥ सोऽहमेकेन
श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥१३१॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपा-
दाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषा-
य शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः
॥ १३२ ॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते
जलशायिने नमस्ते केशवानन्त वासुदेव
नमोऽस्तु ते ॥१३३॥ वासना वासुदेव-
स्य वासितं भुवनत्रयम् ॥ सर्वभूतनि-
वासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१३४॥
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च॥
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो
नमः ॥ ३३५ ॥ आकाशात् पतितं

तोयं यथा गच्छति सागरम् ॥ सर्वदेवन-
मस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥१३६॥
एष निष्कण्टकः पन्था यत्र संपूज्यते
हरिः ॥ कुपथं तं विजानीयाद् गोवि-
न्दरहितागमम् ॥ १३७ ॥ सर्ववेदेषु
यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥ तत्फलं
समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम् ॥
॥१३८॥ यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं
केशवालये । द्विकालमेककालं वा क्रूरं
सर्वं व्यपोहति ॥१३९॥ दह्यन्ते रिपव-
स्तस्य सौम्याः सर्वे सदा ग्रहाः ॥ वि-
लीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन् प्रकी-
र्तिते ॥१४०॥ येन ध्यातः श्रुतो येन
येनायं पठ्यते स्तवः ॥ दत्तानि सर्वदा-
नानि सुराः सर्वे समर्चिताः ॥१४१॥
इह लोके परे वापि न भयं विद्यते क्व-
चित् ॥ नाम्नां सहस्रं योऽधीते द्वाद-
श्यां मम सन्निधौ ॥१४२॥ शनैर्दहति
पापानि कल्पकोटिशतानि च ॥ अश्व-

त्थसन्निधौ पार्थ कृत्वा मनसि केशवम् ॥
॥१४३॥ पठेन्नामसहस्रं तु गवां कोटि-
फलं लभेत् । शिवालये पठेन्नित्यं तुल-
सीवनसंस्थितः ॥ १४४ ॥ नरो मुक्ति-
मवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ॥
ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्वं सद्यो विनश्यति
॥१४५॥ विलयं यान्ति पापानि चा-
न्यपापस्य का कथा । सर्वपापविनि-
र्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥१४६॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामा-
नुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ॥

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

केदारनाथीयविवृत्तिसहितम्

सिन्दूरारुणगण्डमण्डलमहामोदभ्रमद्भृङ्गिका-
झङ्कारेण कलेन कर्णविमलध्वानेन मन्द्रेण च।
तत्तौर्यत्रिकरीतिमेति शिरसः शश्वन्मदान्दोलनं
यस्य श्रीगणनायकः स दिशतु श्रेयांसि भूयांसि नः।

सिन्दूर से लाल कपोलस्थलों पर (मदजल-लाभ से) बड़े आनन्द के साथ भँडराती हुई भ्रमरियों के मधुर झङ्कार (गीत) से एवं कानों की विमल (श्रुतिकटु आदि दूषण रहित) गंभीर ध्वनि (वाद्य) से जिनका मद से वह बार-बार सिर का आन्दोलन (नृत्य) गीत, वाद्य और नृत्य रूप तौर्यत्रिक शैली को प्राप्त होता है वे मङ्गलमूर्त्ति गणाधिपति हमें प्रचुर मङ्गल प्रदान करें।

श्रीष्टदेवताभ्यो नमः।

तीर्थनाथं स्वपितरं लक्ष्मीनाम्नीं च मातरम्।
प्रणम्य मनसा भक्त्या नामार्थो लिख्यते हरेः॥
सहस्रमूर्त्तेः पुरुषोत्तमस्य सहस्रनेत्राननपादबाहोः।
सहस्रनाम्नां स्तवनं प्रशस्तं निरुच्यते जन्मजरादिशान्त्यै॥१॥

सहस्र नेत्र, मुख, चरण और भुजाओंवाले सहस्रमूर्ति श्रीपुरुषोत्तम भगवान् के सहस्र नामों के इस परम उत्तम स्तवन की जन्म, जरा आदि की शान्ति के लिए व्याख्या की जाती है॥ १॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥ १॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥ २॥

जिनके स्मरणमात्र से मनुष्य जन्म तथा सांसारिक बन्धन से मुक्त हो जाता है, उन सामर्थ्यवाले विष्णु को नमस्कार है॥ १॥

समस्त भूतों के आदिभूत, भू को धारण करनेवाले, अनेक रूप धारण करनेवाले, सामर्थ्यवान् विष्णु को नमस्कार है ॥ २ ॥

वैशम्पायन उवाच—

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा—हे राजन् जनमेजय ! स्वर्गादिफलों को देनेवाले जो धर्म अर्थात् पावन कर्म तथा पापों का क्षय करनेवाले जो प्रायश्चित्तरूप कर्म उन सबको निश्शेष सुनकर भी राजा युधिष्ठिर को तृप्ति नहीं हुई। तब उन्होंने पूर्व श्रुत धर्मों की अपेक्षा विशिष्ट धर्म आदि जानने के लिए भीष्मपितामह से फिर पूछा ॥ ३ ॥

युधिष्ठिर उवाच—

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ ४ ॥

युधिष्ठिर बोले—हे पितामह ! समस्त शास्त्रों में वर्णित उपासना के योग्य देवों में से परमप्रधान देव आपको कौन-सा सम्मत है ? अत्यन्त उत्कृष्ट प्राप्य वस्तु (परायण) आपको मुख्यतया कौन-सी सम्मत है ? अधिकारी मनुष्य किसकी स्तुति करने से एवं किसका अर्चन करने से इहलोक तथा परलोक में शुभ पाते हैं ? यह सब मुझे बतलाने की कृपा कीजिये ॥ ४ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ५ ॥

कायिक, वाचिक, मानसिक जप, ध्यान, अर्चन आदि देवपूजनरूप सकल धर्मों में किस धर्म को आप सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और अधिकारी मनुष्य किसके गुणप्रतिपादक शब्दानुसन्धानरूप जप कर के जन्ममरणादिरूप क्लेश से मुक्त होता है ? यह मुझे बतलाने की कृपा कीजिये ॥ ५ ॥

श्रीभीष्म उवाच—

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ ६ ॥

इन प्रश्नों को सुनकर भीष्मपितामह को जिस प्रश्न का उत्तर याद आया, वे उसीका उत्तर देने लगे—'किं जपन् मुच्यते' इस छठे प्रश्न का उत्तर पहले भीष्म ने कहा । भीष्म बोले—हे राजन्! जगत् के प्रभु अर्थात् स्थावर,

जंगम (चल-अचल) जगत् के स्वामी और देवों के देव अर्थात् इन्द्रादि देवता भी जिनको पूजते हैं और अन्तरहित (नाशरहित) जो पुरुषोत्तम भगवान् हैं अधिकारी पुरुष निरन्तर उद्यत होकर निरन्तर अर्थात् विना व्यवधान के उनके गुणों को प्रकट करनेवाले जो हजार नाम उनका अनुसन्धानरूप जप करके जन्ममरणादि सकल दुःखों से मुक्त हो जाते हैं। यह छटे प्रश्न का उत्तर हुआ ॥ ६ ॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ ७ ॥

हे युधिष्ठिर ! अब 'कमर्चन्तः' इस चतुर्थ प्रश्न का उत्तर सुनो, उसी अविनाशी पुरुषोत्तम का पूजन (बाह्यार्चन) करके और उसी पुरुषोत्तम का ध्यानकर (आभ्यन्तर अर्चनकर) और उसे नित्य अर्थात् सर्वदा करते हुए आगे उस अर्चन के अङ्गभूत स्तुति एवं नमस्कार भी करके जो यजमान अर्थात् देवपूजक होता है, वह जन्ममरणादि सकल दुखों से मुक्त हो जाता है ॥ ७ ॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ८ ॥

हे युधिष्ठिर ! अब 'कं स्तुवन्तः' इस तीसरे प्रश्न का उत्तर सुनो, आदि (जन्म) एवं निधन (मरण) से रहित अर्थात् छहों विकारों से रहित विष्णु माने व्यापक और अपनी स्तुति करनेवालों के मनोरथ पूर्ण करने में परम समर्थ, सकल लोकों का माने घट, पटादि सकल दृश्यवर्ग का प्रत्यक्ष करनेवाले जो पुरुषोत्तम हैं उनकी निरन्तर स्तुति करने से साधक आध्यात्मिकादि सकल दुःखों से मुक्त हो जाता है ॥ ८ ॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ ९ ॥

राजन्, जिन पुरुषोत्तम की स्तुति करना मैंने बताया है, वे बड़े ब्रह्मण्य (वेदरक्षक) हैं, अपनी स्तुति करनेवाले लोगों की अपनी जैसी कीर्त्ति बढ़ानेवाले हैं, सकललोक के नाथ (स्वामी) हैं, महद्भूत हैं अर्थात् परम सत्य हैं और सकल लोक के पिता हैं। उनकी स्तुति न करना बड़ा पाप है। यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है। छठे, चौथे और तीसरे इन तीनों प्रश्नों का अभिप्राय प्रायः समान ही है ॥ ९ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१०॥

अब 'को धर्मः सर्वधर्माणाम्' इस पाँचवें प्रश्न का उत्तर कहते हैं—हे युधिष्ठिर, यह जो भगवदर्चन-स्तवनादिरूप धर्म हमने पहले कहा यही सब धर्मों में हमें श्रेष्ठ मालूम होता है। हम निश्चयपूर्वक कहते हैं कि अधिकारी पुरुष अनायास भगवद्गुण-कीर्तनलक्षण स्तुतियों द्वारा भगवान् पुण्डरीकाक्ष का पूजन करे। इससे बढ़कर दूसरा उत्तम धर्म हमारी समझ में नहीं है। यह पाँचवें प्रश्न का उत्तर है ॥ १० ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ ११ ॥

अब 'किं वाप्येकं परायणम्' इस द्वितीय प्रश्न का उत्तर सुनिए—हे युधिष्ठिर, जो अत्यन्त उत्कृष्ट और बृहत् माने भारी तेज है, जो बड़ा भारी तप है याने ईश्वर है और अत्यन्त उत्कृष्ट जो सत्य-ज्ञानानन्तानन्द-लक्षण ब्रह्म है, वह मुख्य परायण माने प्राप्य वस्तु है, ऐसा समझो। यह द्वितीय प्रश्न का उत्तर हुआ ॥ ११ ॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१३॥

अब 'किमेकं दैवतं लोके' इस प्रथम प्रश्न का उत्तर सुनिए—जो पवित्रों में परम पवित्र है और मङ्गलों में जो परम मङ्गल है, हे युधिष्ठिर! जो ब्रह्मादिक देवताओं का भी देवता है याने पूज्य है, क्योंकि वह सब प्राणियों का पिता है, अन्य सब पितरों का नाश होता है किन्तु इस पिता का व्यय (नाश) नहीं होता है। यह अव्यय पिता है। जिस निमित्तकारण से आदि युग में ब्रह्मा से लेकर चींटी तक सब उत्पन्न होते हैं और जिस उपादानकारण में प्रलयकाल में सभी प्राणी लीन हो जाते हैं। वही परम मुख्य उपास्य देवता है ऐसा समझो। यह प्रथम प्रश्न का उत्तर दिया ॥ १२–१३ ॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१४॥

हे राजन्! ऐसे भगवान् विष्णु जगन्नाथ हैं, उनके हजार नाम हम तुमको सुनाते हैं, उन नामों को सुनने से पाप-भय नहीं रहता बल्कि साधक निडर हो जाता है। स्कन्दपुराण में विष्णुसहस्रनाम का माहात्म्य बहुत लिखा है। प्रकृत में कहीं शब्दभेद से नाम भिन्न होगा और कहीं अर्थभेद से नाम भिन्न होगा, ऐसा समझो ॥१४॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१५॥

उनमें भी जो नाम गुणों और कर्मों से हुए हैं तथा जिन्हें ब्रह्मादि ऋषियों ने गाया है उन नामों को हम सबके कल्याण के उद्देश्य से कहते हैं, गौण और प्रधान नाम ऋषियों ने गाये हैं और जिन नामों को हम कह रहे हैं उन नामोंवाले भगवान् बड़े महात्मा हैं याने बड़े समर्थ हैं ॥ १५ ॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥१६॥

समस्त विश्व को व्याप्त करके स्थित भगवान् विष्णु के दिव्य सहस्रनाम-स्तोत्र के ऋषि महामुनि भगवान् वेदव्यासजी हैं। जिन्होंने कलियुग के मनुष्यों की अल्पबुद्धि देखकर एकाकार समस्तवेदराशि को चार भागों में विभक्त किया है। इस दिव्य विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का छन्द अनुष्टुप् है तथा भगवान् देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण परमात्मा इसके देवता हैं।

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेकरूपं दैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥१७॥

समस्त विश्व को व्याप्त करके विद्यमान विष्णु, कभी भी पराजित न होने से सदा विजयशाली जिष्णु, वाणी और मनके भी विषय न होनेवाले गुण एवं रूप से भी अतीत भगवान् भी भक्तों के परवश होकर धर्मसंस्थापन करने के लिए प्रकट होनेवाले प्रभविष्णु भगवान् महाविष्णु अखिल देवाधिदेवों का भी नियन्त्रण करनेवाले महेश्वर धर्मसंस्थापनार्थ अपने भक्तों की रक्षा के लिए अनेकों दैत्यों का अन्त करनेवाले ऐसे पुरुषों में उत्तम पुरुषोत्तम श्रीकृष्णपरमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १७ ॥

ॐविश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१८॥

१. ॐ विश्वाय नमः, विश्वस्मै नमः—चराचर विश्वको ही ब्रह्म मानने से सर्वनाम अन्यथा असर्वनाम। अतएव 'कृष्ण कृष्ण महायोगिंस्त्वमाद्यः पुरुषः

परः। व्यक्ताव्यक्तमिदं 'विश्वं' रूपं ते ब्राह्मणा विदुः॥" कहा है। भगवान् विष्णु चराचर प्रपञ्च में कारणतया प्रविष्ट होकर बैठते हैं, इसलिए इनका नाम 'विश्व' है। विश्वमोहिनीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मदेव ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः ब्रह्मदेव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रह्मदेव को सृष्टि करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ था। यह मन्त्र सृष्टिसामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद अध्याय ८ के ३६ वें मन्त्र में उल्लिखित है।

२. ॐ विष्णवे नमः—भगवान् सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर स्थित हैं, अतः इनका नाम 'विष्णु' है। अतएव "व्याप्ते मे रोदसी पार्थ क्रान्तिश्चाभ्यधिका स्थिता। क्रमणाच्चाप्यहं पार्थ विष्णुरित्यभिसंज्ञितः।" कहा है। शैवागम के अनुसार सबसे पहले लोहदैत्य से पीड़ित देवर्षि नारदजी ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए नारदजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नारदजी की दैत्यकृत पीड़ा नष्ट हुई। यह मन्त्र पीड़ानाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।२।२६ में उल्लिखित है।

३. ॐ वषट्काराय नमः—हविर्दान के समय ये वषट्कार का उच्चारण करते हैं, अतः इनका नाम वषट्कार है। गर्गवाक्य के अनुमार सर्वप्रथम महर्षि वसिष्ठजी ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए वसिष्ठजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसिष्ठजी को यज्ञ का फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद अ. १९ मं. १९,२० तथा २४ में उल्लिखित है।

४. ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः—ये तीनों कालों के पदार्थों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'भूतभव्यभवत्प्रभु' है। बृहद्गौरीतन्त्र के अनुसार सबसे पहले श्रीशङ्करजी ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए शङ्करजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्करजी को त्रिकालज्ञता का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र त्रिकालज्ञताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद अ० ३१ म. २ तथा ३ में उल्लिखित है।

५. ॐ भूतकृते नमः—ये प्रभु स्वतन्त्र होकर सब प्राणियों को उत्पन्न करते हैं, इसलिए इनका नाम 'भूतकृत्' है। दत्तात्रेय के कथनानुसार सर्वप्रथम अङ्गिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः अङ्गिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अङ्गिराजी को बृहस्पति तथा संवर्त दो पुत्र हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।३ में संकेतित है।

६. ॐ भूतभृते नमः—ये प्राणिमात्र का पोषण करते हैं, अतः इनका नाम 'भूतभृत्' है। हारीत ऋषि के कथनानुसार सर्वप्रथम हिरण्यकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हिरण्यकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। कुटुम्ब-पालन में असमर्थ हिरण्यकर्मा इसको जपने से कुटुम्ब पालने में समर्थ हुए।

यह मन्त्र कुटम्बपालनशक्तिप्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद अ० ३१ मं० १ में संकेतित है ।

७. ॐ भावाय नमः—इनके घर में बड़ी विभूतियाँ भरी पड़ी हैं, अतः इनका नाम 'भाव' है । कूर्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र पृथुरोमा ने जपा है, इसलिए पृथुरोमा ऋषि इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से पृथुरोमा को महान् ऐश्वर्य प्राप्त हुआ । यह मन्त्र ऐश्वर्यप्रद है । यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।४८ तथा अथर्ववेद १०।८।४ में संकेतित है ।

८. ॐ भूतात्मने नमः—ये प्राणिमात्र के भीतर अन्तर्यामी आत्मा के रूप से रहते हैं, इसलिए इनका नाम भूतात्मा है । विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कहोल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः कहोल इस मन्त्र के ऋषि हैं । इस मन्त्र को जपने से कहोलजी को अष्टावक्र नामक महाज्ञानी पुत्र प्राप्त हुआ । यह मन्त्र पुत्रप्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद अ० ४० मं० ६ और ७ एवं अथर्ववेद १०।८।४३ तथा ३७ में उल्लिखित है । यथा—"भूतात्मा परमात्मा च प्रधानात्मा तथा भवान् । आत्मा च परमात्मा च त्वमेकः पञ्चधा स्थितः ॥" कहा है ।

९. ॐ भूतभावनाय नमः—प्राणिमात्र की भावना इन्हीं में रहती है, इसलिए इनका नाम 'भूतभावन' है । सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम च्यवन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः च्यवन इस मन्त्र के ऋषि हैं । अन्धे हुए च्यवन ऋषि ने इसको जपने से नेत्रज्योति पाई । यह मन्त्र अभीष्ट शुभप्रद है, नेत्रज्योतिप्रद भी है । यह मन्त्र गीता में उल्लिखित है । यजुर्वेद अ० ४० मं. ८ में संकेतित है ।

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥१५॥

१०. ॐ पूतात्मने नमः—इनका आत्मा सदा शुद्ध रहता है, अतः इनका नाम 'पूतात्मा' है । बृहन्नारदीयपुराण के अनुसार सबसे पहले विश्वामित्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः विश्वामित्र इस मन्त्र के ऋषि हैं । वसिष्ठ के १०० पुत्र मारने से उत्पन्न महापातक से ग्रस्त विश्वामित्र इसको जपने से पवित्र हुए । यह मन्त्र महापापनाशक है । यह मन्त्र यजुर्वेद अ० १९ मं० ४१ में उल्लिखित है ।

११. ॐ परमात्मने नमः—इनकी सबको आवश्यकता होने से तथा इन्हें किसी की आवश्यकता न होने से ये उत्कृष्ट आत्मा हैं, अतः इनका नाम परमात्मा है । भृगुऋषि के कथनानुसार सर्वप्रथम उद्दालक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उद्दालक इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से

उद्दालक ऋषिसमुदाय में श्रेष्ठता को प्राप्त हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद अ० ४० मं० ८ और अ० ३१ मं० ७ में संकेतितं है।

१२. ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः—जो 'मुक्त प्राणी हैं, उनकी ये परम गति है, इसलिए इनका नाम 'मुक्तानां परमा गतिः' है। सुन्दरीमहोदय-ग्रन्थ के अनुसार सर्वप्रथम दत्तात्रेय ऋषिने यह नाममन्त्र जपा है, अतः दत्तात्रेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दत्तात्रेय मुक्त हो गये। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद अ० ३२ मं० १० में संकेतित है।

१३. ॐ अव्ययाय नमः—प्रभु की शरण में जाने से साधक भवसागर से पार होकर अव्यय पद पाता है, अतः इनका नाम 'अव्यय' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हारीत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हारीत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हारीत मुक्त होकर परमधाम को प्राप्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है तथा परमपदप्रद है। यह मन्त्र गोपथ-ब्राह्मण १।१।४१ में उल्लिखित है।

१४. ॐ पुरुषाय नमः—ये प्रभु भक्त मुक्त पुरुषों को अपने स्वरूप तक को भी दे देते हैं और लौकिक मनुष्यों को धन देते हैं, अतः इनका नाम 'पुरुष' है। महाभारत में ऐसा भी कहा है—"नवद्वारं पुरं पुण्यमेतैर्भावैः समन्वितम्। व्याप्य शेते महात्मा यस्तस्मात्पुरुष उच्यते।" माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मृकण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मृकण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मृकण्डजी भगवान् को वश में कर के जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।९०।१ तथा यजुर्वेद ३१।२, ३, ४ और ५ में भी उल्लिखित है।

१५. ॐ साक्षिणे नमः—ये भक्तों को आनन्द देकर उन्हें आनन्द का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं, अतः इनका नाम 'साक्षी' है। अतएव श्वेताश्वतर उपनिषद् में कहा है—"एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा। कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च॥" वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र मेधावी ऋषि ने जपा है, इसलिए मेधावी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मेधावी ऋषि शुद्धमानस होकर सुखी हुए। यह मन्त्र चित्तशुद्धिकारक है तथा सुखप्रद भी है। यह मन्त्र ऋग्वे० १०।८१।३ तथा यजुर्वेद ३२।१० में उल्लिखित है।

१६. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः—ये भक्तों को अपना स्वरूपानन्दानुभव कराने के लिए जब प्रवृत्त होते हैं तब उस आनन्द की उत्पत्ति का क्षेत्र परमाकाश के सिवा दूसरा कोई नहीं है ऐसा जानते हैं, अतः इनका नाम 'क्षेत्रज्ञ' पड़ा है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम वामदेव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वामदेव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इस मन्त्र के जपनेसे वामदेव को

ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मसाक्षात्कारप्रद है। अतएव "क्षेत्राणि हि शरीराणि बीजं चापि शुभाशुभम्। तानि वेत्ति स योगात्मा ततः क्षेत्रज्ञ उच्यते।" ऐसी उक्ति है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।३४ में संकेतित है।

१७. ॐ अक्षराय नमः—भक्तों द्वारा भगवदनुभव सदा किये जाने पर भी भगवान् के स्वरूप में कभी भी कमी नहीं आती, अतः इनका नाम 'अक्षर' है। स्कन्दपुराण के अनुसार सर्वप्रथम जाजलि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जाजलि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जाजलि त्रैलोक्यपूजित हुए। यह मन्त्र सम्मानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १।१६।४५ तथा ९।१०।१८ में उल्लिखित है।

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥१६॥

१८. ॐ योगाय नमः—योग अर्थात् सायुज्य मोक्ष इन्हीं से मिलता है, इसलिए इनका नाम 'योग' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मार्कण्डेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः मार्कण्डेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसके जपने से मार्कण्डेय ऋषि चिरञ्जीवी सिद्ध हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्यप्रद है। ऋग्वेद ५।८१।१, यजुर्वेद ५।१४;११।४ तथा ३७।२ में संकेतित है।

१९. ॐ योगविदां नेत्रे नमः—जो साधन भक्ति के अतिरिक्त दूसरा उपाय जानते भी नहीं और करते भी नहीं, उन साधकों को भी ये फल देकर उन साधकों का निर्वाह करते हैं, इसलिए इनका नाम 'योगविदां नेता' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शालङ्कायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः शालङ्कायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शालङ्कायन सिद्ध हुए। यह मन्त्र अभीष्टसिद्धिप्रद है।

२०. ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः—प्रधान शब्द का अर्थ प्रकृति है, पुरुषशब्द का अर्थ प्रकृति का आश्रय लेकर भोग करनेवाला जीव है, भगवान् इन दोनों के ईश्वर हैं। अतः इनका नाम 'प्रधानपुरुषेश्वर' है। देवी-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कर्दम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव कर्दम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्दमजी प्रकृति के बन्धन से मुक्त हुए। यह मन्त्र प्राकृत बन्धन से मुक्त करनेवाला है।

२१. ॐ नारसिंहवपुषे नमः—इनके शरीर का आधा भाग मनुष्य जैसा तथा आधा भाग सिंह जैसा है, इसलिए इनका नाम 'नारसिंहवपुः' है। सारस्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बृहस्पति ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः बृहस्पति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बृहस्पति वाणी तथा विद्या के अधिपति हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद है।

२२. ॐ श्रीमते नमः—नारसिंहात्मक उग्रस्वरूप धारण करने पर भी श्री सदा इनके पास रहती है, अतः इनका नाम श्रीमान् है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत्कुमार इन चार महायोगियों ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ये ४ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ये ४ परमहंस सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है।

२३. ॐ केशवाय नमः—ये सुन्दर तथा घुँघुराले केशोंवाले हैं, इसलिए इनका नाम 'केशव' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम परशुरामजी ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः परशुरामजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको ४ हजार वर्षों तक जपने से परशुरामजी क्षत्रियवधजन्य पाप से मुक्त हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। कहीं—"यस्मात्त्वयैष दुष्टात्मा हतः केशी जनार्दन। तस्मात्केशवनाम्ना त्वं लोके ख्यातो भविष्यसि॥" ऐसा भी कहा है।

२४. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः—ये सब पुरुषों में उत्तम हैं, अतएव गीता में "यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥" कहा है। इसलिए इनका नाम 'पुरुषोत्तम' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम पराशर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पराशर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पराशर सर्वशास्त्रज्ञ आचार्य हुए। यह मन्त्र सर्वशास्त्रज्ञताप्रद है।

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥१७॥

२५ ॐ सर्वाय नमः-सर्वस्मै नमः—संसार के सब पदार्थों को ही ब्रह्म मानने से सर्वनाम, अलग सूत्ररूप से मानने से असर्वनाम। अतएव भारत में—"असतश्च सतश्चैव सर्वस्य प्रभवाप्ययात्। सर्वस्य सर्वदा ज्ञानात् सर्वमेनं प्रचक्षते।" कहा है। ये सम्पूर्ण चराचर के कारण हैं, अतः इनका नाम 'सर्व' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम जैगीषव्य ऋषि ने यह नाम मन्त्र जपा है, इसलिए जैगीषव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जैगीषव्यजी ने अव्याहत गति प्राप्त की। यह मन्त्र सर्वत्र अबाधितगतिप्रद है।

२६. ॐ शर्वाय नमः—ये सब भक्तों के अशुभ को दूर करते हैं, अतः इनका नाम 'शर्व' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम पिप्पलाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए पिप्पलाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ज्वरग्रस्त पिप्पलाद ज्वर से मुक्त हुए। यह मन्त्र ज्वरविनाशक है।

२७. ॐ शिवाय नमः—ये भक्तों का सदा शुभ करनेवाले हैं, इसलिए इनका नाम 'शिव' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम दुर्वासा ऋषि ने

यह नाममन्त्र जपा है, अतः दुर्वासा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दुर्वासा सुदर्शनचक्र से मुक्त हुए। यह नाममन्त्र तापहारक है।

२८. ॐ स्थाणवे नमः—ये भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए निरन्तर उनके अन्तःकरण में (निवास) करते हैं, अतः इनका नाम 'स्थाणु' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम देवशर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए देवशर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवशर्मा को भोगमोक्षसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र भोगमोक्षफलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।५ में संकेतित है।

२९. ॐ भूतादये नमः—ये भगवान् अत्यन्त स्पृहणीय होने से सभी भूतों अर्थात् प्राणियों द्वारा अपनाए जाते हैं, अतः इनका नाम 'भूतादि है। स्कन्दपुराण के अनुसार सर्वप्रथम जाबालि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जाबालि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जाबालि वेदाचार्य, सर्वज्ञ तथा ब्रह्मदर्शी हुए। यह नाममन्त्र सर्वज्ञत्व देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।२ में संकेतित है।

३०. ॐ निधयेऽव्ययाय नमः—ये कभी भी क्षीण न होनेवाली निधि हैं। अतः इनका नाग 'अव्यय निधि' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम भृगुवंशी जमदग्नि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए भृगुवंशी जमदग्नि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको ३०० वर्ष जपने से जमदग्नि को श्रीपरशुरामजी पुत्रात्मक अव्यय-निधि के रूप में प्राप्त हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८ ३२ में संकेतित है।

३१. ॐ सम्भवाय नमः—ये भक्तों के दुःख दूर करने के लिए समय-समय पर मत्स्य, कूर्मादि अवतार लेते हैं, अतः इनका नाम 'सम्भव' है। अतएव गीता में—"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य ···सम्भवामि युगे युगे" भगवद्वचन है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र भरद्वाज ऋषि ने जपा है, इसलिए भरद्वाज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भरद्वाज दिव्यज्ञानी तथा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९१।२ में संकेतित है।

३२. ॐ भावनाय नमः—ये भक्तों का पालन करने के लिए राम, कृष्णादि अवतार लेकर उनकी रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'भावन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सबसे पहले दधीचि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दधीचि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दधीचि सिद्धि को प्राप्त हुए तथा विदेहमुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र वामनपुराण में उल्लिखित है।

३३. ॐ भर्त्रे नमः—ये स्वयं को देकर भी भक्तों का भरण-पोषण करते हैं, अतः इनका नाम 'भर्ता' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम नचिकेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए नचिकेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नचिकेता को अबाधगति प्राप्त हुई। यह मन्त्र अबाधगति-प्रद है। यह मन्त्र नारसिंहसंहिता में उल्लिखित है।

३४. ॐ प्रभवाय नमः—ये भक्तजनों को जन्मादि बन्धन से छुड़ानेवाला उत्कृष्ट जन्म (अवतार) लेते हैं, अतः इनका नाम 'प्रभव' है। वामन, नारदीय तथा विष्णुमहापुराण के अनुसार सर्वप्रथम कश्यप ऋषि ने यह नाम मन्त्र जपा है, अतएव कश्यप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कश्यप ऋषि को भगवान् वामन पुत्ररूप में प्राप्त हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र नारदीयसंहिता में उल्लिखित है।

३५. ॐ प्रभवे नमः—ये मनुष्यादि के समान जन्म लेने पर भी आवश्यकता पड़ने पर ब्रह्मा, इन्द्र, वरुणादि को भी दण्ड देने का सामर्थ्य रखते हैं, अतः इनका नाम 'प्रभु' है। भृगुसंहिता तथा सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अगस्त्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अगस्त्यजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अगस्त्यजी को समुद्रशोषण का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत ११।१५।३५ में उल्लिखित है।

३६. ॐ ईश्वराय नमः—ये मनुष्यदेह धारण करने पर भी सर्वाधिक ऐश्वर्यवाले हैं, इसलिए इनका नाम 'ईश्वर' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भागासुरि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः भागासुरि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भागासुरि उस समय के ऋषियों में सर्वप्रधान हुए। यह मन्त्र प्रधानता प्रदान करनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ तथा ४०।१ में उल्लिखित है।

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥१८॥

३७. ॐ स्वयम्भुवे नमः—ये लोककल्याण के लिए अपनी इच्छा से स्वयं उत्पन्न होते हैं, इसलिए इनका नाम 'स्वयम्भू' है। बृहन्नारदीयपुराण के अनुसार सर्वप्रथम पैठीनसि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः पैठीनसि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पैठीनसि को अनेक ग्रन्थों का आचार्यत्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र आचार्यत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में उल्लिखित है।

३८. ॐ शम्भवे नमः—ये अपने सौन्दर्यादि गुणों को प्रकटकर भक्तों का कल्याण करते हैं, इसलिए इनका नाम 'शम्भु' है। सनत्कुमारसंहिता

के अनुसार सर्वप्रथम तण्डि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः इस मन्त्र के तण्डि ऋषि हैं। इसको जपने से तण्डि ऋषि को सूत्रग्रन्थ रचने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सूत्रग्रन्थ की रचना का सामर्थ्य देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्व० १९।१०।१० तथा ऋग्वेद ७।३५।१० में उल्लिखित है।

३९ ॐ आदित्याय नमः—सूर्यमण्डल के भीतर इनका निवास है, अतः इनका नाम 'आदित्य है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव याज्ञवल्क्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से याज्ञवल्क्यजी को ज्ञानसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८८।११ में उल्लिखित है।

४०. ॐ पुष्कराक्षाय नमः—इनकी आँखें कमल के समान सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'पुष्कराक्ष' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पैङ्गि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए पैङ्गि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पैङ्गि ऋषि को शास्त्ररहस्य जानने की शक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शास्त्र-रहस्यज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्व. १०।७।३३ में संकेतित है।

४१ ॐ महास्वनाय नमः—वेद इनका महान् शब्द रूप है, इसलिए इनका नाम 'महास्वन' है। नृसिंहपुराण के अनुसार सबसे पहले शाक्वर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः शाक्वर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाक्वर को ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।१० में संकेतित है।

४२. ॐ अनादिनिधनाय नमः—इनके जन्म, मरणादि कोई भी विकार नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अनादिनिधन' है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम दीर्घतमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए दीर्घतमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीर्घतमा स्वयं भी अनादिनिधनत्व को प्राप्त हुए। यह मन्त्र अनादिनिधनत्वप्रद है। यह अथर्व० १०।७।३१ में सङ्केतित है।

४३. ॐ धात्रे नमः—ये अपनी समूहात्मक मायारूप प्रकृति में गर्भाधान कर उस गर्भ में ब्रह्मा को रखते हैं, अतः इनका नाम 'धाता' है। वाराहपुराण के अनुसार सर्वप्रथम मुद्गल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः मुद्गल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुद्गल सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्व. १४।१।३४ में उल्लिखित है।

४४. ॐ विधात्रे नमः—ये कालान्तर में पूर्वोक्त गर्भस्थ ब्रह्मा को बाहर निकालते हैं, अतः इनका नाम 'विधाता' है। शूलिनीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जन्मान्ध दीर्घतमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए दीर्घतमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीर्घतमा को पुत्र तथा पुत्रप्रदानसामर्थ्य

प्राप्त हुआ। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१० में उल्लिखित है।

४५ ॐ धातुरुत्तमाय नमः—ये स्रष्टा ब्रह्मा की अपेक्षा बहुत उत्तम है, इसलिए इनका नाम 'धातुरुत्तमः' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सबसे पहले जमदग्नि ऋषि ने यह नाम जपा है, इसलिए जमदग्नि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सन्तानरहित जमदग्नि को सन्तानप्राप्ति हुई। यह मन्त्र सन्तानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४ में उल्लिखित है।

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥१९॥

४६. ॐ अप्रमेयाय नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं से सर्वथा ज्ञेय नहीं है, अतः इनका नाम 'अप्रमेय' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कावषेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए कावषेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कावषेय परमसिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्व. २।२।१ में संकेतित है।

४७. ॐ हृषीकेशाय नमः—ये हृषीक अर्थात् इन्द्रियों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'हृषीकेश' है। मन्त्रसर्वस्व के अनुसार सर्वप्रथम रैभ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रैभ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इस मन्त्र को जपने से रैभ्य को सत्यसङ्कल्पता सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्यसङ्कल्पता-प्रद है। यह मन्त्र यजु० सं० १७।५८ में संकेतित है। महाभारत में कहा है—"बोधनात्स्वापनाच्चैव जगतो हर्षणं भवेत्। अग्नीषोमकृतैरेवं कर्मभिः पाण्डुनन्दन। हृषीकेशो महेशानो वरदो लोकभावनः ॥"

४८. ॐ पद्मनाभाय नमः—जगत् का कारणभूत पद्म इनकी नाभि में है, अतः इनका नाम 'पद्मनाभ' है। दक्षस्मृति के अनुसार यह नाममन्त्र सर्वप्रथम दक्ष प्रजापति ने जपा है, अतएव दक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दक्ष को सृष्टि रचने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र अभीष्ट सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।३ में सङ्केतित है।

४९. ॐ अमरप्रभवे नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं के सृष्टि आदि अधिकार का निर्वाह करते हैं, अतः इनका नाम 'अमरप्रभु' है। वायुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम प्रगाथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रगाथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रगाथजी स्वर्गलोक के अधिकारी हुए। यह मन्त्र स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१३ में संकेतित है।

५०. ॐ विश्वकर्मणे नमः—ये सारथ्य तथा दौत्य सभी ऊँचे-नीचे कर्म भक्तों के हित के लिए करते हैं, अतः इनका नाम 'विश्वकर्मा' है। शैवागम-

तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जैमिनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जैमिनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जैमिनि को दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८२।२ में उल्लिखित है।

५१. मनवे नमः—ये सङ्कल्प के लेशमात्र से सब काम करते हैं, अतः इनका नाम 'मनु' है। शिवमहापुराण के अनुसार सर्वप्रथम पैल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए पैल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पैल वेद एवं वेदार्थ के तत्त्व को जाननेवाले तथा जितेन्द्रिय हुए। यह मन्त्र वेदतत्त्वप्रद तथा जितेन्द्रियत्वप्रद है। यह मन्त्र बृहदारण्यकोपनिषद् ३।७।२३ में सङ्केतित है।

५२. ॐ त्वष्ट्रे नमः—ये प्रलय के समय सम्पूर्ण जगत् को अपने में समा लेते हैं, अतः इनका नाम 'त्वष्टा' है, वायुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सुमन्तु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव सुमन्तु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुमन्तु सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्व० सं० ५।२५।४ में उल्लिखित है।

५३. ॐ स्थविष्ठाय नमः—ये सृष्टि के समय सूक्ष्मावस्था को त्यागकर स्थूलावस्था को प्राप्त होते हैं। अतः इनका नाम 'स्थविष्ठ' है। सुन्दरी-महोदय ग्रन्थ के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र अत्रि ऋषि ने जपा है, इसलिए अत्रि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अत्रि दिव्यतेजवाले हो गये। यह मन्त्र पापनाशक तथा दिव्यतेजःप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१ में संकेतित है।

५४. ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः—ये लीला से काल के अधीन रहने पर भी सर्वदा काल के अधीन न होकर रहते हैं, अतः इनका नाम 'स्थविर ध्रुव' है। बृहत्पाराशरसंहिता के अनुसार वृद्धलोमश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृद्धलोमश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृद्धलोमश दीर्घायुष्यवाले हुए। यह मन्त्र भयनाशक तथा दीर्घायुष्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्व० सं० १९।१५।४ में उल्लिखित है।

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥२०॥

५५. ॐ अग्राह्याय नमः—कोई भी इन्हें बलात् नहीं पकड़ सकता, इसलिए इनका नाम 'अग्राह्य' है। गोपालतन्त्र के अनुसार सबसे पहले गालव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए गालव इस मन्त्र के ऋषि हैं।

इसको जपने से गालव सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धप्रद है। यह मन्त्र तैत्तिरीयोपनिषद् २।९ में सङ्केतित है।

५६. ॐ शाश्वताय नमः—इनका जगत्सम्बन्धी व्यापार अहर्निश चलते रहने से ये तीनों कालों में रहते हैं, अतः इनका नाम 'शाश्वत' है। सुन्दरी-महोदय के अनुसार सर्वप्रथम लोमश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लोमश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लोमश नित्य रहनेवाले (शाश्वत) हुए। यह मन्त्र नित्यस्थितिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में उल्लिखित है।

५७. ॐ कृष्णाय नमः—ये देखनेमात्र से मनको आकृष्ट करते हैं, अतएव इनका नाम 'कृष्ण' है। यह नाम अनन्यरसमय है। अतएव—"एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्ण-प्रणामी न पुनर्भवाय।" और—"कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः। विष्णुस्तद्भावयोगाच्च कृष्णो भवति शाश्वतः॥" कृष्ण को सच्चिदानन्दात्मक भी कहा है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम गर्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः गर्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गर्ग ज्योतिर्विदों में श्रेष्ठ तथा त्रिकालज्ञ हुए। यह मन्त्र ज्यौतिषशास्त्रज्ञता तथा त्रिकालज्ञता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।१३ में उल्लिखित है।

५८. ॐ लोहिताक्षाय नमः—इनकी आँखें कमल के समान लाल हैं, अतः इनका नाम 'लोहिताक्ष' है। वाराहपुराण के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र मतङ्गऋषि ने जपा है, अतएव मतङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मतङ्ग को सार्वदिक सिद्धि तथा दिव्यपद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सिद्धिप्रद तथा दिव्यलोकप्रद है। यह मन्त्र अथर्व० १०।७।३३ में सङ्केतित है।

५९. ॐ प्रतर्दनाय नमः—ये सबका संहार करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रतर्दन' है। गौरीमहोदय ग्रन्थ के अनुसार सर्वप्रथम रुरु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रुरु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रुरु को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र जयप्रद, शत्रुनाशक तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

६०. ॐ प्रभूताय नमः—इनके पास पर्याप्त समृद्धि है, अतः इनका नाम 'प्रभूत' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम कति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कति को नित्य निर्मर्याद सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र अथर्व० सं. ५।११।४ में संकेतित है।

६१. ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः—ये तीनों लोकों के रक्षक हैं, अतः इनका नाम 'त्रिककुब्धाम' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुतपा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुतपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको १००० वर्ष तक जपने से सुतपा त्रैलोक्यपूजित हुए। यह मन्त्र त्रैलोक-पूजितत्व प्रदान करनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।३४ में सङ्केतित है।

६२. ॐ पवित्राय नमः—ये स्मरणमात्र करने से भक्तों को वज्रसदृश संसार से बचाते हैं, अतः इनका नाम 'पवित्र' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कुणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुणि के कुकर्म सुकर्म हुए। यह मन्त्र कुकर्मों को सुकर्म में परिणत करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।८३।१ में उल्लिखित है।

६३. ॐ मङ्गलाय परस्मै नमः—ये अनन्तानन्त मङ्गलों को प्रदान करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'मङ्गलं परम्' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दधिमन्थ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दधिमन्थ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दधिमन्थ को शास्त्रमन्थन करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र शास्त्रसारप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।४१ में सङ्केतित है। भक्तों के अशुभों को दूर करने से ही उनको—"अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसन्ततिम्। स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्म तन्मङ्गलं विदुः।" कहा है।

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥२५॥

६४. ॐ ईशानाय नमः—ये सभी पदार्थों की व्यवस्था करने में बड़े समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'ईशान' है। शैवागमग्रन्थ के अनुसार सर्वप्रथम स्थूलशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव स्थूलशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से स्थूलशिरा तपश्चर्या से युक्त तथा सर्वसुखभागी हुए। यह मन्त्र तपश्चर्या बढ़ानेवाला तथा सुख देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ में उल्लिखित है।

६५. ॐ प्राणदाय नमः—ये भक्तों को अपनी सेवा करने के योग्य प्राण अर्थात् बल देते हैं, अतः इनका नाम 'प्राणद' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम लाट्यायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लाट्यायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लाट्यायन सर्वशास्त्र-पारङ्गत तथा शाश्वत सिद्ध हुए। यह मन्त्र सर्वशास्त्रज्ञता तथा शाश्वतसिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।३ तथा २५।११ में उल्लिखित है।

६६. ॐ प्राणाय नमः—ये अपने आश्रित रहनेवाले भक्तों के प्राणों को हरे-भरे करते हैं, अतः इनका नाम 'प्राण' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भल्लुकि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भल्लुकि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भल्लुकि सर्वविद्यापारङ्गत तथा जितप्राण हुए। यह मन्त्र सर्वविद्याप्रद तथा जितप्राणत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।१ में उल्लिखित है।

६७. ॐ ज्येष्ठाय नमः—ये महान् विभूतिवाले हैं तथा सबसे वृद्ध हैं, अतः इनका नाम 'ज्येष्ठ' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आमलकप्रिय नामक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आमलकप्रिय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आमलकप्रिय सर्वश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद तथा सर्वश्रेष्ठत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१ में उल्लिखित है।

६८ ॐ श्रेष्ठाय नमः—ये अत्यन्त प्रशंसा के योग्य हैं तथा सभी लोग इनकी प्रशंसा करते हैं, अतएव इनका नाम 'श्रेष्ठ' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम शाण्डीर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाण्डीर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाण्डीर सर्वविद्याओं के ज्ञाता तथा सर्वश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।४४।४ में उल्लिखित है।

६९. ॐ प्रजापतये नमः—ये वेदों में वर्णित उत्तम मनुष्य-देहवाली प्रजा के पति हैं, अतः इनका नाम 'प्रजापति' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम ऋभु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋभु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋभु सिद्धों में प्रसिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।५ में उल्लिखित है।

७०. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः—ये हिरण्य अर्थात् उत्कृष्ट धाम उसमें गर्भरूप से रहते हैं, इसलिए इनका नाम 'हिरण्यगर्भ' है। शैवागमतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम रैवतधामा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः रैवतधामा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको १००० वर्ष जपने से रैवतधामा सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४, २३।१ तथा २५।१० में उल्लिखित है।

७१. ॐ भूगर्भाय नमः—ये पृथिवी को अपना गर्भ समझकर पालते हैं, अतः इनका नाम 'भूगर्भ' है। बार्हस्पत्यतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शरभङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शरभङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शरभङ्ग परम सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

७२. ॐ माधवाय नमः—ये श्रद्धा आदि रूप धारण करनेवाली मा अर्थात् लोकमाता लक्ष्मी के पति हैं, इसलिए इनका नाम 'माधव' है। कहीं—"मौनाद् ध्यानाच्च योगाच्च विद्धि भारत माधवम्।" कहा है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सुमति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः सुमति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुमति मन्त्रतत्त्वज्ञ हुए। यह मन्त्र मन्त्रतत्त्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।२५ में उल्लिखित है।

७३. ॐ मधुसूदनाय नमः—इन्होंने मधुनामक दैत्य का संहार किया है, अतः इनका नाम 'मधुसूदन' है। अतएव भारत में—"कर्णमूलोद्भवं चापि मधुं नाम महासुरम्। ब्रह्मणोऽपचितिं कुर्वन् जघान पुरुषोत्तमः॥ तस्य तात वधादेव देवदानवमानवाः। मधुसूदन इत्याहुर्ऋषयश्च जनार्दनम्॥" कहा है। स्कन्दसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम शाकटायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाकटायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाकटायन परमजय तथा सुख को प्राप्त हुए। यह मन्त्र परमजय तथा सुख देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १।७ में सङ्केतित है।

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्॥२६॥

७४. ॐ ईश्वराय नमः—ये समर्थ हैं अर्थात् अपार भोगस्थान में भी इनकी इच्छा व्याहत नहीं होती, अतः इनका नाम 'ईश्वर' है। नारदपुराण के अनुसार सर्वप्रथम इन्द्रोत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इन्द्रोत इस मन्त्र के ऋषि हैं। शिवजी की आज्ञा से इसको जपने से इन्द्रोत मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।४१ में उल्लिखित है।

७५. ॐ विक्रमिणे नमः—ये विक्रम अर्थात् पराक्रमवाले हैं, अतः इनका नाम 'विक्रमी' है। सनत्कुमारसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम गोभिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गोभिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गोभिल को जय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र जयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१२।३६ में सङ्केतित है।

७६. ॐ धन्विने नमः—ये शार्ङ्गनामक धनुष सदा धारण किये रहते हैं, अतः इनका नाम 'धन्वी' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आङ्गिरसगोत्री सुधन्वा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुधन्वा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुधन्वा सबके रक्षक हुए। यह मन्त्र रक्षासामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।१४ में उल्लिखित है।

७७. ॐ मेधाविने नमः—ये मेधा अर्थात् सर्वज्ञता झलकानेवाली बुद्धि से सम्पन्न हैं, अतः इनका नाम 'मेधावी' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम गौतम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गौतम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गौतम धर्मशास्त्र के ज्ञाता रूप से त्रैलोक्यप्रसिद्ध हुए। यह मन्त्र धर्मशास्त्रज्ञता तथा त्रैलोक्यप्रसिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ५।३।११ में उल्लिखित है।

७८. ॐ विक्रमाय नमः—ये वि अर्थात् पक्षिराज गरुड़ पर सवार होकर घूमते हैं, अतः इनका नाम 'विक्रम' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सङ्कृतिगोत्री सुव्रत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुव्रत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुव्रत पराक्रमी हुए। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।४ में सङ्केतित है।

७९. ॐ क्रमाय नमः—ये लोकोत्तर विभूति से सबके मस्तक पर पाद-न्यासकर चमकते हैं, अर्थात् सबसे बढ़कर विभूतिमान् हैं, अतः इनका नाम 'क्रम' है। पद्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम लौगाक्षि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लौगाक्षि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लौगाक्षि को वैदिकसंहिता की क्रम नामक विकृति का ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र क्रमज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।९ में सङ्केतित है।

८०. ॐ अनुत्तमाय नमः—इनसे बढ़कर त्रिभुवन में कोई भी श्रेष्ठ नहीं है, अतः इनका नाम 'अनुत्तम' है। सुन्दरीमहोदयतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पिङ्गल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिङ्गल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिङ्गल आनन्दवान हुए। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३६।१४ में सङ्केतित है।

८१. ॐ दुराधर्षाय नमः—ये समुद्र के समान गम्भीर हैं, अतः कोई भी इनका धर्षण नहीं कर सकता है, इसलिए इनका नाम 'दुराधर्ष' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जनक राजा के पुरोहित शतानन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शतानन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शतानन्द आनन्दवान् हुए। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९२।१२ में सङ्केतित है।

८२. ॐ कृतज्ञाय नमः—ये भक्तों के किये सुकृत कर्मों को जानते हैं, अतः इनका नाम 'कृतज्ञ' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पाशधर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पाशधर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पाशधर जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।२७ में सङ्केतित है।

८३. ॐ कृतये नमः—भक्तों के हाथ से होनेवाले सम्पूर्ण सुकृत कर्म इन्हीं की कृपा से होते हैं, अतः इसका नाम 'कृति' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अर्वावसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अर्वावसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अर्वावसु कर्मबन्ध से मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

८४. ॐ आत्मवते नमः—ये अपने ही आधार से रहते हैं, अतः इनका नाम 'आत्मवान्' है। सिद्धसारस्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम माण्डव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माण्डव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माण्डव्य उत्तम सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद २०।९८।३ में सङ्केतित है।

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥२७॥

८५. ॐ सुरेशाय नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं के ईश अर्थात् फलदाता हैं, अतः इनका नाम 'सुरेश' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम पिप्पलायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिप्पलायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिप्पलायन ब्रह्मलोक को प्राप्त हुए। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९४।१३ में सङ्केतित है।

८६. ॐ शरणाय नमः—ये सब के रक्षक हैं, अतः इनका नाम 'शरण' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम त्रित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव त्रित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से त्रित को सब यज्ञों का फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।२ में सङ्केतित है।

८७. ॐ शर्मणे नमः—ये दुःख को तथा दुखोत्पादक कर्म को भी नष्ट करते हैं, अतः इनका नाम 'शर्म' है। माधवनामतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम श्वेतकेतु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्वेतकेतु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्वेतकेतु दिव्यज्ञानी हुए। यह मन्त्र दिव्यज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९४।१३ में उल्लिखित है।

८८. ॐ विश्वरेतसे नमः—ये प्रजा के ज्ञान तथा कर्म के लिए अपेक्षित ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रियरूपी विश्व को उत्पन्न करने में समर्थ तेजवाले हैं, अतः इनका नाम 'विश्वरेताः' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम क्रतु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्रतु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्रतु तीनों लोकों में सिद्ध हुए तथा सत्यलोक में गए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १४।२।३७ में सङ्केतित है।

८९. ॐ प्रजाभवाय नमः—सारी प्रजा इन्हीं के द्वारा दिए हुए पदार्थों को लेकर इनके समक्ष उपस्थित होती है, अतः इनका नाम 'प्रजाभव' है। गौरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम कात्यायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कात्यायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कात्यायन महादेवजी के प्रिय हुए। यह मन्त्र शिवप्रीतिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।३१ में सङ्केतित है।

९०. ॐ अह्ने नमः—ये अनादि अविद्यारूप निद्रा में अपना ज्ञान देने के कारण दिनरूप हैं, अतः इनका नाम 'अहः' है। ब्रह्मयामल के अनुसार सर्वप्रथम पर्वत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पर्वत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पर्वत को वर देने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वरप्रदानसामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १३।४।२९ में उल्लिखित है।

९१. ॐ संवत्सराय नमः—ज्ञानी भक्तों का उद्धार करने के उद्देश्य से ये उन भक्तों में निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'संवत्सर' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम संकृति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव संकृति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से संकृति सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९०।२ में सङ्केतित है।

९२. ॐ व्यालाय नमः—ये भक्तों को अभय देकर अपने में मिलाते हैं, अतः इनका नाम 'व्याल' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चन्द्रमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चन्द्रमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चन्द्रमा दीर्घायु, बोधवान् तथा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्य, बोध तथा जीवन्मुक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।१२ में सङ्केतित है।

९३. ॐ प्रत्ययाय नमः—ये अपने बारे में सबको विश्वस्त कराते हैं, अतः इनका नाम 'प्रत्यय' है। बृहद्गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम रथीतर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रथीतर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रथीतर सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५३।८ में सङ्केतित है।

९४. ॐ सर्वदर्शनाय नमः—ये भक्तों को अपना सब माहात्म्य दिखलाते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वदर्शन' है। शक्तिसङ्गम नामक ग्रन्थ के अनुसार सर्वप्रथम श्वेताश्वतर नामक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्वेताश्वतर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्वेताश्वतर सब सुख देनेवाले, सर्वदर्शन करानेवाले तथा ब्रह्मतत्त्वज्ञ हुए। यह मन्त्र सुखप्रद, सर्वदर्शनसामर्थ्यप्रद तथा ब्रह्मतत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।४३ मे सङ्केतित है।

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥२८॥

९५. ॐ अजाय नमः—ये अपनी प्राप्ति में भक्तों के सामने आनेवाले विघ्नों को हटाते हैं, अतः इनका नाम 'अज' है। जन्म न होने के कारण भी इनका नाम अज है। अतएव गीता में—"न जायते म्रियते वा" इत्यादि तथा महाभारत में "नहि जातो न जायेऽहं न जनिष्ये कदाचन। क्षेत्रज्ञः सर्वभूतानां तस्मादहमजः स्मृतः॥" कहा है। काकभुशुण्डिरामायण के अनुसार सर्वप्रथम सुतीक्ष्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुतीक्ष्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुतीक्ष्ण सुन्दर विज्ञान प्राप्त कर सिद्ध हुए। यह मन्त्र विज्ञानप्रद तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।३५।१३ में उल्लिखित है।

९६. ॐ सर्वेश्वराय नमः—ये अपने शरणागत भक्तों के वैरूप्य का नाश करने के लिए भक्तों को व्याप्त करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वेश्वर' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम आपस्तम्ब ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आपस्तम्ब इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आपस्तम्ब वेदार्थतत्त्वज्ञ हुए। यह मन्त्र वेदार्थतत्त्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

९७. ॐ सिद्धाय नमः—ये भक्तों के लिए सदा तत्पर रहते हैं, अतः इनका नाम सिद्ध है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कर्दमपुत्र कपिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कपिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कपिल सिद्धरूप हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३२ सङ्केतित है।

९८. ॐ सिद्धयै नमः—ये नानाप्रकार के उपायों से भक्तों द्वारा साधित किए जाते हैं, अतः इनका नाम 'सिद्धि' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम असितदेवल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव असितदेवल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से असितदेवल सिद्धाग्रणी हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत ११।५।३-९ में उल्लिखित है।

९९. ॐ सर्वादये नमः—ये सभी पुरुषार्थों के आदि अर्थात् मूल हैं, अतः इनका नाम 'सर्वादि' है। नारदपुराण के अनुसार सर्वप्रथम मैत्रेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मैत्रेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मैत्रेय को परमसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।९ में उल्लिखित है।

१००. ॐ अच्युताय नमः—ये भक्तों के लिए कभी भी अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अच्युत' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम महाशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महाशिरा को सर्वसिद्धियाँ प्राप्त हुईं तथा वे सिद्धों में अग्रणी हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत १०।५।२२ में उल्लिखित है।

१०१. ॐ वृषाकपये नमः—ये भक्तों के मनोरथों की वृष्टि करते हैं तथा भक्तों के क्लेशों को दूर करते हैं, अतः इनका नाम 'वृषाकपि' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम बभ्रु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बभ्रु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अपुत्र बभ्रु पुत्रवान् एवं सर्वज्ञ हुए, और उनके पुत्र भी सर्वज्ञ हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद एवं ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र महाभा० शा० प० ३४२।८९ में उल्लिखित है।

१०२. ॐ अमेयात्मने नमः—इनका स्वरूप ऐसा ही है तथा इतना ही है, ऐसा ज्ञान किसी को भी न हो सकने के कारण ये महत्तम हैं, अतएव इनका नाम 'अमेयात्मा' है। इसी लिए भागवत में "न चान्तर्न बहिर्यस्य न पूर्वं नापि चापरम्। पूर्वापर बहिश्चान्तर्जगतो यो जगच्च यः। तद्दामबध्यमानस्य स्वार्भकस्य कृतागसः। द्व्यङ्गुलोनमभूत्तेन संदधेऽन्यच्च गोपिका॥ यदाऽऽसीत्त-दपि न्यूनं तेनान्यदपि संदधे। तदपि द्व्यङ्गुलं न्यूनं यद् यदादत्त बन्धनम्॥" कहा है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वसिष्ठ के पुत्र शक्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शक्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शक्ति को उन्नति एवं सम्मान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र उन्नति तथा सम्मानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९२।१४ में संकेतित है।

१०३. ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः—ये सभी उपायों से प्राप्त होते हैं, अतएव इनका नाम 'सर्वयोगविनिःसृत' है। शैवागम के अनुसार सर्व-प्रथम बौधायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बौधायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बौधायन को परम सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र परमसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥२९॥

१०४. ॐ वसवे नमः—ये भक्तों में अतिप्रीति से निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'वसु' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम विभाण्डक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विभाण्डक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको

जपने से विभाण्डक को ऋष्यशृङ्ग तेजस्वी पुत्र प्राप्त हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।४४।२४ में उल्लिखित है।

१८५. ॐ वसुमनसे नमः—इनका मन भक्तों में उसी प्रकार लगा रहता है जिस प्रकार लोगों का मन वसु अर्थात् धन में लगा रहता है, अतः इनका नाम 'वसुमनाः' है। शैवागमतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसु पर भगवान् प्रसन्न हुए। यह मन्त्र भगवत्प्रसादप्रदायक है। यह मन्त्र महाभारतशान्तिपर्व में राजधर्म-प्रकरण में उल्लिखित है।

१०६. ॐ सत्याय नमः—ये सन्तों के बड़े हितकारी हैं, अतः इनका नाम 'सत्य' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम कौण्डिन्य ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव कौण्डिन्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौण्डिन्य परमसिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र परमसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १४।१।१ में उल्लिखित है।

१०७. ॐ समात्मने नमः—ऊँच-नीच सभी प्रकार के भक्तों में इनका मन समानरूप से लगा रहता है, अतः इनका नाम 'समात्मा' है। शिवतन्त्रसर्वस्व के अनुसार सर्वप्रथम धूमप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धूमप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धूमप कामक्रोधादि विकारों से रहित हुए एवं उन्हें भगवत्पद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्पदप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४३ में सङ्केतित है।

१०८. ॐ सम्मिताय नमः—ये भक्तों द्वारा अपनी भक्ति के अधीनरूप से नापे गये हैं, अतः इनका नाम 'सम्मित' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मौनभार्गव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मौनभार्गव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मौनभार्गव सब पापों से मुक्त होकर सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र पापहारक तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १३।४।२० में सङ्केतित है।

१०९. ॐ समाय नमः—ये सभी भक्तों के प्रति समान गौरव रखते हैं, अतः इनका नाम 'सम' है। शिवसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यह नाममन्त्र भृगुगोत्री कर्कश ऋषि ने जपा है, अतएव भृगुगोत्री कर्कश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्कश को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।७ में सङ्केतित है।

११०. ॐ अमोघाय नमः—इनका दर्शन कभी भी निष्फल नहीं होता है, इसलिए इनका नाम 'अमोघ' है। विष्णुतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम कश्यपगोत्र

शङ्कुशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्कुशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्कुशिरा पुत्रवान् हुए तथा उन्हें स्वर्ग-प्राप्ति हुई। यह मन्त्र पुत्रप्रद तथा स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३७।२ में सङ्केतित है।

१११. ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः—ये पुण्डरीक अर्थात् वैकुण्ठवासी लोगों की आँख हैं, अतः इनका नाम 'पुण्डरीकाक्ष' है। पद्मपुराण में कहा है—

"पुण्डरीकं परं धाम नित्यमक्षरमव्ययम्।
तद्भतानामक्षिभूतः पुण्डरीकाक्ष ईरितः॥"

तन्त्रभागवत के अनुसार सर्वप्रथम गार्ग्य (गर्गगोत्री) विशाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विशाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विशाल परमसिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४३ में सङ्केतित है।

११२. ॐ वृषकर्मणे नमः—ये वृष अर्थात् धर्मरूप कर्मवाले हैं, अतः इनका नाम 'वृषकर्मा' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम लुगाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लुगाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। भृगु ऋषि की उक्ति है—

"लुगाक्षो नाम राजेन्द्र ऋषिः ख्यातो महातपाः।
वृषकर्मेति विख्यातं गायन् विष्णुमहर्निशम्॥
लौगाक्षिं पुत्रमापेदे कर्मतत्त्वज्ञमुत्तमम्॥"

इसको जपने से उनको कर्मतत्त्वज्ञ लौगाक्षि पुत्र प्राप्त हुआ। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

११३. ॐ वृषाकृतये नमः—ये सदा धर्मरूप आकृतिवाले हैं तथा धर्म के लिए आकृति ग्रहण करनेवाले हैं। अतएव—"धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥' यह भगवद्वचन है। इसी लिए इनका नाम 'वृषाकृति' है। ब्रह्मयामल के अनुसार सर्वप्रथम तत्त्वदृष्टि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तत्त्वदृष्टि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तत्त्वदृष्टि ऋषि तत्त्वज्ञ हुए। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।५ में सङ्केतित है।

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥३०॥

११४. ॐ रुद्राय नमः—ये अपनी अद्भुत लीलाएँ दिखाकर भक्तों के नेत्रों में आनन्दाश्रु उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'रुद्र' है। अतएव

शिवपुराण में—"रु दुःखं दुःखहेतुर्वा तद् द्रावयति यः प्रभुः ।
रुद्र इत्युच्यते तस्माच्छिवः परमकारणम् ॥" कहा है ।

माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सर्पमाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सर्पमाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सर्पमाली पाप तथा दुःख से मुक्त हुए। यह मन्त्र पाप तथा दुःख का नाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।१ में उल्लिखित है।

११५ ॐ बहुशिरसे नमः—शेषनाग का रूप धारण करने से इन्हें अनेक फणाएँ हैं, अतः इनका नाम 'बहुशिराः' है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सत्यतपा ऋषि ने यह नाम मन्त्र जपा है, अतएव सत्यतपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्यतपा को सर्वज्ञत्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सर्वज्ञत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१। १ में सङ्केतित है।

११६. ॐ बभ्रवे नमः—ये प्रभु अनन्त का रूप ग्रहण कर पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'बभ्रु' है। ब्रह्माण्डपुराण में कहा है—धत्ते भुवमनन्तः सन् विष्णुर्यस्मात्ततो ह्यसौ। बभ्रुरित्येव विख्यातो भगवान् भुवनत्रये ॥" गौरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम मरीचि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मरीचि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मरीचि पुत्रवान् हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

११७. ॐ विश्वयोनये नमः—ये अपने सब भक्तों को अपने तेज में मिलाते हैं, अतः इनका नाम 'विश्वयोनि' है। शिवतत्त्वतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गविजात ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गविजात इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गविजात ज्ञानवान् तथा हरिभक्त हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद तथा हरिभक्तिप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

११८. ॐ शुचिश्रवसे नमः—ये भक्तों द्वारा कही गई पवित्र बातों को सुनते हैं, अतः इनका नाम 'शुचिश्रवाः' है। लिङ्गपुराण के अनुसार सर्वप्रथम श्वेत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्वेत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्वेत ने काल को जीता तथा काल के भी काल हुए। यह मन्त्र अपमृत्युहारक है। यह मन्त्र महाभारत शान्तिपर्व के मोक्षधर्मप्रकरण में उल्लिखित है।

११९. ॐ अमृताय नमः—ये भक्तों के जरा और मरण को सदा दूर कर देते हैं तथा इनके पास मरण कभी भी नहीं आता है, अतः इनका नाम 'अमृत' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बकदाल्भ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बकदाल्भ्य इस मन्त्र के ऋषि है। इसको जपने से बकदाल्भ्य जरा-मरण से रहित हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में उल्लिखित है।

१२० ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः—ये सदा स्थिर रहते हैं, अतः इनका नाम 'शाश्वतस्थाणु' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम प्रमति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रमति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रमति सदा धर्मतत्पर हुए। यह मन्त्र धर्म में लगानेवाला है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१२१. ॐ वरारोहाय नमः—इनके धाम में जाने पर साधक को लौटना नहीं पड़ता है, अतः इनका नाम 'वरारोह' है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वेदशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेदशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वेदशिरा जीवन्मुक्त तथा भक्त हुए। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

१२२. महातपसे नमः—इनका महान् तप संसार के श्रम का नाश करनेवाला है, अतः इनका नाम 'महातपाः' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कठ ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद तथा आर्तिनाशक है। यह मन्त्र वाराहपुराण में उल्लिखित है।

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविद्व्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥३१॥

१२३. ॐ सर्वगाय नमः—ये प्रलयकाल में संहार किये हुए सब जीवों को धारण करते हुए चलते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वग' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सवन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सवन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सवन को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।५ में उल्लिखित है।

१२४. ॐ सर्वविद्भानवे नमः—ये सारे ब्रह्माण्ड की रचना करने के बाद भी निर्विकार रहते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वविद्भानु' है। अतएव—"तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्।" तथा "यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।" कहा है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वैशम्पायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैशम्पायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वैशम्पायन ज्ञानी हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१२५. ॐ विष्वक्सेनाय नमः—इनके सभी भक्त इनके पास सदा सनाथ होकर रहते है, अतः इनका नाम 'विष्वक्सेन' है। सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम तित्तिरि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तित्तिरि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तित्तिरि महातेजस्वी तथा महातपस्वी हुए।

यह मन्त्र तेजःप्रद तथा तपःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।२६।४ में सङ्केतित है।

१२६ ॐ जनार्दनाय नमः—ये अकेले ही सब दस्यु एवं दुष्ट जनों को पीड़ित करते हैं, अतः इनका नाम 'जनार्दन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विराज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः विराज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विराज सभी सुखों के भोक्ता हुए। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

१२७. ॐ वेदाय नमः—ये सब वेद, शास्त्र आदि ज्ञानरूप हैं, अतः इनका नाम 'वेद' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम अप्सुहोत्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अप्सुहोत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अप्सुहोत्र वेदज्ञों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्ड-पुराण में उल्लिखित है।

१२८. ॐ वेदविदे नमः—ये अङ्ग, विकृति, अर्थ आदि से युक्त सभी वेदों को जानते हैं, अतएव इनका नाम 'वेदविद्' है। अतएव गीता में "वेदान्तकृद् वेदविदेव चाहम्"। तथा भारत में "सर्वे वेदाः सर्ववेद्याः सशाखाः सर्वे यज्ञाः सर्व इज्याश्च कृष्णः। विदुः कृष्णं ब्राह्मणास्तत्त्वतो ये तेषां राजन् सर्वयज्ञाः समाप्ताः ॥" कहा है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम धौम्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धौम्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धौम्य वेदज्ञ हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

१२९ ॐ अव्यङ्गाय नमः—ये शिक्षा, व्याकरण आदि वेदाङ्गों से कभी रहित नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अव्यङ्ग' है। विष्णुतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम शुनक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शुनक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शुनक अङ्गसहित सब वेदों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१३०. ॐ वेदाङ्गाय नमः—सम्पूर्ण वेद इनका शरीर है, अतः इनका नाम 'वेदाङ्ग' है। सांख्यायनतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दामोष्णीष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दामोष्णीष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दामोष्णीष वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ तथा लोकपूजित हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गतत्त्वप्रद तथा लोकपूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३३ में सङ्केतित है।

१३१. ॐ वेदविदे नमः—ये सदा वेदोक्त धर्म को आचरण के द्वारा करते हैं, अतः इनका नाम 'वेदवित्' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम

उग्रवेग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्रवेग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उग्रवेग धर्मात्मा हुए। यह मन्त्र धर्मप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

१३२. ॐ कवये नमः—ये सदा सभी वस्तुओं को देखते रहते हैं, अतः इनका नाम 'कवि' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पर्णाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पर्णाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पर्णाद काव्यग्रन्थों के रचयिता हुए। यह मन्त्र काव्यरचना का सामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में उल्लिखित है।

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥३२॥

१३३. ॐ लोकाध्यक्षाय नमः—ये धर्म के अधिकारी जनों के स्वामी अर्थात् फलदाता हैं, अतः इनका नाम 'लोकाध्यक्ष' है। सुन्दरी-महोदय के अनुसार सर्वप्रथम महातपा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महातपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महातपा लोकप्रसिद्ध तथा धर्मपरायण हुए। यह मन्त्र लोकप्रसिद्धि तथा धर्मपरायणता देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।२२ में सङ्केतित है।

१३४. ॐ सुराध्यक्षाय नमः—ये सुर अर्थात् सात्त्विक भक्तों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'सुराध्यक्ष' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शिलाद ऋषि के यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शिलाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिलाद पुत्रवान् हुए। यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१३५. ॐ धर्माध्यक्षाय नमः—ये भगवत्प्राप्ति के लिए विहित धर्म के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'धर्माध्यक्ष' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम मौञ्जायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मौञ्जायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मौञ्जायन को तपोलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तपोलोक प्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४ में सङ्केतित है।

१३६. ॐ कृताकृताय नमः—संसार का प्रवर्तक तथा निवर्तक—दोनों प्रकार का धर्म इनका रूप है, अतः इनका नाम 'कृताकृत' है। तन्त्राराधनतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम घटजानुक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव घटजानुक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घटजानुक को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।२२ में सङ्केतित है।

१३७. ॐ चतुरात्मने नमः—सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय के कारणभूत इनके पृथक् पृथक् चार रूप हैं। इनमें से सृष्टि के कारणभूत इनके चार रूप ये हैं—१ ब्रह्मा, २ दक्षादि प्रजापति, ३ काल तथा ४ अखिल प्राणी। स्थिति के कारणभूत इनके चार रूप ये हैं—१ विष्णु, २ मन्वादि प्रजापति, ३ काल तथा ४ अखिल प्राणी। प्रलय के कारणभूत चार रूप ये हैं—१ रुद्र, अन्तकादि प्रजापति, ३ काल तथा ४ अखिल प्राणी। अतएव विष्णुपुराण में—"ब्रह्मा दक्षादयः कालः तथैवाखिलजन्तवः। विभूतयो हरेरेता जगतः सृष्टिहेतवः॥ विष्णुर्मन्वादयः कालः सर्वभूतानि च द्विज। स्थितेर्निमित्तभूतस्य विष्णोरेता विभूतयः॥ रुद्रः कालोऽन्तकाद्याश्च समस्ताश्चैव जन्तवः। चतुर्धा प्रलयायैता जनार्दनविभूतयः॥" कहा है। अतः इनका नाम 'चतुरात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ऊर्ध्वबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऊर्ध्वबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऊर्ध्वबाहु जितेन्द्रिय तथा सुखी हुए और देहत्याग के बाद सत्यलोक को प्राप्त हुए। यह मन्त्र जितेन्द्रियत्व तथा सुख देनेवाला एवं सत्यलोकप्रापक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।११ में सङ्केतित है।

१३८. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः—वासुदेव, प्रद्युम्न, सङ्कर्षण तथा अनिरुद्ध ये चार इनके व्यूह अर्थात् मूर्तिभेद हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्व्यूह' है। अतएव व्यासजी ने—"व्यूह्याऽऽत्मानं चतुर्धा वै वासुदेवादिमूर्तिभिः। सृष्ट्यादीन् प्रकरोत्येष विश्रुतात्मा जनार्दनः॥" कहा है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महोदर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महोदर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महोदर ज्ञानविज्ञानसम्पन्न हुए। यह मन्त्र ज्ञान-विज्ञानप्रद है। यह मन्त्र महाभारत में उल्लिखित है।

१३९. ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः—इन्हें महापुरुषों की सामुद्रिक सुलक्षणरूप चार दाढ़ें हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्दंष्ट्र' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम शिनीवाक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शिनीवाक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिनीवाक को देवदुर्लभ सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र देवदुर्लभसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भगवद्गीता ११।२५ में उल्लिखित है।

१४०. ॐ चतुर्भुजाय नमः—इनकी चार भुजाएँ हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्भुज' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम जातूकर्ण्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जातूकर्ण्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जातूकर्ण्य शान्त तथा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र शान्तिप्रद एवं जीवन्मुक्तिप्रद भी है। यह यजुर्वेद ३१।१० में सङ्केतित है।

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥३३॥

१४१. ॐ भ्राजिष्णवे नमः—ये अपने भक्तों के समक्ष चमकते हैं, अतः इनका नाम 'भ्राजिष्णु' है । वृहन्नारदीयपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आश्वलायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आश्वलायन इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से आश्वलायन को विद्याएँ प्रकाशित हुईं तथा सिद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र विद्याप्रद तथा सिद्धिप्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद २३।४८ में सङ्केतित है ।

१४२. ॐ भोजनाय नमः—भक्तों को इनका सुख से भोग अर्थात् अनुभव होता है, अतः इनका 'भोजन' है । माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुमित्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः सुमित्र इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से सुमित्र को भोजन तथा भोगसिद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र भोजन-प्रद तथा भोगसिद्धिप्रद है । यह मन्त्र ऋग्वेद १०।४८।१ में उल्लिखित है ।

१४३. ॐ भोक्त्रे नमः—ये भक्तों द्वारा श्रद्धापूर्वक समर्पित भोज्य वस्तुओं को प्रेमपूर्वक ग्रहण तथा उपभुक्त करते हैं, अतः इनका नाम 'भोक्ता' है । सौभाग्यतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कश्यपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कश्यपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कश्यपाल को भोग प्राप्त हुआ । यह मन्त्र भोगप्रद है । यह मन्त्र अथर्ववेद १२।३।४८ में सङ्केतित है ।

१४४. ॐ सहिष्णवे नमः—ये भक्तकृत सभी अपराधों को सहन करते हैं, अतः इसका नाम 'सहिष्णु' है । अग्निपुराण के अनुसार सर्वप्रथम व्याघ्र-पाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव व्याघ्रपाद इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से व्याघ्रपाद को सुन्दर सिद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र सिद्धि-प्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद १९।९ में सङ्केतित है ।

१४५. ॐ जगदादिजाय नमः—ये जगत् के कारणभूत ब्रह्मा के भी आदि कारण हैं, अतः इसका नाम 'जगदादिज' है । माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महाबल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाबल इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से महाबल सिद्ध हुए । यह मन्त्र सिद्धिप्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद १३।३ में सङ्केतित है ।

१४६. ॐ अनघाय नमः—संसार में अवताररूप से उत्पन्न होनेपर भी इनमें थोड़ा भी पाप नहीं रहता, अतः इसका नाम 'अनघ' है । ब्रह्माण्ड-पुराण के अनुसार सर्वप्रथम शिखावान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव

शिखावान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिखावान् निष्पाप हुए। यह मन्त्र पापहारक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

१४७. ॐ विजयाय नमः—इन्हीं के कारण प्रह्लादादि भक्तों को विजय प्राप्त होती है, अतः इनका नाम 'विजय' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम कुसीद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुसीद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुसीद विजय को प्राप्त हुए। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ८।८।२४ में उल्लिखित है।

१४८. ॐ जेत्रे नमः—ये ब्रह्मा तथा रुद्र को भी जीत कर अपने वश में रखते हैं, अतः इनका नाम 'जेता' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महाभाग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाभाग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महाभाग को इन्द्रियजय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र जयप्रद है। यह मन्त्र भृगुसंहिता में उल्लिखित है।

१४९. ॐ विश्वयोनये नमः—ये ब्रह्मादि अखिल जगत् के कारण हैं, अतः इनका नाम 'विश्वयोनि' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जङ्गम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जङ्गम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इस मन्त्र को जपने से जङ्गम को भगवत्प्रसाद तथा मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र भगवत्प्रसादप्रद तथा मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में उल्लिखित है।

१५०. ॐ पुनर्वसवे नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं में भी अन्तरात्मा के रूप से निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'पुनर्वसु' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम पारिजात ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पारिजात इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पारिजात को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९०।३ में सङ्केतित है।

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः।
अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥३४॥

१५१. ॐ उपेन्द्राय नमः—ये इन्द्र के छोटे भाई हैं, अतः इनका नाम 'उपेन्द्र' है। हरिवंश में—"ममोपरि यथेन्द्रस्त्वं स्थापितो गोभिरीश्वरः। उपेन्द्र इति कृष्ण त्वां गास्यन्ति भुवि देवताः॥" कहा है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुबल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुबल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुबल को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।३४।२ में उल्लिखित है।

१५२. ॐ वामनाय नमः—इन्होंने इन्द्र के रक्षण के लिए बलि के यज्ञ में जाकर देखनेवालों को सुख प्राप्त कराया, अतः इनका नाम 'वामन' है।

विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कोपवेग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कोपवेग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कोपवेग को सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।३० में उल्लिखित है।

१५३. ॐ प्रांशवे नमः—ये राजा बलि के यज्ञ में एकाएक विराट् रूप-वाले हुए, अतः इनका नाम 'प्रांशु' है। अतएव हरिवंश में—"तोये तु पतिते हस्ते वामनोऽभूदवामनः। सर्वदेवमयं रूपं दर्शयामास वै प्रभुः॥ भूः पादौ द्यौः शिरश्चास्य चन्द्रादित्यौ च चक्षुषी। तस्य विक्रमतो भूमिं चन्द्रादित्यौ स्तनान्तरे। नभः प्रक्रममाणस्य नाभ्यां तौ समवस्थितौ। दिवमाक्रममाणस्य जानुमूले व्यवस्थितौ॥" कहा है। शिवतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम जङ्घाबन्धु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जङ्घाबन्धु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जङ्घाबन्धु त्रैलोक्यप्रसिद्ध हुए। यह मन्त्र त्रैलोक्यप्रसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ७।९ में सङ्केतित है।

१५४. ॐ अमोघाय नमः—ये बलि तथा इन्द्र को कृतार्थ करने के कारण अव्यर्थप्रभाववाले हैं, अतएव इनका नाम 'अमोघ' है। गौरीमहोदय-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हरिपाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हरिपाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हरिपाद को किसी भी वस्तु की कमी नहीं हुई। यह मन्त्र अभीष्टवस्तुप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३८।२६ में सङ्केतित है।

१५५. ॐ शुचये नमः—ये प्रत्युपकार की अपेक्षा रखे विना उपकार करते हैं, अतः इनका नाम 'शुचि' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम विष्णुवृद्ध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विष्णुवृद्ध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विष्णुवृद्ध शुद्ध हुए। यह मन्त्र शुद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।४१ में सङ्केतित है।

१५६. ॐ ऊर्जिताय नमः—ये शत्रुओं के वध, बन्धन आदि करने में बड़े बलवान् हैं, अतः इनका नाम 'ऊर्जित' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम बभ्रुमाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बभ्रुमाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बभ्रुमाली राजयक्ष्मा से मुक्त होकर बलवान् हुए। यह मन्त्र राजयक्ष्मा का नाशक तथा बलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४।१५ में उल्लिखित है।

१५७. ॐ अतीन्द्राय नमः—ये इन्द्र के छोटे भाई होने पर भी इन्द्र से अधिक शक्तिशाली हैं, अतः इनका नाम 'अतीन्द्र' है। भुवनेश्वररहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वेणुजङ्घ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेणुजङ्घ

इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वेणुजङ्घ को सर्वत्र जय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र जयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।३।६ में सङ्केतित है।

१५८. ॐ सङ्ग्रहाय नमः—भक्त लोग इन्हें अनायास ही पकड़ लेते हैं, अतः इनका नाम 'सङ्ग्रह' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम जर्जर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जर्जर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जर्जर को सब विद्याओं का सङ्ग्रह प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सर्वविद्याप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।१०१।४ में सङ्केतित है।

१५९. ॐ सर्गाय नमः—इनके द्वारा ब्रह्मादि देवताओं को अपना स्वरूप दिये जाने से ब्रह्मादि देवता अपने इच्छानुसार इन्हें उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्ग' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम कृश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृश को ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र दिव्यज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

१६०. ॐ धृतात्मने नमः—इन्होंने अपने को देकर सब जीवात्माओं को धारण कर रक्खा है, अतः इनका नाम 'धृतात्मा' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कणाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कणाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कणाद धृतात्मा हुए तथा उनका मन विष्णु में ही संलग्न हुआ। यह मन्त्र विष्णुभक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४ में सङ्केतित है।

१६१. ॐ नियमाय नमः—इनके द्वारा बलि राजा आदि दैत्य तथा सम्पूर्ण जगत् नियमित किया जाता है, अतः इनका नाम 'नियम' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम संवर्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव संवर्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से संवर्त सर्वनियामक हुए। यह मन्त्र सर्वनियामकत्वशक्तिप्रदान करता है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

१६२. ॐ यमाय नमः—ये सभी देहधारियों के हृदय में स्थित होकर सभी को प्रेरणा देते हैं, अतः इनका नाम 'यम' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कक्षीवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कक्षीवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कक्षीवान् को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १८।२।३२ में उल्लिखित है।

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥३५॥

१६३. ॐ वेद्याय नमः—इनका माहात्म्य लोकप्रसिद्ध होने से ये सब-के द्वारा जाने जा सकते हैं, अतः इनका नाम 'वेद्य' है। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार सर्वप्रथम औशिज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औशिज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औशिज विद्यावान् तथा सर्वज्ञ हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद तथा सर्वज्ञत्वप्रदायक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।३।४ में उल्लिखित है।

१६४. ॐ वैद्याय नमः—ये भक्तों के संसाररूपी रोग की नाशिका विद्या को जानते हैं, अतः इनका नाम 'वैद्य' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम कुत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुत्स सब विद्याओं के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ७।४३ में सङ्केतित है।

१६५. ॐ सदायोगिने नमः—ये निरन्तर जागते हैं तथा योग साधते हैं, अतः इनका नाम 'सदायोगी' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शाण्डिल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाण्डिल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाण्डिल्य को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४ में सङ्केतित है।

१६६. ॐ वीरघ्ने नमः—ये अपने को न माननेवाले नास्तिक वीरों को मार डालते हैं, अतः इनका नाम 'वीरहा' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम करालदन्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव करालदन्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से करालदन्त को नास्तिकों पर विजय प्राप्त हुई। यह मन्त्र नास्तिकों पर विजय देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।१६ में सङ्केतित है।

१६७. ॐ माधवाय नमः—ये मा अर्थात् परविद्या के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'माधव' है। अतः हरिवंश में—"मा विद्या च हरेः प्रोक्ता तस्या ईशो यतो भवान्। तस्मान्माधवनामासि धवः स्वामीति शब्दितः॥" कहा है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वाराह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वाराह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाराह को तपःसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र तपःसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र हरिवंश ३।८८।४९ में उल्लिखित है।

१६८. ॐ मधवे नमः—ज्ञानियों को इनका स्वाद मधु के समान लगता है, अतः इनका नाम 'मधु' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शमठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शमठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शमठ के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापहारक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४।९ में सङ्केतित है।

१६९. ॐ अतीन्द्रियाय नमः—ये इन्द्रियों के विषय न हो सकने से इन्द्रियों का अतिक्रमण कर रहते हैं, अतः इनका नाम 'अतीन्द्रिय' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वरेण्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः वरेण्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वरेण्य भगवान् के कृपापात्र हुए। यह मन्त्र भगवत्कृपाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।४ में सङ्केतित है।

१७०. ॐ महामायाय नमः—ये अपने शरण में न आनेवालों को मोहित करनेवाली महाबलवती मायावाले हैं, अथवा बड़े दयालु हैं, अतः इनका नाम 'महामाय' है। शैवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गविष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः गविष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गविष्ठ चिरकाल तक योगी तथा माया को जीतनेवाले हुए। यह मन्त्र योगप्रद तथा मायाजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३८।९ में सङ्केतित है।

१७१. ॐ महोत्साहाय नमः—ये बड़े भारी उत्साहवाले हैं, अतः इनका नाम 'महोत्साह' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम कालक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालक महोत्साही तथा नीतिशास्त्रज्ञ हुए। यह मन्त्र महोत्साहप्रद है तथा नीतिशास्त्रज्ञता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९.९ में सङ्केतित है।

१७२. ॐ महाबलाय नमः—ये किसी की भी अपेक्षा बिना रखे अपरिमित क्रिया करने पर भी श्रम का अनुभव नहीं करते हैं, अतः इनका नाम 'महाबल' है। ब्रह्मयामल के अनुसार सर्वप्रथम कर्कट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः कर्कट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्कट महान् बलशाली हुए। यह मन्त्र महाबलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१६।७ में सङ्केतित है।

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक्॥ ३६॥

१७३. ॐ महाबुद्धये नमः—इनकी बुद्धि बहुत बड़ी अर्थात् सर्वज्ञरूपा है, अतः इनका नाम 'महाबुद्धि' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम मेधातिथि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मेधातिथि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मेधातिथि को सुबुद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुबुद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।७ में सङ्केतित है।

१७४. ॐ महावीर्याय नमः—इनका पराक्रम महान् अर्थात् अविकारी रूपवाला है, अतः इनका नाम 'महावीर्य' है। परमानन्दतन्त्र

के अनुसार सर्वप्रथम श्रृङ्गी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः श्रृङ्गी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्रृङ्गी महान् पराक्रमी हुए। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१० में सङ्केतित है।

१७५. ॐ महाशक्तये नमः–ये बड़े सामर्थ्यशाली हैं, अतः इनका नाम 'महाशक्ति' है। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार सर्वप्रथम परावसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव परावसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से परावसु महाशक्तिमान् हुए। यह मन्त्र महाशक्तिप्रद है। यह मन्त्र नारदपुराण में उल्लिखित है।

१७६. ॐ महाद्युतये नमः—इनका तेज किसी की भी आवश्यकता न रखनेवाला है, अतः इनका नाम 'महाद्युति' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम माठर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माठर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माठर महाद्युतिमान् हुए। यह मन्त्र महाद्युतिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१७७. ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः—इनका शरीर अथवा स्वरूप निरूपण के योग्य नहीं है, अतः इनका नाम 'अनिर्देश्यवपुः' है। शिवतत्त्वविवेक के अनुसार सर्वप्रथम कलाप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः कलाप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कलाप को लोकोत्तर तेज प्राप्त हुआ। यह मन्त्र लोकोत्तरतेजःप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

१७८. ॐ श्रीमते नमः—इनके पास दिव्य भूषण की सम्पत्ति सदा रहती है, अतः इनका नाम 'श्रीमान्' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम शातातप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः शातातप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शातातप श्रीमान् हुए। यह मन्त्र सम्पत्तिप्रद है। यह मन्त्र महाभारत में उल्लिखित है।

१७९. ॐ अमेयात्मने नमः—इनका आत्मा याने स्वभाव अथाह है, अतः इनका नाम 'अमेयात्मा' है। लिङ्गपुराण के अनुसार सर्वप्रथम गौरमुख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गौरमुख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गौरमुख दुःखमुक्त तथा ज्ञानवान् हुए। यह मन्त्र दुःखहारक तथा ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र शिवपुराण में उल्लिखित है।

१८०. ॐ महाद्रिधृषे नमः—इनका सामर्थ्य गोवर्धन तथा मन्दर पर्वत को धारण करनेवाला है, अतः इनका नाम 'महाद्रिधृक्' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कण्व ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः कण्व इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कण्व महाबुद्धिमान् हुए। यह मन्त्र महाबुद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥३७॥

१८१. ॐ महेष्वासाय नमः—ये शार्ङ्गनामक महान् धनुष धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'महेष्वास' है । तन्त्रसिद्ध के अनुसार सर्वप्रथम शङ्ख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्ख इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से शङ्ख को सिद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र सिद्धिप्रद है । यह मन्त्र नारद-पुराण में उल्लिखित है ।

१८२. ॐ महीभर्त्रे नमः—ये पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'महीभर्ता' है । शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम शिवशर्मा ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव शिवशर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से शिवशर्मा को सिद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र सिद्धिप्रद है । यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है ।

१८३. ॐ श्रीनिवासाय नमः—ये समुद्र-मन्थन से प्रकट हुई श्री अर्थात् लक्ष्मी के निवास हैं, अतः इनका नाम 'श्रीनिवास' है । लक्ष्मीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवहव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवहव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको १००० वर्ष जपने से देवहव्य कुवेर के समान धनी हुए । यह मन्त्र धनप्रद है । यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है ।

१८४. ॐ सतां गतये नमः—ये सदा नम्र सज्जनों को प्राप्त होते हैं, अतः इनका नाम 'सतां गति' है । वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सत्यवादी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्यवादी इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से सत्यवादी सद्गति को प्राप्त हुए । यह मन्त्र सद्गतिप्रद है । यह मन्त्र वामनपुराण में उल्लिखित है ।

१८५. ॐ अनिरुद्धाय नमः—इनकी चेष्टा बहुत काल तक आयुष्य बढ़ानेवाली होने से ये कहीं भी रुकते नहीं हैं, अतः इनका नाम 'अनिरुद्ध' है । शङ्करतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आश्राव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आश्राव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से आश्राव्य योग में न रोकी जा सकनेवाली गति को प्राप्त हुए । यह मन्त्र अनिरुद्धगति देनेवाला है । यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है ।

१८६. ॐ सुरानन्दाय नमः—ये सब देवताओं को आनन्द देते हैं, अतः इनका नाम 'सुरानन्द' है । शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कच ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कच इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कच देवताओं से पूजित हुए । यह मन्त्र देवपूजितत्व देनेवाला है । यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है ।

१८७. ॐ गोविन्दाय नमः—ये देवताओं द्वारा की जानेवाली स्तुतिरूप वाणी को प्राप्त करते हैं, अतः इनका नाम 'गोविन्द' है। अतएव महाभारत में "नष्टां वै धरणीं पूर्वमविन्दं यद् गुहागताम्। गोविन्द इति तेनाहं देवैर्वाग्भिरभिष्टुतः॥" तथा हरिवंश में भी—"अहं किलेन्द्रो देवानां त्वं गवामिन्द्रतां गतः। गोविन्द इति लोकास्त्वां स्तोष्यन्ति भुवि शाश्वतम्॥" कहा है। "गौरेषा तु यतो वाणी तां च विन्दयते भवान्। गोविन्दस्तु ततो देवमुनिभिः कथ्यते भवान्॥" यह भी सूक्ति हरिवंश में है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम वृषाकपि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृषाकपि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृषाकपि निष्पाप हुए। यह मन्त्र पापहारक है। यह मन्त्र महाभारत शान्तिपर्व ३४२।७० में उल्लिखित है।

१८८. ॐ गोविदां पतये नमः—ये वेदवाणी को जाननेवाले सभी वेदज्ञों के पालक हैं, अतः इनका नाम 'गोविदां पति' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम हिरण्यद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हिरण्यद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हिरण्यद वेदज्ञों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र वेदज्ञता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ९।१ में सङ्केतित है।

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥३८॥

१८९. ॐ मरीचये नमः—ये जन्मान्ध, भवान्ध तथा मदान्ध प्राणियों के लिए अपने निर्मल रूप का प्रकाश कराने में मरीचि अर्थात् किरण के समान हैं तथा दुष्टों को मारनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'मरीचि' है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम विशाख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विशाख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विशाख ऋषिश्रेष्ठ तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठता तथा सिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ९।२१।१० में उल्लिखित है।

१९०. ॐ दमनाय नमः—ये अपनी दीप्तिरूपी गङ्गा से भवदाह को शान्त करते हैं, अतः इनका नाम 'दमन' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम वातस्कन्ध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वातस्कन्ध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वातस्कन्ध सबका दमन करनेवाले हुए। यह मन्त्र विपक्षियों का दमन करनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ८।८।१० में सङ्केतित है।

१९१. ॐ हंसाय नमः—ये संसार-बन्धन का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'हंस' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम लिखितनामक ऋषि ने यह

नाममन्त्र जपा है, अतएव लिखित इस मन्त्र के ऋषि हैं, इसको जपने से लिखित हरिभक्त हुए। यह मन्त्र हरिभक्तिपद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १२।१।५१ में उल्लिखित है।

१९२. ॐ सुपर्णाय नमः—ये सुन्दर पङ्खों (डैनों) वाले हैं, अतः इनका नाम 'सुपर्ण' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम शाङ्खायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाङ्खायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाङ्खायन भक्तिमान् तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र भक्ति तथा सिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।६४ में उल्लिखित है।

१९३. ॐ भुजगोत्तमाय नमः—ये शेषशय्या पर शयन करते हैं, अतः इनका नाम 'भुजगोत्तम' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हविष्मान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हविष्मान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हविष्मान् तेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।६ में सङ्केतित है।

१९४. ॐ हिरण्यनाभाय नमः—विश्वरूप धारण करनेवाले इनकी नाभि में हिरण्य अर्थात् सुमेरु है, अतः इनका नाम 'हिरण्यनाभ' है। ब्रह्मयामल के अनुसार सर्वप्रथम कपोतरोमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कपोतरोमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कपोतरोमा विष्णुरूप हुए। यह यन्त्र विष्णुरूपता देनेवाला है। यह मन्त्र सुश्रुत ७।४९ में सङ्केतित है।

१९५. ॐ सुतपसे नमः—नर-नारायणावतार में इनका तप अतिशय सुन्दर है तथा इनका ज्ञान भी सुन्दर है, अतः इनका नाम 'सुतपाः' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम श्येन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्येन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्येन तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९०।३ में सङ्केतित है।

१९६. ॐ पद्मनाभाय नमः—इनकी नाभि कमल के समान वर्तुल है तथा इनकी नाभि से अष्टदल पद्म उत्पन्न हुआ है, अतः इनका नाम 'पद्मनाभ' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम गौरशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गौरशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गौरशिरा त्रिकालज्ञ हुए। यह मन्त्र त्रिकालज्ञता देनेवाला है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

१९७. ॐ प्रजापतये नमः—ये ब्रह्मादि सब प्रजा के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'प्रजापति' है। गौरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम पार ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पार इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने

से पार ऋषियों में पूजित हुए। यह मन्त्र पूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २१।१७ में उल्लिखित है।

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥३९॥

१९८. **ॐ अमृत्यवे नमः**—ये मृत्यु के भी मृत्यु होने से मृत्युरहित हैं, अतः इनका नाम 'अमृत्यु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम यवक्रीत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यवक्रीत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यवक्रीत मृत्युको जीतनेवाले तथा परमपद के भागीदार हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्य तथा परमपद को देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में सङ्केतित है।

१९९. **ॐ सर्वदृशे नमः**—ये शत्रु, मित्र तथा उदासीन सभी को यथायोग्य दण्ड देने के लिए देखा करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वदृक्' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम अष्टावक्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अष्टावक्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अष्टावक्र ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१९ में सङ्केतित है।

२००. **ॐ सिंहाय नमः**—ये शत्रुरूपी हाथियों को परास्त करते हैं, अतएव इनका नाम 'सिंह' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सत्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्य कवियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र चरकसं० वि० स्था० १।६ में सङ्केतित है।

२०१. **ॐ सन्धात्रे नमः**—ये भयङ्कर स्वरूप धारण करने पर भी प्रह्लादादि भक्तों को अपने वक्षस्थल में रखकर उनकी रक्षा करते हैं। अतः इनका नाम 'सन्धाता' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम हस्तिभद्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हस्तिभद्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हस्तिभद्र सिद्धों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र नृसिंहपुराण में उल्लिखित है।

२०२. **ॐ सन्धिमते नमः**—इनकी सन्धि सदा प्रह्लादादि भक्तों के साथ रहती है, अतः इनका नाम 'सन्धिमान्' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दर्दुर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दर्दुर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दर्दुर मेधावी हुए। मन्त्र मेधाप्रद है। यह मन्त्र नृसिंहपुराण में उल्लिखित है।

२०३. **ॐ स्थिराय नमः**—ये भक्तों के अपराधों को न गिनकर भक्तों के अन्तःकरण में सदा स्थिर रहते हैं, अतः इनका नाम 'स्थिर' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम विशालाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव

विशालाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विशालाक्ष स्थिरलक्ष्मीवाले हुए तथा अन्त में सत्यपुर को प्राप्त हुए। यह मन्त्र स्थिरलक्ष्मीप्रद तथा सत्यपुरप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।९ में सङ्केतित है।

२०४. ॐ अजाय नमः—ये नारसिंहावतार में खम्भे से उत्पन्न होने पर भी किसी पिता से उत्पन्न नहीं है, अतः इनका नाम 'अज' है। नृसिंहपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सुमनास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुमनास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुमनास्य को सर्वविध सुख तथा अन्त में मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुख तथा मोक्ष देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।११।३ में उल्लिखित है।

२०५. ॐ दुर्मर्षणाय नमः-युद्धादि के समय देवता आदि भी इनके तेज को सहन नहीं कर सकते हैं, अतः इनका नाम 'दुर्मर्षण' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम परिधि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव परिधि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से परिधि गुरुनिन्दाजन्य पाप से मुक्त हुए। यह मन्त्र निन्दाजन्य पाप को नष्ट करनेवाला है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२०६. ॐ शास्त्रे नमः—ये सभी दुष्टों का शासन करते हैं अर्थात् दुष्टों को दण्ड देते हैं, अतः इनका नाम 'शास्ता' है। वायुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम सुयज्ञ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुयज्ञ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रेत बने सुयज्ञ प्रेतत्व से मुक्त हुए। यह मन्त्र प्रेतत्व से मुक्त करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।९९।२ में सङ्केतित है।

२०७. ॐ विश्रुतात्मने नमः—सभी ने इनका आत्मा अर्थात् भक्तों का रक्षण करनेवाला स्वभाव सुन लिया है, अतः इनका नाम 'विश्रुतात्मा' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम एकत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव एकत इस मन्त्र के ऋषि हैं। ब्रह्मा की आज्ञा से इसको जपने से एकत सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१० में सङ्केतित है।

२०८. ॐ सुरारिघ्ने नमः—इन्होंने सुर अर्थात् देवताओं के अरि अर्थात् शत्रु नरकादि दैत्यों को मारा है, अतः इनका नाम 'सुरारिहा' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पिङ्गजट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिङ्गजट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिङ्गजट शत्रु को जीत कर जितेन्द्रिय हुए। यह मन्त्र शत्रुओं को तथा इन्द्रियों को वश में करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३६।१९ में सङ्केतित है।

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥४०॥

२०९. ॐ गुरवे नमः—इन्होंने अर्जुन तथा उद्धव को अत्यधिक रहस्यमय भक्तियोग का उपदेश किया है, अतः इनका नाम 'गुरु' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ऋष्यश्रृङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋष्यश्रृङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋष्यश्रृङ्ग शान्त, सिद्ध और जितेन्द्रिय हुए। यह मन्त्र शान्ति, सिद्धि तथा इन्द्रियजय देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।८।१–७ में सङ्केतित है।

२१०. ॐ गुरुतमाय नमः—ये सब गुरुओं में श्रेष्ठ गुरु हैं, अतः इनका नाम 'गुरुतम' है। नारदपुराण के अनुसार सर्वप्रथम ऋषभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋषभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋषभ तपस्वी तथा ऋषिश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है तथा श्रेष्टताप्रद भी है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३२ में सङ्केतित है।

२११. ॐ धाम्ने नमः—ये सम्पूर्ण चराचर जगत् को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'धाम' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम प्रस्कण्व ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः प्रस्कण्व इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रस्कण्व को भगवत्साक्षात्कार हुआ। यह मन्त्र भगवत्साक्षात्कारप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१० में उल्लिखित है।

२१२. ॐ सत्याय नमः—ये सन्तों तथा भक्तों में साधु हैं, अतः इनका नाम 'सत्य' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वरतन्तु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः वरतन्तु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वरतन्तु सत्यवादी, पण्डितों में श्रेष्ठ, तपस्वी तथा हरिभक्त हुए। यह मन्त्र सत्यवादित्व, पण्डितश्रेष्ठत्व, तपस्वित्व तथा हरिभक्ति को देनेवाला है। यह यजुर्वेद १९।३० में उल्लिखित है।

२१३. ॐ सत्यपराक्रमाय नमः—भक्तों के कल्याण के लिए भक्तों में इनका पराक्रम अर्थात् हार्दिक भाव से निवास रहता है, अतः इनका नाम 'सत्यपराक्रम' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दधीचि के पुत्र सारस्वत ऋषि ने सरस्वती नदी के तीर पर यह नाममन्त्र जपा है, अतः सारस्वत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सारस्वत सत्यपराक्रमवाले हुए। यह मन्त्र सत्यपराक्रमप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२१४. ॐ निमिषाय नमः—ये प्रभु लोकव्यवहार सदा पूर्णरूप से देखते हैं, अतः इन लोकसाक्षी भगवान् का नाम 'निमिष' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम बृहदग्नि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बृहदग्नि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बृहदग्नि सर्वद्रष्टा हुए। यह मन्त्र सर्वदर्शनसामर्थ्य देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।२ में उल्लिखित है।

२१५. ॐ अनिमिषाय नमः—इनकी आखें कभी बन्द नहीं होती हैं, अतः इनका नाम 'अनिमिष' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सिन्धुद्वीप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सिन्धुद्वीप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सिन्धुद्वीप सिद्ध तथा शिवरूप हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद तथा शिवरूपत्वप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५९।१ में उल्लिखित है।

२१६. ॐ स्रग्विणे नमः—इनके गले में वैजयन्ती माला[1] है, अतः इनका नाम 'स्रग्वी' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शर्मी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शर्मी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शर्मी सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।८ में सङ्केतित है।

२१७. ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः—(वाचस्पतय उदारध्यै नमः) ये वेदरूप वाणी के पति अर्थात् स्वामी तथा उदारबुद्धिवाले हैं, अतः इनका नाम 'वाचस्पतिरुदारधीः' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अघमर्षण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः अघमर्षण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अघमर्षण सब विद्याओं के वक्ता हुए। यह मन्त्र सर्वविद्याप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ९।१ में सङ्केतित है।

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥४१॥

२१८. ॐ अग्रण्ये नमः—इनकी पूजा सबसे पहले होती है, अतः इनका नाम 'अग्रणी' है। नारदपुराण के अनुसार सर्वप्रथम क्षीरपाणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षीरपाणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षीरपाणि सब ऋषियों में अग्रणी हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ६।२ में उल्लिखित है।

२१९. ॐ ग्रामण्ये नमः—ये ग्राम अर्थात् सिद्धसमूह को वैकुण्ठ में पहुँचाते हैं, अतः इनका नम 'ग्रामणी' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अग्निवेश्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अग्निवेश्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्निवेश्य महामहासिद्ध हुए। यह मन्त्र महासिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

२२०. ॐ श्रीमते नमः—इनके पास ऋग्यजुःसामरूपा श्रौती अमृतश्री रहती है, अतः इनका नाम 'श्रीमान्'[2] है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम

---

१. "बाँसी सीपी सूकरी करी दरी अरु व्याल। षड् षड् मणियाँ पोइये वैजयन्ती की माल।"

२. यह नारसिंहवपुः श्रीमान् प्रथम शतक में २६वां, 'अनिर्देशवपुः श्रीमान्' द्वितीय शतक में ७८वां तथा तीसरी वार यहाँ तृतीय शतक में आने पर भी भिन्नार्थक होने से पुनरुक्त नहीं है।

शैखावत्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शैखावत्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शैखावत्य श्रीमान् हुए। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२२ में सङ्केतित है।

२२१. ॐ न्यायाय नमः—ये युक्त कर्म करते हैं, अतएव इनका नाम 'न्याय' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम वीहल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः वीहल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वीहल शिवभक्त हुए। यह मन्त्र शिवभक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

२२२. ॐ नेत्रे नमः—इन्होंने भक्त अर्जुन की आज्ञा से दोनों सेनाओं के बीच अर्जुन का रथ खड़ा कर दिया, अतः इनका नाम 'नेता' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवरात ऋषिने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवरात इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवरात तीनों लोकों में विख्यात हुए। यह मन्त्र ख्यातिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।१३।९ में उल्लिखित है।

२२३. ॐ समीरणाय नमः—इनकी चेष्टा भक्तों के अभीप्सित के अनुसार होती है, अतः इनका नाम 'समीरण' है। सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम वर्चस्वी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वर्चस्वी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वर्चस्वी को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२२४. ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः—इनके मस्तक सहस्र अर्थात् असंख्य हैं, अतः इनका नाम 'सहस्रमूर्धा' है। सारस्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम प्रमुचु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रमुचु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रमुचु भगवत्प्रिय हुए। यह मन्त्र भगवत्प्रीतिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में सङ्केतित है।

२२५. ॐ विश्वात्मने नमः—इनका स्वरूप जगत् को व्याप्त करनेवाला है, अतः इनका नाम 'विश्वात्मा' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वत्स हरिवत्सल हुए। यह मन्त्र हरिप्रीतिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४६ में सङ्केतित है।

२२६. ॐ सहस्राक्षाय नमः—इनकी आँखें सहस्र अर्थात् असंख्य हैं, अतः इनका नाम 'सहस्राक्ष' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम नचिकेता के पिता उद्दालक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उद्दालक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उद्दालक सर्वसिद्धिमान् तथा

सर्वप्रकाशवान् हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद तथा प्रकाशप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।८ में उल्लिखित है।

२२७. ॐ सहस्रपदे नमः—इनके चरण सहस्र अर्थात् असंख्य हैं, अतः इनका नाम 'सहस्रपात्' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मुमुचु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः मुमुचु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुमुचु सर्वत्र गतिमान् हुए। यह मन्त्र सर्वत्र गतिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में उल्लिखित है।

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः।
अहःसंवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥४२॥

२२८. ॐ आवर्तनाय नमः—ये संसाररूपी घटीयन्त्र को घुमाया करते हैं, अतः इनका नाम 'आवर्तन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आपोद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आपोद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आपोद को सब विद्याओं का रहस्य ज्ञात हुआ। यह मन्त्र विद्यारहस्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१३ में सङ्केतित हैं।

२२९. ॐ निवृत्तात्मने नमः—इनका आत्मा अर्थात् चित्त विरक्त है, अतः इनका नाम 'निवृत्तात्मा' है। भृगुसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम वेद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वेद ऋषि वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेद-वेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।७ में सङ्केतित है।

२३०. ॐ संवृताय नमः—इनका स्वरूप मूढ़ों के लिए प्रकाशित नहीं होता, अतः इनका नाम 'संवृत' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आरुणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आरुणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आरुणि परमगुरुभक्त हुए। यह मन्त्र गुरुभक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।२८ में सङ्केतित है।

२३१. ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः—ये अपनी विद्या से मूढ़ों के तम का मर्दन कर डालते हैं, अतः इनका नाम 'सम्प्रमर्दन' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उपमन्यु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपमन्यु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अर्कपत्र-भक्षण से अन्धे हुए उपमन्यु आँखवाले तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र नेत्रज्योतिःप्रद तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।७ में सङ्केतित हैं।

२३२. ॐ अहःसंवर्तकाय नमः—ये अहः अर्थात् दिनरूप कालका सूर्यरूप से परिवर्तन करते हैं, अतएव इनका नाम 'अहःसंवर्तक' है।

शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उत्तङ्क ऋषि ने गुरु की आज्ञा से यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव उत्तङ्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उत्तङ्क दीर्घ आयुवाले हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२२ में सङ्केतित है।

२३३. ॐ वह्नये नमः—ये देशरूप से सम्पूर्ण चराचर प्रपञ्च का वहन करते हैं, अतएव इनका नाम 'वह्नि' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मण्डूक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मण्डूक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मण्डूक वेदवित् हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १।८ में उल्लिखित है।

२३४. ॐ अनिलाय नमः—ये सभी संसारी जीवों को जिलाते हैं, अतः इनका नाम 'अनिल' है। साम्बपुराण के अनुसार सर्वप्रथम अश्वसेन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्वसेन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्वसेन जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१५ में उल्लिखित है।

२३५ ॐ धरणीधराय नमः—ये अनन्तरूप से तथा वराहरूप से पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः इनका नाम धरणीधर है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुपर्वा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुपर्वा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुपर्वा सब मुनियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४ में सङ्केतित है।

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग् विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥४३॥

२३६. ॐ सुप्रसादाय नमः—इनका प्रसाद सबको सुलभ है, अतः इनका नाम 'सुप्रसाद' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सहस्रपाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सहस्रपाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सहस्रपाद को दुर्लभ सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।१।२५ में सङ्केतित है।

२३७. ॐ प्रसन्नात्मने नमः—परिपूर्णकाम होने से इनका आत्मा अर्थात् मन सदा प्रसन्न रहता है, अतः इनका नाम 'प्रसन्नात्मा' है। विष्णुपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आस्तीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आस्तीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आस्तीक के सभी कार्य प्रसन्नतापूर्वक होने लगे। यह मन्त्र प्रसन्नताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१८ में सङ्केतित है।

२३८. ॐ विश्वधृषे नमः—ये सम्पूर्ण संसार में प्रगल्भ अर्थात् प्रौढ़ हैं, अतः इनका नाम 'विश्वधृक्' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम खगम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः खगम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से खगम जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद २०।८।१३ में सङ्केतित है।

२३९. ॐ विश्वभुग्विभवे नमः—ये अखिल जगत् के पालक, मनु आदि के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'विश्वभुग्विभु' है[१]। सारस्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम स्फोटायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव स्फोटायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से स्फोटायन सिद्ध हुए तथा सत्यलोक को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद तथा सत्यलोकप्रापक है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२४०. ॐ सत्कर्त्रे नमः—ये सज्जनों का सदा सत्कार करते हैं, अतः इनका नाम 'सत्कर्ता' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मनोजव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मनोजव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मनोजव स्वयं सत्कर्ता तथा सिद्धिभाजन हुए। यह मन्त्र सत्कारकरणसामर्थ्यप्रद तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में सङ्केतित है।

२४१. ॐ सत्कृताय नमः—ये सज्जनों द्वारा की गई थोड़ी सी भी पूजा को ग्रहण कर लेते हैं, अतः इनका नाम 'सत्कृत' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भयङ्कर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भयङ्कर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भयङ्कर सत्कार करने में समर्थ तथा भगवद्भक्त हुए। यह मन्त्र सत्कारकरणसामर्थ्यप्रद तथा भक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४३ में सङ्केतित है।

२४२. ॐ साधवे नमः—ये भक्तों के अभीष्ट सारथ्य, दौत्य आदि कर्मों को साधते हैं, अतः इनका नाम 'साधु' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महायशा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महायशा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महायशा साधुव्रतवाले हुए। यह मन्त्र सुन्दर कर्म में प्रवृत्ति करानेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २४।२१ में सङ्केतित है।

१—शङ्कराचार्य के मत में ये दो नाम हैं। उनमें से पहला २३९ वाँ 'ॐ विश्वभुजे नमः' है और दूसरा 'ॐ विभवे नमः' है। यहाँ से महाभारत की नीलकण्ठी टीका के अनुसार ३१४ वाँ नाम 'क्रोधकृत्' और ३१५ वाँ 'कर्ता' ये दो नाम हैं। शङ्कराचार्य के मत में एक नाम है। २३९ से लेकर मतभेद से संख्या में वैषम्य हुआ है ३१५ तक। दोनों मतों में 'विश्वधृषे नमः' यह मन्त्र २३८ है। पुनः 'विश्वबाहवे' नमः यह मन्त्र भी दोनों मतों में ३१६ वाँ है।

२४३. ॐ जह्नवे नमः—ये अपने माहात्म्य को अभक्तों से छिपाते हैं, अतः इनका नाम 'जह्नु' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम विभावसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विभावसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विभावसु ऋषियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।३२।१० में उल्लिखित है।

२४४. ॐ नारायणाय नमः—ये आत्मज्ञानियों के आधार हैं, अतः इनका नाम 'नारायण' है। यह भी कहीं कहा है—"नरतीति नरः प्रोक्तः परमात्मा सनातनः। नराज्जातानि तत्त्वानि नाराणीति ततो विदुः॥ तान्येव चायनं तस्य तेन नारायणः स्मृतः।" भारत में "आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥" कहा है। पुनरपि—"नारायणाय नम इत्ययमेव सत्यः संसारघोरविषसंहरणाय मन्त्रः। शृण्वन्तु भव्य-मतयो यतयोऽस्तरागा उच्चैस्तरामुपदिशाम्यहमूर्ध्वबाहुः॥" कहा है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम धौतदन्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धौत-दन्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धौतदन्त विद्वानों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१८ में सङ्केतित है।

२४५. ॐ नराय नमः—ये प्रभु अविनाशी हैं, अतः इनका नाम 'नर' है। अतएव "ब्रह्मवैवर्त में कहा है—रस्तु क्षय इति ज्ञेयः स नैवास्ति च यस्य वै। तेनासौ नर इत्याख्यां गतः सर्वत्र माधवः॥" सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम उग्रश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्रश्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उग्रश्रवा भक्त तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र भक्ति तथा सिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र सामवेद पूर्वार्चिक ऐन्द्रकाण्ड ५।६ में उल्लिखित है।

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥४४॥

२४६. ॐ असंख्येयाय नमः—इनके पास चित् तथा अचित् के असङ्ख्य समुदाय हैं, अतः इनका नाम 'असंख्येय' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पिण्डारक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिण्डारक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिण्डारक सिद्धों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र सिद्धि-प्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १५।५४ में सङ्केतित है।

२४७. ॐ अप्रमेयात्मने नमः—ये प्रमाण के योग्य न हो सकनेवाले पदार्थों को भीतर और बाहर से व्याप्त कर रहते हैं, अतः इनका नाम 'अप्रमे-यात्मा' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वातवेग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वातवेग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वातवेग

अद्भुत सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र अद्भुतसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२४८. ॐ विशिष्टाय नमः—ये किसी भी अन्य की अपेक्षा न रखते हुए स्वयं ही सबसे अधिक होकर रहते हैं, अतः इनका नाम 'विशिष्ट' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विपुल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः विपुल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विपुल विशिष्ट हुए। यह मन्त्र विशिष्टताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३६।१५ में सङ्केतित है।

२४९. ॐ शिष्टकृते नमः—ये अशिष्ट को भी अपने सम्बन्ध से शिष्ट बनाते हैं, अतः इनका नाम 'शिष्टकृत्' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वृहत्कीर्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृहत्कीर्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृहत्कीर्ति सम्पूर्ण त्रैलोक्य में माननीय हुए। यह मन्त्र सम्मानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ५।२१।६ में सङ्केतित है।

२५०. ॐ शुचये नमः—ये सृष्टि आदि सम्पूर्ण प्रपञ्च करने पर भी पवित्र रहते हैं, अतः इनका नाम 'शुचि' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कोहल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कोहल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कोहल शुद्ध तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र शुद्धिकर तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९१।३ में उल्लिखित है।

२५१. ॐ सिद्धार्थाय नमः—ये प्रभु परिपूर्ण कामनावाले हैं, अतः इनका अभीष्ट पदार्थ सिद्ध रहता है, इसलिए इनका नाम 'सिद्धार्थ' है। देवीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वात्स्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वात्स्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वात्स्य सिद्धार्थ तथा सकाम सत्कर्म करनेवाले हुए। यह मन्त्र सिद्धार्थता तथा सत्कर्मप्रवृत्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

२५२. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः—स्वतन्त्र ये हरि अपनी इच्छा से सब कार्य सिद्ध कर लेते हैं, अतः इनका नाम 'सिद्धसङ्कल्प' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुचेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुचेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुचेता को अणिमादि सिद्धियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अणिमादिसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र शिवपुराण में उल्लिखित है।

२५३. ॐ सिद्धिदाय नमः—ये साधक को अणिमादि सिद्धियाँ देते हैं, अतः इनका नाम 'सिद्धिद' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम याज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः याज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से याज स्वयं सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र स्वयंसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।२१ में सङ्केतित है।

२५४. ॐ सिद्धिसाधनाय नमः—अनुष्ठान के समय भी इनका साधन सिद्ध है, अतः इनका नाम 'सिद्धिसाधन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हिरण्यबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः हिरण्यबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हिरण्यबाहु को सिद्धिसाधन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सिद्धिसाधनप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥४५॥

२५५. ॐ वृषाहिने नमः—धर्म ही इनका दिन है, अतः इनका नाम 'वृषाही' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम स्थूलकेश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव स्थूलकेश इस मन्त्र के ऋषि हैं, इसको जपने से स्थूलकेश सिद्ध तथा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र सिद्धि और जीवन्मुक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र चरकसंहिता २३।९ में सङ्केतित है।

२५६. ॐ वृषभाय नमः—ये अपने शरण में आए हुए भक्तों की भव-दाहजन्य पीड़ा को अमृतवर्षण से दूर करते हैं, अतः इनका नाम 'वृषभ' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुप्रतीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुप्रतीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुप्रतीक सभी सङ्कटों से छूट गए। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३।५ में उल्लिखित है। यह मन्त्र संकट से छुड़ानेवाला है।

२५७. ॐ विष्णवे नमः—ये सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रहते हैं, अतएव इनका नाम 'विष्णु' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम महाकाय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाकाय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महाकाय को व्यापक सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र व्यापक-सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१५१।१ में सङ्केतित है।

२५८. ॐ वृषपर्वणे नमः—वृष अर्थात् वर्णधर्म तथा आश्रमधर्म इनके धाम में चढ़ने के लिए बनाए हुए पर्व अर्थात् सीढ़ियाँ हैं, अतः इनका नाम 'वृषपर्वा' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम पूर्णकुम्भ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पूर्णकुम्भ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पूर्णकुम्भ सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३६।२ में सङ्केतित है।

२५९. ॐ वृषोदराय नमः—ये अपने भक्तों द्वारा कृत पत्र-पुष्प-समर्पण आदि धर्म को प्रसन्न होकर अपने उदर में रखते हैं, अतः इनका नाम 'वृषोदर' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कामेश्वर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कामेश्वर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कामेश्वर मुक्ति के भागीदार हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।२७।१४ में सङ्केतित है।

२६०. ॐ वर्धनाय नमः—जिस प्रकार माता अपने पेट में बालक को रखकर बढ़ाती है, उसी प्रकार ये भक्तों को अपने पेट में रखकर बढ़ाते हैं, अतः इनका नाम 'वर्धन' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम व्याकरण-महाभाष्यकार पतञ्जलि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पतञ्जलि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पतञ्जलि को भाष्य करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भाष्यकर्तृत्व-सामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९७।३१ में उल्लिखित है।

२६१. ॐ वर्धमानाय नमः—ये भक्तों की वृद्धि से स्वयं वृद्धि को प्राप्त होते हैं, अतः इनका नाम 'वर्धमान' है। परमानन्दमाधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तालजङ्घ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तालजङ्घ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तालजङ्घ की मानवृद्धि हुई। यह मन्त्र मान बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।४७।१६ में सङ्केतित है।

२६२. ॐ विविक्ताय नमः—ये अपना वृत्तान्त लोकोत्तर तथा एकान्त में रखते हैं और एकान्त में सब बातें करते हैं, अतः इनका नाम 'विविक्त' है। 'सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम महोदय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महोदय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महोदय एकान्त-सेवी और पवित्र दृष्टिवाले हुए। यह मन्त्र एकान्तसेवन तथा पवित्रदृष्टिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में सङ्केतित है।

२६३. ॐ श्रुतिसागराय नमः—ये सब वेदों से वेद्य अर्थात् जानने योग्य हैं, अतः इनका नाम 'श्रुतिसागर' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम वायुरथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वायुरथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वायुरथ सब वेदों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१३ में सङ्केतित है।

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥४६॥

२६४. ॐ सुभुजाय नमः—इनकी भुजाएँ शरणागत के पालन में सु अर्थात् समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'सुभुज' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आर्यक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आर्यक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आर्यक 'चतुर्भुज' हुए। यह मन्त्र चतुर्भुजत्वप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

२६५. ॐ दुर्धराय नमः—जिस प्रकार प्रलय के समुद्र का वेग दुर्वार होता है उसी प्रकार इनका भी वेग दुर्वार है अर्थात् किसी से भी धारण करने योग्य नहीं है, अतः इनका 'दुर्धर' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कलश-

पोतक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कलशपोतक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कलशपोतक अधिक तेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२६६. ॐ वाग्मिने नमः—इनकी वाणी अत्यन्तप्रिय, मधुर, सर्वप्रिय, सर्वहितसाधक तथा प्रशस्त है. अतः इनका नाम 'वाग्मी' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम रुद्रकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रुद्रकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रुद्रकर्मा महान् तेजस्वी, जितेन्द्रिय, वाग्मी और सर्वज्ञ हुए। यह यन्त्र तेजःप्रद, संयमप्रद, वाग्मिताप्रद तथा सर्वज्ञताप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३३ में सङ्केतित है।

२६७. महेन्द्राय नमः—इनके पास पूर्ण परमैश्वर्य है, अतः इनका नाम 'महेन्द्र' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम करोटक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव करोटक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से करोटक महान् ऐश्वर्यवाले हुए। यह मन्त्र ऐश्वर्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १२।१।१३ में सङ्केतित है।

२६८. ॐ वसुदाय नमः—ये महान् ऐश्वर्यशाली होते हुए अपने गरीब भक्तों को वसु अर्थात् धन देते हैं, अतएव इनका नाम 'वसुद' है। परमानन्द-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बिल्वक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बिल्वक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बिल्वक धनवान् हुए। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।५५।३ में सङ्केतित है।

२६९. ॐ वसवे नमः—ये इतर धन की अभिलाषा न रखनेवाले भक्तों के लिए धनरूप हैं, अतः इनका नाम 'वसु' है। शिवपुराण के अनुसार सर्व-प्रथम शङ्खपिण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्खपिण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्खपिण्ड धनवान् तथा धनदाता हुए। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।४४।२४ में उल्लिखित है।

२७०. ॐ नैकरूपाय नमः—इनके अनेक रूप हैं, अतः इनका नाम 'नैकरूप' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जरत्कारु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जरत्कारु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जरत्कारु रूपवान् तथा पुत्रवान् हुए। यह मन्त्र रूपप्रद तथा पुत्रप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

२७१. ॐ बृहद्रूपाय नमः—इनका रूप बृहत् अर्थात् आकाशव्यापी है, अतः इनका नाम 'बृहद्रूप' है। शिवपुराण के अनुसार सर्वप्रथम चण्डभार्गव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चण्डभार्गव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चण्डभार्गव को परमसिद्धि प्राप्त हुई तथा वे त्रिभुवनपूजित हुए।

यह मन्त्र परमसिद्धिप्रद तथा पूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०। ७। ३२–३५ में सङ्केतित है।

२७२. ॐ शिपिविष्टाय नमः—ये अपनी किरणों से सूर्य के समान प्रकाशक होकर सर्वत्र प्रविष्ट हैं, अतः इनका नाम 'शिपिविष्ट' है। अतएव "शैत्याच्छयनयोगाच्च शीति वारि प्रचक्षते। तत्पानाद्रक्षणाच्चैव शिपयो रश्मयो मताः। तेषु प्रवेशाद्विश्वेशः शिपिविष्ट इहोच्यते॥" कहा है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यायावर ऋषियों ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यायावर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यायावरों की वंशवृद्धि हुई। यह मन्त्र वंशवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७। १००। ६ में उल्लिखित है।

२७३. ॐ प्रकाशाय नमः—ये दर्शनार्थी अर्जुन आदि भक्तों के लिए अपना दिव्य स्वरूप प्रकाशित करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रकाशन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कौत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौत्स सिद्धज्ञानवान् हुए। यह मन्त्र सिद्धज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।४६ तथा ७। ४२ में सङ्केतित है।

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥४७॥

२७४. ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः—ये ओज अर्थात् बल, तेज अर्थात् दूसरे को दबाने का सामर्थ्य और द्युति अर्थात् उज्ज्वलता—इन तीनों को धारण करते हैं, अतः इनका 'ओजस्तेजोद्युतिधर' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सारङ्गरव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सारङ्गरव इस मन्त्र के ऋषि हैं। पिता की आज्ञा से इसको जपने से सारङ्गरव ओज, तेज तथा द्युतिवाले हुए। यह मन्त्र ओज, तेज तथा द्युति देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।९ तथा ऋग्वेद १।६२।१२ में सङ्केतित है।

२७५. ॐ प्रकाशात्मने नमः—इनका आत्मा अर्थात् स्वभाव प्रकाशरूप है, अतः इनका नाम 'प्रकाशात्मा' है। ललितारहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कुषारव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुषारव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुषारव कैलासपूजित हुए। यह मन्त्र पूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०। ३ में सङ्केतित है।

२७६. ॐ प्रतापनाय नमः—ये अपने तेज से सकल जगत् को भासित करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रतापन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कालघट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालघट इस मन्त्र के ऋषि

हैं। इसको जपने से कालघट को महान् सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९०।३ में सङ्केतित है।

२७७. ॐ ऋद्धाय नमः—ये भक्तों को देखकर उसी प्रकार उमँगते हैं जिस प्रकार समुद्र पूर्ण चन्द्रमा को देखकर उमँगता है, अतः इनका नाम 'ऋद्ध' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अग्र्यश्रुति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अग्र्यश्रुति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्र्यश्रुति सर्वसमृद्धिमान् हुए। यह मन्त्र समृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।८८।८ में सङ्केतित है।

२७८. ॐ स्पष्टाक्षराय नमः—इन्होंने वेदाक्षरों को स्पष्ट किया है, अतः इनका नाम 'स्पष्टाक्षर' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मवर्चस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ब्रह्मवर्चस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रह्मवर्चस परमज्ञानवान् हुए। यह मन्त्र परमज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।८।१ में सङ्केतित है।

२७९. ॐ मन्त्राय नमः—ये अपने को माननेवाले भक्तों को पूर्ण सुरक्षित करते हैं, अतएव इनका नाम 'मन्त्र' है। शारदारहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कुण्डधार ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुण्डधार इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुण्डधार सिद्धि को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

२८०. ॐ चन्द्रांशवे नमः—ये तापत्रय से तपे हुए भक्तों को शान्तिदायक तेजवाले हैं, अतः इनका नाम 'चन्द्रांशु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम श्रुतश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्रुतश्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्रुतश्रवा तेजस्वी तथा शान्तात्मा हुए। यह मन्त्र तेज तथा शान्ति देनेवाला है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२८१. ॐ भास्करद्युतये नमः—इनका तेज सूर्य के समान दूसरे को दबानेवाला है, अतः इनका नाम 'भास्करद्युति' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम रभेणक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रभेणक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रभेणक महान् तेजस्वी तथा तपस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद तथा तपःप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥४८॥

२८२. ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः—ये अमृतांशु अर्थात् चन्द्रमा के उत्पत्तिस्थान हैं, अतः इनका नाम 'अमृतांशूद्भव' है। भुवनेश्वरतन्त्र के अनुसार

सर्वप्रथम भानुदेव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भानुदेव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भानुदेव अमृतदेहधारी तथा ब्रह्मलोकवासी हुए। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

२८३. ॐ भानवे नमः—इन्होंने अपने तेज से सूर्य को भी तेजस्वी बनाया है, अतः इनका नाम 'भानु' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कामठक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कामठक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कामठक महातेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र चरकसंहिता चिकित्सास्थान १५।३।४ में सङ्केतित है।

२८४. ॐ शशबिन्दवे नमः—ये कुटिलगतिवाले प्राणियों को शून्य करनेवाले अर्थात् उनका विध्वंस करनेवाले हैं, अतएव इनका नाम 'शशबिन्दु' है। शिवतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम पिशङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिशङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिशङ्ग ब्रह्मर्षि, तेजस्वी तथा जितेन्द्रिय हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद तथा जितेन्द्रियत्वप्रद है। यह मन्त्र स्कन्द-पुराण में उल्लिखित है।

२८५. ॐ सुरेश्वराय नमः—ये ऋजुगतिवाले देवताओं के ईश्वर अर्थात् स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'सुरेश्वर' है। महाकालसंहिता के अनुसार सर्व-प्रथम प्रमोद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रमोद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रमोद त्रैलोक्यपूजित हुए तथा उन्हें ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

२८६. ॐ औषधाय नमः—ये संसाररूपी घोर विषैले रोग को दूर करने में औषधरूप हैं, अतः इनका नाम 'औषध' है। विष्णुतत्त्व के अनुसार सर्व-प्रथम वारुणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वारुणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वारुणि ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र संयमप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।९७।१७ में उल्लिखित है।

२८७. ॐ जगतः सेतवे नमः—सत् और असत् परस्पर अनर्थ न कर सकें इस हेतु ये जगत् के सेतु हैं, अतः इनका नाम 'जगतः सेतु' है। स्कन्द-पुराण के अनुसार सर्वप्रथम पुलहऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पुलह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पुलह पापरहित होकर सद्गति को प्राप्त हुए। यह मन्त्र बृहदारण्यक उपनिषद् में सङ्केतित है।

२८८. ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः—इनका धर्म और पराक्रम सत्य है, अतएव इनका नाम 'सत्यधर्मपराक्रम है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पुलस्त्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पुलस्त्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पुलस्त्य ब्रह्मर्षित्व को प्राप्त हुए। यह मन्त्र ब्रह्मर्षित्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत् कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥४९॥

२८९. ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः—ये भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल में रहनेवाले प्राणियों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'भूतभव्यभवन्नाथ' है। सदाशिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम और्व ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः और्व इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से और्व त्रैलोक्यपूजित हुए। यह मन्त्र पूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१ में सङ्केतित है।

२९०. ॐ पवनाय नमः—ये सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों को पवित्र करते हैं, अतः इनका नाम 'पवन' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम उतथ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उतथ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उतथ्य को स्वर्ग में उच्चपद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र उच्चपदप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ४।३४।२ में उल्लिखित है।

२९१. ॐ पावनाय नमः—ये गङ्गादि तीर्थों को अपना तेज देकर उनके द्वारा जगत् को पवित्र करते हैं, अतः इनका नाम 'पावन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शाट्यायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाट्यायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाट्यायन संसारी लोगों को पवित्र करने के सामर्थ्य से युक्त हुए। यह मन्त्र पवित्रताप्रद है। यह मन्त्र विष्णु-पुराण में उल्लिखित है।

२९२. ॐ अनलाय नमः—अनेक भक्तों का उपकार करने पर भी इन्हें तृप्ति नहीं होती अर्थात् ये उनका और भी उपकार करने के लिए उत्सुक रहते हैं, अतः इनका नाम 'अनल' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वृषभाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृषभाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृषभाक्ष को ब्रह्मलोक में निवास प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

२९३. ॐ कामघ्ने नमः—ये अपना स्वरूप दिखाकर अपने भक्तों की विषयान्तर की कामना का विनाश करते हैं, अतः इनका नाम 'कामहा' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम उपयाज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपयाज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उपयाज महावैष्णव हुए। यह मन्त्र विष्णुभक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में सङ्केतित है।

२९४. ॐ कामकृते नमः—ये भक्तों में भोग और मोक्ष की कामना का स्वरूप उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'कामकृत्' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुदेव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुदेव इस

मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुदेव को भोग और मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भोग-मोक्षप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।६५ में सङ्केतित है।

२९५. ॐ कान्ताय नमः—ये सौन्दर्यादि गुणों के कारण अतिसुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'कान्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मन्दपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मन्दपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मन्दपाल को पुत्र तथा स्वर्ग प्राप्त हुआ। यह मन्त्र पुत्रप्रद तथा स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

२९६. ॐ कामाय नमः—इनमें शील, औदार्य आदि गुण कूप के समान भरे रहने से मुमुक्षु जन इन्हें बहुत चाहते हैं, अतः इनका नाम 'काम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सोमश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सोमश्रवा इसके ऋषि हैं। इसको जपने से सोमश्रवा महान् सिद्ध हुए। यह मन्त्र महासिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १२।११७ में उल्लिखित है।

२९७. ॐ कामप्रदाय नमः—ये अपनी चाह तथा दूसरे की चाह करनेवालों को सब मनोरथ यथायोग्य देते हैं, अतः इनका नाम 'कामप्रद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुवर्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुवर्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुवर्ण की सब कामनाएँ पूर्ण हुईं। यह मन्त्र कामनाप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ६।३६।३ में सङ्केतित है।

२९८ ॐ प्रभवे नमः—ये अपनी अत्यन्त सुन्दरता से सबके मन को हरने में समर्थ होते हैं, अतः इनका नाम 'प्रभु' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कट्ठकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कट्ठकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कट्ठकर्मा लोकप्रिय हुए। यह मन्त्र लोकप्रेमप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८८।९ में उल्लिखित है।

युगादिकृद् युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥५०॥

२९९. ॐ युगादिकृते नमः—ये प्रत्येक प्रलय के बाद युग की उत्पत्ति करते हैं, अतः इनका नाम 'युगादिकृत्' है। सुन्दरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महोदक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महोदक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महोदक की आत्मशुद्धि हुई। यह मन्त्र आत्मशुद्धिप्रद है। यह मन्त्र नारदीयसंहिता में उल्लिखित है।

३००. ॐ युगावर्ताय नमः—कालरूप ये अपने वैशिष्ट्य की व्यवस्था के अनुसार सत्यादि युगों का बार-बार आवर्तन करते हैं, अतः इनका नाम

'युगावर्त' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम वृत्रशीर्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृत्रशीर्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने वृत्रशीर्ष ऋषि को युगावर्तन का सामर्थ्य सिद्ध हुआ। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३०१. ॐ नैकमायाय नमः—ये अनेक आश्चर्यों के निधि हैं, अतः इनका नाम 'नैकमाय' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विरूप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विरूप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विरूप को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३०२. ॐ महाशनाय नमः—ये प्रलय के समय अखिल जगत् को निगल जाते हैं, अतः इनका नाम 'महाशन' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विहव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विहव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विहव्य को भोजन करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ है। वह मन्त्र भोजनसामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३०३. ॐ अदृश्याय नमः—इनका ठीक-ठीक ज्ञान शीघ्र न हो सकने से ये दृश्य नहीं हैं, अतः इनका नाम 'अदृश्य' है। शारदातन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वितत्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वितत्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वितत्य को अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अष्ट-सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१३ में उल्लिखित है।

३०४. ॐ व्यक्तरूपाय नमः—ये अदृश्य होने पर भी मार्कण्डेयादि महर्षियों को प्रत्यक्ष दिखते हैं, अतः इनका नाम 'व्यक्तरूप' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धृष्णु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धृष्णु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धृष्णु काव्यशास्त्र के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र कवित्वप्रद है। यह महाभारत-वनपर्व में उल्लिखित है।

३०५. ॐ सहस्रजिते नमः—ये हजार युगों तक शयन करते हुए सहस्र युगों के कल्पान्त को जीतते हैं, अतः इनका नाम 'सहस्रजित्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम काशी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काशी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काशी ऋषि को शिवगौरी की भक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शिवगौरीभक्तिप्रद है। यह मन्त्र महाभारत-वनपर्व में उल्लिखित है।

३०६. ॐ अनन्तजिते नमः—बालमुकुन्दरूप में लेटे हुए इनके अन्त का किसी को भी ठीक-ठीक ज्ञान नहीं होता है, अतः इनका नाम 'अनन्तजित्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम घोर ऋषि ने यह नाममन्त्र

जपा है, अतएव घोर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घोर ऋषि सिद्ध हुए तथा स्वर्ग को प्राप्त हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।७५।३ में सङ्केतित है।

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥५१॥

३०७. ॐ इष्टाय नमः—अपने उदर में धारण किये हुए महात्माओं को भी ये इष्ट हैं, क्योंकि ये उनकी माता की भाँति रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'इष्ट' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मुखमण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मुखमण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुखमण्ड को इष्ट-सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र इष्टसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३०८. ॐ विशिष्टाय नमः (अविशिष्टाय नमः)—ये सब के अन्तर्यामी रूप से विशेषकर बचे हुए हैं अर्थात् सदा विद्यमान रहते हैं, अतः इनका नाम 'विशिष्ट' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम साम्ब ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव साम्ब इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से साम्ब को वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वैशिष्ट्यप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३०९. ॐ शिष्टेष्टाय नमः—ये बड़े-बड़े मार्कण्डेयादि तपस्वी एवं विद्वान् शिष्टों को भी पुरुषार्थरूप से इष्ट हैं, अतः इनका नाम 'शिष्टेष्ट' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम काव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काव्य ऋषि काव्यशास्त्र के ज्ञाता और हरिभक्त हुए। यह मन्त्र काव्यज्ञान तथा हरिभक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

३१०. ॐ शिखण्डिने नमः—इनके पास अपरिमित परम तेज रूप शिखण्ड अर्थात् कलाप है, अतः इनका नाम 'शिखण्डी' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रमणक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रमणक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रमणक सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।२।१२ में उल्लिखित है।

३११. ॐ नहुषाय नमः—ये अपनी माया से सभी जीवों को बाँधते हैं, अतः इनका नाम 'नहुष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम प्राणय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्राणय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्राणय महायोगी हुए। यह मन्त्र योगप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३।११ में उल्लिखित है।

३१२. ॐ वृषाय नमः—ये अपनी अमृततुल्य देहकान्ति से तथा वैसी ही वाणी से मार्कण्डेय ऋषि को आश्वासन देते हुए खींचते हैं, अतः इनका नाम 'वृष' है। गौरीसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यज्ञाङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यज्ञाङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यज्ञाङ्ग को अनेक यज्ञकर्तृत्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र अनेकयज्ञकर्तृत्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ४।३९।२ में उल्लिखित है।

३१३. ॐ क्रोधघ्ने नमः—ये भक्तों को शान्तिगुण देकर उनका क्रोध नष्ट करते हैं, अतः इनका नाम 'क्रोधहा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कवि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कवि इस मन्त्र के ऋषि हैं। शिवजी की आज्ञा से इसको जपने से कवि की क्रोधशान्ति हुई। यह मन्त्र क्रोधशामक है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३१४. ॐ क्रोधकृते नमः (ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः)—ये दुर्योधन आदि दुष्टों के प्रति क्रोध करते हैं, अतः इनका नाम 'क्रोधकृत्' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आश्वलायनगोत्री द्योतमान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव द्योतमान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से द्योतमान महान् तपस्वी हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

३१५. ॐ कर्त्रे नमः—ये दुष्ट दैत्यों को युद्ध में काटते हैं, अतः इनका नाम 'कर्ता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वेदबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेदबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वेदबाहु तपस्वी होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त हुए। यह मन्त्र तपःप्रद तथा ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३१६. ॐ विश्वबाहवे नमः—ये सम्पूर्ण जगत् के कष्टों (दुष्टों) को हटाने में समर्थ बाहुवाले हैं, अतः इनका नाम 'विश्वबाहु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रभेणककुल में उत्पन्न यदुभ्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यदुभ्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यदुभ्र को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८१।३ में उल्लिखित है।

३१७. ॐ महीधराय नमः—ये पृथ्वी का भार उतारने के कारण लोगों द्वारा की गई मही (पूजा) को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'महीधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अकपीवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अकपीवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अकपीवान् प्रजावान् तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र प्रजाप्रद तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।१७ में सङ्केतित है।

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥५२॥

३१८. ॐ अच्युताय नमः—ये कभी च्युत नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अच्युत' है । सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम उग्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्र इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से उग्र महान् तेजस्वी तथा जितेन्द्रिय हुए । यह मन्त्र तेजस्विताप्रद तथा जितेन्द्रियत्वप्रद है । यह मन्त्र श्रीमद्भगवद्गीता में सङ्केतित है ।

३१९. ॐ प्रथिताय नमः—ये अच्युतत्व के कारण जगत्प्रसिद्ध हैं, अतः इनका नाम 'प्रथित' है । भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हिरण्यरोमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हिरण्यरोमा इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से हिरण्यरोमा ब्रह्मर्षि हुए । यह मन्त्र ब्रह्मर्षित्वप्रद है । यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है ।

३२०. ॐ प्राणाय नमः—ये मेघ के समान नादवाले हैं, अतः इनका नाम 'प्राण' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अङ्गिरसगोत्री शान्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शान्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से शान्ति वेद के ज्ञाता हुए । यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है । यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।१ में उल्लिखित है ।

३२१. ॐ प्राणदाय नमः—ये भक्तों की रक्षा के लिए अपना प्राण भी देने को उद्यत होते हैं, अतः इनका नाम 'प्राणद' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम संकृतिगोत्री पर्जन्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पर्जन्य इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से पर्जन्य को भगवद्दर्शन हुआ । यह मन्त्र भगवद्दर्शनप्रद है । यह मन्त्र नारसिंहसंहिता में उल्लिखित है ।

३२२. ॐ वासवानुजाय नमः—ये वामनावतार में इन्द्र के कनिष्ठ भ्राता हुए, अतः इनका नाम 'वासवानुज' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दधिमन्थ के पुत्र ऊर्ध्वबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऊर्ध्वबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से ऊर्ध्वबाहु सिद्ध हुए । यह मन्त्र सिद्धिप्रद है । यह मन्त्र वामनपुराण में उल्लिखित है ।

३२२. ॐ अपां निधये नमः—ये सब जलों के निधि हैं, अतः इनका नाम 'अपां निधि' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पिप्पलायनपुत्र सत्यनेत्र ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्यनेत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से सत्यनेत्र महामना, तपस्वी तथा निधिपति हुए । यह मन्त्र

मनस्वित्वप्रद, तपःप्रद तथा निधिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।७ में सङ्केतित है।

३२४. ॐ अधिष्ठानाय नमः—ये अखिल प्रपञ्च के आधार हैं, अतः इनका नाम 'अधिष्ठान' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम खद्योत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव खद्योत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से खद्योत सर्वविज्ञ हुए। यह मन्त्र सर्वविज्ञताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।३० में सङ्केतित है।

३२५. ॐ अप्रमत्ताय नमः—ये उस उस काल में किये जानेवाले उस उस कर्म में सदा सावधान रहते हैं, अतः इनका नाम 'अप्रमत्त' है। भवानी-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सूर्यभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सूर्यभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सूर्यभ महातेजस्वी हुए। यह मन्त्र महातेजस्वित्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १२।१।१८ में सङ्केतित है।

३२६. ॐ प्रतिष्ठिताय नमः—ये अपनी महिमा में सदा स्थित रहते हैं, अतः इनका नाम 'प्रतिष्ठित' है। भुवनेशीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कति-वंश में उत्पन्न सुधामा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुधामा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुधामा सिद्ध हुए। यह मन्त्र अथर्ववेद १७।१।१९ में उल्लिखित है।

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥५३॥

३२७. ॐ स्कन्दाय नमः—इन्होंने देवताओं के हितार्थ बड़े-बड़े दैत्य-दानवों का शोषण किया है, अतः इनका नाम 'स्कन्द' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम माण्डव्यवंशज अति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अति ऋषि तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित है।

३२८. ॐ स्कन्दधराय नमः—ये देवसेनापति स्कन्द को अपनी विभूति के रूप से धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'स्कन्दधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भृगुवंशी विरजा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विरजा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विरजा महान् तपस्वी तथा सिद्ध हुए। यह मन्त्र तपःप्रद तथा सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३२९. ॐ धुर्याय नमः—ये अखिल भुवन का भार वहन करते हैं, अतः इनका नाम 'धुर्य' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उशना ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उशना इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उशना महाकवि हुए। यह मन्त्र कवित्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३३०. ॐ वरदाय नमः—ये जगत् के व्यवहार को चलानेवाले देवताओं को भी वर देते हैं, अतः इनका नाम 'वरद' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तपोमूर्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तपोमूर्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तपोमूर्ति परमसिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

३३१. ॐ वायुवाहनाय नमः—ये जगत् के प्राणवायु को चलाते हैं, अतः इनका नाम 'वायुवाहन' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दीप्तिमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दीप्तिमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीप्तिमान् दिव्यसामर्थ्यवाले सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।५१।७ में उल्लिखित है।

३३२. ॐ वासुदेवाय नमः—ये प्राणिमात्र को अपने में बसाते हैं और स्वयं सबमें बसते हैं, अतः इनका नाम 'वासुदेव' है। अतएव विष्णुपुराण में—"भूतानि वासयन् स्वस्मिन् सर्वभूतेषु वा वसन्। यः क्रीडति सदा तस्माद् वासुदेवो हरिः स्मृतः ॥" और महाभारत में भी—"छादयामि जगत्सर्वं भूत्वा सूर्य इवांशुभिः। सर्वत्राऽव्याहतगतिर्वासुदेवस्ततो ह्यहम् ॥" कहा है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ऊर्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऊर्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऊर्क को दिव्यसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र दिव्यसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

३३३. ॐ बृहद्भानवे नमः—इनकी किरणें जगत् की प्रकाशक तथा विशाल हैं, अतः इनका नाम 'बृहद्भानु' है। अतएव "बृहन्तो भानवो यस्य सूर्यचन्द्रादिगामिनः। तैर्विश्वं भासयति यः स बृहद्भानुरुच्यते ॥" कहा है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वरीवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वरीवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वरीवान् योगियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र योगसिद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३६।१५ में उल्लिखित है।

३३४. ॐ आदिदेवाय नमः—ये स्वतन्त्र प्रभु प्राणियों का संयोग-वियोग करते हुए उन प्राणियों के साथ यथेच्छ क्रीडा करते हैं, अतः इनका नाम 'आदिदेव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अवरीवान् ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतः अवरीवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अव-

रीवान् सिद्धि पाकर ब्रह्मलोक में गये। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।१ में सङ्केतित है।

३३५. ॐ पुरन्दराय नमः—ये सब असुर आदि के सब पुरों का विदारण करते हैं, अतएव इनका नाम 'पुरन्दर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वसुमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वसुमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसुमान् को स्वर्ग प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्वर्ग-प्रद है। यह अथर्ववेद ८।८।१ में उल्लिखित है।

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥५४॥

३३६. ॐ अशोकाय नमः—ये सब शोकों के अत्यन्त वैरी हैं, अतः इनका नाम 'अशोक' है। सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम ज्योतिष्मान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ज्योतिष्मान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ज्योतिष्मान् आजीवन शोकरहित हुए। यह मन्त्र शोकहारक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३३७. ॐ तारणाय नमः—ये सभी प्रकार के भयों से भक्तों को पार करते हैं, अतः इनका नाम 'तारण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम द्युतिमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव द्युतिमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से द्युतिमान् आधिभौतिक व्याधि से रहित हुए। यह मन्त्र व्याधिहारक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३३८. ॐ ताराय नमः—ये अपना सान्निध्य देकर सभी प्राणियों को संसारभय से तारते हैं, अतः इनका नाम 'तार' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हव्यवाहन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हव्यवाहन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हव्यवाहन को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३३९. ॐ शूराय नमः—ये सब वैरियों को जीतने में शूर हैं, अतः इनका नाम 'शूर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुकृति ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव सुकृति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुकृति शूर तथा सर्वशत्रुजित् हुए। यह मन्त्र शूरत्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३४०. ॐ शौरये नमः—ये शूर अर्थात् वसुदेव के पुत्र हैं, अतः इनका नाम 'शौरि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आपोमूर्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आपोमूर्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको

जपने से आपोमूर्ति योगिश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र योगप्रद है। यह मन्त्र स्कन्द-पुराण में उल्लिखित है।

३४१. ॐ जनेश्वराय नमः—ये महान् ऐश्वर्य को पास में रखकर समग्र जगत् के ईश्वर होते हैं, अतः इनका नाम 'जनेश्वर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अष्टम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अष्टम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अष्टम ऋषीश्वर हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३४२. ॐ अनुकूलाय नमः—स्वभाव से बड़े गम्भीर तथा महान् दयालु ये प्रभु भक्तों के लिए सदा अनुकूल रहते हैं, अतः इनका नाम 'अनुकूल' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पयस्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पयस्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पयस्य को सभी कार्यों में अनुकूलता प्राप्त हुई। यह मन्त्र अनुकूलताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३४३. ॐ शतावर्ताय नमः—नदी के आवर्त के समान शताधिक ऐश्वर्यरूप आवर्त इनके द्वारा निर्मित हैं, अतएव इनका नाम 'शतावर्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कश्यपाल ऋषिके पुत्र नभोग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नभोग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नभोग मुक्तिभागी हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३४४. ॐ पद्मिने नमः—ये लीलापद्म हाथ में सदा धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'पद्मी' है। शैवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कमलाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कमलाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कमलाक्ष सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

३४५. ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः—इनका अवलोकन अर्थात् कृपाकटाक्ष कमल के समान शीतलताप्रद है, अतः इनका नाम 'पद्मनिभेक्षण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भार्गव हविष्मान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः हविष्मान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हविष्मान् मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥५५॥

३४६. ॐ पद्मनाभाय नमः—इनकी नाभि कमल के समान है, अतः इनका नाम 'पद्मनाभ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भार्गव

कुश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भार्गव कुश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुश हरितत्त्व के ज्ञाता तथा मुक्त हुए। यह मन्त्र हरितत्त्वप्रद तथा मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

३४७. ॐ अरविन्दाक्षाय नमः—इनकी आँखें लाल कमल के समान सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'अरविन्दाक्ष' है। स्कन्दपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आत्रेय अरुण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अरुण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अरुण को दिव्य नेत्र प्राप्त हुआ। यह मन्त्र दिव्यदृष्टिप्रद है। यह मन्त्र गोपालसहस्रनाम में सङ्केतित हैं।

३४८. ॐ पद्मगर्भाय नमः—ये उपासक के हृदयकमल के भीतर निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'पद्मगर्भ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनघ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनघ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनघ को ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३४९. ॐ शरीरभृते नमः—ये अपने उपासक का अपने शरीर के समान पोषण करते हैं, अतएव इनका नाम 'शरीरभृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उरुधिष्ण्य ऋषि ये यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उरुधिष्ण्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उरुधिष्ण्य विद्वानों में अग्रगण्य हुए तथा सत्यलोकगामी हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठत्वप्रद तथा सत्यलोकप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।८।३० में सङ्केतित है।

३५०. ॐ महर्द्धये नमः—इनकी ऋद्धि सकल भक्तों का योग-क्षेम चलाने में समर्थ है, अतः इनका नाम 'महर्द्धि' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम शुचि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शुचि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शुचि महान् तपस्वी तथा धनवान् हुए। यह मन्त्र तपःप्रद तथा धनप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

३५१. ॐ ऋद्धाय नमः—ये भक्तों की समृद्धि से समृद्ध होते हैं, अतएव इनका नाम 'ऋद्ध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुवर्चा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुवर्चा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुवर्चा को सत्यलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सत्यलोकप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

३५२. ॐ वृद्धात्मने नमः—बड़े माहात्म्यवाले होने से इनका स्वरूप बढ़ा हुआ है, अतः इनका नाम 'वृद्धात्मा' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अग्नितेजा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः अग्नितेजा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्नितेजा अग्नि के समान तेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३५३. ॐ महाक्षाय नमः—इनकी इन्द्रियाँ महासामर्थ्यवाली हैं, अतः इनका नाम 'महाक्ष' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम काश्यप आग्नीध्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आग्नीध्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आग्नीध्र तपस्वी और विद्वान् हुए। यह मन्त्र तपःप्रद तथा विद्याप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

३५४. ॐ गरुडध्वजाय नमः—गरुड इनकी ध्वजा में हैं, अतएव इनका नाम 'गरुडध्वज' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम निश्चलकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निश्चलकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निश्चलकर्मा स्वर्गगामी हुए। यह मन्त्र स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥५६॥

३५५. ॐ अतुलाय नमः—ये अप्रतिम हैं, अतः इनका नाम 'अतुल' है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ह्रस्वबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ह्रस्वबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ह्रस्वबाहु अतुल तपस्वी हुए। यह मन्त्र अतुलता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।२७।३ में सङ्केतित है।

३५६. ॐ शरभाय नमः—ये अपनी मर्यादा का उल्लङ्घन करनेवालों को नष्ट कर देते हैं अथवा ये शर अर्थात् विनाशी शरीरों में अन्तर्यामी रूप से चमकते हैं, अतः इनका नाम 'शरभ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम युक्तकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव युक्तकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से युक्तकर्मा को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

३५७. ॐ भीमाय नमः—वायु, अग्नि आदि सभी देवता इनसे डरते हैं, अतः इनका नाम 'भीम' है। शैवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पावकवर्चा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पावकवर्चा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पावकवर्चा भीमकर्मा हुए यह मन्त्र भीमकर्मकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१८०।२ में उल्लिखित है।

३५८. ॐ समयज्ञाय नमः—ये सृष्टि में उत्पन्न होनेवाले अग्नि आदि के ऊर्ध्वज्वलन आदि समय अर्थात् आचारण को जानते हैं अथवा सम अर्थात् समत्वभावना ही इनका यज्ञ अर्थात् आराधना है, अतः इनका नाम 'समयज्ञ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वेदमुख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेदमुख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसकों जपने से वेदमुख सदा यज्ञ

करनेवाले हुए। यह मन्त्र यज्ञप्रवृत्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३५९. ॐ हविर्हरये नमः—ये यज्ञमात्र में हविष् को हरते हैं अर्थात् लेते हैं, अतः इनका नाम 'हविर्हरि' है। अतएव—"हराम्यघं च स्मर्तॄणां हविर्भागं क्रतुष्वहम्। वर्णश्च मे हरिश्रेष्ठस्तस्माद्धरिरहं स्मृतः॥" कहा है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तपोरवि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तपोरवि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तपोरवि विद्वानों में श्रेष्ठ तथा घोर तपस्वी हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद तथा तपःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।१११।१ में सङ्केतित है।

३६०. ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः—इनमें सभी प्रकार के सुन्दर-सुन्दर सौभाग्य के सूचक लक्षण भरे हुए हैं, अतः इनका नाम 'सर्वलक्षणलक्षण्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तपोधृति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तपोधृति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तपोधृति लक्ष्मीवान् तथा विद्वान् हुए। यह मन्त्र लक्ष्मीप्रद तथा विद्याप्रद है। यह मन्त्र स्कन्द-पुराण में उल्लिखित है।

३६१. ॐ लक्ष्मीवते नमः—लक्ष्मी इनके पास सदा रहती हैं, अतः इनका नाम 'लक्ष्मीवान्' है। शैवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम धृतिमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धृतिमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धृतिमान् लक्ष्मीवान् हुए। यह मन्त्र लक्ष्मीप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३२।२० में सङ्केतित है।

३६२. ॐ समितिञ्जयाय नमः—ये भक्तों के सकल दुःखों को राख के समान भस्म करते हैं, अतः इनका नाम 'समितिञ्जय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आपस्तम्बपुत्र हव्यप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हव्यप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने हव्यप सब दुःखों से तर गए। यह मन्त्र दुःखनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।८।६ में सङ्केतित है।

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः॥५७॥

३६३. ॐ विक्षराय नमः—अनन्यभक्तों से इनका स्नेह कभी हटता नहीं है, अतः इनका नाम 'विक्षर' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कर्मतत्त्ववित् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्मतत्त्ववित् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्मतत्त्ववित् कर्मतत्त्व के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र कर्मतत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३६४. ॐ रोहिताय नमः—ये कमलपुष्प के भीतरी भाग के समान लाल हैं, अतः इनका नाम 'रोहित' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पैङ्गिगोत्री निष्प्रकम्प ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निष्प्रकम्प इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निष्प्रकम्प को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १३।३।२६ में उल्लिखित है।

३६५. ॐ मार्गाय नमः—वाञ्छित अर्थ की सिद्धि इन्हीं से होने से उपासक जन इन्हीं को खोजते हैं, अतः इनका नाम 'मार्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम योगकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव योगकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से योगकर्मा ब्रह्मलोकवासी हुए। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।१८ में सङ्केतित है।

३६६. ॐ हेतवे नमः—ये वाञ्छित अर्थ के हेतु हैं, अतः इनका नाम 'हेतु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम त्यक्तमोह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव त्यक्तमोह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से त्यक्तमोह को वाञ्छित अर्थ प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वाञ्छितार्थप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३६७. ॐ दामोदराय नमः—(क) सकल लोकों के आधार होने कारण ये दाम अर्थात् सकल लोकों के नाम अपने उदर में रखते हैं, (ख) अथवा दाम अर्थात् इन्द्रिय-निग्रहरूप गुण से युक्त पुरुष इनके उदर में रहते हैं, (ग) अथवा यशोदाजी ने वात्सल्य से इनके पेट में डोरी बाँधी, अतः इनका नाम 'दामोदर' है। अतएव—"दामानि लोकनामानि तानि यस्योदरान्तरे। तेन दामोदरो देवः श्रीधरः श्रीसमाश्रितः ॥" और—"ददर्श चाल्पदन्तास्यं स्मितहासं च बालकम्। तयोर्मध्यगतो बद्धो दाम्ना गाढं तथोदरे ॥ ततः स दामोदरतां प्रययौ दामबन्धनात् ॥" कहा है। भुवनेशीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तालजङ्घ मुनि के पुत्र अकल्कक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अकल्कक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अकल्कक ऋषि कर्मबन्धन से मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३६८. ॐ सहाय नमः—इन्होंने यशोदा द्वारा किए गए दामबन्धन आदि क्लेश सहन किये हैं, अतः इनका नाम 'सह' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम सोमशर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सोमशर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। शङ्करजी की आज्ञा से इसको जपने से सोमशर्मा सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३६९. ॐ महीधराय नमः—ये पर्वतरूप से पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'महीधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भद्रतपा ऋषि

ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः भद्रतपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भद्रतपा महाभाग्यवान् हुए। यह मन्त्र भाग्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३।९ में सङ्केतित है।

ॐ महाभागाय नमः—रुक्मिणी आदि स्त्रियों ने इन्हें स्वयं ही वरा है, अतः इनका नाम महाभाग है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सत्यधृति ऋषि ने भाग्यवृद्धि के लिए यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्यधृति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्यधृति के भाग्य की वृद्धि हुई। यह मन्त्र भाग्यवृद्धिकारक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३७१. ॐ वेगवते नमः—ये श्रीकृष्णावतार में बाल्यावस्था में बड़े वेगवाले हुए हैं, अतः इनका नाम 'वेगवान्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शङ्कु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्कु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्कु तीनों भुवनों में विख्यात हुए। यह मन्त्र ख्यातिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद में सङ्केतित है।

३७२ ॐ अमिताशनाय नमः—व्रज में अन्नकूट में इन्द्र के लिए बनाया गया सम्पूर्ण बहुत भोज्य ये पूरा खा गए, अतः इनका नाम 'अमिताशन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम घोटक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव घोटक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घोटक योगीश्वर हुए। यह मन्त्र योगप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥५८॥

३७३. ॐ उद्भवाय नमः—दामोदर भगवान् का निरन्तर स्मरण एवं चिन्तन करनेवाले भक्तों के भवबन्धन इन्होंने छुड़ाए हैं, अतः इनका नाम 'उद्भव' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम रूक्षजट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रूक्षजट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रूक्षजट संसारबन्धन से मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।३१ में सङ्केतित है।

३७४. ॐ क्षोभणाय नमः—सृष्टि के समय इन्होंने आत्मेच्छा से प्रकृति और पुरुष के अन्दर प्रवेश कर उनका क्षोभण किया है, अतः इनका नाम 'क्षोभण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शृङ्गप्रिय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शृङ्गप्रिय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शृङ्गप्रिय को सालोक्य मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।३३ में उल्लिखित है।

३७५. ॐ देवाय नमः—ये सब जीवों को (व्याघ्र, वराह आदि के समान) माया-पाश से बाँधकर उनके साथ क्रीडा करते हैं, अतः इनका नाम 'देव' है। शिवसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ह्राद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ह्राद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ह्राद स्वर्गलोक को प्राप्त हुए। यह मन्त्र स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९४।१३ में उल्लिखित है।

३७६. ॐ श्रीगर्भाय नमः—ये भोगक्रीडा में श्री की आवश्यकता होने के कारण श्री की गर्भ के समान रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'श्रीगर्भ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जातूकर्ण्य ऋषि के वंशज श्रीशङ्ख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्रीशङ्ख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्रीशङ्ख श्रीमान् होकर इहलोक तथा परलोक में सुखी हुए। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३७७. ॐ परमेश्वराय नमः—ये बड़ा ऐश्वर्य पास में रखते हैं, अतः इनका नाम 'परमेश्वर' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सत्यव्रत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्यव्रत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्यव्रत परमैश्वर्य को प्राप्त हुए। यह मन्त्र परमैश्वर्यप्रद है। यह मन्त्र नारदीय-संहिता में उल्लिखित है।

३७८. ॐ करणाय नमः—ये अपने को प्राप्त करनेवाले भक्त को स्वयं ही स्वयं की प्राप्ति कराते हैं, अतः इनका नाम 'करण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तत्त्वपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तत्त्वपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तत्त्वपाल जितेन्द्रिय होकर मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३४।२ में सङ्केतित है।

३७९. ॐ कारणाय नमः—संसार में विविध कर्म करनेवाले प्राणियों के उन सभी कर्मों को ये ही कराते हैं, अतः इनका नाम 'कारण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भूर्भुव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भूर्भुव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भूर्भुव देवर्षि और योगिश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद में उल्लिखित है।

३८० ॐ कर्त्रे नमः—दयालु ये परदुःख से दुःखी होने के कारण उस दुःख के निवारण के लिए स्वतन्त्ररूप से कर्म करते हैं, अतः इनका नाम 'कर्ता' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम पृथुश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः पृथुश्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पृथश्रवा देवर्षि और तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र वाल्मीकि-रामायण अयोध्याकाण्ड में उल्लिखित है।

३८१. ॐ विकर्त्रे नमः—ये स्वयं हर्ष-शोकरहित होने पर भी भक्तों के लिए हर्ष-शोकवाले बनते हैं, अतः इनका नाम 'विकर्ता' है। भवानीरहस्य

के अनुसार सर्वप्रथम कुञ्जर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुञ्जर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुञ्जर महर्षि, तपस्वी और योगियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३८२. ॐ गहनाय नमः—इनका पता शीघ्र किसी को नहीं लगता है, अतः इनका नाम 'गहन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तपोधृति के कुल में उत्पन्न चक्रमन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चक्रमन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चक्रमन्द तत्त्वज्ञानी हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मपुराण में उल्लिखित है।

३८३. ॐ गुहाय नमः—ये अखिल प्रपञ्च का गूहन अर्थात् संरक्षण करते हैं, अतः इनका नाम 'गुह' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पुण्डरीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पुण्डरीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पुण्डरीक ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र संयमप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥५९॥

३८४. ॐ व्यवसायाय नमः—सकल नक्षत्रों के आधारभूत आकाशरूप होने से इनमें सारा ज्योतिश्चक्र बाँधा जाता है, अर्थात् ये ध्रुवस्वरूप हैं, अतः इनका नाम 'व्यवसाय' है। अगस्त्यसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम शितिकण्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शितिकण्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शितिकण्ठ वेदों और वेदाङ्गों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३८५. ॐ व्यवस्थानाय नमः—ध्रुवमूलक कला, काष्ठा, मुहूर्तादिरूप काल भी इन्हीं में रहता है, अतः इनका नाम 'व्यवस्थान' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मधुच्छन्दा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मधुच्छन्दा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मधुच्छन्दा तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३८६. ॐ संस्थानाय नमः—इनमें सारा संसार समाप्ति को प्राप्त होता है, अतः इनका नाम 'संस्थान' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शकुन्तधर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शकुन्तधर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शकुन्तधर्मा को स्थान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्थानप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३८७. ॐ स्थानदाय नमः—परमपद की प्राप्ति में कारण होने से ये भक्तों को वह उत्तम स्थान देते हैं, अतः इनका नाम 'स्थानद' है। शिव-

रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अक्षीणतेजा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अक्षीणतेजा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अक्षीणतेजा त्रिभुवन में महान् तेजस्वी तथा तपस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद तथा तपःप्रद है। यह मन्त्र नारसिंहसंहिता में उल्लिखित है।

३८८. ॐ ध्रुवाय नमः—परमपदप्रद भगवान् ने ही राजकुमार ध्रुव को ध्रुवपद देकर स्थिर किया, अतः इनका नाम 'ध्रुव' है। सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम कालपथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालपथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालपथ को ध्रुवलोक में सदा निवास प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ध्रुवलोकप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३८९. ॐ परर्द्धये नमः—इनके पास सबसे अधिक गुणसम्पत्ति है, अतः इनका नाम 'परर्द्धि' है। शैवागमतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वज्रकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वज्रकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वज्रकर्मा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तथा कुवेर के समान धनी हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३९०. ॐ परमस्पष्टाय नमः—इनका परम अर्थात् परमत्व संसार में स्पष्ट है, अतः इनका नाम 'परमस्पष्ट' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम यमदण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यमदण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यमदण्ड महात्मा और सर्वशास्त्रज्ञ हुए। यह मन्त्र सर्वशास्त्रज्ञताप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३९१. ॐ तुष्टाय नमः—मनुष्य-देह धारण करने पर भी इनसे जगत् का पालन पूर्ण होता है, ऐसा समझकर ये सदा सन्तुष्ट रहते हैं, अतः इनका नाम 'तुष्ट' है। भुवनेश्वरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कपोतरोमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कपोतरोमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कपोतरोमा धर्मात्मा तथा बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठत्वप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

३९२. ॐ पुष्टाय नमः—ये सकल करुणा आदि महान् गुणों से परिपूर्ण होने के कारण परिपुष्ट हैं, अतः इनका नाम 'पुष्ट' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शकटाङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शकटाङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसके जपने से शकटाङ्ग महान् तपस्वी हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

३९३. ॐ शुभेक्षणाय नमः—अतिशीतल, उदार तथा विशाल कमलसदृश-नेत्र होने के कारण इनकी आँखें सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'शुभेक्षण' है। अथवा इनका ईक्षण दो प्रकार का है—स्वकर्मक तथा स्वकर्तृक, अतः

इनका नाम 'शुभेक्षण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम लकुटहस्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लकुटहस्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लकुटहस्त ऊर्ध्वरेता, तपस्वी तथा स्वर्गवासी हुए। यह मन्त्र ऊर्ध्वरेतस्त्वप्रद, तपःप्रद तथा स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमम् ॥६०॥

३९४. ॐ रामाय नमः—इनके रूप से तथा गुणों से वशीभूत होकर सब प्राणी इनमें रमते हैं, अतः इनका नाम 'राम' है। अतएव पद्मपुराण में—"रमन्ते योगिनो यस्मिन् नित्यानन्दे चिदात्मनि। इति रामपदेनैतत् परं ब्रह्माभिधीयते।।" कहा है। अगस्त्यसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम शीतरश्मि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शीतरश्मि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शीतरश्मि नित्यतपस्वी हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है। इस नाम के विषय में—"रामेति राम रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।" कहा है।

३९५. ॐ विरामाय नमः—प्रलय के समय सम्पूर्ण जगत् इनमें विराम अर्थात् लय को प्राप्त होता है, अतः इनका नाम 'विराम' है। अगस्त्यसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम सैन्धवायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सैन्धवायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सैन्धवायन सर्वशास्त्रविशारद होकर मुक्त हुए। यह मन्त्र सर्वशास्त्रज्ञताप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३९६. ॐ विरताय नमः—(विरजसे नमः)—सदा निरपेक्ष होकर रहना इनका स्वभाव होने से ये उग्रसेन को मथुरा का राज्य देकर विरत हुए, अतएव इनका नाम 'विरत' है। कुछ लोग विरत की जगह विरज पाठ मानते हैं। इस पक्ष में भगवान् रजोगुण और तमोगुण से रहित हैं तथा शुद्धसत्त्वात्मक हैं, अतः इनका नाम 'विरज' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विद्युत्प्रभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विद्युत्प्रभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विद्युत्प्रभ विरक्त तथा मुक्त हुए। यह मन्त्र वैराग्यप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

३९७. ॐ मार्गाय नमः—ये मुक्तिमार्ग दिखलानेवाले हैं, अतः इनका नाम 'मार्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वज्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वज्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वज्र मुक्तिभागी हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

३९८. ॐ नेयाय नमः—ये भक्तों की आज्ञा का पालन करने के लिए उद्यत रहते हैं, अतः इनका नाम 'नेय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शङ्खपाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्खपाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्खपाद तपस्वी तथा सत्यलोकवासी हुए। यह मन्त्र तपःप्रद तथा सत्यलोकप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१८ में सङ्केतित है।

३९९. ॐ नयाय नमः—ये भक्तों द्वारा समर्पित अल्प भी पदार्थ ले लेते हैं, अतः इनका नाम 'नय' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम हस्तिकाश्यप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हस्तिकाश्यप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हस्तिकाश्यप उग्र-प्रतापी हुए। यह मन्त्र प्रताप-प्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४००. ॐ अनयाय नमः—ये अभक्त द्वारा प्रदत्त बहुत पदार्थ भी नहीं लेते, अतः इनका नाम 'अनय' है। भुवनेश्वरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कूर्चामुख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कूर्चामुख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कूर्चामुख मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४०१. ॐ वीराय नमः—इन्होंने बड़े बड़े दैत्य-दानवों को अपने प्रताप से विचलित किया है, अतः इनका नाम 'वीर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पैङ्गिगोत्री वाड्डलि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वाड्डलि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाड्डलि सर्वत्र विजयी हुए। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १८।४ में उल्लिखित है।

४०२. ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः—बड़े बड़े देवादिक शक्तिमानों में ये श्रेष्ठ हैं, अतः इनका नाम 'शक्तिमतां श्रेष्ठ' है। महोदयतत्त्वतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मुसल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मुसल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुसल शक्तिमानों में श्रेष्ठ, तपस्वी और विख्यात हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।२५।५ में सङ्केतित है।

४०३. ॐ धर्माय नमः—ये अभ्युदय तथा निश्रेयस से जगत् को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'धर्म' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वल्गुजङ्घ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वल्गुजङ्घ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वल्गुजङ्घ धर्मात्माओं में श्रेष्ठ, यज्ञ करनेवालों में विख्यात वैष्णव हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २०।९ में उल्लिखित है।

४०४. ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः—ये बड़े बड़े धर्मज्ञाताओं में उत्तम हैं, अतः इनका नाम 'धर्मविदुत्तम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम

ग्रावशिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ग्रावशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ग्रावशिरा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥६१॥

४०५. ॐ वैकुण्ठाय नमः—ये विकुण्ठ अर्थात् अटकाव से रहित भक्तों के सगे हैं, अतः इनका नाम 'वैकुण्ठ' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शङ्खनिधि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शङ्खनिधि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शङ्खनिधि वैकुण्ठ को गए तथा सारूप्य मुक्ति को प्राप्त हुए। यह मन्त्र वैकुण्ठप्रद है। यह मन्त्र महाभा. शा. प. ३४।६० में उल्लिखित है।

४०६. ॐ पुरुषाय नमः—सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि के पहले रहकर ये सब पापों को नष्ट करते हैं, अतः इनका नाम 'पुरुष' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम सावित्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सावित्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सावित्र तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।७ में सङ्केतित है।

४०७. ॐ प्राणाय नमः—वेद इनका उत्तम शब्द है, अतः इनका नाम 'प्राण' है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम परतापन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव परतापन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से परतापन तपस्वियों में विख्यात हुए। यह मन्त्र ख्यातिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४०८. ॐ प्राणदाय नमः—इन्होंने ब्रह्मा को वेद दिए हैं, अतः इनका नाम 'प्राणद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जानन्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जानन्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जानन्ति विद्वान् हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४०९. ॐ प्रणवाय नमः—सब वेद इनकी स्तुति करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रणव' है। अतएव "प्रणमन्तीह वै वेदास्तस्मात् प्रणव उच्यते ॥" कहा है। सुन्दरीमहोदय के अनुसार सर्वप्रथम पृश्नि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पृश्नि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पृश्नि सिद्धों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र कठोपनिषद् १।२।३५ में सङ्केतित है।

४१०. ॐ पृथवे नमः—इनका यश संसार में विख्यात है, अतः इनका नाम 'पृथु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वृहद्भूत ऋषि ने यह मन्त्र जपा है, अतएव वृहद्भूत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृहद्भूत विज्ञानवान् हुए। यह मन्त्र ब्रह्मज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

४११. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः—ये हिरण्य अर्थात् सुवर्ण के निधि हैं, अतः इनका नाम 'हिरण्यगर्भ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विज्ञानमना ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विज्ञानमना इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विज्ञानमना कुवेर के समान धनी हुए और धर्मात्मा हुए। यह मन्त्र धन तथा धर्म देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।१ में उल्लिखित है।

४१२. ॐ शत्रुघ्नाय नमः—ये भक्तों के शत्रुरूप इन्द्रियवर्ग का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'शत्रुघ्न' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वृद्धगार्ग्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृद्धगार्ग्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृद्धगार्ग्य ने शत्रुनाश किया और यश प्राप्त किया। यह मन्त्र शत्रुनाशक तथा यशःप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४१३. ॐ व्याप्ताय नमः—ये शत्रु, मित्र आदि सभी में समानरूप से वात्सल्य रखकर सबको व्याप्त करते हैं, अतः इनका नाम 'व्याप्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हिरण्यकेश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हिरण्यकेश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हिरण्यकेश पृथिवी से ब्रह्मलोक तक यशस्वी हुए। यह मन्त्र यशःप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

४१४. ॐ वायवे नमः—ये जहाँ-तहाँ भक्तों के पास स्वयं ही पहुँचते हैं, अतः इनका नाम 'वायु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मृणाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मृणाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मृणाल परमसिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।९ में सङ्केतित है।

४१५. ॐ अधोक्षजाय नमः—ये क्षयहीन होते हुए मनुष्यलोक में प्रादुर्भूत हुए हैं, अतः इनका नाम 'अधोक्षज' है। अतएव—"अधो न क्षीयते जातु यस्मात्तस्मादधोक्षजः ॥" और—"अधोभूते ह्यक्षगणे प्रत्यग्रूप-प्रवाहिते। जायते तस्य वै ज्ञानं तेनाधोक्षज उच्यते ॥" कहा है। परमानन्द-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शान्तिकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शान्तिकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शान्तिकर्मा
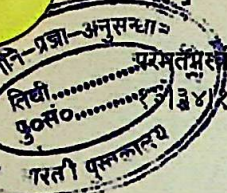
परमतपस्वी होकर स्वर्ग में गए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३४।१३ में सङ्केतित है।

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥६२॥

४१६. ॐ ऋतवे नमः—ये सदैव अपूर्व गुणों से सम्पन्न हैं, अतः इनका नाम 'ऋतु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम लीलाव्य ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव लीलाव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लीलाव्य सब ऋतुओं के सुख के भोक्ता हुए। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८५।१९ में उल्लिखित है।

४१७. ॐ सुदर्शनाय नमः—इनके गुण और प्रभाव को न जाननेवाले मन्दों को भी ये सुन्दर दर्शन देनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'सुदर्शन' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शिलायूप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शिलायूप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिलायूप दुःख से मुक्त हुए। यह मन्त्र दुःखनाशक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४१८. ॐ कालाय नमः—इनमें चराचर जगत् विलीन होता है, अतः इनका नाम 'काल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चक्रक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चक्रक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चक्रक कालविजेता हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८५।१६,१८ में उल्लिखित है।

४१९. ॐ परमेष्ठिने नमः—ये जगत् की रक्षा करते हुए जगत् में विहार करते हैं तथा परमस्थान में जाकर बैठते हैं, अर्थात् विहार करते हैं, अतः इनका नाम 'परमेष्ठी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आङ्गिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आङ्गिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आङ्गिक वैष्णवश्रेष्ठ तथा परमपदभागी हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद तथा परमपदप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४२०. ॐ परिग्रहाय नमः—मुमुक्षु अन्य सब देवताओं का त्यागकर इनका परिग्रह करते हैं अर्थात् स्वीकार करते हैं, अतः इनका नाम 'परिग्रह' है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मारुतस्तव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मारुतस्तव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मारुत-स्तव्य परमभक्त हुए। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४२१. ॐ उग्राय नमः—इन्होंने युद्ध के समय में डरे हुए अर्जुन का भय दूर करने के लिए विश्वरूपदर्शन के समय अतिप्रचण्ड रूप दिखलाया है,

अतः इनका नाम 'उग्र' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम श्यामायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्यामायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्यामायन संसाररूपी उग्र दुःख से मुक्त हुए। यह मन्त्र दुःखहारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।९१।१२ में उल्लिखित है।

४२२. ॐ संवत्सराय नमः—उस-उस कर्म में उस-उस काल के रूप से ये वास करते हैं, अतः इनका नाम 'संवत्सर' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कारीषि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कारीषि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कारीषि कालविजेता हुए। यह मन्त्र दीर्घायुष्यप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४२३. ॐ दक्षाय नमः—इनको सत्र भक्तजनों की रक्षा में थोड़ा भी आलस्य नहीं है, अतएव इनका नाम 'दक्ष' है। महाकालतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ताडकायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ताडकायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ताडकायन सत्र कार्यों में दक्ष (प्रवीण) हुए। यह मन्त्र दक्षताप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४२४. ॐ विश्रामाय नमः—ये पाप तथा पापफल के प्रसङ्ग में अतिश्रान्त हुए भक्तों को अपने में विश्राम देते हैं, अतः इनका नाम 'विश्राम' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम असुरायण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव असुरायण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से असुरायण को विश्रान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र विश्रान्तिपद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

४२५. ॐ विश्वदक्षिणाय नमः—ये अपना इष्ट करनेवाले अथवा अनिष्ट करनेवाले सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखते हैं और उनके कष्ट दूर करने में तत्पर रहते हैं अथवा इन्होंने अश्वमेध यज्ञ में सम्पूर्ण पृथ्वी दक्षिणारूप में ब्राह्मणों को दान कर दी, अतः इनका नाम 'विश्वदक्षिण' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जङ्घारि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जङ्घारि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जङ्घारि महान् तपस्वी हुए। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥६३॥

४२६. ॐ विस्ताराय नमः—ये बलवान् कलियुग का संहारकर सत्ययुग प्रवृत्तकर मर्यादा का विस्तार करते हैं, अतः इनका नाम 'विस्तार' है। सात्वत-संहिता के अनुसार सर्वप्रथम बभ्मारि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव

बभ्मारि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बभ्मारि अतितेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

४२७. ॐ स्थावरस्थाणवे नमः—ये स्थावर अर्थात् सर्वत्र रहनेवाले आकाशादि महाभूतों में सद्रूप से स्थिर होकर रहते हैं, अतः इनका नाम 'स्थावरस्थाणु' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बाभ्रवायणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बाभ्रवायणि इस मन्त्र ऋषि हैं। इसको जपने से बाभ्रवायणि को स्थिर अर्थसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र अर्थसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

४२८. ॐ प्रमाणाय नमः—ये सत्य आदि चारों युगों में हिताहित की व्यवस्था (मर्यादा) करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रमाण' है। विश्वसार-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उपगहन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपगहन इस मन्त्र के ऋषि हैं। उसको जपने से उपगहन संसार में प्रमाण रूप माने गए। यह मन्त्र प्रमाणत्वप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।९८।११ में में सङ्केतित है।

४२९. ॐ बीजायाव्ययाय नमः—ये बार-बार धर्म को उत्पन्न करते हैं, अतएव इनका नाम 'बीज अव्यय' (अव्यय बीज) है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दमकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दमकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दमकर्मा जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

४३०. ॐ अर्थाय नमः—एकान्त-भक्त अथवा ज्ञानी लोग इनको प्राप्त करते हैं, अतः इनका नाम 'अर्थ' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुश्रुत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुश्रुत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुश्रुत का अभीष्ट अर्थ सिद्ध हुआ। यह मन्त्र अभीष्टार्थसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४३१. ॐ अनर्थाय नमः—अल्पपुण्यवाले प्राणी धन आदि की कामना रखकर इनकी प्रार्थना करते हैं, अतः इनका नाम 'अनर्थ' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बाभ्रव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बाभ्रव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बाभ्रव्य के सब अनर्थ नष्ट हुए। यह मन्त्र अनर्थनाशक है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४३२. ॐ महाकोशाय नमः—इनके घर में बड़े बड़े अनन्त खजाने (कोश) पड़े हैं, अतः इनका नाम 'महाकोश' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भूतिशर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भूतिशर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भूतिशर्मा को समृद्ध निधि प्राप्त हुई। यह मन्त्र निधिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।३ में सङ्केतित है।

४३३. ॐ महाभोगाय नमः—बड़े बड़े द्रव्यसाध्य कामोपभोग इन्हीं की कृपा से प्राप्त होते हैं, अतः इनका नाम 'महाभोग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विभूतिचक्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विभूतिचक्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विभूतिचक्र को भोगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र भोगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४३४. ॐ महाधनाय नमः—इनके पास देने योग्य अनन्त महान् धन है, अथवा इन्हें दरिद्र (अकिञ्चन) प्राणी बहुत प्रिय हैं, अतः इनका नाम 'महाधन' है। गौरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुरकृत् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुरकृत् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुरकृत् महाधनी हुए। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३२।१९ में सङ्केतित है।

अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्मयूपो महामखः।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥६४॥

४३५. ॐ अनिर्विण्णाय नमः—इनके संसारी प्राणी को बार-बार अभीष्ट दान करने पर भी संसारी प्राणी उन्मत्त होकर इन्हें नहीं भजते, फिर भी ये उन्हें अभीष्टदान करने में निर्विण्ण नहीं होते अर्थात् आलस्य नहीं करते, अतः इनका नाम 'अनिर्विण्ण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अरालि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अरालि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अरालि को वेदों का स्मरण हुआ। यह मन्त्र वेदस्मृतिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४३६ ॐ स्थविष्ठाय नमः—ये शरीर से बड़े स्थूल हैं, अतः इनका नाम 'स्थविष्ठ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शित स्थूलकाय हुए। यह मन्त्र शरीर की स्थूलता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

४३७. ॐ भुवे नमः—ये सब के आधार हैं, अतः इनका नाम 'भू' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम नाविक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नाविक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नाविक को सत्ता प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्ताप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

४३८. धर्मयूपाय नमः—धर्म इनमें इसी प्रकार बँधा है जिस प्रकार यज्ञीय पशु यज्ञीय यूप (खम्भे) में बँधा रहता है, अर्थात् धर्म इनके अधीन है, अतः इनका नाम 'धर्मयूप' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चाम्पेय

ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चाम्पेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चाम्पेय की धर्मवृद्धि हुई। यह मन्त्र धर्मवृद्धिकर है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४३९. ॐ महामखाय नमः—स्वर्गप्राप्ति करानेवाले मखों (यज्ञों) की अपेक्षा इनका मख बड़ा श्रेष्ठ है, अतः इनका नाम 'महामख' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उजधन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उजवन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उजवन को सब यज्ञों के फल की प्राप्ति हुई। यह मन्त्र सर्वयज्ञ-फलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१६ में सङ्केतित है।

४४०. ॐ नक्षत्रनेमये नमः—ये जगत् को आह्लादित करने के लिए नक्षत्रों का निर्वाह करते हैं, अतः इनका नाम 'नक्षत्रनेमि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नवतन्तु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नवतन्तु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नवतन्तु को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४१. ॐ नक्षत्रिणे नमः—श्रीकृष्ण अवतार में ये रोहिणी नक्षत्र में प्रकट हुए हैं, अतः इनका नाम 'नक्षत्री' है। भुवनेशीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वकनख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वकनख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वकनख को सब सुख प्राप्त हुए। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४२. ॐ क्षयाय नमः—ये अल्पपूजा से भी भक्तापराध को क्षमा करते हैं, अतएव इनका नाम 'क्षय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम संयत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव संयत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से संयत जितक्रोध, शान्त तथा मुक्त हुए। यह मन्त्र क्रोधशामक तथा भुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४३. ॐ क्षामाय नमः—दुःखग्रस्त भक्तों द्वारा स्मरण किये गए ये भक्तों के दुःख से दुःखी तथा चिन्ता के कारण दुर्बल होते हैं, अतः इनका नाम 'क्षाम' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम अम्भोरुह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अम्भोरुह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अम्भोरुह जीवन्मुक्त तथा सत्यलोकगामी हुए। यह मन्त्र जीवन्मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४४. ॐ समीहनाय नमः—ये सृष्टिकाल में सबको अपने अपने अधिकार में चेष्टित कराते हैं, अतः इनका नाम 'समीहन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चारुमत्स्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चारुमत्स्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चारुमत्स्य जितेन्द्रिय तथा वैष्णवाग्रणी

हुए। यह मन्त्र जितेन्द्रियत्व तथा विष्णुभक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥९५॥

४४५. ॐ यज्ञाय नमः—ये ही यज्ञ के, यज्ञफल के और यज्ञसाधन के साधन हैं, अतः इनका नाम 'यज्ञ' है। अतएव हरिवंश में—"ये यजन्ति मखैः पुण्यैर्देवतादीन् पितॄनपि। आत्मानमात्मना नित्यं विष्णुमेव यजन्ति ते॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ऊर्जयोनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऊर्जयोनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऊर्जयोनि यज्ञफलभागी तथा ब्रह्मलोकगामी हुए। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।७ में उल्लिखित है।

४४६. ॐ इज्याय नमः—ये काम्य यज्ञों को इन्द्रादि द्वारा लेते हैं अर्थात् ये सब के अन्तरात्मा हैं, अतः इनका नाम 'इज्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शिरीषी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शिरीषी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिरीषी को सर्वयज्ञफल-प्राप्ति हुई तथा ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४७. ॐ महेज्याय नमः—इनकी निष्कामरूप महती इज्या होती है, अतः इनका नाम 'महेज्य' है। महाकालसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम गार्दिभि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गार्दिभि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गार्दिभि विष्णुभक्त तथा विष्णुलोकगामी हुए। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४४८. ॐ क्रतवे नमः—ये सब यज्ञों से तथा सब क्रतुओं से आराधित होते हैं, अतः इनका नाम 'क्रतु' है। सात्त्वतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम प्रसादास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रसादास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रसादास्य तपस्वी, ज्ञानविज्ञान-सम्पन्न तथा परमवैष्णव हुए। यह मन्त्र तपःप्रद, ज्ञानप्रद तथा भक्तिप्रद है। यह मन्त्र नारसिंहसंहिता में उल्लिखित है।

४४९. ॐ सत्राय नमः—बहुतयजमानवाले तथा बहुकालपर्यन्त चलनेवाले यज्ञ में इनकी पूजा होती है, अतः इनका नाम 'सत्र' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वसुदत्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वसुदत्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसुदत्त को सत्रफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सत्रफलप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४५०. ॐ सतां गतये नमः—ये वैराग्यशाली सन्तों को प्राप्त होते हैं, अतः इनका नाम 'सतां गति' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुदर्शन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुदर्शन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुदर्शन को सायुज्य मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सायुज्य-मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४५१. ॐ सर्वदर्शिने नमः—ये अहोरात्र, सब समय, प्रवृत्तिधर्म तथा निवृत्तिधर्म, सबको देखते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वदर्शी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मृत्युजेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मृत्युजेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मृत्युजेता ब्रह्मा के समान सर्वदर्शी हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।४३ में सङ्केतित है।

४५२. ॐ विमुक्तात्मने नमः—परमवैराग्य की महिमा बढ़ाने के लिए इनका आत्मा विमुक्त अर्थात् निवृत्त है, अतः इनका नाम 'विमुक्तात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम योगाङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव योगाङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से योगाङ्ग मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र नारदीयसंहिता में उल्लिखित है।

४५३. ॐ सर्वज्ञाय नमः—ये स्वयं को सर्व अर्थात् सर्वात्मा जानते हैं, अतएव इनका नाम 'सर्वज्ञ' है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ओघवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ओघवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ओघवान् ज्ञानवान् हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

४५४. ॐ ज्ञानायोत्तमाय नमः—इनमें उत्कृष्ट वैष्णव धर्म का ज्ञान होता है, अतएव इनका नाम 'उत्तम ज्ञान' (ज्ञानमुत्तमम्) है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उग्रकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्रकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उग्रकर्मा ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः।६६॥

४५५. ॐ सुव्रताय नमः—इनका अपना कुछ भी कर्तव्य न होने पर भी ये दूसरों के लिए सुन्दर व्रत धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'सुव्रत' है। अतएव रामायण में—"सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम ॥" कहा है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चरुशाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चरुशाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चरुशाली सुन्दर व्रतवाले हुए। यह मन्त्र सुन्दरव्रत देनेवाला है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४५६. ॐ सुमुखाय नमः—ये भक्तों द्वारा कृत जप, अनुष्ठान आदि से भक्तों के समक्ष प्रसन्नमुख होते हैं, अतः इनका नाम 'सुमुख' है। अतएव "स्वपितुर्वचनं श्रीमानभिषेकात्परं प्रियम्। मनसा पूर्वमासाद्य वाचा प्रतिगृहीतवान्॥ इमानि तु महारण्ये विहृत्य नव पञ्च च। वर्षाणि परमप्रीतः स्थास्यामि वचने तव॥", "न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्। सर्वलोकातिगस्येव मनो रामस्य विव्यथे॥" तथा "प्रसन्नवदनं चारुपद्मपत्रायतेक्षणम्॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गर्गगोत्री निर्जित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निर्जित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निर्जित को सुन्दर श्री प्राप्त हुई। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

४५७. ॐ सूक्ष्माय नमः—इनका स्वरूप बहुत सूक्ष्म है, अतः इनका नाम 'सूक्ष्म' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कृती ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः कृती इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृती योगियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र पराशरसंहिता में उल्लिखित है।

४५८. ॐ सुघोषाय नमः—इनका स्वाध्यायरूप घोष सुन्दर अर्थात् मुक्तिदायक है, अतः इनका नाम 'सुघोष' है। अथवा समुद्रमन्थन के समय इन्होंने समुद्र में सुन्दर घोष (शब्द) किया है, अतः इनका नाम 'सुघोष' है। अथवा इनके प्रताप से घोष अर्थात् व्रज सुन्दर हुआ, अतः इनका नाम 'सुघोष' है। महानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आग्नीध्र-पुत्र कृतज्ञ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृतज्ञ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृतज्ञ सुन्दरवाणीवाले हुए। यह मन्त्र सुन्दरवाणी देनेवाला है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित।

४५९. ॐ सुखदाय नमः—ये सदाचार, समाधि आदिका अनुष्ठान करनेवाले भक्तों को सुख देते हैं, अतः इनका नाम 'सुखद' है। सात्त्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम शुभकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शुभकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शुभकर्मा को शाश्वत सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४६०. ॐ सुहृदे नमः—इनका हृदय अनुपकारी जनों का भी चिन्तापूर्वक शुभ मनानेवाला है, अतः इनका नाम 'सुहृद्' है। पद्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम अर्वाक्शिरा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अर्वाक्शिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अर्वाक्शिरा बड़े मेधावी तथा सबका शुभचिन्तन करनेवाले हुए। यह मन्त्र मेधाप्रद तथा शुभप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।२ में सङ्केतित है।

४६१. ॐ मनोहराय नमः—ये स्वाभाविक सुहृत्पने के कारण (मित्रता के कारण) भक्तों के हृदय को हरते हैं, अतः इनका नाम 'मनोहर' है।

शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम एकशायी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव एकशायी इसमन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से एकशायी का अन्तःकरण शुद्ध हुआ तथा संसारयात्रा सुख से बीती। यह मन्त्र अन्तःकरणशुद्धिप्रद तथा सुखप्रद है। यह मन्त्र सात्वतसंहिता में उल्लिखित है।

४६२. ॐ जितक्रोधाय नमः—इन्होंने क्रोध को जीत लिया है, अतएव इनका नाम 'जितक्रोध' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वीरासन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वीरासन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वीरासन को क्रोध पर विजय तथा मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र क्रोधपर विजयप्रद तथा मोक्षप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २१।२ में तथा स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

४६३. ॐ वीरबाहवे नमः—इनका बाहु वीर अर्थात् सकल कर्म करने में समर्थ है, अतः इनका नाम 'वीरबाहु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सहस्रकिरण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सहस्रकिरण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सहस्रकिरण सब कार्यों में तथा इन्द्रिय-जय में वीर हुए। यह मन्त्र वीरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८१।३ में सङ्केतित है।

४६४. ॐ विदारणाय नमः—इन्होंने नृसिंहावतार में शत्रुभूत हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण किया, अतः इनका नाम 'विदारण' है। नारसिंहसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम उग्रतपा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्रतपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उग्रतपा के शत्रु नष्ट हुए। यह मन्त्र शत्रुनाशक है। यह मन्त्र अथर्ववेद २।५।५ में सङ्केतित है।

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥६७॥

४६५. ॐ स्वापनाय नमः—ये अपने चतुर और मधुर भृकुटीविलास से सबको स्तम्भित कर देते हैं, अतः इनका नाम 'स्वापन' है। अथवा ये भक्तों को अपना आत्मा प्राप्त करा देते हैं, अतः इनका नाम 'स्वापन' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुव्रती ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुव्रती इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुव्रती ने भगवद्विमुखों को भगवदुन्मुख किया। यह मन्त्र अनुकूलताप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्त-पुराण में उल्लिखित है।

४६६. ॐ स्ववशाय नमः—ये सदा अपने भक्तों के अधीन रहते हैं, अतः इनका नाम 'स्ववश' है। महाकालतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कृतात्मा

ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृतात्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृतात्मा ने भगवान् को वश में किया। यह मन्त्र वशीकरण-कर है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४६७. ॐ व्यापिने नमः—देवादि में अपनी शक्ति को भरने के कारण इनका स्वभाव ही व्यापक है, अतः इनका नाम 'व्यापी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कालकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काल-कर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालकर्मा की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में उल्लिखित है।

४६८. ॐ नैकात्मने नमः—ये प्रत्येक प्राणी के हृदय में अन्तर्यामी रूप से रहते हैं अर्थात् ये सब जीवरूप प्रतिबिम्बों के बिम्ब हैं, अतः इनका नाम 'नैकात्मा' है। अथवा इनके मत्स्य, कूर्म, वराह आदि अनेक आत्मा अर्थात् रूप हैं, अतः इनका नाम 'नैकात्मा' है। पद्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कृतशौच ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृतशौच इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृतशौच तपस्वियों तथा ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।४७।१८ में उल्लिखित है।

४६९. ॐ नैककर्मकृते नमः—ये अनेक कर्म करते हैं, अतः इनका नाम 'नैककर्मकृत्' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कुशाचारी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, इसलिए कुशाचारी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुशाचारी संसार के सब कार्य उत्तम रीति से करनेवाले हुए। यह मन्त्र कर्म में उत्तमता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।२२ में सङ्केतित हैं।

४७०. ॐ वत्सराय नमः—इन्होंने गौओं तथा गोपियों को वत्स दिए हैं, अतः इनका नाम 'वत्सर' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सूक्ष्मदर्शी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः सूक्ष्मदर्शी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सूक्ष्मदर्शी सूक्ष्मद्रष्टा हुए। यह मन्त्र सूक्ष्मदृष्टिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।५३।९ में सङ्केतित है।

४७१. ॐ वत्सलाय नमः—किसी अभिलाषा से शरण में आए हुए जनरूपी वत्स (बछड़े) इनके पास रहते हैं, अतः इनका नाम 'वत्सल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अवगाढ़ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अवगाढ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अवगाढ़ का भगव-त्प्रेम वृद्धिङ्गत हुआ। यह मन्त्र भगवत्प्रेम बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र लिङ्ग-पुराण में उल्लिखित है।

४७२. ॐ वत्सिने नमः—इनके पास नित्यपोष्य आत्मवर्गरूपी अनेक वत्स हैं, अतः इनका नाम 'वत्सी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम

धूमाशन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धूमाशन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धूमाशन को गोप्राप्ति हुई है। यह मन्त्र गोप्रद है। यह मन्त्र महाकालसंहिता में उल्लिखित है।

४७३. ॐ रत्नगर्भाय नमः—धनार्थी भक्तों को देने योग्य रत्नरूपी धन इनके गर्भ में है, अतः इनका नाम 'रत्नगर्भ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम फेनपा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव फेनपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से फेनपा को धनप्राप्ति हुई। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

४७४. धनेश्वराय नमः—ये भक्तों को अभीप्सित सभी प्रकार का धन दिलाने में समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'धनेश्वर' है। साङ्ख्यायनतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उद्भ्रान्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उद्भ्रान्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उद्भ्रान्त को वैकुण्ठलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वैकुण्ठप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत् क्षरमक्षरम्।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥६८॥

४७५. ॐ धर्मगुपे नमः—ये भक्तों को धन तथा भोगसुख देकर उन भक्तों का धन तथा भोगसुख दुर्विषय में न लगे इस उद्देश्य से उन भक्तों के धर्म की रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'धर्मगुप्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शुभस्वन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शुभस्वन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शुभस्वन नित्य धर्म में प्रवृत्त हुए। यह मन्त्र धर्म में प्रवृत्ति करानेवाला है। यह मन्त्र भृगुस्मृति में उल्लिखित है।

४७६. धर्मकृते नमः—ये सब प्राणियों को धर्मात्मा करते हुए उन सब पर अनुग्रहस्वरूप धर्म करते हैं, अतः इनका नाम 'धर्मकृत्' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम क्षीरपायी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षीरपायी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षीरपायी की धर्म में प्रवृत्ति हुई। यह मन्त्र धर्म में प्रवृत्ति करानेवाला है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४७७. ॐ धर्मिणे नमः—सर्वसाधारण उपकरणवाले धर्म इनके पास रहते हैं, अतः इनका नाम 'धर्मी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अश्मकुट्ट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्मकुट्ट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्मकुट्ट वैष्णवाग्रणी हुए। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४७८. ॐ सते नमः—ये धर्मात्माओं द्वारा सद्भाव से, साद्गुण्य से तथा सद्स्वरूप से जानने योग्य हैं, अतः इनका नाम 'सत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मेरुकम्पन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मेरुकम्पन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मेरुकम्पन को विष्णुसत्ता सिद्ध हुई। यह मन्त्र भगवत्सत्तासाधक है। यह मन्त्र श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित है।

४७९. ॐ असते नमः—ये अधर्मी दुष्टों को अतिपाप के कारण अतिदुःखदायी संसार देते हैं, अतः उन अधर्मियों द्वारा असद्रूप से जाने जाते हैं, इसलिए इनका नाम 'असत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शाकल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाकल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाकल्य को भगवन्नाम में श्रद्धा हुई। यह मन्त्र श्रद्धाप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२। ३ में सङ्केतित है।

४८०. ॐ क्षराय नमः—अधर्मियों को असद्स्वरूप से भासनेवाले ये उन्हीं अधर्मियों के लिए क्षरणयोग्य है, अतः इनका नाम 'क्षर' है। सारस्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम व्याघ्रचर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव व्याघ्रचर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से व्याघ्रचर्मा की संसारवासना का नाश हुआ और बलप्राप्ति हुई। यह मन्त्र वासनानाशक तथा बलप्रापक है। यह मन्त्र नारदपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।१६४।३९ में सङ्केतित है।

४८१. ॐ अक्षराय नमः—जिन सज्जनों को ये सद्रूप से प्रतीत होते हैं, उनके लिए ये अक्षर अर्थात् अपक्षयादि दोषों से रहित हैं, अतः इनका नाम 'अक्षर' है। अतएव गीता में—"क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।" कहा है। महाकालतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दन्तोलूखल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दन्तोलूखल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दन्तोलूखल को सदा भगवत्स्मृति बनी रही। यह मन्त्र भगवत्स्मृतिप्रद है। यह मन्त्र नारदपुराण में उल्लिखित है।

४८२. अविज्ञात्रे नमः—ये अपने भक्त सज्जनों के अपराधों की उपेक्षा करने के कारण मानो उन भक्तों के अपराधों को जानते ही नहीं हैं, अतः इनका नाम 'अविज्ञाता' है। अथवा अवि अर्थात् मेढ़ा बने गोपालों को जाननेवाले हैं, अतः इनका नाम 'अविज्ञाता' है। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम पद्मकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पद्मकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पद्मकर्मा को रात्रिदिवस भगवत्प्रेम प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्प्रेमप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में "तस्य तत्कर्म विज्ञाय" इत्यादि सङ्केतों से सङ्केतित है।

४८३. ॐ सहस्रांशवे नमः—इनके अंशु अर्थात् ज्ञान सहस्र अर्थात् अपरिमित हैं, अतः इनका नाम 'सहस्रांशु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धर्मारण्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धर्मारण्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्मारण्य को सुबुद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुबुद्धिप्रद है। यह मन्त्र नारदपुराण में उल्लिखित है।

४८४. ॐ विधात्रे नमः—ये भक्तों के अपराधों को स्वयं तो क्षमा करते ही हैं, किन्तु यमराज आदि उन भक्तों के अपराधों को क्षमा नहीं करेंगे ऐसा सोचकर इन्होंने यमराज आदि को अपने अधीन बनाया है, अतः इनका नाम 'विधाता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दुश्शक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दुश्शक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दुश्शक को ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में तथा यजुर्वेद ३२। १० में उल्लिखित है।

४८५. ॐ कृतलक्षणाय नमः—इन्होंने उपादेय प्राणियों में आभिमुख्यरूपी लक्षण किया है अर्थात् उपादेयों की ओर अभिमुख होना ही उपादेय का लक्षण बनाया है, अतः इनका नाम 'कृतलक्षण है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कामारि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कामारि इस मन्त्र ऋषि हैं। इसको जपने से कामारि को स्मरणशक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र स्मरणशक्तिप्रद है। यह मन्त्र हरिवंश में सङ्केतित है।

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥६९॥

४८६. ॐ गभस्तिनेमये नमः—इनका सहस्रारचक्र गभस्ति अर्थात् किरणोंवाला है, अतः इनका नाम 'गभस्तिनेमि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कोहित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कोहित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कोहित की तेजोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तेजोवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र नारदीयसंहिता में उल्लिखित है तथा ऋग्वेद १।३६।१५ में सङ्केतित है।

४८७. ॐ सत्त्वस्थाय नमः—ये भक्तों के सत्त्व अर्थात् हृदय में सदा स्थित रहते हैं, अतः इनका नाम 'सत्त्वस्थ' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भूधर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भूधर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भूधर के सत्त्वगुण की वृद्धि हुई। यह मन्त्र सत्त्वगुण बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

४८८. ॐ सिंहाय नमः—यदि भूलकर यम आदि भी भक्तों को त्रास दें तो ये उनको भी मारते हैं, अतः इनका नाम 'सिंह' है। शिवरहस्य के

अनुसार सर्वप्रथम धूमलोहित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धूम-लोहित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धूमलोहित को नरकादि में न जाकर उत्तमलोक में जाने की सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र उत्तमलोकप्रद है। यह मन्त्र विष्णुधर्मोत्तरपुराण में उल्लिखित है।

४८९. ॐ भूतमहेश्वराय नमः—ये भूतों के अर्थात् प्राणियों के ईश्वर एवं ब्रह्मादिक देवताओं के भी ईश्वर हैं। अथवा प्राणिमात्र के मह अर्थात् जीवनरूप उत्सव के ईश्वर हैं, अतः इनका नाम 'भूतमहेश्वर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आखेटकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आखेटकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आखेटकर्मा को सब प्राणियों में प्रभुत्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र प्रभुत्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुतत्त्व में उल्लिखित है।

४९०. ॐ आदिदेवाय नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं के भी आदि अर्थात् कारणरूप होकर उनके साथ क्रीडा करते हैं, अतः इनका नाम 'आदिदेव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सर्वावास ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सर्वावास इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सर्वावास मुक्त हुए और हरिपद को प्राप्त हुए। यह मन्त्र हरिपदप्रद है। यह मन्त्र विष्णुधर्मोत्तर-पुराण में उल्लिखित है।

४९१. ॐ महादेवाय नमः—ये बड़े प्रतिष्ठित होने पर भी देव अर्थात् क्रीड़ा करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'महादेव' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महाशोफ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाशोफ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महाशोफ लोकपूजित हुए। यह मन्त्र लोकपूजि-तत्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णु-पुराण में उल्लिखित है तथा यजुर्वेद ३२।३९ में सङ्केतित है।

४९२. ॐ देवेशाय नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं को आदेश देने में निपुण होने से देवताओं के ईश हैं, अतः इनका नाम 'देवेश' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विकृताक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विकृताक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विकृताक्ष जितेन्द्रिय तथा तपस्वी हुए। यह मन्त्र इन्द्रियजयप्रद तथा तपःप्रद है। यह मन्त्र हरिवंश में सङ्केतित है।

४९३. ॐ देवभृद्गुरवे नमः—ये देवताओं का भरणपोषण करनेवाले इन्द्र के गुरु अर्थात् पूज्य हैं, अतः इनका नाम 'देवभृद्गुरु' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विशालवक्षा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव

विशालवक्षा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विशालवक्षा को सम्पत्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सम्पत्तिप्रद है।

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥७०॥

४९४. ॐ उत्तराय नमः—ब्रह्मादि देवता इन्हीं के प्रताप से दैत्यश्रेष्ठों की अपेक्षा अधिक उत्तम हैं, अतः इनका नाम 'उत्तर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शतद्रुशरण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शतद्रुशरण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शतद्रुशरण के सत्कर्मों की उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। यह मन्त्र सत्कर्मों की वृद्धि करनेवाला है। यह मन्त्र पद्मपुराण में तथा अथर्ववेद २०।१२६।१ में उल्लिखित है।

४९५. ॐ गोपतये नमः—ये वेदवाणी के पति अर्थात् स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'गोपति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सूक्ष्मात्मा ऋषि ने यह नाममत्र जपा है, अतएव सूक्ष्मात्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सूक्ष्मात्मा को चित्तजय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र चित्तजयप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

४९६. ॐ गोप्त्रे नमः—ये सकल विद्याओं का रक्षण करनेवाले हैं, अतएव इनका नाम 'गोप्ता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सौरभेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सौरभेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सौरभेय को सत्यभाषणसिद्धि प्राप्त हुई है। यह मन्त्र सत्यभाषणसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है तथा यजुर्वेद ४।१४ में सङ्केतित है।

४९७. ॐ ज्ञानगम्याय नमः—ये ज्ञान से ही प्राप्त होते हैं, कर्म से नहीं, अतः इनका नाम 'ज्ञानगम्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ऋतवर्चा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋतवर्चा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋतवर्चा को ज्ञानसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र हयग्रीवसंहिता में उल्लिखित है।

४९८. ॐ पुरातनाय नमः—ये सब से पहले से रहनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'पुरातन' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हरिणाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हरिणाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हरिणाक्ष की तेजोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।१।२ में सङ्केतित है।

४९९. ॐ शरीरभूतभृते नमः—ये शरीररूपी भूतों को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'शरीरभूतभृत्' है। हयग्रीवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कालकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालकर्मा को पूर्णतपस्विता प्राप्त हुई। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में तथा अथर्ववेद ११।८।३० में उल्लिखित है।

५००. ॐ भोक्त्रे नमः—ये भक्तों द्वारा प्रदत्त हव्य-कव्य को खाते हैं, अतः इनका नाम 'भोक्ता' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम यमकृत् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यमकृत् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यमकृत् को सांसारिक भोग भोगने पर भी निवृत्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र निवृत्तिप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

५०१. ॐ कपीन्द्राय नमः—ये रामावतार में कपिरूप धारण करनेवाले देवों के स्वामी हुए, अतः इनका नाम 'कपीन्द्र' है, अथवा कपि अर्थात् सुग्रीव इनकी कृपा से किष्किन्धा के इन्द्र अर्थात् अधिपति हुए, अतः इनका नाम 'कपीन्द्र' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम यज्ञपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यज्ञपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यज्ञपाल को स्वर्गसुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्वर्गसुखप्रद है। यह मन्त्र विष्णु-पुराण में उल्लिखित है एवं यजुर्वेद २३।१० में सङ्केतित है।

५०२. ॐ भूरिदक्षिणाय नमः—इन्होंने बहुत दक्षिणावाले अश्वमेध आदि यज्ञों में ब्राह्मणों को बहुत दक्षिणाएँ दी हैं तथा दिलाई है, अतः इनका नाम 'भूरिदक्षिण' है। अथवा ये अनेक जनों के लिए बहुत सरल हैं, अतः इनका नाम 'भूरिदक्षिण' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम महारेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा हैं, अतएव महारेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महारेता को सर्वयज्ञफलप्राप्ति हुई। यह मन्त्र सर्वयज्ञफल-प्रद है। यह मन्त्र बृहन्नारदीयपुराण में उल्लिखित है। एवं ऋग्वेद १।१६४।१३ में सङ्केतित है।

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्त्वतां पतिः ॥७१॥

५०३. ॐ सोमपाय नमः—अश्वमेध-यज्ञ में इन्होंने सोमपान किया है, अतएव इनका नाम 'सोमप' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम घोरकर्मा ऋषि ने यह राममन्त्र जपा है, अतएव घोरकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घोरकर्मा को यज्ञफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में एवं ऋग्वेद ९।१२।३ में उल्लिखित है।

५०४. ॐ अमृतपाय नमः—अपना अधिष्ठान करनेवाले अपने भक्तों के लिए ये स्वानुभवरूप अमृत की रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'अमृतप' है। अथवा ये अमृत अर्थात् देवताओं की रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'अमृतप' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुवक्त्र ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव सुवक्त्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुवक्त्र को स्वर्गसुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्वर्गसुखप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में तथा ऋग्वेद १०।१२१।२ में उल्लिखित है।

५०५. ॐ सोमाय नमः—ये अपने लिए तथा अपने भक्तों के लिए सोम अर्थात् अमृतरूप होते हैं, अतः इनका नाम 'सोम' है। अथवा ये उमा अर्थात् कीर्ति के साथ रहते हैं, अतः इनका नाम सोम है। शिवरहस्य ने अनुसार सर्वप्रथम उदग्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उदग्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उदग्र जरा और मरण से रहित हुए। यह मन्त्र जरामरणराहित्यप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में तथा ऋग्वेद १।९१।१३ में उल्लिखित है।

५०६. ॐ पुरुजिते नमः—ये बहुत से लोक, दीन, गुरु और शत्रु इन चारों को क्रमशः सत्य, दान, शुश्रूषा तथा धनुष से जीतते हैं, अतः इनका नाम 'पुरुजित्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम बहुरूप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बहुरूप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बहुरूप की क्लेशनिवृत्ति हुई। यह मन्त्र क्लेशनिवर्तक है। यह मन्त्र वाल्मीकिरामायण के अयोध्याकाण्ड में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।५२।६ में सङ्केतित है।

५०७. ॐ पुरुसत्तमाय नमः—अनेक प्राणी इनके प्रताप से अतिसज्जन हुए, अतः इनका नाम 'पुरुसत्तम' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम त्रिजटी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव त्रिजटी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से त्रिजटी सर्वश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र नारदपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १०।१२१।२ में सङ्केतित है।

५०८ ॐ विनयाय नमः—ये अपने पराक्रम की अधिकता से कंसादि दुष्टों को दण्ड देते हैं, अतः इनका नाम 'विनय' है। अथवा ये उत्तम नीतिवाले हैं, अतः इनका नाम 'विनय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तिग्ममन्यु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तिग्ममन्यु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तिग्ममन्यु ने क्रोध पर विजय प्राप्त की। यह मन्त्र क्रोधहारक है। यह मन्त्र पद्मपुराण में तथा ऋग्वेद २।२४।९ में उल्लिखित है।

५०९. ॐ जयाय नमः—भक्तों ने इन्हें जीत लिया है, क्योंकि ये भक्तों की सेवा किया करते हैं, अतः इनका नाम 'जय' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अरिष्टकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अरिष्टकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अरिष्टकर्मा की अरिष्टनिवृत्ति हुई। यह मन्त्र अरिष्टनिवर्तक है। यह मन्त्र पद्मपुराण में तथा ऋग्वेद ६।७५।५ में उल्लिखित है।

५१०. ॐ सत्यसन्धाय नमः—इनकी प्रतिज्ञा सत्य होती है, अतः इनका नाम 'सत्यसन्ध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वाडव ऋषि ने यह नायमन्त्र जपा है, अतएव वाडव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाडव देवर्षि हुए। यह मन्त्र देवर्षित्वप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है तथा ऋग्वेद १।१०५।७ में सङ्केतित है।

५११. ॐ दाशार्हाय नमः—ये दाश अर्थात् दान के योग्य हैं, अतः इनका नाम 'दाशार्ह' है। अथवा यादववंश में उत्पन्न हुए, अतएव इनका नाम 'दाशार्ह' है। भुवनेशीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गुणाकर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गुणाकर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गुणाकर मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।१८९।१ तथा यजुर्वेद ४०।१० में सङ्केतित है।

५१२. ॐ सात्त्वताम्पतये नमः—ये परम भागवत नारदादि ऋषियों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'सात्त्वताम्पति' है। अथवा सात्त्वत अर्थात् यादवों के पति अर्थात् स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'सात्त्वताम्पति' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तीक्ष्णताप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तीक्ष्णताप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तीक्ष्णताप को सत्त्वगुण सिद्ध हुआ। यह मन्त्र सत्त्वगुणप्रद है। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत २।४ में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १०।१६४।१ तथा अथर्ववेद २०।९६।८ में सङ्केतित है।

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥७२॥

५१३. ॐ जीवाय नमः—ये भक्तों से अपनी परिचर्या करवाकर उन्हें जिलाते हैं, अतः इनका नाम 'जीव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम बलचारी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बलचारी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बलचारी को हव्य सुलभ हुआ। यह मन्त्र हव्यप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में एवं ऋग्वेद १०।१८।४ में उल्लिखित हैं।

५१४. ॐ विनयितासाक्षिणे नमः—ये न्यायकर्ता पुरुषों के व्यवहार को देखनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'विनयितासाक्षी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गुहावासी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गुहावासी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गुहावासी को न्यायपथ सिद्ध हुआ। यह मन्त्र न्यायपथप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।३५।२ में सङ्केतित है।

५१५. ॐ मुकुन्दाय नमः—ये भक्तों की प्रार्थना सुनकर भक्तों को मुक्ति देते हैं, अतः इनका नाम 'मुकुन्द' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अद्भुतस्वन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अद्भुतस्वन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अद्भुतस्वन मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३।६० तथा १२।१२ में सङ्केतित है।

५१६. ॐ अमितविक्रमाय नमः—ये भक्तों के ध्यानादि का धारण करनेवाली शक्ति को धारण करते हैं, अर्थात् इनका बल अपरिमित है, अतः इनका नाम 'अमितविक्रम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अधिकर्द्धि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अधिकर्द्धि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अधिकर्द्धि बहुत पराक्रमी हुए। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है एवं ऋग्वेद १।११।४ में सङ्केतित है।

५१७. ॐ अम्भोनिधये नमः—ये देव, मनुष्य, पितर तथा दैत्य--इन चारों जलों के निधि हैं, अतः इनका नाम 'अम्भोनिधि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम काहलि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काहलि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काहलि बुद्धि के सागर हुए। यह मन्त्र बुद्धिप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा ऋग्वेद १३।४।१५ में उल्लिखित है।

५१८. ॐ अनन्तात्मने नमः—इनका चित्त बलरामरूपी शेषनाग में सदा रहता है, इसलिए इनका नाम 'अनन्तात्मा' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उद्गात्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उद्गात्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उद्गात्र को मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र मोक्षप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है एवं यजुर्वेद २५।१८ में सङ्केतित है।

५१९. ॐ महोदधिशयाय नमः—ये महोदधि में शयन करते हैं, अतः इनका नाम 'महोदधिशय' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आसुरि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आसुरि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आसुरि महान् यशस्वी हुए। यह मन्त्र यशःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१०२।४ में सङ्केतित है।

५२०. ॐ अन्तकाय नमः—ये प्रलय के समय सम्पूर्ण जगत् का अन्त (नाश) करते हैं, अतः इनका नाम 'अन्तक' है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार

सर्वप्रथम आह्निक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आह्निक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आह्निक ने शीघ्रमरण को वश में किया अर्थात् दीर्घायु प्राप्त की। यह मन्त्र दीर्घायुःप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्माण्डपुराण में तथा यजुर्वेद ३९।१३ में उल्लिखित है।

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥७३॥

५२१. ॐ अजाय नमः—अशुद्ध हृदय में इनका प्रादुर्भाव नहीं होता, अतः इनका नाम 'अज' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम इद्धशासन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इद्धशासन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इद्धशासन को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३३ में सङ्केतित है।

५२२. ॐ महार्हाय नमः—ये प्रणय करके आत्म-निवेदनरूप पूजा के योग्य हैं, अतएव इनका नाम 'महार्ह' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उदरशाण्डिल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उदरशाण्डिल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उदरशाण्डिल्य लोकपूजित हुए। यह मन्त्रपूजितत्वप्रद है। यह मन्त्र तैत्तिरीयश्रुति में तथा ऋग्वेद ८।९८।११ में संङ्केतित है।

५२३. ॐ स्वाभाव्याय नमः—ये अपने भक्तों द्वारा सदा स्वामीरूप से भावित (भावनायुक्त) होते हैं, अतः इनका नाम 'स्वाभाव्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विधरण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विधरण इस मन्त्र के ऋषि है। इसको जपने से विधरण सब के प्रेमपात्र हुए। यह मन्त्र प्रेमभाव बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

५२४. ॐ जितामित्राय नमः—इन्होंने काम, क्रोध, अहङ्कार आदि शत्रुओं को जीत लिया है, अतएव इनका नाम 'जितामित्र' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उन्मत्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उन्मत्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उन्मत्त कामादि विकारों के विजेता हुए। यह मन्त्र कामादि विकारों का नाश करनेवाला है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में तथा ऋग्वेद ४।१९।४ में उल्लिखित है।

५२५. ॐ प्रमोदनाय नमः—ये ध्यानासक्त भक्तों को हर्षित करते हैं, अतः इनका नाम 'प्रमोदन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उपसर्पक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपसर्पक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उपसर्पक आनन्दवान् हुए। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

५२६. ॐ आनन्दाय नमः—इनके पास सदा महान् आनन्द रहता है, अतः इनका नाम 'आनन्द' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम औपगव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औपगव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औपगव को महान् आनन्द प्राप्त हुआ। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र सात्त्वतसंहिता में उल्लिखित है एवं अथर्ववेद ९।९।१५ तथा ९।८।२३ में सङ्केतित है।

५२७. ॐ नन्दनाय नमः—ये अपने आनन्द से जीवित रहनेवाले भक्तों को सदा समृद्ध करते हैं, अतः इनका नाम 'नन्दन' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम एकगम्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव एकगम्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से एकगम्य वैष्णवों में मुख्य हुए। यह मन्त्र विष्णुभक्तों में मुख्यता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २०।९ में उल्लिखित है।

५२८. ॐ नन्दाय नमः—अनन्त भोग्य पदार्थ, भोक्ता, भोगक्रिया और भोगोपकरणों को इनमें सन्तोष होता है, अतः इनका नाम 'नन्द' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ऐतरेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऐतरेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऐतरेय ज्ञानी तथा विज्ञानी हुए। यह मन्त्र ज्ञान-विज्ञानप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में तथा यजुर्वेद २०।९ में उल्लिखित है।

५२९. ॐ सत्यधर्मणे नमः—ये दम्भादि से रहित धर्मवाले हैं, अतः इनका नाम 'सत्यधर्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम प्राचीनशाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्राचीनशाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्राचीनशाल को ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में तथा ऋग्वेद १०।३४।९ में उल्लिखित है।

५३०. ॐ त्रिविक्रमाय नमः—इन्होंने तीन वेदों अथवा तीन लोकों का एक ही पैर से क्रमण किया है, अतः इनका नाम 'त्रिविक्रम' है। अतएव हरिवंश में—"त्रिरित्येव त्रयो लोकाः कीर्तिता मुनिसत्तमैः। क्रमते तांस्त्रिधा सर्वांस्त्रिविक्रम इति श्रुतः॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम और्वशेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव और्वशेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से और्वशेय के पराक्रम की वृद्धि हुई। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र वामनपुराण में तथा ऋग्वेद १।१५४।२ में उल्लिखित है।

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥७४॥

५३१. ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः—ये महान् मन्त्रद्रष्टा तथा साङ्ख्याचार्य हैं, अतएव इनका नाम 'महर्षि कपिलाचार्य' है। शिवरहस्य के

अनुसार सर्वप्रथम कत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कत साङ्ख्यशास्त्र के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र साङ्ख्यशास्त्रज्ञताप्रद है। यह मन्त्र सात्त्वतसंहिता में उल्लिखित है।

५३२. ॐ कृतज्ञाय नमः—ये भक्तों द्वारा किये गए सुकृत को ही जानते हैं दुष्कृत को नहीं जानते हैं, अतः इनका नाम 'कृतज्ञ' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धनकृत् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धनकृत् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धनकृत् का दुष्कृत नष्ट हुआ। यह मन्त्र दुष्कृतनाशक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

५३३. ॐ मेदिनीपतये नमः—ये पृथ्वी के पति अर्थात् पालक हैं, अतः इनका नाम 'मेदिनीपति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कपिष्ठल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कपिष्ठल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कपिष्ठल को सुख-सम्पत्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुखसम्पत्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ८।७।७ में सङ्केतित है।

५३४. ॐ त्रिपदाय नमः—भोक्ता, भोग्य और नियन्ता इनके ज्ञापक हैं और ये तीनों से ज्ञाप्य हैं, अतः इनका नाम 'त्रिपद' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शमनदण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शमनदण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शमनदण्ड तत्त्वज्ञानी हुए। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

५३५. ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः—ये ब्रह्मादि देवताओं के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'त्रिदशाध्यक्ष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम परुषव्रत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है अतएव परुषव्रत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से परुषव्रत को देवभक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

५३६. ॐ महाश्रृङ्गाय नमः—इनके मस्तक में प्रभुता का अथवा प्रकर्षता का सींग है अथवा मत्स्यावतार में महाश्रृङ्ग में नाव बाँधकर महाप्रलय में इन्होंने क्रीडा की थी, अतः इनका नाम 'महाश्रृङ्ग' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कबन्धी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव कबन्धी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कबन्धी को प्रभुत्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र प्रभुता देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ९।४।१७ में सङ्केतित है।

५३७. ॐ कृतान्तकृते नमः—ये कृतान्त अर्थात् सिद्धान्त को करनेवाले हैं, इसलिए इनका नाम 'कृतान्तकृत्' है। अथवा ये कृतान्त अर्थात् यम

अथवा पाप को काटनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'कृतान्तकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम इद्धभूषण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इद्धभूषण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इद्धभूषण को सत्यलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सत्यलोकप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१२ में सङ्केतित है।

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥७५॥

५३८. ॐ महावराहाय नमः—इन्होंने यज्ञवराह अवतार धारणकर पृथ्वी को रसातल से ऊपर निकाला है, अतः इनका नाम 'महावराह' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम करेणुभू ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव करेणुभू इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से करेणुभू मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र वाराहपुराण में उल्लिखित है।

५३९. ॐ गोविन्दाय नमः—इन्होंने पृथ्वी का पालन किया है अथवा इनको वाणी से अथवा वेदान्तवाक्यों से भक्त लोग जानते हैं, अतः इनका नाम 'गोविन्द' है। अतएव विष्णुतिलक में—"मुखादेनांसि निर्यान्ति गोशब्दोच्चारणादपि। पुनर्यदि विशेयुश्चेद् विन्दस्तत्र कपाटवत्॥ गोभिरेव यतो वेद्यो गोविन्दः समुदाहृतः।" कहा है। अथवा इन्हें चराने के लिए गौ (गाय) मिली, अतः इनका नाम 'गोविन्द' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कर्मशील ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्मशील इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्मशील की धर्मवृद्धि हुई। यह मन्त्र धर्मप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१८९।१ में सङ्केतित है।

५४०. ॐ सुषेणाय नमः—इनकी पार्षदरूप सेना सुन्दर है, अतएव इनका नाम 'सुषेण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अधोदृष्टि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अधोदृष्टि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अधोदृष्टि वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेद-वेदाङ्ग-ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १५।१९ में उल्लिखित है।

५४१. ॐ कनकाङ्गदिने नमः—इनके अङ्गद आदि भूषण कनकमय अर्थात् सुवर्णमय हैं, अतः इनका नाम 'कनकाङ्गदी' है। भवनीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनिकेत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनिकेत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनिकेत को वेदान्तशास्त्र सिद्ध हुआ। यह मन्त्र वेदान्तशास्त्रज्ञानप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है एवं यजुर्वेद ३३।४३ में सङ्केतित है।

५४२. ॐ गुह्याय नमः—ये परम रहस्य होने से वेदादि द्वारा छिपाये जाते हैं, अतः इनका नाम 'गुह्य' है। भुवनेश्वरीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अन्तग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अन्तग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अन्तग को ब्रह्मचर्य सिद्ध हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मचर्यसाधक है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

५४३. ॐ गभीराय नमः—इनमें बहुत बड़ी गम्भीरता रहती है, अतः इनका नाम 'गभीर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अन्तेवसायी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अन्तेवसायी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अन्तेवसायी को भक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।१ में उल्लिखित है।

५४४. ॐ गहनाय नमः—ये समुद्र के समान दुष्प्रवेश हैं, अतएव इनका नाम 'गहन' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अपराजित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अपराजित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अपराजित को भक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३२।६ में उल्लिखित है।

५४५. ॐ गुप्ताय नमः—ये किसी भी इन्द्रिय से ग्रहण (ज्ञात) नहीं किए जाते, अतः इनका नाम 'गुप्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अभिनन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अभिनन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अभिनन्द को गुप्तस्थल में निवास सिद्ध हुआ। यह मन्त्र गुप्त स्थान में निवास-सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ५।२०।१२ में उल्लिखित है।

५४६. ॐ चक्रगदाधराय नमः—ये सुदर्शन चक्र तथा कौमोदकी गदा धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'चक्रगदाधर' है। अतएव—"मनस्तत्त्वात्मकं चक्रं बुद्धितत्त्वात्मिकां गदाम्। धारयन् लोकरक्षार्थमुक्तश्चक्रगदाधरः॥" कहा है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अमण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः अमण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अमण्ड को आत्मरक्षा सिद्ध हुई। यह मन्त्र रक्षाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।३१।११ में सङ्केतित है।

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥७६॥

५४७. ॐ वेधसे नमः—ये भक्तों के लिए महान् ऐश्वर्य का विधान करते हैं, अतः इनका नाम 'वेधाः' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अव्यग्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अव्यग्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अव्यग्र को आत्मरक्षा सिद्ध हुई। यह मन्त्र आत्मारक्षाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६०।३ में उल्लिखित है।

५४८. ॐ स्वाङ्गाय नमः—स्व अर्थात् भक्त ही इनके अङ्ग हैं, अतएव इनका नाम 'स्वाङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अश्मवर्म्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्मवर्म्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्मवर्म्मा मुक्तिभागी हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३३।९ में सङ्केतित है।

५४९. ॐ अजिताय नमः—इनके पास जन्म-मरण से रहित अर्थात् अजर और अमर अजिता नामक पुरी है, अतः इनका नाम 'अजित' है। सात्त्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम अश्वल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्वल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्वल अजेय हुए। यह मन्त्र अजेयताप्रद है। यह मन्त्र नारदीयसंहिता में उल्लिखित है।

५५०. ॐ कृष्णाय नमः—ये मेघ के समान कृष्ण वर्णवाले है, अतः इनका नाम 'कृष्ण' है। अतएव भगवान् ने—"कृष्णो वर्णश्च मेघः स्यात् सौन्दर्येण युतः सदा। ततोऽहं कृष्ण इत्याख्यां गतः पार्थ न संशयः।" कहा है। ब्रह्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम अष्टश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अष्टश्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अष्टश्रवा को शौर्यवृद्धि सिद्ध हुई। यह मन्त्र शौर्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।४३ में उल्लिखित है।

५५१. ॐ दृढाय नमः—ये उपासक पर अनुग्रह करने में दृढ़ अर्थात् समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'दृढ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आत्मवश्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आत्मवश्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आत्मवश्य को सब कार्यों में दृढता प्राप्त हुई। यह मन्त्र दृढ़ताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।६७।६ में तथा यजुर्वेद ३२।६ में उल्लिखित है।

५५२. ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः—ये भक्तों का दुःख खींच लेते हैं और भक्त इनसे कभी भी च्युत अर्थात् अलग नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'सङ्कर्षण अच्युत' है। महाकालतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आप्तकाम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आप्तकाम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आप्तकाम को अविचल भक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र अविचल भक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१२ में सङ्केतित है।

५५३. ॐ वरुणाय नमः—ये अपनी प्राप्ति कराने के लिए भक्तों को वरणी देते हैं, अतः इनका नाम 'वरुण' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आरिणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आरिणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आरिणि वेद-वेदाङ्गों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।८३।४ में उल्लिखित है।

५५४. ॐ वारुणाय नमः—भक्तजन इनको अपने स्वामित्व की वरणी देते हैं, अतः वरुण कहे जाते हैं और ये (भगवान्) उन भक्तों में निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'वारुण' है। अथवा ये अपने पिता नन्द को वरुणलोक से वापस ले आए, अतः इनका नाम 'वारुण' है। पद्मपुराण के अनुसार सर्वप्रथम आरुणेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आरुणेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आरुणेय को अभीष्टसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र अभीष्टसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।८३।४ में उल्लिखित है।

५५५. ॐ वृक्षाय नमः—ये भक्तों के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं, अतः इनका नाम 'वृक्ष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धर्मारणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धर्मारणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्मारणि ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र ब्रह्मचर्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३१।७ में तथा अथर्ववेद ७।५९।१ में उल्लिखित है।

५५६. ॐ पुष्कराक्षाय नमः—इनकी आँखें प्रसन्नता से भक्तों का पोषण करती हैं, अतः इनका नाम 'पुष्कराक्ष' है। अथवा उलूखल-बन्धन के समय पुष्कर अर्थात् अश्रुजल से इनकी आँखें भरी थीं; अतः इनका नाम 'पुष्कराक्ष' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ऋष्टिवाक् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋष्टिवाक् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋष्टिवाक् को वेद-वेदाङ्ग का ज्ञान सिद्ध हुआ। यह मन्त्र वेद-वेदाङ्गज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१८४।६ में सङ्केतित है।

५५७. ॐ महामनसे नमः—इनका मन भक्तों के लिए अतिविशाल है। अथवा इनमें मन से ही सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय करने की सामर्थ्य है, अतः इनका नाम 'महामनाः' है। अतएव विष्णुपुराण में—"मनसैव जगत्सृष्टिं संहारं च करोति यः।" कहा है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आशंसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आशंसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आशंसु को योगाभ्यास सिद्ध हुआ। यह मन्त्र योगाभ्यासप्रद है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्योज्ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥७७॥

५५८. ॐ भगवते नमः—ये षडैश्वर्य से युक्त स्वरूपवाले हैं, अतः इनका नाम 'भगवान्' है। अतएव विष्णुपुराण में—"ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा॥ उत्पत्तिं प्रलयं चैव भूतानामागतिं गतिम्। वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति॥" कहा है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अश्मरथ ऋषि ने यह

नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्मरथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्मरथ को योगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३४।३४ में उल्लिखित है।

५५९. ॐ भगघ्ने नमः—ये सदा कल्याणकारी गुणों से परिपूर्ण रहने के कारण षड्विध ऐश्वर्य सदा पास में रखते हैं, अतः इनका नाम 'भगहा' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आश्वतराश्वी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आश्वतराश्वी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आश्वतराश्वी को ऐश्वर्यसमृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र ऐश्वर्यप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

५६०. ॐ आनन्दिने नमः (ॐ नन्दिने नमः) इनके पास आनन्द सदा रहता है, अतः इनका नाम 'आनन्दी' है। अथवा नन्द इनके पिता हैं, अतः इनका नाम 'नन्दी' है। "नन्दी" ऐसा पद निकालने पर। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ज्ञानासि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ज्ञानासि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ज्ञानासि को योगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।५३।७ में सङ्केतित है।

५६१. ॐ वनमालिने नमः—इनके गले में पैरों तक लटकनेवाली माला है, अतः इनका नाम 'वनमाली है। अतएव—'(आजानु) आपादलम्बिनी माला वनमाला प्रकीर्तिता तुलसीकुन्द-मन्दारपारिज्ञात सरोरुहा॥ एभिः संग्रथिता माला वनमाला प्रकीर्तिता।" कहा है। भुवनेशीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कर्मशूर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्मशूर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्मशूर को सदा कर्मपरायणता सिद्ध हुई। यह मन्त्र कर्मपरायणता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।१६।२८ में सङ्केतित है।

५६२. ॐ हलायुधाय नमः—इनके आयुध शत्रुओं के वक्षःस्थल का विदारण करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'हलायुध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कषाकु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कषाकु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कषाकु के शत्रु नष्ट हुए। यह मन्त्र शत्रुविनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१०१।३ में सङ्केतित है।

५६३. ॐ आदित्योज्ज्योतिषे नमः—(आदित्याय नमः शङ्कराचार्य के मत से)—ये सूर्य की अपेक्षा अधिक ज्योतिवाले हैं, अतः इनका नाम 'आदित्योज्ज्योतिः' है। त्रिपुरसुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कक्षीवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कक्षीवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कक्षीवान् को योगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योग सिद्धिप्रदहै। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।२३ में सङ्केतित है।

५६४. ॐ आदित्याय नमः (ॐ ज्योतिष आदित्याय नमः—शङ्कराचार्य के मत से)—ये अदिति की अवतारस्वरूप देवकी के पुत्र हैं, अतः इनका नाम 'आदित्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कापेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कापेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कापेय स्थिरभक्तिवाले हुए। यह मन्त्र भक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।२३ में सङ्केतित है।

५६५. ॐ सहिष्णवे नमः—इन्होंने शिशुपाल के सौ अपराध सहन किये हैं, अतएव इनका नाम 'सहिष्णु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कमलायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कमलायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कमलायन शीतोष्ण-सहन करनेवाले हुए। यह मन्त्र सहिष्णुता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।६६।९ में सङ्केतित है।

५६६. ॐ गतिसत्तमाय नमः—ये सब आश्रयों में श्रेष्ठ हैं, अतः इनका नाम 'गतिसत्तम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कार्ष्णाजिनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कार्ष्णाजिनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कार्ष्णाजिनि को सत्यपालन सिद्ध हुआ। यह मन्त्र सत्यतासिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।२ में सङ्केतित है।

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिविस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥७८॥

५६७. ॐ सुधन्वने नमः—इन्होंने अमृतमन्थन के समय दैत्यों को मारने के लिए सुन्दर धनुष धारण किया है, अतएव इनका नाम 'सुधन्वा' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कालाङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालाङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालाङ्ग के शत्रु नष्ट हुए। यह मन्त्र शत्रुनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१८।९ में सङ्केतित है।

५६८. ॐ खण्डपरशवे नमः—इनका परशु घोर संग्राम का खण्डन करनेवाला है, अतः इनका नाम 'खण्डपरशु' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम काक्षसेनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काक्षसेनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काक्षसेनि की तपश्चर्या में वृद्धि हुई। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।६ में सङ्केतित है।

५६९. ॐ दारुणाय नमः—ये बाह्य तथा आभ्यन्तर सभी शत्रुओं का विदारण करते हैं, अतः इनका नाम 'दारुण' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कात्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कात्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कात्य के बाह्य तथा आभ्यन्तर शत्रु (कामादि) वश में हुए। यह मन्त्र शत्रुओं को वश में करनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ६।१२१।२ में सङ्केतित है।

५७०. ॐ द्रविणप्रदाय नमः—इन्होंने वेदव्यासस्वरूप धारण कर भक्तों को अपना शास्त्ररूप तथा शास्त्रार्थरूप द्रविण[1] (धन) दिया है, अतः इनका नाम 'द्रविणप्रद' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कामाङ्कुश ऋषि ने यह नागमन्त्र जपा है, अतएव कामाङ्कुश इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कामाङ्कुश को धनधान्यसमृद्धि प्राप्त हुई । यह मन्त्र धन-धान्यसमृद्धि देनेवाला है । यह मन्त्र ऋग्वेद १।१५।७ में सङ्केतित है ।

५७१. ॐ दिविस्पृशे नमः (दिवःस्पृशे नमः)—ये परमपद में रहनेवाले अपने तत्त्वों को एकान्त में स्पर्श करते हैं, अतः इनका नाम 'दिविस्पृक्' है । परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कारूष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कारूष इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कारूष को तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ । यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है । यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१६८।१ में उल्लिखित है ।

५७२. ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः—ये सर्वज्ञ होने के कारण सब वैभव को देखते हैं तथा अल्पज्ञों के लिए वेदों का विभाग करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वदृग्व्यास' है । शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कुशिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुशिक इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कुशिक सर्वगामी दृष्टिवाले तथा ज्ञानवान् हुए । यह मन्त्र ज्ञानप्रद है । यह मन्त्र ऋग्वेद ५।२७।५ में सङ्केतित हैं ।

५७३. ॐ वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः—ये ओङ्काररूप वाणी के पति हैं तथा मातृगर्भ से उत्पन्न नहीं हैं, अतः इनका नाम 'वाचस्पत्ययोनिज' (वाचस्पतिरयोनिजः) है । ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम कुशी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुशी इस मन्त्र के ऋषि हैं । इसको जपने से कुशी को ज्ञान प्राप्त हुआ । यह मन्त्र ज्ञानप्रद है । यह मन्त्र यजुर्वेद ११।७ में सङ्केतित है ।

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ।७९।।

५७४. त्रिसाम्ने नमः—(इनका) अपना गान करनेवाले सामों में बृहत्, रथन्तर और वामदेव्य नामक तीन साम प्रधान हैं, अतः इनका नाम 'त्रिसामा' (त्रिसामन्) है ।

१—"द्रविणं काञ्चने वित्ते द्रविणञ्च पराक्रमे ।" (विश्वकोश) । "वेदव्यासः सदा ध्येयो द्विभुजो मधुसूदनः । लोकोपकारको नित्यं विद्वद्भिर्भूसुरैर्नृप ।।" इत्यलम् ।

५७५. ॐ सामगाय नमः—ये स्वयं भी साम गान करते हैं, अतः इनका नाम 'सामग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम क्लिन्नाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्लिन्नाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्लिन्नाक्ष सामवेद के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र सामवेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।७ में सङ्केतित है।

५७६. ॐ साम्ने नमः—ये इनका गान करनेवाले भक्तों के पाप काटते हैं, अतः इनका नाम 'साम' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम क्षतजाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षतजाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षतजाक्ष सामवेद के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र सामवेद का ज्ञान करानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।६२।२ में उल्लिखित है।

५७७. ॐ निर्वाणाय नमः—ये निष्काम भक्तों के लिए श्रेयोरूप (मोक्षरूप) हैं, अतः इनका नाम 'निर्वाण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पाण्डुकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव पाण्डुकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पाण्डुकर्मा को मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र मोक्षप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ६।१८।१ में सङ्केतित है।

५७८. ॐ भेषजाय नमः—ये संसाररूपी असाध्य रोग की औषधि हैं, अतः इनका नाम 'भेषज' है। शैवागमतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम क्षेमकर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षेमकर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षेमकर का सांसारिक दुःख नष्ट हुआ। यह मन्त्र सांसारिक दुःख को दूर करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।७९।१७ में उल्लिखित है।

५७९. ॐ भिषजे नमः—ये संसाररूपी रोग की चिकित्सा करना जानते हैं और उक्त रोग को चिकित्सा करते भी हैं, अतएव इनका नाम 'भिषक्' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम खाण्डिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव खाण्डिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से खाण्डिक को ज्ञान और विज्ञान सिद्ध हुए। यह मन्त्र ज्ञान और विज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।९७।६ तथा यजुर्वेद १२।८० में उल्लिखित है।

५८०. ॐ संन्यासकृते नमः—इन्होंने लोगों के मोक्ष के उद्देश्य से संन्यास आश्रम को उत्पन्न किया है, अतएव इनका नाम 'संन्यासकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गण्डारि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गण्डारि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गण्डारि को मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र मोक्षप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।११ में सङ्केतित है।

५८१. ॐ शमाय नमः—ये इच्छा, भय, क्रोध आदि दोषों के शमन का उपाय बतलाते हैं, अतः इनका नाम 'शम' है। शिवरहस्य के अनुसार

सर्वप्रथम गर्गर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गर्गर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गर्गर को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३२।१५ तथा १।३३।१५ में उल्लिखित है।

५८२. ॐ शान्ताय नमः—इनके पास अभिमानकारक अनेक गुण होने पर भी ये अभिमानरहित रहते हैं, अतः इनका नाम 'शान्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सावर्णक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सावर्णक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सावर्णक को वैरत्याग (वैराभाव) सिद्ध हुआ। यह मन्त्र वैरत्यागप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ३।२११९ में उल्लिखित है।

५८३. ॐ निष्ठायै नमः—योगी लोग व्युत्थानदशा (समाधि छोड़ने की अवस्था) में भी केवल इन्हीं में स्थिति करते हैं, अतः इनका नाम 'निष्ठा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वचक्नु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वचक्नु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वचक्नु को योग सिद्ध हुआ। यह मन्त्र योगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।११०।९ में उल्लिखित है।

५८४. ॐ शान्तये नमः—परम समाधि के समय सभी अधिकार इनमें शान्त होते हैं। अतः इनका नाम 'शान्ति' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गृत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गृत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गृत्स को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।१७ में उल्लिखित है।

५८५. ॐ परायणाय नमः—ये भक्तों के लिए भक्ति करने का परमस्थान हैं, अतः इनका नाम 'परायण' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गृत्समद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गृत्समद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गृत्समद वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेद-वेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१८ में सङ्केतित है।

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥८०॥

५८६. ॐ शुभाङ्गाय नमः—ये भक्तों का योग और क्षेम चलाने के कारण भक्ति-भावना से अपने शुभ अङ्गोंवाले हैं, अतः इनका नाम 'शुभाङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सौकालीन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सौकालीन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सौकालीन की भक्ति वृद्धि को प्राप्त हुई। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५८।१ में सङ्केतित है।

५८७. ॐ शान्तिदाय नमः—ये सब भक्तों को सायुज्य मुक्तिरूप शान्ति देते हैं, अतः इनका नाम 'शान्तिद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शर्मभुक् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शर्मभुक् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शर्मभुक् को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।१७ में सङ्केतित है।

५८८. ॐ स्रष्ट्रे नमः—ये संसारियों के संसार भोगने के लिए उनके कर्म के सुख, दुःख आदि फल उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'स्रष्टा' है। सात्त्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम देवयाजी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवयाजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवयाजी को कर्मसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र कर्मसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१९।९ में सङ्केतित है।

५८९. ॐ कुमुदाय नमः—ये ऊँचे नीचे शब्दादि भोगोंवाली भूमि में भोक्ता को योजितकर प्रसन्न होते हैं, अतः इनका नाम 'कुमुद' है। सात्त्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम होतृवर्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव होतृवर्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से होतृवर्य जितेन्द्रिय तथा ज्ञानी हुए। यह मन्त्र इन्द्रियसंयम तथा ज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।७।२६ में सङ्केतित है।

५९०. ॐ कुवलेशयाय नमः—ये सदा अभिमानी प्राणियों को दण्ड देते हैं, अतः इनका नाम 'कुवलेशय' है। अथवा ये कुवल अर्थात् जीवों में अन्तर्यामीरूप से शयन करते हैं। अतः इनका नाम 'कुवलेशय' है। अथवा ये कुवल अर्थात् जल में शयन करते हैं प्रलयकाल में, अतः इनका नाम 'कुवलेशय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कल्किष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कल्किष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कल्किष के प्रलयकालिक दुःख का नाश हुआ। यह मन्त्र दुःखनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३।२ में सङ्केतित है।

५९१. ॐ गोहिताय नमः—ये संसारबीज बोई जानेवाली पृथ्वी अर्थात् जड़प्रकृति के अधिष्ठान बनकर इस प्रकृति से संसार का कार्य कराते हैं, अतः इनका नाम 'गोहित' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कृष्णात्रेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृष्णात्रेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृष्णात्रेय को योगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।५ में सङ्केतित है।

५९२. ॐ गोपतये नमः—ये गो अर्थात् भोगभूमि स्वर्गादि के अधिपति हैं, क्योंकि स्वर्गादि के अधिपति इन्द्र आदि इनके अधीन हैं, अतः इनका नाम 'गोपति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम घृतकौशिक ऋषि ने यह

नाममन्त्र जपा है, अतएव घृतकौशिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घृतकौशिक को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ११।८।३२ में सङ्केतित है।

५९३. ॐ गोप्त्रे नमः—ये भक्तों की रक्षा सब प्रकार से करते हैं, अतः इनका नाम 'गोप्ता' है। शङ्करतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम कुवलतपा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुवलतपा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुवलतपा को जल में की जानेवाली तपश्चर्या की रक्षा सिद्ध हुई। यह मन्त्र रक्षाप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १७।१।३० में उल्लिखित है।

५९४. ॐ वृषभाक्षाय नमः—इनके कारण धर्म संसारचक्र का आधार बना है, अतः इनका नाम 'वृषभाक्ष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धर्मधौरेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धर्मधौरेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्मधौरेय की धर्मवृद्धि हुई। यह मन्त्र धर्मवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३१।५ में सङ्केतित है।

५९५. ॐ वृषप्रियाय नमः—इन्हें प्रवृत्तिरूप तथा निवृत्तिरूप दोनों धर्म प्रिय हैं, अतः इनका नाम 'वृषप्रिय' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुतिग्लान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुतिग्लान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुतिग्लान मुक्तिभागी हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३७।१४ में सङ्केतित हैं।

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥८१॥

५९६. ॐ अनिवर्तिने नमः—ये प्रवृत्ति धर्म में लगे हुए प्राणियों को संसार में ही लगाते हैं, निवृत्त नहीं करते, अतः इनका नाम 'अनिवर्ती' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मौद्गल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मौद्गल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मौद्गल्य को सांसारिक सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।२९।१६ में सङ्केतित है।

५९७. ॐ निवृत्तात्मने नमः—निवृत्ति धर्म में लगे हुए पुरुष इनके आत्मा (आत्मसम प्रिय) हैं, अतः इनका नाम 'निवृत्तात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आलम्यायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आलम्यायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आलम्यायन संसार से निवृत्त हुए। यह मन्त्र निवृत्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।७ में सङ्केतित है।

५९८. ॐ सङ्क्षेप्त्रे नमः—ये प्रवृत्तिमार्ग में पड़े हुए प्राणियों को स्वाभाविक ज्ञान से संकुचित करते हैं, अतः इनका नाम 'सङ्क्षेप्ता' है।

अथवा इन्होंने गीता में सम्पूर्ण वेदार्थ का सङ्क्षेप किया है, अतः इनका नाम 'संक्षेप्ता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सौपायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सौपायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सौपायन को सङ्क्षेप में सब शास्त्रों का ज्ञान हुआ। यह मन्त्र सर्वशास्त्रज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६१।१२ में सङ्केतित है।

५९९ ॐ क्षेमकृते नमः—ये निवृत्त पुरुषों का सदा क्षेम करते हैं, अतः इनका नाम 'क्षेमकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम लोहितास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव लोहितास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लोहितास्य को क्षेम प्राप्त हुआ। यह मन्त्र क्षेमप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।२०।६ में सङ्केतित है।

६००. ॐ शिवाय नमः—भोगेच्छु तथा मोक्षेच्छु सभी लोग इनके आश्रय से सोते हैं, अतः इनका नाम 'शिव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अघपेषण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अघपेषण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अघपेषण को सदा कल्याण प्राप्त हुआ। यह मन्त्र कल्याणप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३१।१ में उल्लिखित है।

६०१. ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः—इनके वक्षःस्थल में श्रीवत्सनामक चिह्न है, अतः इनका नाम 'श्रीवत्सवक्षाः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जगद्याजी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जगद्याजी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जगद्याजी की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२२ में सङ्केतित है।

६०२. ॐ श्रीवासाय नमः—श्री के विहारस्थान होने के कारण इनमें श्रीका वास सदा है, अतः इनका नाम 'श्रीवास' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम काञ्चन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काञ्चन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काञ्चन को श्री प्राप्त हुई। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९७।६ में सङ्केतित है।

६०३. ॐ श्रीपतये नमः—ये श्री के पति हैं, अतः इनका नाम 'श्रीपति' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम संकृतिकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव संकृतिकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से संकृतिकर्मा को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२२ में सङ्केतित है।

६०४. ॐ श्रीमतांवराय नमः—ये श्रीमानों अर्थात् ब्रह्मादि देवताओं में श्रेष्ठ हैं, अतः इनका नाम 'श्रीमतांवर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनावृत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनावृत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनावृत वेदवेदाङ्गों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३४।४४ में सङ्केतित है।

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥८२॥

६०५. ॐ श्रीदाय नमः—इनका ही आश्रय लेकर जीवित रहने के कारण श्री को ये निष्कपट प्रेमस्वरूप श्री (ऐश्वर्य) देते हैं, अतः इनका नाम 'श्रीद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अव्यक्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अव्यक्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अव्यक्त को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३२।२१ में सङ्केतित है।

६०६. ॐ श्रीशाय नमः—श्री में रहनेवाला श्रीत्व इन्हीं का दिया हुआ है, अतः इनका नाम 'श्रीश' है। अथवा श्री इनकी ईश हैं, ये श्री को गृहेश्वरी करते हैं और सकल व्यवहार की व्यवस्था श्री के ही अधिकार में रहती है, अतः इनका नाम 'श्रीश' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम काण्वायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काण्वायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काण्वायन को दुर्लभ श्री प्राप्त हुई। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लिखित है।

६०७. ॐ श्रीनिवासाय नमः—जिस प्रकार दिव्य लता कल्पवृक्ष में सदा लिपटी रहती है, उसी प्रकार श्री इनमें सदा निवास करती हैं, अतः इनका नाय 'श्रीनिवास' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पक्षिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पक्षिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पक्षिल श्री के योग्य हुए। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१ में सङ्केतित है।

६०८. ॐ श्रीनिधये नमः—जिस प्रकार अलङ्कार पेटी में रखे जाते हैं, उसी प्रकार श्री इनमें भी रखी जाती है, अतः इनका नाम 'श्रीनिधि' है। विष्णुतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम पाण्यास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पाण्यास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पाण्यास्य को संसार का त्याग सिद्ध हुआ। यह मन्त्र त्यागप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।१९ में उल्लिखित है।

६०९. ॐ श्रीविभावनाय नमः—लक्ष्मी के समीप रहने से इनका स्वरूप गाया जाता है, अतः इनका नाम 'श्रीविभावन' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पालकाप्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पालकाप्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पालकाप्य को भगवत्प्राप्ति हुई। यह मन्त्र भगवत्प्राप्ति करानेवाला है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

६१०. ॐ श्रीधराय नमः-ये अनादि काल से स्वाभाविक रूप से श्री को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'श्रीधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सहस्रद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सहस्रद इस मन्त्र के ऋषि है। इसको जपने से सहस्रद को कम से कम सहस्र मुद्रा देने का सामर्थ्य सिद्ध हुआ। यह मन्त्र सहस्रदत्वसाधक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

६११. ॐ श्रीकराय नमः—ये अपना स्मरण करनेवाले भक्तों को भी श्री प्राप्त कराते हैं, अतः इनका नाम 'श्रीकर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पयोद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पयोद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पयोद श्रीमान् तथा दूसरों को भी श्रीमान् करने के सामर्थ्यवाले हुए। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

६१२ ॐ श्रेयसे नमः—ये अति प्रशस्य तथा निरुपाधि परम प्रेमगोचर सुखरूप हैं, अतः इनका नाम 'श्रेयः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ज्योतिष्काण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ज्योतिष्काण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ज्योतिष्काण्ड श्रीमान् हुए। यह मन्त्र श्रीप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३१।२ में सङ्केतित है।

६१३ ॐ श्रीमते नमः—सब लोगों की आश्रयरूपा श्रीमाता इनके पास सदा रहती हैं, अतः इनका नाम 'श्रीमान्' है। श्रीशिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उच्छृङ्खलात्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उच्छृङ्खलात्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उच्छृङ्खलात्मा को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

६१४. ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः—ये तीनों लोकों के मातापिता के समान आश्रय हैं, अतएव इनका नाम 'लोकत्रयाश्रय' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मनुबोध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मनुबोध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मनुबोध को एकमात्र ईश्वराश्रयत्व सिद्ध हुआ। यह मन्त्र ईश्वराश्रय देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१५४।२ में सङ्केतित है।

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥८३॥

६१५. ॐ स्वक्षाय नमः—इनकी सभी इन्द्रियाँ सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'स्वक्ष' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अतिदीप्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अतिदीप्त इस मन्त्र ऋषि हैं। इसको जपने से अतिदीप्त की इन्द्रियाँ निर्मल सिद्ध हुईं। यह मन्त्र इन्द्रियों की निर्मलता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।१५।१० में सङ्केतित है।

६१६. ॐ स्वङ्गाय नमः—लक्ष्मी द्वारा भी इनकी इच्छा की जाने से इनके सब अङ्ग सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'स्वङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विपण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विपण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विपण सुन्दर अङ्गोंवाले हुए। यह मन्त्र सौन्दर्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१।१ में उल्लिखित है।

६१७. ॐ शतानन्दाय नमः—इनके तथा श्री के परस्पर स्नेह की अधिकता से इनके पास अगणनीय परिपूर्ण आनन्द रहता है, अतः इनका नाम 'शतानन्द' है। ब्रह्मतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम षष्ठिभाग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव षष्ठिभाग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से षष्ठिभाग को विष्णुभक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३६।२ में सङ्केतित है।

६१८. ॐ नन्दये नमः—ये श्री से सदा समृद्ध होते हैं, अतः इनका नाम 'नन्दि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विष्कम्भी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विष्कम्भी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विष्कम्भी को समृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र समृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।७१।१० में सङ्केतित है।

६१९. ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः—ये अत्यन्त तेजस्वी शूरवीरों के ईश्वर हैं, अतएव इनका नाम 'ज्योतिर्गणेश्वर' है। सुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शुद्धात्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शुद्धात्मा इस मन्त्रके ऋषि हैं। इसको जपने से शुद्धात्मा को तेजोवृद्धि सिद्ध हुई। यह मन्त्र तेजोवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।९३।१ में सङ्केतित है।

६२०. ॐ विजितात्मने नमः—भक्तों ने इन्हें हाथ जोड़कर इनका मन जीत लिया है, अतः इनका नाम 'विजितात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अग्निज्वाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अग्निज्वाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्निज्वाल ने मन को जीता। यह मन्त्र मन पर जय देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।७६।४ में सङ्केतित है।

६२१. ॐ विधेयात्मने नमः—भक्तों के कहे हुए प्रत्येक कार्य को करने के लिए इनका मन तैयार हो जाता है, अतः इनका नाम 'विधेयात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वलित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वलित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वलित ने भगवान् को अपने अधीन किया। यह मन्त्र भगवान् को अपने अधीन करानेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१९ में सङ्केतित है।

६२२. ॐ सत्कीर्तये नमः—सुशीलता के कारण इनकी महती कीर्ति सारे ब्रह्माण्ड भर में छाई हुई है, अतः इनका नाम 'सत्कीर्ति' है। शिवरहस्य

के अनुसार सर्वप्रथम महोष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महोष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महोष्ठ को उत्तम कीर्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र उत्तम कीर्ति देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।१ में सङ्केतित है।

६२३. ॐ छिन्नसंशयाय नमः—इन्होंने भक्तों के सभी सन्देह काट दिए हैं, अतः इनका नाम 'छिन्नसंशय' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तारण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तारण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तारण के सभी सन्देह नष्ट हुए। यह मन्त्र सन्देहनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१००।४ में सङ्केतित है।

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥८४॥

६२४. ॐ उदीर्णाय नमः—ये धर्मचक्षुवाले उद्धवजी आदि मनुष्यों को प्रत्यक्ष दर्शन देनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'उदीर्ण' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम बहुविघ्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बहुविघ्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बहुविघ्र को सुन्दर दृष्टि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुन्दरदृष्टि देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।७५।३ में सङ्केतित है।

६२५. ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः—ये सबके नेत्रों के समक्ष सदा उपस्थित रहते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वतश्चक्षु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गणकाश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गणकाश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गणकाश के सब प्रकार के नेत्ररोग नष्ट हुए। यह मन्त्र नेत्ररोगनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१९ में उल्लिखित है।

६२६. ॐ अनीशाय नमः—इनकी स्नानादि सब क्रियाएँ भक्ताधीन होती हैं, स्वतः भक्तों पर इनके प्रभुत्व का प्रभाव नहीं होता, अतः इनका नाम 'अनीश' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सामास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सामास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सामास्य किसी के भी आश्रित नहीं हुए। यह मन्त्र स्वावलम्बिता प्रदान करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१६।१ में सङ्केतित है।

६२७. ॐ शाश्वतस्थिराय नमः (ॐ शाश्वताय स्थिराय नमः)—ये सदा रहनेवाले तथा स्थिर हैं, अतः इनका नाम 'शाश्वतस्थिर' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महावक्षा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महावक्षा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महावक्षा का चित्त अत्यन्त स्थिर हुआ। यह मन्त्र चित्त स्थिर करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४१।१० में सङ्केतित है।

६२८. ॐ भूशयाय नमः—ये वृन्दावन की भूमि में क्रीडा करते समय सोये थे, अतः इनका नाम 'भूशय' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शीलधारी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शीलधारी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शीलधारी को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।७।१९ में सङ्केतित है।

६२९. ॐ भूषणाय नमः—ये जगत् का कल्याण करनेवाले स्वभाव से अपने को भूषित करते हैं, अतः इनका नाम 'भूषण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ऋक्चेष्ट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋक्चेष्ट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋक्चेष्ट की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवृद्धि करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।२५।२ में सङ्केतित है।

६३० ॐ भूतये नमः—ये किसी भी बाह्य अथवा आन्तरिक उपाय को न करनेवाले भक्तों की भूति (ऐश्वर्य) हैं, अतः इनका नाम 'भूति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पादपशायी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पादपशायी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पादपशायी की ऐश्वर्यवृद्धि हुई। यह मन्त्र ऐश्वर्य बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १८।१४ में उल्लिखित है।

६३१. ॐ विशोकाय नमः—ये अपने किसी भी भक्त की थोड़ी भी हानि न होने देने के कारण अपने भक्तों के बारे में थोड़ा भी शोक नहीं करते हैं, अतः इनका नाम 'विशोक' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अम्बुजाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अम्बुजाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अम्बुजाल ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३१।८ में सङ्केतित है।

६३२. ॐ शोकनाशनाय नमः—ये अपने भक्तों का अपने साथ सम्बन्ध न होना रूप क्लेश (शोक) का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'शोक-नाशन' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दर्भचारी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दर्भचारी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दर्भचारी शोकमुक्त हुए। यह मन्त्र शोकनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।७ में सङ्केतित है।

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥८५॥

६३३. ॐ अर्चिष्मते नमः—ये भक्तों के बाह्य तथा आभ्यन्तर नेत्रों को उद्घाटित कर दिव्य प्रकाश देनेवाले तेज से युक्त हैं, अतः इनका नाम अर्चिष्मान् है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पर्वतवर्मा ऋषि ने यह

नाममन्त्र जपा है, अतएव पर्वतवर्ष्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पर्वतवर्ष्मा शीघ्र तेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१०।१ में सङ्केतित है।

६३४. ॐ अर्चिताय नमः—देव, मनुष्य आदि सभी प्राणी इनकी पूजा करते हैं, अतः इनका नाम 'अर्चित' है। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम यज्ञशील ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यज्ञशील इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यज्ञशील को संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। यह मन्त्र प्रतिष्ठाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।४१।८ में सङ्केतित है।

६३५. ॐ कुम्भाय नमः—ये मूर्ति में आकर सदा विराजित रहें ऐसी भक्तों की इच्छा सदा होती है, अतः इनका नाम 'कुम्भ' है। अथवा ये मूर्ति में ध्यान, आराधन आदि क्रिया सम्पन्न करने के लिए चमकते हैं, अतः इनका नाम 'कुम्भ' है। अथवा क्रीडा के समय इन्होंने कुम्भ लेकर क्रीड़ाएँ की हैं, अतः इनका नाम 'कुम्भ' है। शिवतत्त्वामृत के अनुसार सर्वप्रथम मणिविद्ध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मणिविद्ध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मणिविद्ध की सब कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र कामना पूर्ण करनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।८७ में उल्लिखित है।

६३६. ॐ विशुद्धात्मने नमः—इनका मन अपने में आश्रित भक्तजनों को सर्वस्व देने में निष्कपट है, अतः इनका नाम 'विशुद्धात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गन्धपाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गन्धपाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गन्धपाली का आत्मा (मन) शुद्ध हुआ। यह मन्त्र मनःशुद्धि करनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

६३७. ॐ विशोधनाय नमः—ये मथुरा, अयोध्या, द्वारका आदि में देहत्याग करनेवाले भक्तों को शुद्धकर मुक्त करते हैं, अतः इनका नाम 'विशोधन' है। सात्त्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मन्थान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः मन्थान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मन्थान को विशेष शुद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र शुद्धिकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८५।१९ में सङ्केतित है।

६३८. ॐ अनिरुद्धाय नमः—ये प्राचीन काल में वासुभाण्ड नाम से प्रसिद्ध स्थान में निवास करते हुए कभी भी निरुद्ध नहीं हुए, अतः इनका नाम 'अनिरुद्ध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हर्यक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हर्यक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हर्यक्ष का चित्त शुद्ध हुआ। यह मन्त्र चित्तशुद्ध करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।९६।६ में सङ्केतित है।

६३९. ॐ अप्रतिरथाय नमः—इनका सामना करनेवाला प्रतिद्वन्द्वी कोई भी नहीं है, अतः इनका नाम 'अप्रतिरथ' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सर्वपावन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सर्वपावन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सर्वपावन का कोई भी विरोधी तथा विजेता नहीं हुआ। यह मन्त्र अविरोध तथा अपराजय देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।४८।११ में सङ्केतित है।

६४०. ॐ प्रद्युम्नाय नमः—इनका ऐश्वर्य प्रकृष्ट (उत्कृष्ट) है, अतः इनका नाम 'प्रद्युम्न' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आलम्बायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आलम्बायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आलम्बायन को तेज प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३४।८ में सङ्केतित है।

६४१. ॐ अमितविक्रमाय नमः—राजा बलि से प्राप्त तीन पग पृथ्वी नापने में त्रैलोक्य व्याप्त करने पर भी इनका तीन पग पूरा नहीं हुआ, अतः इनका नाम 'अमितविक्रम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चारुशीर्ष ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चारुशीर्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चारुशीर्ष अमितपराक्रमवाले हुए। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।१६।५ में सङ्केतित है।

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥८६॥

६४२. ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः—ये कालनेमितुल्य अविद्या का अथवा कलिकल्मष का अथवा कालनेमिनामक असुर के अवताररूप कंस का नाश करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'कालनेमिनिहा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वरिष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वरिष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वरिष्ठ ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र ब्रह्मचर्यप्रद है। यह मन्त्र पद्मपुराण में उल्लिखित है।

६४३. ॐ वीराय नमः—इन्होंने वि अर्थात् गरुड पक्षी को अपनी अङ्गुलि से कम्पित किया है, अतः इनका नाम 'वीर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वदान्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वदान्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वदान्य वीर हुए। यह मन्त्र वीरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।२८।१२ में उल्लिखित है।

६४४. ॐ शौरये नमः—ये सदा शौर्य से युक्त रहते हैं तथा शूर अर्थात् वसुदेव के पुत्र हुए हैं, अतः इनका नाम 'शौरि' है। महाकालतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम महापार्श्व ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महापार्श्व

इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महापार्श्व ने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९०।३ में सङ्केतित है।

३४५. ॐ शूरजनेश्वराय नमः—ये शूर लोगों के ईश्वर हैं, अतः इनका नाम 'शूरजनेश्वर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विश्रान्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विश्रान्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विश्रान्त शूरजनों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र शूरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९०।३ में सङ्केतित है।

६४६. ॐ त्रिलोकात्मने नमः—ये त्रैलोक्य में सतत विचरण करते रहते हैं, अतः इनका नाम 'त्रिलोकात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सस्यवर्जी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सस्यवर्जी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सस्यवर्जी का त्रिलोक के सभी प्राणियों में आत्मभाव सिद्ध हुआ। यह मन्त्र प्राणियों में प्रेम बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१४६।१ में सङ्केतित है।

६४७. ॐ त्रिलोकेशाय नमः—ये तीनों लोकों के ईश हैं, अतः इनका नाम 'त्रिलोकेश' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दृढार्थ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दृढार्थ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दृढार्थ को प्राणीमात्र का स्वामित्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्वामित्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ में सङ्केतित है।

६४८. ॐ केशवाय नमः—इनके केश अर्थात् सूर्यादि में प्रविष्ट अंशु (किरण) प्रशंसनीय हैं, अतः इनका नाम 'केशव' है। अथवा क अर्थात् ब्रह्मा तथा ईश अर्थात् शिव ये दोनों देव इनके अधीन हैं, अतएव इनका नाम 'केशव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जितक्रोध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जितक्रोध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जितक्रोध का क्लेश नष्ट हुआ। यह मन्त्र क्लेशनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१०५।५ में उल्लिखित है।

६४९. ॐ केशिघ्ने नमः—घोड़े का रूप धारण कर आए हुए केशी-नामक दैत्य का इन्होंने वध किया है, अतः इनका नाम 'केशिहा' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सत्यसन्ध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्यसन्ध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्यसन्ध को विष्णुभक्ति तथा शत्रुनाश सिद्ध हुआ। यह मन्त्र विष्णुभक्तिप्रद तथा शत्रुनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१३६।१ में सङ्केतित है।

६५०. ॐ हरये नमः—ये स्मरण करनेवाले भी प्राणियों का दुःख स्मृत होने मात्र से हरते हैं, अतः इनका नाम 'हरि' है। भवानीतन्त्र के अनुसार

सर्वप्रथम कृतोदक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कृतोदक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कृतोदक का पापनाश तथा दुःखनाश हुआ। यह मन्त्र पाप तथा दुःख का नाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।४४।३ में उल्लिखित है।

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ॥
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ ८७ ॥

६५१. ॐ कामदेवाय नमः—ये काम (इच्छित पदार्थ) प्रदान करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'कामदेव' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम चीरवासा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चीरवासा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चीरवासा के सभी मनोरथ सिद्ध हुए। यह मन्त्र मनोरथपूरक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ७।४८ में सङ्केतित है।

६५२. ॐ कामपालाय नमः—ये भक्तों को दिए गए अर्थात् भक्तों के पूर्ण किए गए मनोरथों का पालन करते हैं, अतः इनका नाम 'कामपाल' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दमनिष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दमनिष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दमनिष्ठ की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपःप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।५२।१ में सङ्केतित है।

६५३. ॐ कामिने नमः—इनके पास भक्तों को देने योग्य पदार्थ अत्यधिक हैं, अतएव इनका नाम 'कामी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम स्थूलाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव स्थूलाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से स्थूलाक्ष की कामना पूर्ण हुई। यह मन्त्र कामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।१४।१ में सङ्केतित है।

६५४. ॐ कान्ताय नमः—इन्हें बड़ी बड़ी अप्सराएँ भी चाहती हैं, अतः इनका नाम 'कान्त' है। अथवा ये क अर्थात् ब्रह्मा के भी अन्त अर्थात् काल हैं, अतः इनका नाम 'कान्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शबलाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शबलाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शबलाक्ष को सुन्दरता प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुन्दरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।१ में सङ्केतित है।

६५५. ॐ कृतागमाय नमः—इन्होंने शुद्ध अन्तःकरणवाले भक्तों के लिए आगमशास्त्र रचे हैं, अतः इनका नाम 'कृतागम' है। अतएव "वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नितम्बी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नितम्बी इस मन्त्र के ऋषि

हैं। इसको जपने से नितम्वी को नानाविध विद्याएँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र विद्याप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।३।१४ में सङ्केतित है।

६५६. ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः—ये जाति आदि से रहित होने से 'ये भगवान् हैं' ऐसा इनके शरीर को अङ्गुलि से निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता है, अतः इनका नाम 'अनिर्देश्यवपु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भुवन-दृक् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भुवनदृक् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भुवनदृक् अनिर्देश्य तत्त्व के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

६५७. ॐ विष्णवे नमः—इन्होंने अपनी कान्ति से द्यावाभूमी (स्वर्ग तथा पृथ्वी) को परिवेष्टित किया है, अतएव इनका नाम 'विष्णु' है। अतएव "व्याप्य मे रोदसी पार्थ कान्तिरप्यधिका स्थिता। क्रमणाद्वाप्यहं पार्थ विष्णुरित्य-भिसंज्ञितः॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जरातुर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जरातुर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जरातुर अतितेजस्वी हुए। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।२२।१७ में उल्लिखित है।

६५८. ॐ वीराय नमः—ये अपने भक्तों के वैरियों को गदा से अथवा चक्र से काटकर दूर फेंक देते हैं, अतः इनका नाम 'वीर' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अकृतव्रण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अकृतव्रण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अकृतव्रण के शत्रुओं का नाश हुआ। यह मन्त्र शत्रुनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।१।२१ में उल्लिखित है।

६५९. ॐ अनन्ताय नमः—इनके गुणों की कोई सीमा नहीं है, अत-एव इनका नाम 'अनन्त' है। अतएव विष्णुपुराण में—"गन्धर्वाप्सरसः सिद्धाः किन्नरोरगचारणाः। नान्तं गुणानां गच्छन्ति तेनानन्तोऽयमव्ययः॥" कहा है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वीतहव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वीतहव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वीतहव्य को सभी वस्तुओं की अनन्तता सिद्ध हुई। यह मन्त्र अनन्तताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।११३।३ में उल्लिखित है।

६६०. ॐ धनञ्जयाय नमः—धन इनके सामने तृणसदृश तुच्छ होने से एवं इनके द्वारा धन जीता जाने से भक्तजन धन त्यागकर इन्हीं का भजन करते हैं, अतः इनका नाम 'धनञ्जय' है। अथवा पाण्डवों में अर्जुन भगवान् का रूप है, अतः इनका नाम 'धनञ्जय' है। अतएव गीता में "पाण्डवानां धनञ्जयः॥" भगवदुक्ति है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जर्जरीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जर्जरीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको

जपने से जर्जरीक को धन और जय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद तथा जयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।४६।५ में उल्लिखित है।

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥८८॥

६६१. ॐ ब्रह्मण्याय नमः—ये ब्रह्म अर्थात् तत्त्वज्ञान, तप और वेद तीनों के हितकारी हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मण्य' है। अतएव—"तपो वेदाश्च विप्राश्च ज्ञानं च ब्रह्मसंज्ञितम् ॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम छत्रगुप्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छत्रगुप्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छत्रगुप्त का वेदतत्त्व वृद्धि को प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वेदतत्त्व बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६।३३ में उल्लिखित है।

६६२. ॐ ब्रह्मकृते नमः—इन्होंने वेदों को अपने श्वास से उत्पन्न किया है, अतः इनका नाम 'ब्रह्मकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चौलुक्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चौलुक्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चौलुक्य वेदपारगामी हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।५४।६ में उल्लिखित है।

६६३. ॐ ब्रह्मणे नमः—ये सृष्टिकाल में चतुर्मुख होकर जगत् का विस्तार करते हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चेलुक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चेलुक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चेलुक को ब्रह्मलोक का सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मलोकसुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१४१।३ में उल्लिखित है।

६६४. ॐ ब्रह्मणे नमः—ये व्यक्त, अव्यक्त, व्यष्टि तथा समष्टिरूप जगत् को बढ़ाते हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्म' है। अतएव—"प्रत्यस्तमितभेदं यत् सत्तामात्रमगोचरम्। वचसामात्मसंवेद्यं तज्ज्ञानं ब्रह्मसंज्ञितम् ॥" कहा है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जर्तिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जर्तिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जर्तिल को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१४१।३ में उल्लिखित है।

६६५. ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः—ये तप को विशेषरूप से बढ़ाते हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मविवर्धन' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चेतोमुख ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चेतोमुख इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चेतोमुख का तप बढ़ा। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१।३ में सङ्केतित है।

६६६. ॐ ब्रह्मविदे नमः—ये वेद को सम्पूर्णरूप से जानते हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मविद्' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चिरन्तन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चिरन्तन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चिरन्तन वेदज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।१० में उल्लिखित है।

६६७. ॐ ब्राह्मणाय नमः—इन्होंने वामनावतार में बृहस्पति से वेद पढ़ा है, अतः इनका नाम 'ब्राह्मण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम महाक्रम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महाक्रम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महाक्रम वेदपाठी हुए। यह मन्त्र वेदाध्ययन-साधक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।५८।१ में उल्लिखित है।

६६८. ॐ ब्रह्मिणे नमः—प्रमाण-प्रमेयरूप सब वस्तुएँ इनके पास हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मृगच्छन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मृगच्छन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मृगच्छन्द सर्वज्ञ हुए। यह मन्त्र सर्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८।४ में सङ्केतित है।

६६९. ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः—ये वेदों को अर्थपर्यन्त जानते हैं, अतः इनका नाम 'ब्रह्मज्ञ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पञ्चानन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पञ्चानन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पञ्चानन ब्रह्मज्ञानी हुए। यह मन्त्र ब्रह्मज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१६ में सङ्केतित है।

६७०. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः—ब्राह्मण इनको बहुत प्रिय हैं, अतः इनका नाम 'ब्राह्मणप्रिय' है। अतएव भगवान् ने—"घ्नन्तं शपन्तं परुषं वदन्तं यो ब्राह्मणं न प्रणमेद् यथाहम्। स पापकृद् ब्रह्मदवाग्निदग्धो वध्यश्च दण्ड्यश्च, न चास्मदीयः ॥" कहा है। भारत में भी—"यं देवं देवकीदेवी वसुदेवादजीजनत्। भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यै दीप्तमग्निमिवारणिः ॥" कहा है। भार्गवतन्त्र के के अनुसार सर्वप्रथम शरवण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शरवण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शरवण को ब्राह्मणों में भक्ति हुई। यह मन्त्र ब्राह्मणों के प्रति भक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।११ में सङ्केतित है।

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ८९ ॥

६७१. ॐ महाक्रमाय नमः—वैकुण्ठ में रहने के कारण पाताल तक विभिन्न स्थानों में रहनेवाले भक्तों को अपने पास आने के लिए इन्होंने बड़ी

सीढ़ियाँ बनायी हैं, अतः इनका नाम 'महाक्रम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वीणाशङ्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वीणाशङ्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वीणाशङ्क की ज्ञानवृद्धि हुई। यह मन्त्र ज्ञानवर्द्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।९ में सङ्केतित हैं।

६७२. ॐ महाकर्मणे नमः—इनके महान् कर्म कृमि, कीटादि देह को प्राप्त हुए अत्यन्त हीन जीवों नृग आदि को भी अपने महान् विभव का अनुभव कराने लायक हैं, अतः इनका नाम 'महाकर्मा' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जयशेखर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जयशेखर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जयशेखर को कर्मसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र कर्मसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ६।२ में सङ्केतित है।

६७३. ॐ महातेजसे नमः—इनका तेज तापस जनों के अज्ञान का नाश करनेवाला है, अतः इनका नाम 'महातेजा' है। भगवान् ने—"यदादित्यगतं तेजो जगद् भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जयमङ्गल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जयमङ्गल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जयमङ्गल की तेजोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तेजोवृद्धिकारक है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।१३।१ में सङ्केतित है।

६७४. ॐ महोरगाय नमः—ये मूढ़ जनों के अज्ञान का नाश करने के लिए उन मूढ जनों के हृदय में जाने के कारण उरग कहलाते हैं और ये महान् उरग हैं, अतः इनका नाम 'महोरग' है। अथवा वासुकि नाग इनका स्वरूप है, अतः इनका नाम 'महोरग' है। शैवागमतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम छद्मतापस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छद्मतापस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छद्मतापस के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।४५।१ में सङ्केतित है।

६७५. ॐ महाक्रतवे नमः—इनका आराधन सबसे साध्य है, अतः इनका नाम 'महाक्रतु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम छगलाण्डपुत्र छमण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छमण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छमण्ड को सब यज्ञों का फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सर्वयज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९१।२ में सङ्केतित है।

६७६. ॐ महायज्वने नमः—बड़े बड़े अनन्यभक्त इनके पूजक हैं, अतः इसका नाम 'महायज्वा' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम जम्भल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जम्भल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जम्भल वैकुण्ठगामी हुए। यह मन्त्र वैकुण्ठलोकप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१४।१ में सङ्केतित है।

६७७. ॐ महायज्ञाय नमः—इनका पाद्य से लेकर प्रणाम तक (षोडशोपचार) पूजन सब यज्ञों से श्रेष्ठ है, अतः इनका नाम 'महायज्ञ' है। अथवा जपयज्ञ इनका स्वरूप है, अतएव इनका नाम 'महायज्ञ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जपेश्वर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव जपेश्वर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जपेश्वर को जपयज्ञ का फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र जपयज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८।७ में सङ्केतित है।

६७८. ॐ महाहविषे नमः—इनका हवि प्रत्यगात्मरूप (विभिन्न देहों में रहनेवाले आत्मा के रूपवाला) विशाल है, अतः इनका नाम 'महाहवि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चित्रपृष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चित्रपृष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चित्रपृष्ठ को यज्ञफल तथा बन्धनमोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद तथा मोक्षप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१४ में सङ्केतित है।

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥९०॥

६७९. ॐ स्तव्याय नमः—ये स्तुति के योग्य हैं, अतः इनका नाम 'स्तव्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चित्रजल्प ऋषि ने नाममन्त्र जपा है, अतएव चित्रजल्प इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चित्रजल्प को वैकुण्ठलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वैकुण्ठलोकप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।४६।१७ में सङ्केतित है।

६८०. ॐ स्तवप्रियाय नमः—किसी के द्वारा भी की गई इनकी स्तुति इनको अच्छी लगती है, अतः इनका नाम 'स्तवप्रिय' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चित्रकण्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चित्रकण्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चित्रकण्ठ को वैकुण्ठलोक प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वैकुण्ठलोकप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।६२।३ में सङ्केतित है।

६८१. ॐ स्तोत्राय नमः—ये अपने स्तोत्रों को स्वयं ही उत्पन्न करते हैं, उदाहरणार्थ ध्रुवकृतस्तोत्र को भगवान् ने ही ध्रुवजी के गालों में शङ्ख का स्पर्श कराकर उत्पन्न किया, अतः इनका नाम 'स्तोत्र' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम छन्दोग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छन्दोग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छन्दोग को परमानन्द प्राप्त हुआ। यह मन्त्र परमानन्दप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३१।१४ में उल्लिखित है।

६८२. ॐ स्तुतये नमः—शेषादि देवों द्वारा अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए की हुई भगवद्गुणकीर्तनरूप स्तुति भी, भगवान् की कृपा के बिना सम्भव न होने से, भगवद्रूप है। अतः इनका नाम 'स्तुति' है। शिवरहस्य

के अनुसार सर्वप्रथम छिक्कर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छिक्कर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छिक्कर को वाञ्छित फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र इच्छापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।३४।१ में उल्लिखित है।

६८३. ॐ स्तोत्रे नमः—ये अपनी स्तुति करनेवाले भक्तों की स्तुति स्वयं करते हैं, अतः इनका नाम 'स्तोता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम माण्डव्यगोत्रोत्पन्न छिलिहिण्ट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छिलिहिण्ट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छिलिहिण्ट की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३८।४ में उल्लिखित है।

६८४. ॐ रणप्रियाय नमः—इन्हें युद्ध प्रिय लगता है, अतः इनका नाम 'रणप्रिय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम छेतृमण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छेतृमण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छेतृमण्ड सभा में विजयी हुए। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।९१।८ में सङ्केतित है।

६८५. ॐ पूर्णाय नमः—इनके घर में किसी भी वस्तु की कमी नहीं है, अतः इनका नाम 'पूर्ण' है। शैवागम के अनुसार सर्वप्रथम अष्टावक्रकुलोत्पन्न छिन्नद्वैध ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छिन्नद्वैध इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छिन्नद्वैध को पूर्णलाभ सिद्ध हुआ। यह मन्त्र पूर्णलाभप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।८२।३ में उल्लिखित है।

६८६ ॐ पूरयित्रे नमः—ये भक्तकृत स्तुति आदि स्वीकार कर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं, अतः इनका नाम 'पूरयिता' है। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार सर्वप्रथम माठरकुल में उत्पन्न जगद्वित् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जगद्वित् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जगद्वित् के मनोरथ पूर्ण हुए। यह मन्त्र मनोरथपूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।८३।१ सङ्केतित है।

६८७. ॐ पुण्याय नमः—ये पापियों को अपनी स्तुति के योग्य तथा पवित्र करते हैं, अतः इनका नाम 'पुण्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जटाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः जटाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जटाल को सर्वपुण्य-फल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सर्वपुण्यफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४३।२ में उल्लिखित है।

६८८. ॐ पुण्यकीर्तये नमः—इनकी कीर्ति पवित्र करनेवाली है, अतः इनका नाम पुण्यकीर्ति है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वेदनाभि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वेदनाभि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वेदनाभि की पुण्यवृद्धि हुई। यह मन्त्र पुण्यवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३४।४४ में सङ्केतित है।

६८९. ॐ अनामयाय नमः—ये अपने चरणरूप औषधि से संसार-रूप रोग का नाश करनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'अनामय' है। शिव-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चित्रकाय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अत-एव चित्रकाय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चित्रकाय का भवरोग विनष्ट हुआ। यह मन्त्र भवरोगविनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।५०।११ में सङ्केतित है।

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ९१ ॥

६९०. ॐ मनोजवाय नमः—भक्तों का कार्य शीघ्र करने के कारण इनका वेग मन के समान है, अतः इनका नाम 'मनोजव' है। शिवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अंशु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अंशु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अंशु की सद्यः कार्यसिद्धि हुई। यह मन्त्र सद्यः कार्यसाधक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।११७।१५ में उल्लिखित है

६९१. ॐ तीर्थकराय नमः—ये भक्तों को अपने स्पर्श से गङ्गादि तीर्थ के समान पवित्र करते हैं, अतः इनका नाम 'तीर्थकर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम छगलाण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव छगलाण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से छगलाण्ड को तीर्थफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तीर्थफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।४०।१३ में सङ्केतित है।

६९२. ॐ वसुरेतसे नमः—इनका तेज सुवर्णरूप है, अतः इनका नाम 'वसुरेताः' है। अतएव व्यासजी ने भी—'देवः पूर्वमपः सृष्ट्वा तासु वीर्यमपा-सृजत्। तदण्डमभवद्धैमं ब्रह्मणः कारणं परम्॥" कहा है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चातुर्वैद्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चातुर्वैद्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चातुर्वैद्य को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।११०।६ में सङ्केतित है।

६९३. ॐ वसुप्रदाय नमः—इन्होंने परमनिधिरूप अपनेको देवकी और वसुदेव को पुत्ररूप में दिया, अतः इनका नाम 'वसुप्रद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम केवल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव केवल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से केवल को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।६।४ में सङ्केतित है।

६९४. ॐ वसुप्रदाय नमः—इन्होंने जगत्पितृस्वरूप अपना दिव्य तेज वसुदेव और देवकी का पुत्र बनकर वसुदेव और देवकी को दिया है, अतः इनका नाम 'वसुप्रद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चारुगर्भ ऋषि ने

यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चारुगर्भ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चारुगर्भ को धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१०३।६ में सङ्केतित है।

६९५. ॐ वासुदेवाय नमः—ये वसुदेव के पुत्र हुए, अतः इनका नाम 'वासुदेव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अंशुधर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अंशुधर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अंशुधर को सब प्रकार की निधियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र निधिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१ में सङ्केतित है।

६९६. ॐ वसवे नमः—ये माया से अपना रूप छिपाकर रखते हैं, अतः इनका नाम 'वसु' है। अथवा क्षीरसागर में निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'वसु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कर्कश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्कश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्कश को सब सिद्धियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।४३।९ में उल्लिखित है।

६९७. वसुमनसे नमः—'नामैकदेश'—न्याय से वसु अर्थात् वसुदेव में इनका मन लगा रहता है, अतः इनका नाम 'वसुमनाः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अंशुमाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अंशुमाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अंशुमाली का मन धन से निवृत्त हुआ। यह मन्त्र धन से विरक्ति करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।२।१ में सङ्केतित है।

६९८. ॐ हविषे नमः—इन्हें वसुदेव और देवकी के पास रहने की अभिरुचि होने पर भी कंस के भय से नन्द और यशोदा ने इन्हें छिपाने के लिए वसुदेव और देवकी से ले लिया, अतः इनका नाम 'हविः' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कौण्डविक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौण्डविक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौण्डविक मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१४।१४ में उल्लिखित है।

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥९२॥

६९९. ॐ सद्गतये नमः—अवतार होते ही दैत्यकृत क्लेश दूर करने से ये सन्तों के गति हैं, अतः इनका नाम 'सद्गति' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कुण्डिन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुण्डिन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुण्डिन को सद्गति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सद्गतिप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

७००. ॐ सत्कृतये नमः—संसाररूपी वेड़ी पूरी तरह काटने के कारण इनकी कृति अर्थात् बाललीला सुन्दर है, अतः इनका नाम 'सत्कृति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चारु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चारु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चारु जीवन्मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१३ में सङ्केतित है।

७०१. ॐ सत्तायै नमः—सन्तों की सत्ता भी ये ही हैं, अतः इनका नाम 'सत्ता' है। महानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सत्क्रोडाङ्घ्रि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्क्रोडाङ्घ्रि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्क्रोडाङ्घ्रि की सत्तावृद्धि हुई। यह मन्त्र सत्तावर्धक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

७०२. ॐ सद्भूतये नमः—सन्तों के घर में दीखनेवाली सत्पुत्रमित्रादि-रूप सम्पत्ति ये ही हैं, अतः इनका नाम 'सद्भूति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अकिञ्चन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अकिञ्चन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अकिञ्चन उत्तम ऐश्वर्यवाले हुए। यह मन्त्र उत्तम ऐश्वर्य देनेवाला है। यह मन्त्र महाभारत द्रोणपर्व में उल्लिखित है।

७०३. ॐ सत्परायणाय नमः—भक्त ही इनके परम आश्रय हैं, अतएव इनका नाम 'सत्परायण' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अक्षतार्थ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अक्षतार्थ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अक्षतार्थ को सर्वविध कल्याण प्राप्त हुआ। यह मन्त्र कल्याण-प्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।३ में सङ्केतित है।

७०४ ॐ शूरसेनाय नमः—ये किसी की भी सहायता न चाहनेवाले शूर हैं, तथापि भूभारहरण करने के समय इनकी यादवादि तथा पाण्डवादिरूप सेना शूर है, अतः इनका नाम 'शूरसेन' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अक्षधूर्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अक्षधूर्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अक्षधूर्त का बल बढ़ा। यह मन्त्र बलवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।३ में सङ्केतित है।

७०५. ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः—ये यादववंश के उद्धार के लिए यदुवंश में प्रकट होकर यदुओं में श्रेष्ठ हैं, अतः इनका नाम 'यदुश्रेष्ठ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चरण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चरण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चरण विद्वानों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।६२।१० में सङ्केतित है।

७०६. ॐ सन्निवासाय नमः—ये मनुष्यलोक में अवतार लेने पर भी सनकादि सन्तों के चित्त में निवास करते हैं, अतः इनका नाम 'सन्निवास' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चरकाढ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है,

अतएव चरकाध्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चरकाध्य को उत्तम स्थान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र उत्तमस्थानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१०।४ में सङ्केतित है।

७०७. ॐ सुयामुनाय नमः—ये यमुना के किनारे वनभोजन के समय गोपबालकों को परोसते समय सुन्दररूप से शोभित हुए, अतः इनका नाम 'सुयामुन' है। अथवा यमुना के किनारे की भूमि इनसे शोभित है, अतः इनका नाम 'सुयामुन' है। अथवा इनके द्वारा कालिय नाग का दमन किये जाने से यमुना का जल सुन्दर (पीने लायक) हुआ, अतः इनका नाम 'सुयामुन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम निश्चलाङ्ग ऋषि ने यह नाम-मन्त्र जपा है, अतएव निश्चलाङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निश्चलाङ्ग को निश्चल भक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र निश्चल भक्ति देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१५४।४ में सङ्केतित है।

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥ ९३ ॥

७०८. ॐ भूतावासाय नमः—ये स्थावर तथा जङ्गम सभी प्राणियों के आवास हैं, अतः इनका नाम 'भूतावास' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दुर्विभाव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दुर्विभाव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दुर्विभाव्य को सब अभीष्ट फल प्राप्त हुए। यह मन्त्र अभीप्सित-फलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।९८।११ में सङ्केतित है।

७०९. ॐ वासुदेवाय नमः—वसुदेव अर्थात् शुद्ध सत्त्व में इनका प्रादुर्भाव हुआ, अतः इनका नाम 'वासुदेव' है। अतएव भारत में—"छादयामि जगद्विश्वं भूत्वा सूर्य इवांशुभिः।" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दीर्घपाद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दीर्घपाद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीर्घपाद की भक्तिवृद्धि हुई। यह मन्त्र भक्ति-वर्धक है। यह मन्त्र गीतोपनिषद् में उल्लिखित है।

७१०. ॐ सर्वासुनिलयाय नमः—ये सब प्राणोपाधि जीवों के निलय अर्थात् आलम्बन हैं, अतः इनका नाम 'सर्वासुनिलय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दीप्ताग्नि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दीप्ताग्नि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीप्ताग्नि की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।१ में सङ्केतित है।

७११. ॐ अनलाय नमः—ये अपने भक्तजनों का सब प्रकार से कल्याण करने पर भी मैंने इनका कुछ नहीं किया यों अवितृप्तिवश सन्तोष न हो

सकने से पर्याप्त नहीं होते, अतः इनका नाम 'अनल' है। अथवा अपने भक्तों का अपराध करनेवाले को सहन नहीं कर पाते, अतः इनका नाम 'अनल' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दीदिवि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दीदिवि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीदिवि की तेजोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तेजोवर्धक है। यह मन्त्र अथर्ववेद ५।११।४ में सङ्केतित है।

७१२. ॐ दर्पघ्ने नमः—गोवर्धनोद्धरण, पारिजातहरण आदि लीलाओं में इन्होंने देवताओं का दर्पहरण किया है, अतः इनका नाम 'दर्पहा' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम नन्दिवर्धन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नन्दिवर्धन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नन्दिवर्धन के शत्रुओं का दर्प नष्ट हुआ। यह मन्त्र दर्पनाशक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में सङ्केतित है।

७१३. ॐ दर्पदाय नमः—शत्रुनाश, द्वारकानिर्माण, निधिस्थापन, पारिजातवृक्षारोपण, सुधर्मासभास्थापन आदि से इन्होंने सब यादवों को हर्षित किया है, अतः इनका नाम 'दर्पद' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नकुलीश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः नकुलीश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नकुलीश के स्वजन प्रसन्न हुए। यह मन्त्र स्वजनों को प्रसन्नता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१ में सङ्केतित है।

७१४. ॐ अदृप्ताय नमः अथवा ॐ दृप्ताय नमः—ये विविध पराक्रम करने पर भी कभी भी गर्वयुक्त नहीं होते, अतः इनका नाम 'अदृप्त' है। अथवा नन्द और यशोदा द्वारा इनका खूब लाड़ प्यार करने पर ये गर्वयुक्त होते हैं, अतः इनका नाम 'दृप्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम घोड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव घोड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से घोड ने सब अभिमानियों के अभिमान को दूर किया। यह मन्त्र अभिमान-विनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१ में सङ्केतित है।

७१५. ॐ दुर्धराय नमः—ये बड़े कष्ट से हृदय में धारण किये जाते हैं, अतः इनका नाम 'दुर्धर' है। अथवा ये बाललीला में यशोदा से जल्दी पकड़े नहीं गए, अतः इनका नाम 'दुर्धर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ध्रुवन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ध्रुवन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ध्रुवन असम्भव कार्य को भी सम्भव कर सकने में समर्थ हुए। यह मन्त्र असम्भव को सम्भव करता है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में सङ्केतित है।

७१६. ॐ अपराजिताय नमः—दुर्योधनादि से कभी भी युद्ध में पराजित न हुए पाण्डव इनके अपने हैं, अतः इनका नाम 'अपराजित' है। वैष्णवतन्त्र

के अनुसार सर्वप्रथम निर्मुट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निर्मुट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निर्मुट को जय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र जयप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ८।५।२२ में उल्लिखित है।

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥९४॥

७१७. ॐ विश्वमूर्तये नमः—सकल जगत् इनकी मूर्ति (स्वरूप) है, अतः इनका नाम 'विश्वमूर्ति' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम निर्भीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निर्भीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निर्भीक विश्वविख्यात हुए। यह मन्त्र ख्यातिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१९ में सङ्केतित है।

७१८. ॐ महामूर्तये नमः—अर्जुन को इनके द्वारा अपना विश्वरूप दर्शन कराते समय अर्जुन ने इनका स्वरूप बहुत बड़ा विशाल देखा, अतः इनका नाम 'महामूर्ति' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम निर्ग्रंथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निर्ग्रंथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निर्ग्रंथ मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।२ में सङ्केतित है।

७१९. ॐ दीप्तमूर्तये नमः—संसार में सभी चमकीले पदार्थ इनकी मूर्ति हैं, अतः इनका नाम 'दीप्तमूर्ति' है। अथवा इनकी मूर्ति दीप्त अर्थात् ज्ञानमय है, अतः इनका नाम 'दीप्तमूर्ति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नाथाद्रि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नाथाद्रि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नाथाद्रि का तेज बढ़ा। यह मन्त्र तेजोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८१।३ में सङ्केतित है।

७२०. ॐ अमूर्तिमते नमः—मूर्तिरहित अव्यक्त पुरुषादि इनकी मूर्ति हैं, अतः इनका नाम 'अमूर्तिमान्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चेकितायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चेकितायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चेकितायन सिद्ध हुए। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१ में सङ्केतित है।

७२१. ॐ अनेकमूर्तये नमः—सोलह हजार एक सौ आठ स्त्रियों के साथ व्यवहार करने के लिए इन्होंने अनेक मूर्तियाँ धारण कीं। अतः इनका नाम 'अनेकमूर्ति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम खल्लीट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव खल्लीट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से खल्लीट मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५३।८ में सङ्केतित है।

७२२. ॐ अव्यक्ताय नमः—ये अपने स्वरूप को ढककर मनुष्य बने हैं, अतः इनका नाम 'अव्यक्त' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम खररोमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव खररोमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से खररोमा की तपश्चर्या की गोपनीयता सिद्ध हुई। यह मन्त्र गोपनीयताप्रद है। यह मन्त्र श्वेताश्वतरोपनिषद् ६।११ में सङ्केतित है।

७२३. ॐ शतमूर्तये नमः—विश्वरूप देखने की इच्छावाले अर्जुन को अपना विश्वरूप दर्शन कराते समय इनकी मूर्तियाँ शत अर्थात् अनन्त हुई हैं, अतः इनका नाम 'शतमूर्ति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम क्षिपक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षिपक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षिपक को प्रभु की अनन्तशक्ति का दर्शन हुआ। यह मन्त्र प्रभु की अनन्त शक्तियों का दर्शन करानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१०३।१ में सङ्केतित है।

७२४. ॐ शताननाय नमः—इनके मुख अनेक हैं, अतः इनका नाम 'शतानन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम क्षन्तृवर्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव क्षन्तृवर्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से क्षन्तृवर्य रागद्वेष से मुक्त हुए। यह मन्त्र रागद्वेष से मुक्त करनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।१ में सङ्केतित है।

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥९५॥

७२५. ॐ एकाय नमः—एकस्मै नमः—ईश्वरीय सत्तातिरिक्त सत्ता का अभाव है, अतः सांसारिक सभी वस्तुओं की सत्ता ईश्वरीय सत्ता है, अतएव सबका नाम सर्वनाम इस विग्रह के बल से एकशब्द सर्वादि होने से एकस्मै हो सकता है। अन्यथा एकाय भी होता है। इनका सजातीय अन्य कोई भी नहीं है, अतः इनका नाम 'एक' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गण्डीर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गण्डीर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गण्डीर तपस्वियों में अग्रणी हुए। यह मन्त्र अग्रणीत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१९ में उल्लिखित है।

७२६. ॐ नैकाय नमः—इनकी अनेक विभूतियाँ होने से उन विभूतियों का अन्त नहीं है, अतः इनका नाम 'नैक' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गवाक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गवाक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गवाक्ष को अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अनेक वस्तुप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।३ में सङ्केतित है।

७२७. ॐ सवाय नमः—इनके प्रद्युम्न आदि अनेक पुत्र उत्पन्न हुए, अतः इनका नाम 'सव' है। अथवा जिसमें सोम निकाला जाता है, उस यज्ञ को सव कहते हैं। यज्ञ ही भगवान् होने से उनका नाम 'सव' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम धर्मपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः धर्मपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्मपाल पुत्रवान् हुए यह मन्त्र पुत्रप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।२६ में उल्लिखित है।

७२८. ॐ काय नमः—ये सर्वत्र चमकते हैं, अर्थात् सर्वत्र त्रैलोक्य में इनका तेज प्रदीप्त है, अतः इनका नाम 'क' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धर्षक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धर्षक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्षक परिवार का पालन करनेवाले हुए। यह मन्त्र पालन का सामर्थ्य देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३२।१४ में सङ्केतित है।

७२९. ॐ किमे नमः—कस्मै नमः—भगवान् में मिथ्यारूप भी सत्यरूप से प्रतीत होनेवाले सब नामों का व्यपदेश (व्यवहार) होता है तो भगवद्वाचक शब्द भी सर्वनाम होने में कोई बाधक नहीं है। अतः 'कस्मै' होता है। अन्यथा 'किमे नमः' होने में भी कोई बाधक नहीं है। अतएव 'कस्मै देवाय' इस मन्त्र में 'स्मै' आदेश किया है। ये साधकों तथा मुमुक्षुओं को सब अभीष्ट वस्तु प्रदान करते हैं, अतः इनका नाम 'किम्' है। शैवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मुक्तिघोंट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मुक्तिघोंट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुक्तिघोंट को अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र अभीष्टसाधक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।१ में उल्लिखित है।

७३०. ॐ यते नमः—यस्मै नमः—सर्वनाम के विषय में पहले ही कह चुके हैं। ये इनका अन्वेषण करनेवाले भक्तों के रक्षण के लिए यत्न करते हैं अतः इनका नाम 'यत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नभोमणि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नभोमणि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नभोमणि स्वर्गगामी हुए। यह मन्त्र स्वर्गप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८।७ में सङ्केतित है।

७३१. ॐ तते नमः—तस्मै नमः—सर्वव्यापक, सर्वेश्वर सर्वगत ब्रह्म के वाचक सर्वादि शब्द को संकुचित संज्ञोपसर्जनीभूत असर्वनाम मानने की एकतरपक्षपातिनी युक्ति का अभाव होने से सर्वनाम मानने में बाधक नहीं हो सकता, अतएव तस्मै भी होता है। ये अपने भक्तों को अपना ज्ञान तथा भक्ति विस्तार से देते हैं। अतः इनका नाम 'तत्' है, अतएव भगवान् ने—"ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ॥" कहा है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दातुर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दातुर इस

मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दातुर के सब पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापविनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।७ में सङ्केतित है।

७३२. ॐ पदायानुत्तमाय नमः—भक्तों को प्राप्त होने योग्य उत्तम पद इनके सिवाय दूसरा कोई नहीं है, अतः इनका नाम 'पदानुत्तम' है। वैष्णव-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देष्णु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देष्णु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देष्णु को विष्णुपद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र विष्णुपदप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।४१।६ में तथा यजुर्वेद ५।१५ में सङ्केतित है।

७३३. ॐ लोकबन्धवे नमः—ये सब लोगों के सगे हैं, अतः इनका नाम 'लोकबन्धु' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवयु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः देवयु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवयु की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३९।१० में सङ्केतित है।

७३४. ॐ लोकनाथाय नमः—ये सब लोकों के नाथ हैं, अतः इनका नाम 'लोकनाथ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चन्द्रापीड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चन्द्रापीड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चन्द्रापीड को ईश्वर में श्रद्धा हुई। यह मन्त्र श्रद्धाप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२ में सङ्केतित है।

७३५. ॐ माधवाय नमः—ये मधुनामक यादव के वंश में उत्पन्न हैं, अतः इनका नाम 'माधव' है। गर्गसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम चन्द्रप्रभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चन्द्रप्रभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चन्द्रप्रभ को भगवत्पद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्पदप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३।३६ में सङ्केतित है।

७३६. ॐ भक्तवत्सलाय नमः—ये भक्तों से पत्रपुष्पादि प्राप्तिरूप अत्यल्प लाभ होने पर भी उससे सन्तुष्ट होते हैं, ये अन्य लाभ की इच्छा नहीं करते हैं, अतः इनका नाम 'भक्तवत्सल' है। अतएव—"तुलसीदलमात्रेण जलस्य चुलुकेन वा। विक्रीणीते स्वमात्मानं भक्तेभ्यो भक्तवत्सलः ॥" यह सूक्ति संगत होती है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम नीलालु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नीलालु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नीलालु को भगवान् की प्रसन्नता प्राप्त हुई। यह मन्त्र भगवत्प्रसादकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३८।१ में सङ्केतित है।

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥९६॥

७३७. ॐ सुवर्णवर्णाय नमः—इनका रूप सुवर्ण के समान है, अतः इनका नाम 'सुवर्णवर्ण' है। सुवर्णवर्ण श्रीचैतन्य महाप्रभु का नाम है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम निरान्तक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निरान्तक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निरान्तक को सुन्दरस्वरूप प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुन्दरताप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १५।१।२ में सङ्केतित है।

७३८. ॐ हेमाङ्गाय नमः—इनका अङ्ग सुवर्ण (हेम) के समान दिव्य, भव्य और शुद्ध सत्त्वमय है, अतः इनका नाम 'हेमाङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम निर्ग्रन्थ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव निर्ग्रन्थ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से निर्ग्रन्थ को सुवर्ण-प्राप्ति हुई। यह मन्त्र सुवर्णप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९७।१ में सङ्केतित है।

७३९. ॐ वराङ्गाय नमः—इन्होंने देवकीजी की प्रसन्नता के लिए अपना चतुर्भुज रूप प्रकट किया, अतः इनका नाम 'वराङ्ग' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम तारापीड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तारापीड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तारापीड सुन्दर हुए। यह मन्त्र सुन्दरताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेदः ३।२५ में सङ्केतित है।

७४०. ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः—इनका अङ्गद (बाहुभूषण) चन्दन के समान शीतल है, अतः इनका नाम 'चन्दनाङ्गदी' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ताण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ताण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ताण्ड को शरीर में दिव्य गन्ध प्राप्त हुआ। यह मन्त्र दिव्यगन्धप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।३४।४ में सङ्केतित है।

७४१. ॐ वीरघ्ने नमः—अतिमूढ़ शिशु अवस्था में भी इन्होंने पूतना, शकटासुर आदि वीरों को मारा है, अतः इनका नाम 'वीरहा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ढुण्ढुक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ढुण्ढुक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ढुण्ढुक वीर हुए। यह मन्त्र वीरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।८३।४ में सङ्केतित है।

७४२ ॐ विषमाय नमः—ये जैसे के प्रति तैसे हैं अर्थात् सीधे के प्रति सीधे टेढ़े के प्रति टेढ़े हैं, अतः इनका नाम 'विषम' है। तन्त्ररहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दक्षिणामूर्ति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दक्षिणामूर्ति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दक्षिणामूर्ति समबुद्धिवाले हुए। यह मन्त्र समबुद्धि-प्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

७४३. ॐ शून्याय नमः—ये मनुष्यदेह धारण करने पर भी सकल गुणों से युक्त तथा सकल दोषों से रहित हैं, अतः इनका नाम 'शून्य' है। साङ्ख्यायनतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गुप्तस्नेह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है,

अतएव गुप्तस्नेह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गुप्तस्नेह को कल्याण-वृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र कल्याणवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३७।६ में सङ्केतित है।

७४४. ॐ घृताशिषे नमः—इनको नन्दजी के घर में गोघृत खाने की इच्छा हुई, अतः इनका नाम 'घृताशीः' है। अथवा परिपूर्ण होने से सभी प्रकार की इच्छाएँ इनसे घृत अर्थात् गलित हुई हैं, अतः इनका नाम 'घृताशीः' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गाथक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गाथक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गाथक को सब अभीष्ट वस्तुएँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अभीष्टप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।५।१ में सङ्केतित है।

७४५ ॐ अचलाय नमः—दुर्योधनादि द्वारा श्रीकृष्णजी को पाण्डवों से अलग कराने का प्रयत्न किए जाने पर भी ये पाण्डवों से कभी अलग नहीं हुए अर्थात् पाण्डवों का साथ नहीं छोड़ा, अतः इनका नाम 'अचल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तूष्णीक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तूष्णीक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तूष्णीक को स्थिर सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र स्थिरसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५६।२ में सङ्केतित है।

७४६. ॐ चलाय नमः—शस्त्र हाथ में न लेने की प्रतिज्ञा करने पर भी इन्होंने पाण्डवों की रक्षा करने के लिए भीष्मपितामह पर प्रहार हेतु चक्र हाथ में धारण किया तथा इस प्रकार से भक्त की प्रतिज्ञा को सत्य कराने के लिए अपनी प्रतिज्ञा से विचलित हुए, अतः इनका नाम 'चल' है। शिव-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दधिप्रिय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दधिप्रिय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दधिप्रिय प्रभुकृपा के पात्र हुए। यह मन्त्र प्रभुकृपाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१६८।४ में सङ्केतित है।

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥९७॥

७४७. ॐ अमानिने नमः—ये भक्तों के कार्य में सदा बद्धपरिकर रहते हैं, इन्हें भक्तों का कार्य करने में कोई अभिमान नहीं रहता। उदाहरणार्थ ये पाण्डवों के लिए दूत बनकर हस्तिनापुर गए, अतः इनका नाम 'अमानी' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम त्रिकालदर्शी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव त्रिकालदर्शी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से त्रिकालदर्शी मानरहितजीवनवाले तथा तपश्चर्याविषयक अभिमान से रहित हुए। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५६।२ में सङ्केतित है।

७४८. ॐ मानदाय नमः—ये अर्जुन आदि को महारथी मानते हैं, अतः इनका नाम 'मानद' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दाल्भ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव दाल्भ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दाल्भ्य मानयुक्त हुए। यह मन्त्र मानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।३५ में सङ्केतित है।

७४९. ॐ मान्याय नमः—पाण्डवों ने इनको अपना माना है, अतः इनका नाम 'मान्य' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दाक्षि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दाक्षि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दाक्षि की प्रतिष्ठा स्थिर हुई। यह मन्त्र प्रतिष्ठाप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१ में सङ्केतित है।

७५०. ॐ लोकस्वामिने नमः—ये सब भुवनों के स्वामी हैं, अतः इनका नाम 'लोकस्वामी' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दाक्षायण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतः दाक्षायण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दाक्षायण को स्वामित्व प्राप्त हुआ। यह मन्त्र स्वामित्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ में सङ्केतित है।

७५१. ॐ त्रिलोकधृषे नमः—ये गोकुल, मथुरा तथा द्वारका—इन तीनों लोकों में प्रगल्भ हैं, अतः इनका नाम 'त्रिलोकधृक्' है। परमानन्द-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अगज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अगज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अगज लोक में सम्मानित हुए। यह मन्त्र सम्मानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।२ में सङ्केतित है।

७५२. ॐ सुमेधसे नमः—इनकी भक्तों के बारे में सुन्दर धारणावाली मति है, अतः इनका नाम 'सुमेधाः' है। विष्णुतत्त्व के अनुसार सर्वप्रथम अगद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अगद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अगद को मेधा (धारणावती मति) प्राप्त हुई। यह मन्त्र मेधाप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१५ में सङ्केतित है।

७५३. ॐ मेधजाय नमः—ये देवकी की मेधा अर्थात् पुत्रीय व्रतरूप यज्ञ में प्रादुर्भूत हुए, अतः इनका नाम 'मेधज' हैं। अथवा ये इन्द्र के यज्ञ को तोड़कर गोवर्धनगिरि-यज्ञ का आरम्भ कर अन्नकूट को खाने के लिए उस यज्ञ में प्रकट हुए, अतः इनका नाम 'मेधज' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अग्निगर्भ ऋषि ने यह नामन्त्र जपा है, अतएव अग्निगर्भ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्निगर्भ की मेधा सदा स्थिर रही। यह मन्त्र मेधा स्थिर करानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६।४४ में सङ्केतित है।

७५४. ॐ धन्याय नमः—ये देवकी के गर्भ से उत्पन्न होकर देवकी के मुख के समान मुखवाले हुए, अतः इनका नाम 'धन्य' है। सात्वततन्त्र के

अनुसार सर्वप्रथम अग्निचित् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अग्निचित् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्निचित् को अतुल धन प्राप्त हुआ। यह मन्त्र धनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।८६।३४ में सङ्केतित है।

७५५. ॐ सत्यमेधसे नमः—ये गोकुल में वास्तविक गोपाल होकर खेले तथा मथुरा में वास्तविक यादव होकर खेले, किन्तु इनकी बुद्धि कहीं भी असत्य नहीं हुई। अतः इनका नाम 'सत्यमेधाः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अग्निमन्थ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अग्निमन्थ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अग्निमन्थ को भी मेधा की स्थिरता सिद्ध हुई। यह मन्त्र मेधा को स्थिर करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।७३।२ में सङ्केतित है।

७५६. ॐ धराधराय नमः—नन्दग्राम को बहाने के लिए इन्द्र द्वारा सात दिनों तक वृष्टि किए जाने के समय इन्होंने धर अर्थात् गोवर्धन पर्वत धारण किया, अतः इनका नाम 'धराधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अङ्गुलकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अङ्गुलकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अङ्गुलकर्मा को धारणा की स्थिरता सिद्ध हुई। यह मन्त्र धारणा की स्थिरता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।१ में सङ्केतित है।

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाधरः॥ ९८॥

७५७. ॐ तेजोवृषाय नमः—ये सुहृत्पालनरूप तेज की वर्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'तेजोवृष' है। अथवा ये तेज अर्थात् सूर्यरूप से बरसते हैं, अतः इनका नाम 'तेजोवृष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अचिन्त्यकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अचिन्त्यकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अचिन्त्यकर्मा को योगाभ्यास में स्थिरता प्राप्त हुई। यह मन्त्र स्थिरताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।९ में सङ्केतित है।

७५८. ॐ द्युतिधराय नमः—ये इन्द्रादि देवों को भी दबानेवाली द्युति को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'द्युतिधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पिकेक्षण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिकेक्षण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिकेक्षण की तेजोवृद्धि सिद्ध हुई। यह मन्त्र तेजोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।२।६ में सङ्केतित है।

७५९. ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः—इन्होंने नरकासुर आदि के साथ संग्राम में एक साथ अनेक दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया है, अतः इनका

नाम 'सर्वशस्त्रभृतांवर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पिकानन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिकानन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिकानन्द को बल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र बलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।५ में सङ्केतित है।

७६०. ॐ प्रगहाय नमः—जिस प्रकार सारथि लगाम से घोड़ों को पकड़े रहता है उसी प्रकार इन्होंने सारथि बनकर अर्जुन के घोड़ों को पकड़ रखा है, अतः इनका नाम 'प्रग्रह' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम महानन्द ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महानन्द इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महानन्द सदा धर्मरत हुए। यह मन्त्र धर्मरतिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३४।६ में सङ्केतित है।

७६१. ॐ निग्रहाय नमः—इन्होंने अर्जुन की अपेक्षा किये बिना केवल सारथित्व से ही सब शत्रुओं को वश में किया था, अतः इनका नाम 'निग्रह' है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पूर्ववादी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पूर्ववादी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पूर्ववादी के शत्रु वश में हुए। यह मन्त्र शत्रुवशकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२१।५ में सङ्केतित है।

७६२. ॐ व्यग्राय नमः—इन्होंने अर्जुन के शत्रुओं को जीतने के लिए अर्जुन द्वारा किए गए युद्ध को सहन किया है, अतः इनका नाम 'व्यग्र' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पिच्चिण्डिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव पिच्चिण्डिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिच्चिण्डिल की व्यग्रता नष्ट हुई। यह मन्त्र व्यग्रतानाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६।७ में सङ्केतित है।

७६३. ॐ नैकशृङ्गाय नमः—इनके पास नैक–अनेक अर्थात् बुद्धियोग, सारथ्य, आयुध ग्रहण न करने का बहाना और समय आने पर आयुध ग्रहण करना—ये चार शृङ्ग अर्थात् शत्रुबाधक उपाय हैं, अतः इनका नाम 'नैकशृङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पीठाङ्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव पीठाङ्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पीठाङ्क को सदा धर्मवृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र धर्मवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।५८।३ में सङ्केतित है।

७६४. ॐ गदाग्रजाय नमः—ये गदनामक यदुवंशी के अग्रज अर्थात् बड़े भाई हैं, इसलिए इनका नाम 'गदाग्रज' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पीनतुण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पीनतुण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पीनपुण्ड की सब कामनाएँ सिद्ध हुई। यह मन्त्र कामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३५।२ में सङ्केतित है।

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपत् ॥९९॥

७६५. ॐ चतुर्मूर्तये नमः—इनकी बलभद्र, वासुदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये चार मूर्तियाँ हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्मूर्ति' है। अथवा इनकी विराट्, हिरण्यगर्भ, ईश तथा तुरीय—ये चार मूर्तियाँ अर्थात् क्रमशः जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तथा ब्रह्मज्ञानावस्था की ये चार मूर्तियाँ हैं, अतएव इनका नाम 'चतुर्मूर्ति' है। वैष्णतन्त्र के अनुसार सबसे पहले पिप्पल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पिप्पल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पिप्पल को चतुर्वर्ग—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—प्राप्त हुआ। यह मन्त्र चतुर्वर्गप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६०।९ में सङ्केतित है।

७६६. ॐ चतुर्बाहवे नमः—ये देवकी के उदर से चार बाहुवाले प्रकट हुए, अतः इनका नाम 'चतुर्बाहु' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दीप्तिशाली ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दीप्तिशाली इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दीप्तिशाली को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६०।९ में सङ्केतित है।

७६७. ॐ चतुर्व्यूहाय नमः—इनके शरीरपुरुष, छन्दःपुरुष, वेदपुरुष, तथा महापुरुष ये चार व्यूह हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्व्यूह' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अचिन्त्यांशु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अचिन्त्यांशु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अचिन्त्यांशु को सर्वश्रेय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र श्रेयःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।४८।५ में सङ्केतित है।

७६८. ॐ चतुर्गतये नमः—इनसे चार प्रकार के अधिकारी पुरुषों को स्वर्गादिलोक, नक्षत्रलोक, ब्रह्मलोक तथा अपुनरावृत्तिलोक रूप चार गतियाँ प्राप्त होती हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्गति' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अजकर्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अजकर्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अजकर्ण को उत्कृष्ट गति प्राप्त हुई। यह मन्त्र उत्कृष्ट-गतिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३५।२ में सङ्केतित है।

७६९. ॐ चतुरात्मने नमः—इनके बुद्धि, मन, अहङ्कार तथा चित्त-रूप चार आत्मा अर्थात् अन्तःकरण हैं, अतः इनका नाम 'चतुरात्मा' है। अथवा इनका आत्मा अर्थात् मन चतुर है, अतः इनका नाम 'चतुरात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अजजीवक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अजजीवक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अजजीवक सब कार्यों में सामर्थ्यवान् हुए। यह मन्त्र सामर्थ्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।४७।४ में सङ्केतित है।

७७०. ॐ चतुर्भावाय नमः—इनमें चारों आश्रमवाले जनों का प्रेम होता है, अतः इनका नाम 'चतुर्भाव' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अतिधेनु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अतिधेनु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अतिधेनु की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।९८।४ में सङ्केतित है।

७७१. ॐ चतुर्वेदविदे नमः—ये चारों वेदों के ज्ञाता हैं, अतः इनका नाम 'चतुर्वेदवित्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अजिह्मधर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अजिह्मधर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अजिह्मधर्मा चारों वेदों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र चतुर्वेदज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३२ में सङ्केतित है।

७७२. ॐ एकपदे नमः—इनके एक पैर में सम्पूर्ण जगत् प्रतिष्ठित है, अतः इनका नाम 'एकपत्' है। शिवरहस्य के अनुसारे सर्वप्रथम अजीगर्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अजीगर्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अजीगर्त को मुक्तिकामना हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।९१।१४ में उल्लिखित है।

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥१००॥

७७३. ॐ समावर्ताय नमः—ये संसारचक्र का आवर्तन करते हैं, अतः इनका नाम 'समावर्त' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अट्टहास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अट्टहास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अट्टहास्य को वेद-वेदाङ्गों का ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र वेद-वेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।५१।१६ में सङ्केतित है।

७७४. ॐ अनिवृत्तात्मने नमः—इनका स्वरूप इस जगत् के प्रपञ्च से निवृत्त नहीं होता है, अतः इनका नाम 'अनिवृत्तात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मुक्तिधर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मुक्तिधर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुक्तिधर्मा को तपोवृद्धि सिद्ध हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१९।६ में सङ्केतित है।

७७५. ॐ दुर्जयाय नमः—ये देव, मनुष्य आदि किसी के भी द्वारा जीते जाने योग्य नहीं हैं, अतः इनका नाम 'दुर्जय' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वर्णादर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वर्णादर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वर्णादर के तप तथा योग की वृद्धि हुई। यह मन्त्र तप तथा योग की वृद्धि करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३०।३ में सङ्केतित है।

७७६. ॐ दुरतिक्रमाय नमः—इनके भक्तों का इनके चरणों से अन्य कोई सहारा न होने से इनके चरण भक्तों द्वारा कभी नहीं छोड़े जाते हैं, अतः इनका नाम 'दुरतिक्रम' है। त्रिपुरसुन्दरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अतीन्द्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अतीन्द्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अतीन्द्र के सब पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।४३ में सङ्केतित है।

७७७. ॐ दुर्लभाय नमः—ये विषयी, लम्पट आदि लोगों को प्राप्त नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'दुर्लभ' है। अतः व्यासजी ने—"जन्मान्तरसहस्रेषु तपोज्ञानसमाधिभिः। नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते॥" कहा है। विष्णुतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अत्तु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अत्तु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अत्तु को दुर्लभ वस्तुएँ सुलभ हुईं। यह मन्त्र सुलभताप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ५।९।७ में सङ्केतित है।

७७८. ॐ दुर्गमाय नमः—इनका तेज अतिशय होने से ये किसी के भी द्वारा घर्षित होने योग्य नहीं हैं, जिस प्रकार दुर्बल नेत्रवाले द्वारा मध्याह्न-कालिक सूर्य कभी भी घर्षित होने योग्य नहीं है, अतः इनका नाम 'दुर्गम' है। भुवनेश्वरीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अदभ्रचक्षु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अदभ्रचक्षु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अदभ्रचक्षु ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८५।३२ में उल्लिखित है।

७७९. ॐ दुर्गाय नमः—वे अविद्या से तथा पाप से ग्रस्त प्राणियों द्वारा दुष्प्रवेश हैं, अतः इनका नाम 'दुर्ग' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अतिद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अतिद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अतिद की सांसारिक दुर्गति नष्ट हुई। यह मन्त्र दुर्गतिनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९९।१ में उल्लिखित है।

७८०. ॐ दुरावासाय नमः—इनमें वास बड़ा दुस्तर है, अतः इनका नाम 'दुरावास' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुनह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुनह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुनह वैष्णवों में अग्रणी हुए। यह मन्त्र मुख्यताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१ में सङ्केतित है।

७८१. ॐ दुरारिघ्ने नमः–ये दुर्मार्गगामी पापी जनों को मारते हैं, अतः इनका नाम'दुरारिहा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कल्पगाथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कल्पगाथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कल्पगाथ को सद्बुद्धि प्राप्त हुई ! यह मन्त्र सद्बुद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।५५।८ में सङ्केतित है।

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥१०१॥

७८२. ॐ शुभाङ्गाय नमः— इनकी उपासना के प्रसङ्ग में कामनापूरक पूजनीय इनके अनेक अङ्गभूत देवता हैं, अतः इनका नाम 'शुभाङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पैलेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पैलेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पैलेय ऋषि की शुभ कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र कामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।२।४ में सङ्केतित है।

७८३. ॐ लोकसारङ्गाय नमः—ये लोक में न्याय से भोग और मोक्ष दोनों के मार्गपर चलते हैं, अतः इनका नाम 'लोकसारङ्ग' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम प्रचक्षा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रचक्षा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रचक्षा को भोग और मोक्ष दोनों सिद्ध हुए। यह मन्त्र भोग तथा मोक्ष देनेवाला है। यह मन्त्र भृगुसंहिता में उल्लिखित है।

७८४. ॐ सुतन्तवे नमः—इनके द्वारा तन्यमान (विस्तार को प्राप्त किया जा रहा) प्रपञ्च बहुत सुन्दर है, अतः इनका नाम 'सुतन्तु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम प्रणेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रणेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रणेता की सुन्दर कर्म करने की इच्छा पूर्ण हुई। यह मन्त्र सुकर्मेच्छापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१३०।१ में सङ्केतित है।

७८५. ॐ तन्तुवर्धनाय नमः—ये पाप विषयिणी रुचि से लोगों के संसार नामक तन्तु को बढ़ाते हैं, अतः इनका नाम 'तन्तुवर्धन' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम प्रकाण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्रकाण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्रकाण्ड को चतुर्वर्गफल-प्राप्ति हुई। यह मन्त्र चतुर्वर्गफलप्रापक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।१०।२ में सङ्केतित है।

७८६. ॐ इन्द्रकर्मणे नमः—इन्होंने इन्द्रादि सब देवताओं के कल्याण के लिए दैत्यवधरूप कर्म किया है, अतः इनका नाम 'इन्द्रकर्मा' है। अथवा इनका कर्म इन्द्र के समान है, अतः इनका नाम 'इन्द्रकर्मा' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अप्सार ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अप्सार इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अप्सार को स्वर्ग का आनन्द प्राप्त हुआ। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३२।८ में सङ्केतित है।

७८७. ॐ महाकर्मणे नमः—ये सदा न्याय से चलते हैं और अन्याय को कभी भी नहीं अपनाते हैं, अतः इनका नाम 'महाकर्मा' है। शिवरहस्य

के अनुसार सर्वप्रथम नैध्रुव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव नैध्रुव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से नैध्रुव को श्रेष्ठ कर्म करने की बुद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्कर्मविषयिणी बुद्धि देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३६।१ में सङ्केतित।

७८८. ॐ कृतकर्मणे नमः—लोकसंग्रह के लिए इन्होंने कर्म किया है, अतः इनका नाम 'कृतकर्मा' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पार्वण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पार्वण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पार्वण के सत्कर्म सिद्ध हुए। यह मन्त्र सत्कर्मकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।४३।३ में सङ्केतित है।

७८९. कृतागमाय नमः—इनका शास्त्र कृत अर्थात् सन्तोषप्रधान है, अतः इनका 'कृतागम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अश्व ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अश्व इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अश्व का शास्त्रज्ञान बढ़ा। यह मन्त्र शास्त्रज्ञान बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।१।३ में सङ्केतित है।

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्नलाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥१०२॥

७९०. ॐ उद्भवाय नमः—ये सदा मोक्ष का उपदेश करने से संसार से सदा दूर रहते हैं, अतः इनका नाम 'उद्भव' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवदीप्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवदीप्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवदीप्त को मोक्ष प्राप्त हुआ। यह मन्त्र मोक्षप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।५।११ में सङ्केतित है।

७९१. ॐ सुन्दराय नमः—इनमें लोकोत्तर सौन्दर्य है, अतः इनका नाम 'सुन्दर' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अव्याहार ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अव्याहार इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अव्याहार को ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र गर्गसंहिता में उल्लिखित है।

७९२. ॐ सुन्दाय नमः—ये अपने सौन्दर्य से भक्तों के मन को आर्द्र करते हैं, अतः इनका नाम 'सुन्द' है। अथवा ये अधिक शोभावाले हैं, अतः इनका नाम 'सुन्द' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम स्तिमिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव स्तिमिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से स्तिमिक को सुन्दर शरीर प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुन्दरताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।५।७ में सङ्केतित है।

७९३. ॐ रत्ननाभाय नमः—इनकी नाभि रत्न के समान अति सुन्दर है, अतः इनका नाम 'रत्ननाभ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कौत्सीन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौत्सीन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौत्सीन को सुविद्या प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुविद्याप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।७४।४ में सङ्केतित है।

७९४. ॐ सुलोचनाय नमः—इनकी आँखें बड़ी सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'सुलोचन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कुस्तुभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुस्तुभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुस्तुभ को विद्या तथा सुन्दर नेत्र प्राप्त हुए। यह मन्त्र विद्याप्रद तथा सुनेत्रप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।३७ में सङ्केतित है।

७९५. ॐ अर्काय नमः—भक्तजन इनको महान् धर्मात्मा तथा उदार पुरुष समझकर इनकी पूजा करते हैं, अतः इनका नाम 'अर्क' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनावृक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनावृक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनावृक के योगाभ्यास की वृद्धि हुई। यह मन्त्र योगाभ्यासवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१०।१ में उल्लिखित है।

७९६. ॐ वाजसनाय नमः—इन्होंने यज्ञान्न, नवनीत, घृत आदि गोप, वानर आदि को खिला दिये, अतः इनका नाम 'वाजसन' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बुद्धिधृक् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बुद्धिधृक् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बुद्धिधृक् की श्रीकृष्णप्रेम में वृद्धि हुई। यह मन्त्र श्रीकृष्णप्रेम को बढ़ानेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।५१।२ में सङ्केतित है।

७९७. ॐ शृङ्गिणे नमः—मत्स्यावतार में इनके सिर में (मस्तक में) सींग था, अतः इनका नाम 'शृङ्गी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अक्षोभ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अक्षोभ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अक्षोभ्य की सब कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र कामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३२।१५ में उल्लिखित है।

७९८. ॐ जयन्ताय नमः—इन्होंने सभी दैत्यों तथा दानवों को जीता है, अतः इनका नाम 'जयन्त' है शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम बन्धुल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बन्धुल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बन्धुल को समाधि में निष्ठा प्राप्त हुई। यह मन्त्र निष्ठाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९१।२१ में उल्लिखित है।

७९९. ॐ सर्वविज्जयिने नमः—ये सर्वज्ञों को भी जीतनेवाले हैं, अतः इनका नाम 'सर्वविज्जयी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आप्नवान्

ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आप्नवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आप्नवान् सर्वत्र विजयी हुए। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३०।१६ में सङ्केतित है।

सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥१०३॥

८००. ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः—इनके विन्दु अर्थात् हस्तपादादि अवयव सुन्दर वर्णवाले हैं, अतः इनका नाम 'सुवर्णविन्दु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनन्तकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनन्तकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनन्तकर्मा को शरीर में सुन्दर वर्ण (रंग) प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुन्दरवर्णप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ९।१।२१ में सङ्केतित है।

८०१. ॐ अक्षोभ्याय नमः—इनका आशय बड़ा गम्भीर होने से ये कभी क्षुब्ध नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अक्षोभ्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुकर्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुकर्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुकर्मा सर्वत्र खेदरहित हुए। यह मन्त्र खेदनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१०३।१ में सङ्केतित है।

८०२. ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः—ये ब्रह्मादि सभी वागीश्वरों के ईश्वर हैं, अतः इनका नाम 'सर्ववागीश्वरेश्वर' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शर्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शर्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शर्य सर्ववेदवेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ११।७ में सङ्केतित है।

८०३. ॐ महाह्रदाय नमः—इन्होंने यमुना नदी में कालिय ह्रद नामक महान् तालाब बनाया है, अतः इनका नाम 'महाह्रद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शैवल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शैवल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शैवल को भगवान् में दृढ भक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३६।८ में सङ्केतित है।

८०४. ॐ महागर्ताय नमः—ये नष्ट बुद्धिवाले पापियों को नरकरूपी गर्त में गिराते हैं, अतः इनका नाम 'महागर्त' है। अथवा गोकुल में अतिवृष्टि के समय इन्होंने गोवर्धन के गर्त में सबको रखकर सबकी रक्षा की है, अतः इनका नाम 'महागर्त' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कलिङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कलिङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इस मन्त्र को जपने से कलिङ्ग की जितेन्द्रियता तथा तपश्चर्या में मन की एकाग्रता सिद्ध हुई। यह मन्त्र जितेन्द्रियता तथा मन की एकाग्रता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।६२।८ में सङ्केतित है।

८०५. ॐ महाभूताय नमः—ये अपने भक्तों को महत्त्व देते हैं, अतः इनका नाम 'महाभूत' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जैत्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जैत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जैत्र को भगवान् की प्रसन्नता प्राप्त हुई। यह मन्त्र भगवत्प्रसादप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३३।३९ में सङ्केतित है।

८०६. ॐ महानिधये नमः—इन्हें महात्मा लोग निधि के समान अच्छे लगते हैं, अतः इनका नाम 'महानिधि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुबल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुबल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुबल्य को भगवान् में प्रेम प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्प्रेमप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।१९ में सङ्केतित है।

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।
अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥१०४॥

८०७. ॐ कुमुदाय नमः—ये वृन्दावन की भूमि में प्रसन्न रहते हैं, अतः इनका नाम 'कुमुद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ऋक्ष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ऋक्ष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ऋक्ष ने संसार में आनन्दपूर्वक विचरण किया। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।३०।९ में सङ्केतित है।

८०८. ॐ कुन्दराय नमः—ये कुन्दपुष्प के समान अतिशुभ्र परतत्त्वज्ञान भक्तों को प्रदान करते हैं, अतः इनका नाम 'कुन्दर' है। अथवा हिरण्याक्ष को मारने की इच्छा से भगवान् ने वराहरूप धारण किया है, अतः इनका नाम 'कुन्दर' है। अतएव "कुं धरां दारयामास हिरण्याक्षजिघांसया। वाराहं रूपमास्थाय" इस वचन की सङ्गति होती है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुनामा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुनामा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुनामा को तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १०।२० में सङ्केतित है।

८०९. ॐ कुन्दाय नमः—ये सदा कुन्दपुष्प की माला पहनते हैं, अतः इनका नाम 'कुन्द' है। अथवा इन्होंने परशुरामावतार में सम्पूर्ण पृथ्वी जीत कर कश्यप को प्रदान की है, अतः इनका नाम 'कुन्द' है। अतएव हरिवंश में "सर्वपापविशुद्ध्यर्थं वाजिमेधेन चेष्टवान्। तस्मिन्यज्ञे महादाने दक्षिणां भृगुनन्दनः। मारीचाय ददौ प्रीतः कश्यपाय वसुन्धराम्"॥ शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम श्रीवत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव श्रीवत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से श्रीवत्स को मुकुन्दपद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्पदप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।८६।४७ में सङ्केतित है।

८१०. ॐ पर्जन्याय नमः—ये तापत्रय से तप्त जनों को अपने कृपा-कटाक्षों की वृष्टि से सींचते है, अतः इनका नाम 'पर्जन्य' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पद्मनाभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पद्मनाभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पद्मनाभ तापत्रय से मुक्त हुए। यह मन्त्र तापत्रयनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३८।१४ में उल्लिखित है।

८११. ॐ पवनाय नमः—(ॐ पावनाय नमः) ये भक्तों के घर चले जाते हैं, अतः इनका नाम 'पवन' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम राणायनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव राणायनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से राणायनि को सुख प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६०।३ में सङ्केतित है।

८१२. ॐ अनिलाय नमः—ये विना माँगे भक्तों को देते हैं, इन्हे अनुग्रह करने के लिए प्रेरणा देनेवाला कोई नहीं है। ये स्वयं ही अनुग्रह करत हैं, अतः इनका नाम 'अनिल' है। सिद्धान्ततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शाख्यभुग्न्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाख्यभुग्न्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाख्यभुग्न्य को सब अर्थ प्राप्त हुए! यह मन्त्र सर्वार्थसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ६।४ में सङ्केतित है।

८१३. ॐ अमृतांशाय नमः—ये भक्तों को अपना गुणरूपी अमृत खिलाते हैं, अतः इनका नाम 'अमृतांश' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम औगुंण्डि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औगुंण्डि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औगुंण्डि को भक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।१४ में सङ्केतित है।

८१४. ॐ अमृतवपुषे नमः—ये भक्तों द्वारा देखे जानेमात्र से उन भक्तों को अपने शरीर का अमृत जैसा स्वाद प्रदान करते हैं, अतः इनका नाम 'अमृतवपुः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रुरुकि ऋषि ने यह नाम मन्त्र जपा है, अतएव रुरुकि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रुरुकि की भक्ति की कामना सिद्ध हुई। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १४।२।३८ में सङ्केतित है।

८१५. ॐ सर्वज्ञाय नमः—इनके प्रताप से सब लोग ज्ञानी होते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वज्ञ' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वादीश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वादीश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वादीश को धर्मप्राप्ति हुई। यह मन्त्र धर्मप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३०।३ में सङ्केतित है।

८१६. ॐ सर्वतोमुखाय नमः—ये इसी एक साधन से सुलभ हैं अन्य से नहीं ऐसा निमय न होने से ये सभी साधनों से सुलभ हैं, इनके प्रवेश में सब साधन रहते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वतोमुख' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वाशिनायनि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वाशिनायनि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाशिनायनि को सर्वविध ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१९ में सङ्केतित है।

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥१०५॥

८१७. ॐ सुलभाय नमः—अमूल्य होने पर भी ये भक्तों की गन्ध, पुष्पादि पूजा से भी सरलता से प्राप्त होते हैं, अतएव इनका नाम 'सुलभ' है। अतएव महाभारत में "पत्रेषु पुष्पेषु फलेषु तोयेष्वक्रीतलभ्येषु सदैव सत्सु। भक्त्यैकलभ्ये पुरुषे पुराणे मुक्त्यै कथं न क्रियते प्रयत्नः ॥" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विधिदर्शी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विधिदर्शी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विधिदर्शी को दुर्लभ ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र दुर्लभज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१०१।३ में सङ्केतित है।

८१८. ॐ सुव्रताय नमः—ये व्रत कर ब्राह्मणभोजनपूर्वक उस व्रत की सुन्दर पारणा करते हैं, अतः इनका नाम 'सुव्रत' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विश्रुतायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विश्रुतायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विश्रुतायन ने सुन्दर व्रत प्राप्त किया। यह मन्त्र सद्व्रतप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।८३।५ में सङ्केतित है।

८१९. ॐ सिद्धाय नमः—ये सिद्धि अर्थात् मोक्ष के दाता हैं, अतः इनका नाम 'सिद्ध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विमति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विमति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विमति को सिद्धि की कामना प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३०।७ में सङ्केतित है।

८२०. ॐ शत्रुजिते नमः—ये कामादि शत्रुओं को जीतते है, अतः इनका नाम 'शत्रुजित्' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वार्वटीर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वार्वटीर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वार्वटीर के कामादि शत्रु उनके अधीन हुए। यह मन्त्र कामादि शत्रुओं पर विजय देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२०।२ में सङ्केतित है।

८२१. ॐ शत्रुतापनाय नमः—ये दैत्य, दानव आदि शत्रुओं को देवताओं के हित के लिए संताप देते हैं, अतः इनका नाम 'शत्रुतापन' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वृहच्छ्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृहच्छ्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृहच्छ्रवा के शत्रु सन्तप्त हुए। यह मन्त्र शत्रुतापक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।२८।२ में सङ्केतित है।

८२२. ॐ न्यग्रोधाय नमः—ये विशाल ब्रह्मादि देवताओं से भी सेवन किये जाने योग्य होने पर भी निकृष्ट प्राणियों से भी प्रणाम द्वारा रोके जाने योग्य हैं, अतः इनका नाम 'न्यग्रोध' है। महानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वृहद्भानु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृहद्भानु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने वृहद्भानु को विष्णुभक्ति सिद्ध हुई। यह मन्त्र विष्णुभक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।५६।५ में सङ्केतित है।

८२३. ॐ उदुम्बराय नमः—इनके लक्ष्मी आदि परिजन तथा परम धाम उत् अर्थात् उत्कृष्ट हैं, अतः इनका नाम 'उदुम्बर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मराति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ब्रह्मराति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रह्मराति को धर्मप्राप्ति हुई। यह मन्त्र धर्मप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद २०।१३६।१५ में उल्लिखित है।

८२४. ॐ अश्वत्थाय नमः—ये अश्व अर्थात् इन्द्रादि नश्वर लोगों का नियमन करने के लिए उनमें रहते हैं, अतः इनका नाम 'अश्वत्थ' है। शिव-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बौधेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बौधेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बौधेय को ज्ञान और विज्ञान प्राप्त हुए। यह मन्त्र ज्ञानविज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३५।८ में उल्लिखित है।

८२५. ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः—इन्होंने चाणूर नामक आन्ध्र-देशीय मल्ल को पराजित किया तथा मारा है, अतः इनका नाम 'चाणूरान्ध्र-निषूदन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मवादी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ब्रह्मवादी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रह्मवादी के शत्रुओं का मर्दन हुआ। यह मन्त्र शत्रुमर्दक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।७।२ में सङ्केतित है।

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद् भयनाशनः ॥१०६॥

८२६. ॐ सहस्रार्चिषे नमः—आदित्यादि देवों में इन्हीं का तेज चमकने के कारण इनकी हजारों किरणें हैं, अतः इनका नाम 'सहस्रार्चिः' है।

शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मित्रकृत् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मित्रकृत् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मित्रकृत् को सुन्दर तेज प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।११९।१ में सङ्केतित है।

८२७. ॐ सप्तजिह्वाय नमः—इन्होंने काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी, विश्वरूपिणी (विश्वरुचि) ये सात जिह्वाएँ अग्नि को दी हैं अर्थात् ये अग्निरूप हैं, अतः इनका नाम 'सप्तजिह्व' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मेधाकर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मेधाकर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मेधाकर की तेजोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तेजोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।६।२ में उल्लिखित है।

८२८. ॐ सप्तैधसे नमः—इनके सात सात इष्ट तथा आपूर्त कर्मरूप सात इन्धन हैं, अतः इनका नाम 'सप्तैधाः' है। औपासनादि सात पाकयज्ञ, अग्निहोत्रादि सात हविर्यज्ञ तथा अग्निष्टोमादि सात सोमसंस्थाएँ—ये तीन सप्तक इनके इन्धन हैं, अतः इनका नाम 'सप्तैधाः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम याजुष ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव याजुष इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से याजुष की यज्ञकर्म में प्रवृत्ति हुई। यह मन्त्र यज्ञकर्मप्रवर्तक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।७९ में सङ्केतित है।

८२९. ॐ सप्तवाहनाय नमः—सूर्यरूप इनके सात वाहन हैं, अतः इनका नाम 'सप्तवाहन' है। नारदीयपुराण के अनुसार सर्वप्रथम यस्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव यस्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से यस्क की तपोवृद्धि हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।२ में सङ्केतित है।

८३०. ॐ अमूर्तये नमः—इनकी स्थूल भौतिक मूर्ति नहीं है, अतः इनका नाम 'अमूर्ति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम योगात्मा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव योगात्मा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से योगात्मा को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१९।१ में सङ्केतित है।

८३१. ॐ अनघाय नमः—ये कामी संसारी जीवों से भिन्न होने से पापरहित हृदयवाले हैं, अतः इनका नाम 'अनघ' है। गर्गसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम रजतद्युति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रजतद्युति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रजतद्युति के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।११।६ में सङ्केतित है।

८३२. ॐ अचिन्त्याय नमः—मुक्त पुरुषों की उपमा (सादृश्य) से भी इनका निरूपण न हो सकने से ये चिन्तन के योग्य नहीं हो पाते, अतः

इनका नाम 'अचिन्त्य' है। महानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रेरिहाण ऋषि ने वह नाममन्त्र जपा है, अतएव रेरिहाण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रेरिहाण की सब कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र सर्वकामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१३९।५ में सङ्केतित है।

८३३. ॐ भयकृते नमः—ये अपनी आज्ञा को न माननेवाले भक्तों के लिए भय उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'भयकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मबिन्दु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ब्रह्मबिन्दु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रह्मबिन्दु के शत्रु भयभीत हुए। यह मन्त्र शत्रुओं को भय देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।१२।१३ में सङ्केतित है।

८३४. ॐ भयनाशनाय नमः—ये अपनी आज्ञा को माननेवाले भक्तों के भय का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'भयनाशन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भरुण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भरुण्ड इस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने भरुण्ड का भय नष्ट हुआ। यह मन्त्र भयनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।६१।१३में सङ्केतित है।

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥१०७॥

८३५. ॐ अणवे नमः—ये अतिसूक्ष्म रूप से अव्यक्त जीव में प्रवेशकर रहते हैं। इससे इनके पास अणिमादि सिद्धि है, यह जानना चाहिये। अतः इनका नाम 'अणु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भरण्डु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भरण्डु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भरण्डु को अणिमादि अष्टसिद्धियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अणिमादि सिद्धियाँ देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।१०५।५ में सङ्केतित है।

८३६. ॐ बृहते नमः—ये आकाशादि समग्र जगत्को व्याप्तकर स्थित हैं, अतः इनका नाम 'बृहत्' है। इससे इनमें महिमा आदि सिद्धि दरशायी है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भरु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भरु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भरु को महान् यश प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यशःप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।८।२ में उल्लिखित है।

८३७. ॐ कृशाय नमः—इनकी सर्वत्र अव्याहत गति है, अतः इनका नाम 'कृश' है। इससे ये लघिमा सिद्धिवाले हैं यह दरशाया है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भृङ्गीश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भृङ्गीश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भृङ्गीश को तेजोवृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र तेजोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।९९।३ में उल्लिखित है।

८३८. ॐ स्थूलाय नमः—ये एक ही स्थान में बैठकर सब वस्तुओं का स्पर्श करते हैं। अर्थात् इनमें व्याप्ति सिद्धि है, अतः इनका नाम 'स्थूल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भूति ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भूति इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भूति को स्थूलता सिद्ध हुई। यह मन्त्र स्थूलताप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।२८ में उल्लिखित है।

८३९. ॐ गुणभृते नमः—ये अपने गुणभूत सारे संसार को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'गुणभृत्' है। इससे इनमें ईशित्व सिद्धि है, यह दर्शाया। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मठर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मठर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मठर को ईशित्व सिद्ध हुआ। यह मन्त्र ईशित्वप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४३ में सङ्केतित है।

८४०. ॐ निर्गुणाय नमः—सम्पूर्ण जगत् में रहने पर भी इनको जगत् का गुण स्पर्श नहीं करता है, इससे इनमें वशित्व सिद्धि है यह दरशाया। अतः इनका नाम 'निर्गुण' है। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम उग्रास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उग्रास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उग्रास्य में सत्त्वगुण की वृद्धि हुई। यह मन्त्र सत्त्वगुणवर्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १२।१९ में सङ्केतित है।

८४१. ॐ महते नमः—ये सर्वत्र पूजे जाते हैं, इससे इनमें प्राकाम्य सिद्धि है। अतः इनका नाम 'महत्' (महान्) है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम महौजा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव महौजा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से महौजा को महत्ता प्राप्त हुई। यह मन्त्र महत्ताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।४।१० में उल्लिखित है।

८४२. ॐ अधृताय नमः—इनमें उत्कृष्टता का प्रकर्ष होने से ये किसी के भी द्वारा कहीं भी पकड़े नहीं जाते अर्थात् इनके पास गरिमा सिद्धि है, अतः इनका नाम 'अधृत' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मिताशन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मिताशन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मिताशन को अष्टसिद्धियाँ प्राप्त हुईं। यह मन्त्र अष्टसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।८७।५ में सङ्केतित है।

८४३. ॐ स्वधृताय नमः—ये मन्त्र, औषधि आदि से प्राप्त सिद्धि से विलक्षण स्वाभाविक अणिमादि सिद्धिवाले हैं, अतः इनका नाम 'स्वधृत' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मुमुत्पान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मुमुत्पान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मुमुत्पान को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।२१।२ में सङ्केतित है।

८४४. ॐ स्वास्थ्याय नमः—ये सब मुक्त पुरुषों की स्थिति से विलक्षण स्थितिवाले अर्थात् नित्य मुक्तस्थितिवाले हैं, अतः इनका नाम 'स्वास्थ्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गौग्लुलवि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गौग्लुलवि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गौग्लुलवि को मुक्ति-प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ८।७९।२ में सङ्केतित है।

८४५. ॐ प्राग्वंशाय नमः—ये ब्रह्मा आदि प्राचीन ज्ञानियों के उत्पादक वंश हैं, अतः इनका नाम 'प्राग्वंश' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भानुमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भानुमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भानुमान् की वंशवृद्धि हुई। यह मन्त्र वंशवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।३६ में सङ्केतित है।

८४६. ॐ वंशवर्धनाय नमः—इन्होंने परीक्षित् की गर्भ में रक्षाकर पाण्डवों का वंश बढ़ाया है, अतः इनका नाम 'वंशवर्धन' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वक्रदंष्ट्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वक्रदंष्ट्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वक्रदंष्ट्र की वंशवृद्धि हुई। यह मन्त्र वंशवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१८।५ में सङ्केतित है।

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥१०८॥

८४७. ॐ भारभृते नमः—ये मुक्त पुरुषों का भार अर्थात् बन्धनच्छेदन-स्वरूपाविर्भावात्मक स्वप्राप्तिरूप बोझ को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'भारतभृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वक्रचक्षु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वक्रचक्षु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वक्रचक्षु सब वेदों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४। १३ में सङ्केतित है।

८४८. ॐ कथिताय नमः—सकल वेद, शास्त्र आदि में इनका वर्णन है, तथा सकल वेद और शास्त्र इनको भगवान् कहते हैं, अतः इनका नाम 'कथित' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वचक्नु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वचक्नु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वचक्नु वेदवेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।२३ में सङ्केतित है। इस नाम के विषय में तो महाभारत तथा हरिवंश में "वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ। आदौ मध्ये तथा चान्ते विष्णुः सर्वत्र गीयते॥ कहा है।

८४९. ॐ योगिने नमः—ये योग अर्थात् अघटितार्थ का घटन करनेवाले महाप्रभाव से युक्त हैं, अतः इनका नाम 'योगी' है। परमानन्दतन्त्र के अनु-

सार सर्वप्रथम शालिहोम ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शालिहोम इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शालिहोम को योग में वृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योगवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।६७।८ में सङ्केतित है।

८५०. ॐ योगीशाय नमः—ये सनकादि सब योगियों के ईश हैं, अतः इनका नाम 'योगीश' है। महानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शटि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शटि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शटि को योग में श्रेष्ठता प्राप्त हुई। यह मन्त्र योग में श्रेष्ठता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ में सङ्केतित है।

८५१. ॐ सर्वकामदाय नमः—ये योगभ्रष्ट लोगों को भी सब सुख देते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वकामद' है। शिवरहस्व के अनुसार सर्वप्रथम काराटि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काराटि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काराटि के सब मनोरथ पूर्ण हुए। यह मन्त्र सर्वमनोरथ-पूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९७।२१ में सङ्केतित है।

८५२. ॐ आश्रमाय नमः—ये गोगभ्रष्टों को सत्पुरुषों के घर उत्पन्न कराकर उन्हें स्थान दिलाते हैं, अतः इनका नाम 'आश्रम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वसुप्राण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वसुप्राण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसुप्राण को सुख एवं शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुख एवं शान्ति देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।११४।१० में सङ्केतित है।

८५३. ॐ श्रमणाय नमः—ये भक्तों के विरोधी प्राणियों को खेद दिलाते है, अतः इनका नाम 'श्रमण' है। आनन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वितण्ड ऋषिने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वितण्ड इस मन्त्र ऋषि हैं। इसको जपने से वितण्ड के सब विरोधी खेदयुक्त हुए। यह मन्त्र विरोधियों को खेद देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।११४।४ में सङ्केतित है।

८५४. ॐ क्षामाय नमः—ये प्रलय के समय चारों प्रकार के अर्थात् अण्डज, उद्भिज, स्वेदज तथा जरायुज प्राणियों को बलहीन करते हैं, अतः इनका नाम 'क्षाम' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वज्राभ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वज्राभ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वज्राभ को वेदों का ज्ञान हुआ। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९४।२ में सङ्केतित है।

८५५. ॐ सुपर्णाय नमः—ये छन्दरूपी सुन्दर पत्तोंवाले संसाररूप वृक्ष हैं, अतः इनका नाम 'सुपर्ण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कौथुमि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौथुमि इस मन्त्र के ऋषि हैं।

इसको जपने से कौथुमि को मुक्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ११०५।१ में उल्लिखित है।

८५६. ॐ वायुवाहनाय नमः—ये किसी प्रबल कारण से नीचे गिराये गए अपने भक्तों को गरुड़ द्वारा ऊपर पहुँचाते हैं। उदाहरणार्थ—इन्होंने उपरिचर नामक वसु को ऊपर पहुँचाया, अतः इनका नाम 'वायुवाहन' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वार्षगण्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वार्षगण्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वार्षगण्य की तपश्चर्या के विघ्न नष्ट हुए। यह मन्त्र विघ्ननाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।८ में सङ्केतित है।

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमोऽयमः ॥१०९॥

८५७. ॐ धनुर्धराय नमः—ये अपने भक्तों के विघ्नरूप काँटे दूर करने के लिए धनुष धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'धनुर्धर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सुकृतिगोत्री भाल्लवि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भाल्लवि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भाल्लवि अहङ्काररहित हुए। यह मन्त्र अहङ्कारनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।६ में सङ्केतित है।

८५८. ॐ धनुर्वेदाय नमः—सबके पास रहनेवाली धनुर्विद्या इन्हींके कारण सबके पास आती है, अतः इनका नाम 'धनुर्वेद' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कालववि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कालववि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कालववि धनुर्वेद के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र धनुर्वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।१३ में सङ्केतित है।

८५९. ॐ दण्डाय नमः—ये वेदोक्त धर्मद्वारा दण्डनीति से दुष्टों को दण्ड देते हैं, अतः इनका नाम 'दण्ड' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वृषाणक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वृषाणक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वृषाणक के वैरी दण्डित हुए। यह मन्त्र वैरिशामक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२५।७ में सङ्केतित है।

८६०. ॐ दमयित्रे नमः—ये मनु आदिरूप से प्रजा का दमन करते हैं, अतः इनका नाम 'दमयिता' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शमबाहु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शमबाहु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शमबाहु वेदवेदाङ्ग के ज्ञाता हुए यह मन्त्र वेदवेदाङ्ग ज्ञानप्रद है यह मन्त्र ऋग्वेद ९।८६।२८ में सङ्केतित है।

८६१. ॐ अदमाय नमः (दमाय नमः)—कोई भी इनको दमन नहीं कर सकता है, अतः इनका नाम 'अदम' है। अथवा ये दम्य में दण्ड का फलस्वरूप कार्य हैं, अतः इनका नाम 'दम' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वष्कशिरा ऋषि ये यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वष्कशिरा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वष्कशिरा के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र महाभारत उद्योग पर्व में सङ्केतित है।

८६२. ॐ अपराजिताय नमः—ये कभी भी किसी से भी पराजित नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अपराजित है। अथवा अपरा अर्थात् हीन जातिवाली गोपियों ने इनको जीता है, अतः इनका नाम 'अपराजित' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम फेनवान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव फेनवान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से फेनवान् को विजय प्राप्त हुआ। यह मन्त्र विजयप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।६६।१६ में सङ्केतित है।

८६३. ॐ सर्वसहाय नमः—ये अपने द्वारा नियुक्त देवताओं की पूजा को सहन करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वसह' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम बगूल ऋषि ने यह मन्त्र जपा है, अतएव बगूल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बगूल सब सहनेवाले हुए। यह मन्त्र सर्वसहन-शीलता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।१३ में सङ्केतित है।

८६४. ॐ नियन्त्रे नमः—ये मन्दाधिकरियों की उन उन देवताओं में रुचि पैदा कराते हैं और उनका नियमन करते हैं, अतः इनका नाम 'नियन्ता' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विष्णुयशा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विष्णुयशा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विष्णुयशा को सब पर नियन्त्रण प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।६४।३ में सङ्केतित है।

८६५. ॐ नियमाय नमः—जन्म, आयु, भोग आदि की प्राप्ति इनसे नियमपूर्वक होती है, अतः इनका नाम 'नियम' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वैकर्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैकर्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वैकर्ण को ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१२७।४ में सङ्केतित है।

८६६. ॐ यमाय नमः—(अयमाय नमः)—ये पुण्य, पाप आदि के नियन्ता यमादि के भी अधिष्ठाता बनकर यमादि को दण्ड देते हैं। अतः इनका नाम 'यम' है। अथवा इनकी यम अर्थात् मृत्यु नहीं है। अतः इनका नाम 'अयम' है। सुन्दरीमहोदयतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विष्णुगान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विष्णुगान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से

विष्णुगान अजर और अमर हुए। यह मन्त्र अजरामरत्वप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।६४।३ में उल्लिखित है।

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥११०॥

८६७. ॐ सत्त्ववते नमः—प्रकाश, सुख आदि का मूलभूत सत्त्व इनमें सदा रहता है, अतः इनका नाम 'सत्त्ववान्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वैकर्णेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैकर्णेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वैकर्णेय को सात्त्विकता प्राप्त हुई। यह मन्त्र सात्त्विकताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।२४।३ में सङ्केतित है।

८६८. ॐ सात्त्विकाय नमः—धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य और फल को लेकर ये सत्त्वगुण के योग्य हैं, अतः इनका नाम 'सात्त्विक' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बहुलाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बहुलाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बहुलाल को सात्त्विकी वृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्त्ववर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।३१।५ में सङ्केतित है।

८६९. ॐ सत्याय नमः—ये सदा सत्य में रहते हैं और सत्य इनमें रहता हैं, अतः इनका नाम 'सत्य' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बहुरेता ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बहुरेता इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बहुरेता को सत्य की वृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।५ में उल्लिखित है।

८७०. ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः—सत्य अर्थात् निष्कपट धर्म इनकी प्रीति उत्पन्न करता है, अतः इनका नाम 'सत्यधर्मपरायण' है। माधव-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम बहुरोमा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बहुरोमा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बहुरोमा को सत्यधर्मपरायणता तथा सात्त्विकभावना प्राप्त हुई। यह मन्त्र सत्यधर्मपरायणता तथा सात्त्विकता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१२।७ में सङ्केतित है।

८७१. ॐ अभिप्रायाय नमः—निर्मल धर्म में संलग्न प्राणी इनको शीघ्र प्राप्त करता है, अतः इनका नाम 'अभिप्राय' है। शिवरहस्य के अनु-सार सर्वप्रथम बह्वृच ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव बह्वृच इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से बह्वृच को सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९६।१६ में सङ्केतित है।

८७२. ॐ प्रियार्हाय नमः—ये एकान्त भक्ति करनेवाले पुरुष के लिए ही हैं, अतः इनका नाम 'प्रियार्ह' है। अथवा ये प्रिय पदार्थ के योग्य हैं,

अतः इनका नाम 'प्रियार्ह' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम औत्पथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औत्पथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औत्पथ को इष्ट वस्तु प्राप्त हुई। यह मन्त्र इष्टवस्तुप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २३।१९ में सङ्केतित है।

८७३ ॐ अर्हाय नमः—ये एकमात्र इन्हीं की इच्छा करनेवाले भक्तों द्वारा प्राप्त होने योग्य हैं, अतः इनका नाम 'अर्ह' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम औदल्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औदल्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औदल्य को ध्यानवृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र ध्यानवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९४।१ में उल्लिखित है।

८७४. ॐ प्रियकृते नमः—ये अनन्यपरायण भक्तों का प्रिय करते हैं, अतः इनका नाम 'पियकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कदल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कदल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कदल को विष्णु में परमप्रीति सिद्ध हुई। यह मन्त्र प्रीतिकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।९९।७ में सङ्केतित है।

८७५. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः—ये भक्तों की प्रीति अपने में बढ़ाते हैं तथा भक्तों की विषय-सुखगत प्रीति को हटाते हैं, अतः इनका नाम 'प्रीतिवर्धन' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उदल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उदल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उदल की हरि में प्रीति हुई। यह मन्त्र प्रीतिवर्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १५।५४ में सङ्केतित है।

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग् विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥१११॥

८७६. ॐ विहायसगतये नमः—ये अपने अनन्य भक्तों को चिदाकाशरूप गति देते हैं, अतः इनका नाम 'विहायसगति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भरद्वसु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भरद्वसु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भरद्वसु का मन भगवान् में एकाग्र हुआ। यह मन्त्र एकाग्रभक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।२३।२४ में सङ्केतित है।

८७७. ॐ ज्योतिषे नमः—सूर्य, चन्द्र और अग्नि इन्हीके तेज से चमकते हैं, अतः इनका नाम 'ज्योतिः' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम इन्द्रप्रमद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इन्द्रप्रमद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इन्द्रप्रमद को तेज प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तेजःप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३।९ में उल्लिखित है।

८७८. ॐ सुरुचये नमः—इनकी कान्ति सु अर्थात् सुन्दर है, अतः इनका नाम 'सुरुचि' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मौनस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मौनस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मौनस को सुन्दर कान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सुन्दर कान्ति देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।२।४ में सङ्केतित है।

८७९. ॐ हुतभुजे नमः—ये सब देवताओं को उद्देश्य कर किए गए होम आदि का उपभोग करते हैं, अतः इनका नाम 'हुतभुक्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वैखानस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैखानस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वैखानस को यज्ञफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह यह मन्त्र यजुर्वेद १७।७९ में सङ्केतित है।

८८०. ॐ विभवे नमः—ये नाना प्रकार के यज्ञ करनेवाले पुरुषों के तत्-तत् इष्ट देवों के रूप से उन पुरुषों का कल्याण करते हैं, अतः इनका नाम 'विभु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गार्त्समद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गार्त्समद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गार्त्समद को ऐश्वर्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ऐश्वर्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१३१।२ में उल्लिखित है।

८८१. ॐ रवये नमः—इन्होंने ब्रह्माजी को वेद पढ़ाया है, अतः इनका नाम 'रवि' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम औतथ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औतथ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औतथ्य श्रेष्ठ वेदज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद २०।१२८।१३ में उल्लिखित है।

८८२. विरोचनाय नमः—ये आदित्य आदि को विशेषरूप से द्योतित करते हैं, अतः इनका नाम 'विरोचन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आवत्सर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आवत्सर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आवत्सर तपस्वियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ८।१०।४ में उल्लिखित है।

८८३. ॐ सूर्याय नमः—ये लोगों को कर्म में प्रेरित करते हैं, अतः इनका नाम 'सूर्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गार्ग्यायण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गार्ग्यायण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गार्ग्यायण ब्रह्मतेजस्वी हुए। यह मन्त्र ब्रह्मतेजःप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।१३।१ में उल्लिखित है।

८८४. ॐ सवित्रे नमः—ये समग्र जगत् को उत्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'सविता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम साङ्कृत्य ऋषि ने

यह नाममन्त्र जपा है, अतएव साङ्कृत्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से साङ्कृत्य को धर्मवृद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र धर्मवृद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।२८।७ में उल्लिखित है।

८८५. ॐ रविलोचनाय नमः—सूर्य इनका दक्षिण नेत्र है, अतः इनका नाम 'रविलोचन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मैत्रायण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मैत्रायण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इस मन्त्रको जपने से मैत्रायण को नेत्रज्योति प्राप्त हुई। यह मन्त्र नेत्रज्योतिःप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १३।१० में सङ्केतित है।

अनन्तो हुतभुग् भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥११२॥

८८६. ॐ अनन्ताय नमः—इनका नाश कभी भी नहीं होता, अतः इनका नाम 'अनन्त' है। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम औदवाह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव औदवाह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से औदवाह अनन्ततत्त्व के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र अनन्ततत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ११।११५।५ में उल्लिखित है।

८८७. ॐ हुतभुजे नमः—ये हविर्द्रव्य को अग्निरूप से खाते हैं, अतः इनका नाम 'हुतभुग्' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वत्साङ्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वत्साङ्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वत्साङ्क को योगसिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र योगसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।३९।७ में सङ्केतित है।

८८८. ॐ भोक्त्रे नमः—ये प्रजा का सदा पालन करते हैं, अतः इनका नाम 'भोक्ता' है। अथवा ये कृष्णावतार में नवनीत आदि खाते हैं, अतः इनका नाम 'भोक्ता' है। आनन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम माण्डूकायन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माण्डूकायन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माण्डूकायन भगवद्धाम को प्राप्त हुए। यह मन्त्र भगवद्धामप्रद है। यह मन्त्र स्कन्दपुराण में उल्लिखित है।

८८९. ॐ सुखदाय नमः (असुखदाय नमः)—ये अपने भक्तों को दिव्य देह दिलाकर वासनासहित संसार का नाश कराकर उनको निजप्राप्ति-रूप आदि सुख देते हैं, अतः इनका नाम 'सुखद' है। अथवा असुखद अर्थात् दुःखादि को चूर-चूर कर देते हैं, अतः इनका नाम 'असुखद' है। परमानन्द-रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सभाट ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सभाट इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सभाट को सब सुख प्राप्त हुए। यह मन्त्र सर्वसुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।४९।२ में सङ्केतित है।

८९०. ॐ नैकजाय नमः—पुण्यलोकगामी पुरुषों के स्वागत के लिए इनके द्वारा अनेक दिव्य अप्सराएँ उत्पन्न की हुई रहती हैं, अतः इनका नाम 'नैकज' है। अथवा धर्मरक्षा के लिए बार बार राम, कृष्ण आदि अवतार लेते हैं, अतः इनका नाम 'नैकज' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शाण्डिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाण्डिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाण्डिल को मुक्ति मिली। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८५।१९ में सङ्केतित है।

८९१. ॐ अग्रजाय नमः—ये सबसे पहले हिरण्यगर्भरूप धारण कर प्रकट होते हैं, अतः इनका नाम 'अग्रज' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चान्द्रायण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चान्द्रायण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चान्द्रायण सब कार्यों में अग्रणी हुए। यह मन्त्र अग्रणीत्वप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२० में सङ्केतित है।

८९२. ॐ अनिर्विण्णाय नमः—ये शिथिलप्रयत्न होकर किसी भी उद्योग से निर्विण्ण (खिन्न) नहीं होते, अतः इनका नाम 'अनिर्विण्ण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम माध्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माध्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माध्य वेदों के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८।६ में सङ्केतित है।

८९३. ॐ सदामर्षिणे नमः—ये सत् अर्थात् साधु भक्तों को सदा क्षमा करते हैं, अतः इनका नाम 'सदामर्षी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम माध्यमिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माध्यमिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माध्यमिक सदा क्रोधरहित हुए। यह मन्त्र क्रोधनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१६४।१३ में सङ्केतित है।

८९४. ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः—ये लोगों के लिए आश्रय हैं, अतः इनका नाम 'लोकाधिष्ठान' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कात्यर्कल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कात्यर्कल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कात्यर्कल नैष्ठिक ब्रह्मचारी हुए। यह मन्त्र नैष्ठिकब्रह्मचर्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ९।९।११ में सङ्केतित है।

८९५. ॐ अद्भुताय नमः—सर्वदा सब को इनका अनुभव होते रहने पर भी अपनी अनन्त शक्तियों के कारण ये अत्यन्त आश्चर्यरूप मालूम होते हैं, अतः इनका नाम 'अद्भुत' है। अतएव कठोपनिषद् में "श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः। आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा कुशलानुशिष्टः" कहा है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम लोहित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव लोहित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने

से लोहित को सब कार्यों की सिद्धि प्राप्त हुई। यह मन्त्र सर्वकार्यसिद्धिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१८।६ में उल्लिखित है।

सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः॥११३॥

८९६. ॐ सनात् नमः (ॐ सनाते नमः)—ये जन्म मरण दोनों देनेवाले कालरूप हैं, अतः इनका नाम 'सनात्' है। अतएव विष्णुपुराण में "परस्य ब्रह्मणो रूपं पुरुषः प्रथमं द्विजः। व्यक्ताव्यक्ते तथैवान्ये रूपे कालस्तथा परम्॥" कहा है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मण्डूकेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मण्डूकेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मण्डूकेय की सर्वकामसिद्धि हुई। यह मन्त्र कामनापूरक है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।१६।१ में उल्लिखित है।

८९७. ॐ सनातनतमाय नमः—ये ब्रह्मादि के भी परम पुरुष हैं, अतः इनका नम 'सनातनतम' है। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम हरिकर्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हरिकर्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हरिकर्ण को सनातनपद प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सनातनपदप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।१३ में सङ्केतित है।

८९८. ॐ कपिलाय नमः—जिस प्रकार मेघ में बिजली चमकती है उसी प्रकार श्यामवर्णवाले इनमें पीताम्बर चमकने से ये पिङ्गल वर्ण के मालूम होते हैं, अतः इनका नाम 'कपिल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम इध्मपत्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इध्मपत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इध्मपत्र ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र ऊर्ध्वरेतस्त्वप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।२७।१६ में उल्लिखित है।

८९९. ॐ कपये नमः—ये परमानन्द की रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'कपि' है। अथवा अपनी किरणों से क अर्थात् जल पीते हैं, अतः इनका नाम 'कपि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मर्कटास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मर्कटास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मर्कटास्य सुखी हुए। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।८६।२ में उल्लिखित है।

९००. ॐ अप्ययाय नमः—प्रलय काल में जगत् इनमें लीन हो जाता है, अतः इनका नाम 'अप्यय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वरीयान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वरीयान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वरीयान् सदा रक्षित हुए। यह मन्त्र रक्षाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१००।१५ में सङ्केतित है।

९०१. ॐ स्वस्तिदाय नमः—ये अपने भक्तों को सदा कल्याण देते हैं, अतः इनका नाम 'स्वस्तिद' है। सुन्दरीमहोदयतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम प्राण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव प्राण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से प्राण के प्राण रक्षित हुए। यह मन्त्र प्राणरक्षाप्रद है। यह मन्त्र वामनपुराण में उल्लिखित है।

९०२. ॐ स्वस्तिकृते नमः—ये अपने गुणों से अपने भक्तों की स्वस्ति याने स्वभोग सुखरूप कल्याण करते हैं, अतः इनका नाम 'स्वस्तिकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कर्मश्रेष्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्मश्रेष्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्मश्रेष्ठ की मङ्गल-वृद्धि हुई। यह मन्त्र मङ्गलवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।७।१ में उल्लिखित है।

९०३. ॐ स्वस्ति नमः (ॐ स्वस्तये नमः)—ये स्वयं कल्याणरूप हैं, अतः इनका नाम 'स्वस्ति' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम द्युमान् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव द्युमान् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से द्युमान् को कल्याण प्राप्त हुआ। यह मन्त्र कल्याणप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।५१।१४ में सङ्केतित है।

९०४. ॐ स्वस्तिभुजे नमः—ये भक्तों के कल्याण की रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'स्वस्तिभुक्' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम चित्रकेतु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चित्रकेतु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चित्रकेतु ज्ञानियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र ज्ञानप्रद तथा श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४१।११ में सङ्केतित है।

९०५. ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः—ये कल्याण करने में शीघ्रकारी हैं, अतः इनका नाम 'स्वस्तिदक्षिण' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सुरोचि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सुरोचि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सुरोचि को कल्याण प्राप्त हुआ। यह मन्त्र कल्याणप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।६३।२ में सङ्केतित है।

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥११४॥

९०६. ॐ अरौद्राय नमः—इनके पास परम ऐश्वर्य होने पर भी ये कभी उग्ररूपवाले नहीं होते, अतः इनका नाम 'अरौद्र' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम मित्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है; अतएव मित्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मित्र विष्णुभक्त हुए। यह मन्त्र विष्णुभक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।२२।१२ में सङ्केतित है।

९०७. ॐ कुण्डलिने नमः—इनके दोनों कानों में दिव्य कुण्डल हैं, अतः इनका नाम 'कुण्डली' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सहिष्णु ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सहिष्णु इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सहिष्णु सब प्रकार से सहनशील हुए। यह मन्त्र सहनशीलता-प्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१८ में सङ्केतित है।

९०८. ॐ चक्रिणे नमः—इनके पास चक्र अर्थात् यादवगण हैं, अतः इनका नाम 'चक्री' है। भार्गवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विश्रवा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विश्रवा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विश्रवा रक्षित हुए। यह मन्त्र रक्षाकारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१६।४ में उल्लिखित है।

९०९. ॐ विक्रमिणे नमः—इनके पास गाम्भीर्य के अनुरूप विलास है, अतएव इनका नाम 'विक्रमी' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम विरजा ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विरजा इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विरजा को परम पराक्रम तथा सर्वसाधनयुक्तता प्राप्त हुई। यह मन्त्र पराक्रम तथा साधनसम्पन्नता देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१५४।२ में सङ्केतित है।

९१०. ॐ ऊर्जितशासनाय नमः – इनकी आज्ञा का उल्लङ्घन ब्रह्मादि देव भी नहीं कर सकते हैं, अतः इनका नाम 'ऊर्जितशासन' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उल्वण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उल्वण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उल्वण सबपर प्रभाववाले हुए। यह मन्त्र प्रभावप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३५।७ में सङ्केतित है।

९११. ॐ शब्दातिगाय नमः—इनकी महिमा का वर्णन शेष, शारदा आदि भी नहीं कर सकते हैं, अतः इनका नाम 'शब्दातिग' है। अतएव पुष्पदन्तजी—'असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।" कहते हैं। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वसुभृद्यान ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वसुभृद्यान इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वसुभृद्यान को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र ब्रह्मज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।९९।१ में सङ्केतित है।

९१२. ॐ शब्दसहाय नमः—ये अज्ञेय बोलीवाले गजेन्द्र आदि पशु तिर्यक् जातिवाले प्राणियों के भी शब्द अर्थात् आर्तनाद को सहते हैं अर्थात् भारवत् वहन करते है, अतः इनका नाम 'शब्दसह' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्व-प्रथम कौककाश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौककाश इस मन्त्र

के ऋषि हैं। इसको जपने से कौककाश वेदवेदाङ्ग ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१५९।५ में सङ्केतित है।

९१३. ॐ शिशिराय नमः—ये गजेन्द्रादिकों का आर्तनाद सुनकर उनके पास दौड़े गए, अतः इनका नाम 'शिशिर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम इन्द्रवाह ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इन्द्रवाह इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इन्द्रवाह की शान्तिपूर्वक तपोवृद्धि सिद्ध हुई। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।५५।२ में उल्लिखित है।

९१४. ॐ शर्वरीकराय नमः—ये अज्ञानियों की रात अर्थात् संसार को अज्ञानियों के लिए बनाते हैं, अतः इनका नाम 'शर्वरीकर' है। अतएव गीता में भगवान् "या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥" कहते हैं। सात्वतसंहिता के अनुसार सर्वप्रथम माञ्जन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव माञ्जन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से माञ्जन की सदा सर्व शुभ कर्मों में प्रवृत्ति हुई। यह मन्त्र शुभ-कर्म में प्रवृत्त करानेवाला है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।२३ में सङ्केतित है।

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥११५॥

९१५. ॐ अक्रूराय नमः—ये क्रूर नहीं हैं, अतः इनका नाम 'अक्रूर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम देवरात ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवरात इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवरात को शान्ति प्राप्त हुई। यह मन्त्र शान्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ६।२ में सङ्केतित है।

९१६. ॐ पेशलाय नमः—ये सुन्दर भूषण धारण करने के लिए लेते हैं, अतः इनका नाम 'पेशल' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मिहिरस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मिहिरस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मिहिरस शूर हुए। यह मन्त्र शौर्यप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।८३ में उल्लिखित है।

९१७. ॐ दक्षाय नमः—ये भक्तों के कार्य को संपन्न हुआ देखकर वृद्धि को प्राप्त होते हैं, अतः इनका नाम 'दक्ष' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मृकण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मृकण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मृकण्ड को दक्षता प्राप्त हुई। यह मन्त्र दक्षताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१९।३० में उल्लिखित है।

९१८. ॐ दक्षिणाय नमः—यज्ञरूप होने से इन्हें दक्षिणा दी जाती है, अतएव इनका नाम 'दक्षिण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आशिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आशिल इस मन्त्र के ऋषि हैं।

इसको जपने से आशिल को यज्ञफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।८२। में उल्लिखित है।

९१९. ॐ क्षमिणांवराय नमः—ये सहन करनेवालों में श्रेष्ठ हैं, अतः इनका नाम 'क्षमिणांवर' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम ब्रघ्न ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव ब्रघ्न इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से ब्रघ्न को क्षमाशीलता प्राप्त हुई। यह मन्त्र क्षमाशीलता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।६ में सङ्केतित है।

९२०. ॐ विद्वत्तमाय नमः—ये अत्यन्त विद्वान् हैं, अतः इनका नाम 'विद्वत्तम' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कौशिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौशिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौशिल को श्रेष्ठविद्या प्राप्त हुई। यह मन्त्र श्रेष्ठविद्याप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।१।१७ में सङ्केतित है।

९२१. ॐ वीतभयाय नमः—इनके कारण दीन संसारी प्राणी निर्भय होते हैं, अतः इनका नाम 'वीतभय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वाशिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वाशिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाशिल निर्भय हुए। यह मन्त्र भयहारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।९३।३ में सङ्केतित है।

९२२. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः—इनके श्रवण तथा कीर्तन सदा पुण्यकारक हैं, अतः इनका नाम 'पुण्यश्रवणकीर्तन' है। परमानन्दरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शस का पुण्यदायक श्रवण एवं कीर्तन बढ़ा। यह मन्त्र पुण्यदायक श्रवण एवं कीर्तन साधनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।६६।२४ में सङ्केतित है।

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥११६॥

९२३. ॐ उत्तारणाय नमः—इन्होंने अपने भक्तों को संसार से तारा है, अतएव इनका नाम 'उत्तारण' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भार्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भार्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भार्ग संसार से पार हुए। यह मन्त्र संसारोत्तारक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९९।१ में सङ्केतित है।

९२४. ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः—ये भक्तों के हृदय में बैठकर उनके पापों का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'दुष्कृतिहा' है। शिवरहस्य के अनुसार

सर्वप्रथम अर्चि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अर्चि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अर्चि पापरहित हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।७३।६ में सङ्केतित है।

९२५. ॐ पुण्याय नमः—ये सुकृत स्वयं करते हैं तथा दूसरों को भी पुण्य करने के लिए प्रेरित करते हैं, अतः इनका नाम 'पुण्य' है। अथवा स्मरण आदि करनेवाले सब पुरुषों का पुण्यसम्पन्न करते हैं, अतः इनका नाम 'पुण्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अशनाश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अशनाश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अशनाश वैष्णवाग्रणी तथा पुण्यशील हुए। यह मन्त्र अग्रणीत्वप्रद तथा पुण्यवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४३।२ में सङ्केतित है।

९२६. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः—ये स्मरणमात्र से दुःस्वप्न का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'दुःस्वप्ननाशन' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वत्सभार्गव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वत्सभार्गव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वत्सभार्गव के दुःस्वप्न नष्ट हुए। यह मन्त्र दुःस्वप्ननाशक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १६।६।९ में सङ्केतित है।

९२७. ॐ वीरघ्ने नमः—ये भक्तों की नानाविध संसारगतियों का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'वीरहा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कौत्सत्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कौत्सत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कौत्सत्र के विविध शत्रु नष्ट हुए। यह मन्त्र शत्रुनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।९६।११ में सङ्केतित है।

९२८. ॐ रक्षणाय नमः—ये सन्मार्गवर्ती भक्तों की सदा रक्षा करते हैं, अतः इनका नाम 'रक्षण' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गौरवेश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गौरवेश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गोरवेश सब प्रकार से रक्षित हुए। यह मन्त्र रक्षाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३।१४ में उल्लिखित है।

९२९. ॐ सन्ताय नमः–ये भक्तों को आत्मपर्यन्त अभीष्ट वस्तु देते हैं, अतः इनका नाम 'सन्त' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सौत्सव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सौत्सत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सौत्सत्र की सब कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र कामनासाधक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।७२।२ में सङ्केतित है।

९३० ॐ जीवनाय नमः—इन्होंने अभिमन्यु के पुत्र को जिलाया है, अतः इनका नाम 'जीवन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भावन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भावन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको

जपने से भावन का आयुष्य बढ़ा। यह मन्त्र आयुष्यवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।४८।१० में उल्लिखित है।

९३१. ॐ पर्यवस्थिताय नमः—ये सारे जगत् को व्याप्त कर अवस्थित हैं, अतः इनका नाम 'पर्यवस्थित' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम तृणमाणिक्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव तृणमाणिक्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से तृणमाणिक्य सर्वत्र रक्षित हुए। यह मन्त्र रक्षाकारक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥११७॥

९३२. ॐ अनन्तरूपाय नमः—इनके बहुत रूप हैं, अतः इनका नाम 'अनन्तरूप' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कुत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुत्स का अन्तःकरण शुद्ध हुआ। यह मन्त्र अन्तःकरणशोधक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१९ में सङ्केतित है।

९३३. ॐ अनन्तश्रिये नमः—भक्तों को देने के लिए इनके पास इहलोक तथा परलोक की बहुत श्री हैं, अतः इनका नाम 'अनन्तश्री' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम भागेन्द्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भागेन्द्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भागेन्द्र सर्वसम्पत्तिशाली हुए। यह मन्त्र सर्वसम्पत्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।४६।११ में सङ्केतित है।

९३४. ॐ जितमन्यवे नमः—इन्होंने दैत्यों को जीता है, अतः इनका नाम 'जितमन्यु' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गोत्राव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गोत्राव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गोत्राव दीनता से रहित हुए। यह मन्त्र दीनतानाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १९।९ में सङ्केतित है।

९३५. ॐ भयापहाय नमः—इन्होंने भक्तों का अनाथतारूप भय नष्ट कर दिया है, अतः इनका नाम 'भयापह' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम ताण्ड्यवंशोद्भव वद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वद किसी के आश्रित नहीं हुए। यह मन्त्र पराश्रितताविनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३६।३२ में सङ्केतित है।

९३६. ॐ चतुरश्राय नमः—ॐ चतुरस्राय नमः—ये भोगरूपसे प्रसिद्ध धर्मादि चारों पुरुषार्थों में से जिस किसी भी पुरुषार्थ की इच्छा करनेवाले भक्तों की इच्छा पूर्ण करते हैं, अतः इनका नाम 'चतुरश्र' है।

अथवा इन्होंने दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण तथा शकुनि इन चारों का अस्र अर्थात् रुधिर निकलवाया है, अतः इनका नाम 'चतुरस्र' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम आतङ्क ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आतङ्क इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आतङ्क को चारों पुरुषार्थ प्राप्त हुए। यह मन्त्र चतुर्विध पुरुषार्थप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।८ में सङ्केतित है।

९३७. ॐ गभीरात्मने नमः—इनका गाम्भीर्य ब्रह्मादि देवताओं द्वारा भी विचलित नहीं किया जा सकने के कारण इनका आत्मा अतिगम्भीर है, अतः इनका नाम 'गभीरात्मा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रैवतक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रैवतक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रैवतक को अतिगम्भीर मानस अर्थ प्राप्त हुआ। यह मन्त्र मानस अर्थप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ३।३२।१६ में सङ्केतित है।

९३८. ॐ विदिशाय नमः—ये भक्तों को विविध प्रकार का फल देते हैं। अतः इनका नाम 'विदिश' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शाक्वर रैवत ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाक्वर रैवत इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाक्वर रैवत के सब अर्थ सिद्ध हुए। यह मन्त्र सर्वार्थ-साधक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।१५।५ में सङ्केतित है।

९३९. ॐ व्यादिशाय नमः—इन्होंने अर्जुन को आदेश के बहाने विशेष रूप से आत्मतत्त्व का उपदेश दिया है, अतः इनका नाम व्यादिश है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम पक्षकर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पक्षकर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पक्षकर को आत्मतत्त्व का ज्ञान हुआ। यह मन्त्र आत्मतत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।३२।६ में सङ्केतित है।

९४०. ॐ दिशाय नमः—ये वेदरूप से ब्राह्मणादि सब वर्णों को अपना अपना कर्म करने की आज्ञा देते हैं, अतः इनका नाम 'दिश' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हर्यङ्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हर्यङ्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हर्यङ्ग को सुन्दर कर्म करने की प्रेरणा मिली। यह मन्त्र सत्कर्मप्रेरणाप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।११०।७ में सङ्केतित है।

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ ११८ ॥

९४१. ॐ अनादये नमः—ये अन्य देवों की सेवा करनेवाले लोगों द्वारा गृहीत नहीं होते हैं, अतः इनका नाम 'अनादि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उपकल्पित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपकल्पित इस

मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उपकल्पित की सब कामनाएँ सिद्ध हुईं। यह मन्त्र सकलकामनापूरक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।१० में सङ्केतित है।

९४२. ॐ भुवे नमः—पृथ्वी के समान क्षमाशील ये देवकीजी के उदर से उत्पन्न हुए हैं, अतः इनका नाम 'भूः' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम जयपत्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा हैं, अतएव जयपत्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जयपत्र मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में सङ्केतित है।

९४३. ॐ भुवो लक्ष्मै नमः—ये सबको उत्पन्न करनेवाली भूः अर्थात् पृथ्वी की लक्ष्मी अर्थात् शोभा हैं, अतः इनका नाम 'भुवो लक्ष्मी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम दल्प ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दल्प इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दल्प की गृहलक्ष्मी बढ़ी। यह मन्त्र लक्ष्मीवर्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।२२ में सङ्केतित है।

९४४. ॐ सुवीराय नमः—इनके पुत्र सुन्दर हैं, अतः इनका नाम 'सुवीर' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम योधेश ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव योधेश इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से योधेश का सुन्दर बल बढ़ा। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९१।१९ में उल्लिखित है।

९४५. ॐ रुचिराङ्गदाय नमः—ये अपने भक्तों को अपने अनुभव के योग्य रुचिर स्वरूप देते हैं, अतः इनका नाम 'रुचिराङ्गद' है। सात्वततन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम कुशल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कुशल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कुशल को सुन्दर मति प्राप्त हुई। यह मन्त्र सन्मतिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ६।२।६ में सङ्केतित है।

९४६. ॐ जननाय नमः—इन्होंने प्रद्युम्न आदि को पुत्ररूप से जन्म दिया है, अतएव इनका नाम 'जनन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गार्गेय ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गार्गेय इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गार्गेय को सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सुपुत्रप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४०।१ में उल्लिखित है।

९४७. ॐ जनजन्मादये नमः—ये जनमात्र के जन्म के आदि अर्थात् कारण हैं, अतः इनका नाम 'जनजन्मादि' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भविष्यविद् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भविष्यविद् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भविष्यविद् का पुनर्जन्म नहीं हुआ। यह मन्त्र अपुनर्जन्मद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।१।७ में सङ्केतित है।

९४८. ॐ भीमाय नमः—इनसे विमुख रहनेवाले नरकगामी प्राणी इनसे शत्रु के समान डरते हैं, अतः इनका नाम 'भीम' है। परमानन्द-

रहस्य के अनुसार सर्वप्रथम और्मिकण्ठ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव और्मिकण्ठ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से और्मिकण्ठ का नरक नष्ट हुआ। यह मन्त्र नरकनाशक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।१६।१४ में उल्लिखित है।

९४९. ॐ भीमपराक्रमाय नमः—ये जगत् का नाश करने के लिए तत्पर हिरण्याक्ष आदि के प्रति भयानक पराक्रम करते हैं, अतः इनका नाम 'भीमपराक्रम' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम काम्यकृत् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव काम्यकृत् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से काम्यकृत् भीमपराक्रमी हुए। यह मन्त्र पराक्रमप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।११ में सङ्केतित है।

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥११९॥

९५०. ॐ आधारनिलयाय नमः—ये जगत् के आधारभूत भक्त प्रह्लाद, विभीषण आदि के भी आधार हैं, अतः इनका नाम 'आधारनिलय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम वैकल्प ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैकल्प इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने ने वैकल्प की धारणाशक्ति बढ़ी। यह मन्त्र धारणाशक्तिवर्धक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३२।६ में सङ्केतित है।

९५१. ॐ अधात्रे नमः—ये सब को धारण करते हैं, किन्तु इनको धारण कोई भी नहीं करता, अतः इनका नाम 'अधाता' है। शिवरहस्य के के अनुसार सर्वप्रथम वैतहव्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वैतहव्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वैतहव्य को आधार प्राप्त हुआ। यह मन्त्र आधारप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।३५।३ में उल्लिखित है।

९५२. ॐ पुष्पहासाय नमः—इनका हँसना पुष्प के समान आह्लादकारक है, अतः इनका नाम 'पुष्पहास' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गर्गराण्ड ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है। अतएव गर्गराण्ड इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गर्गराण्ड का चित्त प्रसन्न हुआ। यह मन्त्र चित्तप्रसादक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।६३।९ में सङ्केतित है।

९५३. ॐ प्रजागराय नमः—जिस प्रकार क्षेत्रपालक खेत की रक्षा के लिए जागता रहता है उसी प्रकार ये भक्तों में सदा जागते रहते हैं। अतः इनका नाम 'प्रजागर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हरित ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हरित इस मन्त्र के ऋषि हैं। इनको जपने

से हरित की भक्ति बढ़ी। यह मन्त्र भक्तिवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।४४।१५ में सङ्केतित है।

९५४. ॐ ऊर्ध्वगाय नमः—अपने भक्तों का दैन्य नष्ट करने में इनका स्वभाव सदा उत्कण्ठित रहता है, अतः इनका नाम 'ऊर्ध्वग' है। सात्वत-तन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वाछिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वाछिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वाछिल का तप बढ़ा। यह मन्त्र तपोवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।६।१ में सङ्केतित है।

९५५. ॐ सत्पथाचाराय नमः—ये भक्तों द्वारा सत्पथ का आचरण करवाते है, अतः इनका नाम सत्पथाचार है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम गविज्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गविज्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गविज्य सत्पपथाचरण से ऋषियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।५१।१५ में सङ्केतित है।

९५६. ॐ प्राणदाय नमः—ये विषयरूपी विष से मूर्च्छित अपने भक्तों को प्राण देते हैं, अतः इनका नाम 'प्राणद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम पूर्वातिथ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पूर्वातिथ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पूर्वातिथ्य का बल बढ़ा तथा पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र बलप्रद तथा पापनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १७।१५ में उल्लिखित है।

९५७. ॐ प्रणवाय नमः—अकार, उकार तथा मकाररूप प्रणव इनका वाचक है, अतः इनका नाम 'प्रणव' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मौद्गिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है अतएव मौद्गिल इस मन्त्र के ऋषि है। इसको जपने से मौद्गिल की भक्ति बढ़ी। यह मन्त्र भक्तिवर्धक है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१२।२ में सङ्केतित है।

९५८. ॐ पणाय नमः—भक्तों के साथ स्वाम्य तथा दास्य का लेन-देन का व्यवहार करते हैं, अतः इनका नाम 'पण' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम और्म ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा जपा है, अतएव और्म इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से और्म का तप बढ़ा। यह मन्त्र तपोवर्धक है। सह मन्त्र ऋग्वेद १।९३।८ में सङ्केतित है।

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१२०॥

९५९. ॐ प्रमाणाय नमः—ये यादवों के लिए कर्तव्य, अकर्तव्य आदि सभी बातों में प्रमाण हैं, अतः इनका नाम 'प्रमाण' है। शिवरहस्य के

अनुसार सर्वप्रथम आर्च ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आर्च इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आर्च सज्जनों में प्रमाणभूत हुए। यह मन्त्र प्रमाणताप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।७।३२ में सङ्केतित है।

९६०. ॐ प्राणनिलयाय नमः—सब प्राण अर्थात् प्राणी इनमें लीन होते हैं, अतः इनका नाम 'प्राणनिलय' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सावकर्ण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सावकर्ण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सावकर्ण की विष्णुभक्ति बढ़ी। यह मन्त्र विष्णुभक्तिवर्धक है। यह मन्त्र अथर्ववेद ६।१३।२ में सङ्केतित है।

९६१. ॐ प्राणभृते नमः—ये सब प्राणियों का अन्नादिरूप से पालन करते हैं, अतः इनका नाम 'प्राणभृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम सत्याधिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सत्याधिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सत्याधिक की प्राणरक्षा हुई। यह मन्त्र प्राणरक्षाप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।५।२२ में सङ्केतित है।

९६२. ॐ प्राणजीवनाय नमः—ये प्राण अर्थात् व्रजवासी जनों के लिए जीवन हैं, अतः इनका नाम 'प्राणजीवन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम वासिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव वासिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से वासिल का जीवन सुखपूर्वक बीता। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।२४ में सङ्केतित है।

९६३. ॐ तत्त्वाय नमः—ये जीवों में सारांशरूप तत्त्व अर्थात् सार हैं, अतः इनका नाम 'तत्त्व' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धारणिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धारणिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धारणिक को तत्त्वज्ञान हुआ। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३७ में सङ्केतित है।

९६४. ॐ तत्त्वविदे नमः—ये अपने तत्त्व को स्वयं ही जानते हैं, अतः इनका नाम 'तत्त्वविद्' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सरस्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सरस्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सरस्य को तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र तत्त्वज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।३७ में सङ्केतित है।

९६५. ॐ एकात्मने नमः—ये ही सब चित् तथा अचित् के एक आत्मा अर्थात् शेषी भोक्ता हैं, अतः इनका नाम 'एकात्मा' है। सात्वत-संहिता के अनुसार सर्वप्रथम पौरुषसूक्त ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव पौरुषसूक्त इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से पौरुषसूक्त को सदसत्

का ज्ञान प्राप्त हुआ। यह मन्त्र सदसत् का ज्ञान देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ४०।७ में सङ्केतित है।

९६६. ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः—ये चित् तथा अचित् के एक आत्मा होने पर भी चिदचित् के धर्म जन्म, मृत्यु तथा जरा से परे हैं, अतः इनका नाम 'जन्ममृत्युजरातिग' है। परमानन्दतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अजावत्स ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अजावत्स इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अजावत्स की वृद्धावस्था सुखपूर्वक वीती। यह मन्त्र सुखप्रद है। वह मन्त्र अथर्ववेद १०।८।४४ में सङ्केतित है।

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥२१॥

९६७. ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः—ये भूः, भुवः तथा स्वर्लोक के प्राणियों के मनोरथ पूर्ण करने में कल्पवृक्ष के समान हैं, अतः इनका नाम 'भूर्भुवःस्वस्तरु' है। अथवा वेदत्रयी का सार भूः, भुवः और स्वः—इन तीन व्याहृतियों द्वारा होमादि करके तीनों लोकों की प्रजा तरती है अथवा पार होती है, अतः इनका नाम 'भूर्भुवःस्वस्तरु' है। अतएव मनुजी कहते हैं कि—'अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥" माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम दैवातप ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव दैवातप इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से दैवातप के सब मनोरथ सिद्ध हुए। यह मन्त्र मनोरथपूरक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १३।२।३० में सङ्केतित है।

९६८. ॐ स्ताराय नमः—(ताराय नमः)—ये अपनी कीर्ति से सारे जगत् को आच्छादित करते हैं, अतः इनका नाम 'स्तार' है। अथवा संसारसागर से तारते हैं अथवा तार=प्रणव हैं, अतः इनका नाम 'तार' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अवसाव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अवसाव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अवसाव की कीर्ति बढ़ी। यह मन्त्र कीर्तिप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।४० में उल्लिखित है।

९६९. ॐ तस्मै पित्रे नमः (ॐ सवित्रे नमः)—ये स्थावर और जङ्गम के लोकोत्तर पिता हैं, अतः इनका नाम 'सविता' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम जैहल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव जैहल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से जैहल का जीवन सुखपूर्वक वीता। यह मन्त्र सुखप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।२२।५ में सङ्केतित है।

९७०. ॐ प्रपितामहाय नमः—ये पिता के भी पिता अर्थात् ब्रह्मा के भी जनक हैं, अतः इनका नाम प्रपितामह है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कार्णिक ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कार्णिक इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कार्णिक लोक में मान्य हुए। यह मन्त्र सम्मानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।७।१६ में उल्लिखित है।

९७१. ॐ यज्ञाय नमः—इनसे य अर्थात् ब्रह्मा तथा ज्ञ अर्थात् विद्वान् उत्पन्न हुए, अतः इनका नाम 'यज्ञ' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कण्वपथ ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कण्वपथ इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कण्वपथ वेदवित् हुए। यह मन्त्र वेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ७।५।२ में सङ्केतित है।

९७२. ॐ यज्ञपतये नमः—ये अपने भक्तों को अपने आराधनरूप यज्ञ का फल देनेवाले पति हैं, अतः इनका नाम 'यज्ञपति' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अनिलभुक् ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनिलभुक् इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनिलभुक् को यज्ञफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ९।१० में सङ्केतित है।

९७३. ॐ यज्वने नमः—जब इनके भक्त सन्ध्योपासनादि कर्म करने में असमर्थ होते हैं तब ये उन भक्तों के उन कर्मों को भी कर देते हैं, अतः इनका नाम 'यज्वा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम गार्गिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव गार्गिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से गार्गिल भक्त हुए। यह मन्त्र भक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।२६।१ में सङ्केतित है।

९७४. ॐ यज्ञाङ्गाय नमः—यज्ञ इनकी प्राप्ति का उपाय है, अतः इनका नाम 'यज्ञाङ्ग' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम उसि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उसि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उसि को भगवत्प्राप्ति हुई। यह मन्त्र भगवत्प्रापक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ८।२२ में सङ्केतित है।

९७५. ॐ यज्ञवाहनाय नमः—यज्ञ अर्थात् पूजन इनका वाहन अर्थात् प्रापक है, अतः इनका नाम 'यज्ञवाहन' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम रौहिल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रौहिल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रौहिल को भगवत्पूजन का फल मिला। यह मन्त्र पूजाफलप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ८।१२।२० में सङ्केतित है।

यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृत् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१२२॥

९७६. ॐ यज्ञभृते नमः—ये न्यूनाधिकदोषवाले भी यज्ञ का पालन करते हैं, अतः इनका नाम 'यज्ञभृत्' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम लौहिताक्षि ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा हैं, अतएव लौहिताक्षि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से लौहिताक्षि का यज्ञ सफल हुआ। यह मन्त्र यज्ञसाफल्यप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१।१ में सङ्केतित है।

९७७. ॐ यज्ञकृते नमः—इन्होंने जगत् के कल्याण के लिए यज्ञों को उत्पन्न किया है, अतएव इनका नाम 'यज्ञकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शाम्भव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शाम्भव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शाम्भव को यज्ञफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञफलप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।४२।१ में सङ्केतित है।

९७८. ॐ यज्ञिने नमः—इन्होंने रुचिनामक प्रजापति के घरमें आकूति की कोख से यज्ञावतार धारण किया है। अतः इनका नाम 'यज्ञी' है। विश्वसारतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम सौम्यास्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव सौम्यास्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से सौम्यास्य सदा यज्ञ करनेवाले हुए। यह मन्त्र यज्ञप्रवृत्तिकारक है। यह मन्त्र श्रीमद्भागवत में सङ्केतित है।

९७९. ॐ यज्ञभुजे नमः—ये यज्ञों का भोग करते हैं, अतः इनका नाम 'यज्ञभुक्' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शर्छर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शर्छर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शर्छर ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ५।४।५ में सङ्केतित है।

९८०. ॐ यज्ञसाधनाय नमः—इन्होंने महाराज युधिष्ठिर का यज्ञ साधा अर्थात् पूर्ण किया, अतः इनका नाम 'यज्ञसाधन' है। भवानीरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रमद्वीज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रमद्वीज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रमद्वीज को यज्ञसाधन का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र यज्ञसाधनप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१४५।३ में सङ्केतित है।

९८१. ॐ यज्ञान्तकृते नमः—ये अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराकर भक्तजनों के लिए यज्ञ का अन्त अर्थात् नाश कराते हैं अर्थात् फिर इनके उन भक्तों को यज्ञ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, अतः इनका नाम

'यज्ञान्तकृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उरर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उरर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उरर को भगवत्साक्षात्कार प्राप्त हुआ। यह मन्त्र भगवत्साक्षात्कारप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ९।४।९ में सङ्केतित है।

९८२. ॐ यज्ञगुह्याय नमः—यज्ञ इनका प्रापक है, यह बात गुह्य है अर्थात् सबको ज्ञात नहीं है, अतः इनका नाम 'यज्ञगुह्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम इन्दुप्रमद ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव इन्दुप्रमद इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से इन्दुप्रमद को गुह्यफल प्राप्त हुआ। यह मन्त्र गुह्यफल देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३।१ तथा ३।२ में सङ्केतित है।

९८३. ॐ अन्नाय नमः—भोग्यरूप सभी वस्तु ये ही हैं, अतः इनका नाम 'अन्न' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम उपार्धेषी ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव उपार्धेषी इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से उपार्धेषी को सदा पर्याप्त अन्न प्राप्त हुआ। यह मन्त्र अन्नप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।९०।२ में सङ्केतित है।

९८४. ॐ अन्नादाय नमः—ये सभी भोग्य वस्तुओं को प्रलय के समय खा जाते हैं, अतः इनका नाम 'अन्नाद' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आर्घवस ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आर्घवस इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आर्घवस ऊर्ध्वरेता हुए। मन्त्र ब्रह्मचर्यप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद १३ ३।७ में उल्लिखित है।

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥१२३॥

९८५. ॐ आत्मयोनये नमः—ये अपने भक्तों को अपने में मिला लेते हैं, अतः इनका नाम 'आत्मयोनि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम अनुकृत्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनुकृत्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनुकृत्य को आत्मा के अनुकूल भोग मिला। यह मन्त्र भोगप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ७।८७।२ में सङ्केतित है।

९८६. ॐ स्वयंजाताय नमः—इनका प्रादुर्भाव करनेवाला अन्य कोई भी नहीं है, अपितु ये स्वयं से स्वयं प्रकट होते हैं, अतः इनका नाम 'स्वयंजात' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मित्रवर्धन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव मित्रवर्धन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मित्रवर्धन के सब पुरुषार्थ स्वयं पूर्ण हुए। यह मन्त्र पुरुषार्थसाधक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३१।७ में सङ्केतित है।

९८७. ॐ वैखानाय नमः—ये सभी प्राणियों के संसार-दुःख को खनते हैं, अतः इनका नाम 'वैखान' है। अथवा वराह अवतार में ये पृथिवी को खनकर ऊपर लाये हैं, अतः इनका नाम 'वैखान' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम शत्रुकृन्तन ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शत्रुकृन्तन इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शत्रुकृन्तन के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र विष्णुपुराण में उल्लिखित है।

९८८. ॐ सामगायनाय नमः—इनके भक्त ऋषि भजन में मग्न होकर सामवेद से इनका गान करते हैं, अतः इनका नाम 'सामगायन' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवलाढ्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवलाढ्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवलाढ्य को सामवेद सदा कण्ठस्थ रहा। यह मन्त्र सामवेदज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद २।४३।१ में सङ्केतित है।

९८९ ॐ देवकीनन्दनाय नमः—ये देवकी के पुत्र हैं, अतः इनका नाम 'देवकीनन्दन' है। भवानीतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम शिवावश्य ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव शिवावश्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से शिवावश्य सदा आनन्दी हुए। यह मन्त्र आनन्दप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद ९।१ में सङ्केतित है।

९९० ॐ स्रष्ट्रे नमः—इन्होंने देवकीनन्दनरूप शरीर को समयानुसार त्यागा है, अतः इनका नाम 'स्रष्टा' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम आदल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव आदल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से आदल' मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१२९।७ में सङ्केतित है।

९९१ ॐ क्षितीशाय नमः—ये पृथ्वी का भार उतारने में समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'क्षितीश' है। वैष्णवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम देवरास ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव देवरास इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से देवरास को पृथिवी की स्वामिता मिली। यह मन्त्र पृथ्वीप्रद है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ में सङ्केतित है।

९९२ ॐ पापनाशनाय नमः—भक्तों द्वारा कीर्तन, पूजन, ध्यान आदि किये जाने से ये भक्तों के बाह्य तथा आभ्यन्तर शत्रुओं का नाश करते हैं, अतः इनका नाम 'पापनाशन' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम चन्द्रगर्ग ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव चन्द्रगर्ग इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से चन्द्रगर्ग के पाप नष्ट हुए। यह मन्त्र पापनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद ३०।३ में सङ्केतित है।

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥
सर्वप्रहरणायुधः ॐ नमः ॥ १२४ ॥

९९३ ॐ शङ्खभृते नमः—ये पाञ्चजन्य शङ्ख को अपने ओष्ठ की सुधा से पुष्ट करते हैं, अतः इनका नाम 'शङ्खभृत्' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम हृदयचन्द्र ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव हृदयचन्द्र इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से हृदयचन्द्र के किल्बिष नष्ट हुए। यह मन्त्र किल्बिषनाशक है। यह मन्त्र अथर्ववेद ४।१०।१–४ में सङ्केतित है।

९९४ ॐ नन्दकिने नमः—ये नन्दकनामक खड्ग की प्रशंसा कर उस खड्ग को धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'नन्दकी' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम अनश्वर ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव अनश्वर इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से अनश्वर वेदवेदाङ्ग के ज्ञाता हुए। यह मन्त्र वेदवेदाङ्गज्ञानप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।१४९।९ में सङ्केतित है।

९९५ ॐ चक्रिणे नमः—ये सुदर्शन चक्र को सदा पास रखते हैं, अतः इनका नाम 'चक्री' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम रक्तभारद्वाज ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव रक्तभारद्वाज इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से रक्तभारद्वाज सब दिशाओं में विख्यात हुए। यह मन्त्र ख्यातिप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।३०।१-२ में सङ्केतित है।

९९६ ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः—इनके पास शार्ङ्गनामक धनुष है, अतः इनका नाम 'शार्ङ्गी' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम मयोभवभव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव भयोभवभव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से मयोभवभव ज्ञानियों में श्रेष्ठ तथा ऊर्ध्वरेता हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठता तथा ब्रह्मचर्य का साधक है। यह मन्त्र अथर्ववेद १९।१।६ में सङ्केतित है।

९९७ ॐ गदाधराय नमः—कौमोदकी नामक गदा इन्होंने धारण की है, अतः इनका नाम 'गदाधर' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम धर्मलव ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव धर्मलव इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से धर्मलव को सब शास्त्रों की धारणा का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। यह मन्त्र शास्त्रधारणा का सामर्थ्य देनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद ४।९८।३ में सङ्केतित है।

९९८ ॐ रथाङ्गपाणये नमः—इनके हाथ में रथाङ्ग अर्थात् चक्र है, अतः इनका नाम 'रथाङ्गपाणि' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विक्रमार्य

ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विक्रमार्य इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विक्रमार्य का संसारचक्र नष्ट हुआ। यह मन्त्र संसारचक्र से मुक्त करनेवाला है। यह मन्त्र ऋग्वेद १।३५।९ में सङ्केतित है।

९९९ ॐ अक्षोभ्याय नमः—ये शरणागत भक्त को अभय देने में समर्थ हैं, अतः इनका नाम 'अक्षोभ्य' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम कर्मपाल ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव कर्मपाल इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से कर्मपाल योगियों में श्रेष्ठ हुए। यह मन्त्र श्रेष्ठताप्रद है। यह मन्त्र ऋग्वेद १०।१०३।१ में सङ्केतित है।

१०००. ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः—ये अपने में निष्ठा रखनेवाले तथा अपनी उपासना करनेवाले सब प्राणियों के अरिष्ट के उन्मूलन के लिए अनन्त सामर्थ्यवाले दिव्य आयुध धारण करते हैं, अतः इनका नाम 'सर्वप्रहरणायुध' है। शिवरहस्य के अनुसार सर्वप्रथम विष्णुप्राण ऋषि ने यह नाममन्त्र जपा है, अतएव विष्णुप्राण इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से विष्णुप्राण के सब शत्रु नष्ट हुए। यह मन्त्र शत्रुनाशक है। यह मन्त्र यजुर्वेद १६।१६ में सङ्केतित है।

ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः—इस मन्त्र को दो बार कहना समाप्ति का सूचन करने के लिए है। अर्थात् भगवान् विष्णु के सहस्रनाम समाप्त हुए।

ॐ नमः—अन्त में ॐकार का उच्चारण मङ्गल के लिए है, जैसा कि कहा है—

"ॐकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ॥"

सृष्टि के आरम्भ में सृष्टि का मङ्गल करने के लिए ब्रह्माजी के कण्ठ से निकले हैं—ॐकार तथा अथशब्द। इसलिए यहाँ भी मङ्गलार्थ आदि में 'ॐ विश्वं विष्णुः' से इत्यादि आरम्भ किया गया। पुनः अन्त में भी 'ॐ नमः' से समाप्त किया है। अतएव कहा है—

धन्यं तदेव लग्नं तन्नक्षत्रं तदेव पुण्यमहः।
करणस्य च सा सिद्धिर्यत्र हरिः प्राङ्नमस्क्रियते॥

इस श्लोक में तो 'प्राङ्नमस्क्रियते' द्वारा पहले नमस्कार करना लिखा है, अतः पहले ही नमस्कार करना चाहिए, अन्त में तो नमस्कार करना लिखा नहीं। ऐसी शङ्का नहीं करनी चाहिये, क्योंकि वह तो उपलक्षणमात्र है। अतएव अन्त में भी नमस्कार करना चाहिए। जैसा कि महाभारत में "एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय॥" कहा है।

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१२५॥

श्रीभीष्म पितामहजी महाराज युधिष्ठिर से कहते हैं कि मैंने तुम्हारे सामने दिव्यातिदिव्य अर्थात् अप्राकृत हजार नाम पूरी तरह से गाये हैं। इस श्लोक में 'इतीदम्' इस पद से यह बात दिखलाते है कि ये सहस्र नाम पूरे-पूरे कहे गये हैं, न तो सहस्र से अधिक हैं, न कम ही हैं। पुनः 'नाम्नां सहस्रं दिव्यानाम्' कहकर यह दिखलाया है कि प्रकारान्तर से व्याख्या करने पर सहस्र संख्या में किसी प्रकार से भी कमी नहीं हो सकती है। आदि के तृतीय श्लोक में 'किं जपन् मुच्यते जन्तुः' पुनः अन्तिम १२२ वें श्लोक में 'यश्चापि परिकीर्तयेत्' कहकर उच्च, उपांशु और मानस रूप तीन प्रकार का जप ही लक्षित किया है ॥ १२५ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१२६॥

जो मानव इस विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का नित्य श्रवण करेगा, उसके इस लोक और परलोक दोनों लोकों में थोड़ा सा भी अशुभ = विघ्न अर्थात् गिरने की सम्भावना नहीं है। जो मानव इस विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का नित्य कीर्तन करेगा उसको भी इस लोक और परलोक दोनों लोकों में कहीं भी आपत्ति नहीं हो सकती है। इस श्लोक में 'अमुत्र' कहकर इस बात को सूचित किया है कि ययाति परलोक जाकर वहाँ से गिरे और नहुष तो परलोक से सर्प (साँप) होकर धरातल में गिर पड़े। परन्तु विष्णुसहस्रनाम का पाठ करनेवाला ऐसी आपत्तिजनक दशाओं को नहीं ही प्राप्त होगा, जहाँ से गिरने की सम्भावना होती हो; किन्तु परमानन्दमग्न हो नित्य, शुद्ध, बुद्ध तथा मुक्त होकर रहता है। जहाँ उच्चता तथा नीचता की भी सम्भावना नहीं होती है ॥ १२६ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥१२७॥

यदि ब्राह्मण इस विष्णुसहस्रनाम का पाठ-कीर्तन करेगा तो वह उपनिषदों के अर्थ = अर्थात् ब्रह्म को जान लेगा। जो पुरुष ब्रह्म को जानता है वह ब्रह्म ही हो जाता है। यदि क्षत्रिय कीर्तन करेगा तो समर में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। अन्तःकरण के छ शत्रु अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य हैं जिनपर विजय प्राप्त कर अन्तःकरण की शुद्धता द्वारा परम्परया मुक्ति प्राप्त होगी। यदि वैश्य विष्णुसहस्रनाम का कीर्तन करेगा तो वह धन से

समृद्ध अर्थात् धन-धान्यादि ऐश्वर्यवान् होगा। धन-समृद्ध होने पर धन-धान्यादि द्वारा यज्ञ सम्पन्न होंगे, यज्ञों के करने पर अन्तःकरण शुद्ध होगा, अन्तःकरण शुद्ध हो जाने पर ज्ञानप्राप्ति होगी, ज्ञानप्राप्ति द्वारा मुक्ति होगी। जो शूद्र विष्णु-सहस्रनाम का नित्य श्रवण करेगा वह भी सुख को प्राप्त होगा। यहाँ 'सुखम्' इस पद से उसी परमानन्दरूप मुक्ति को ही लक्षित किया है। परम्परा द्वारा शूद्र की भी मुक्ति होगी। इस श्लोक में ऊपर के १२२ वें श्लोक के 'य इदं शृणुयान्नित्यम्' इस अंश का 'शूद्रः सुखमवाप्नुयात्' इस अंश के साथ समन्वय कर के अर्थ करना चाहिए; क्योंकि 'तस्माच्छूद्रो यज्ञेऽनवक्लृप्तः' तैत्तिरीय सं० ७।१।१।१६ में, 'श्रावयेच्चतुरो वर्णान् कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः।'' महाभारत शान्ति-पर्व ३२७।४९ में तथा पुनः 'सुगतिमियाच्छ्रवणाच्च शूद्रयोनिः।'' हरिवंश में शूद्र की श्रवण से सुगति लिखी है ॥ १२७ ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद् धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्।
कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात् प्रजाम् ॥१२८॥

जो पुरुष इस विष्णुसहस्रनाम का कीर्तन करता है वह यदि धर्म चाहनेवाला है तो धर्म, अर्थ चाहनेवाला है तो अर्थ, कामनाओं की इच्छा करनेवाला हो तो काम और सन्तान चाहनेवाला तो सन्तान प्राप्त करता है।

आत्मा के सहित मन से अधिष्ठित चक्षु आदि की अपने-अपने विषयों के अनुरूप प्रवृत्ति को काम कहते हैं। जो उत्पन्न हो प्रजा अर्थात् सन्तति है ॥ १२८ ॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥१२९॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥१३०॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥१३१॥

जो भक्तिमान् पुरुष सदा सवेरे उठकर सन्ध्यावन्दनादि करके पवित्र और तद्गत चित्त से भगवान् वासुदेव के इस सहस्रनाम का कीर्तन करता है वह महान् यश, जाति में प्रधानता, अचल लक्ष्मी और सर्वोत्तम कल्याण प्राप्त करता है। उसे कहीं भय नहीं होता, वह यीर्य और तेज प्राप्त करता है तथा नीरोग, कान्तिमान् और बल, रूप एवं गुणों से सम्पन्न होता है ॥ १२९–१३१ ॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥१३२॥

जो भक्तिमान् पुरुष भगवान् वासुदेव के इस सहस्रनाम का कीर्तन करता है वह रोगी हो तो रोग से, बँधा हुआ हो तो बन्धन से, भयभीत हो तो भय से और आपत्तिग्रस्त हो तो आपत्ति से छूट जाता है ॥ १३२ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥१३३॥

जो पुरुषोत्तम भगवान् की सहस्रनाम से भक्तिपूर्वक नित्यप्रति स्तुति करता है वह पुरुष शीघ्र ही महान् दुःखों से पार हो जाता है ॥ १३३ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥१३४॥

वासुदेव के आश्रय में रहनेवाला, वासुदेव ही परम उत्तम प्राप्य (गन्तव्य) धाम जिसका है वह मनुष्य सब पापों से रहित तथा शुद्धचित्त होकर सनातन ब्रह्म को प्राप्त होता है ॥ १३४ ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधि-भयं नैवोपजायते ॥१३५॥

जो वासुदेव भगवान् के भक्त हैं, उनका कहीं भी अशुभ अर्थात् अकल्याण नहीं होता तथा उन्हें जन्म, मृत्यु, जरा और रोगों का भय भी नहीं रहता ॥ १३५ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः ।
युज्येतात्म-सुख-क्षान्ति-श्री-धृति-स्मृति-कीर्तिभिः ॥१३६॥

इस विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का श्रद्धा से भक्तिपूर्वक पाठ करनेवाला पुरुष आत्मसुख, क्षमा, लक्ष्मी, धैर्य, स्मृति और कीर्ति से युक्त होता है ।

'१२५. भक्तिमान् इत्यादि श्लोक से भक्तियुक्त, पवित्र, सदा ही उद्योगशील, समाहितचित्त, श्रद्धालु एवं विशिष्ट अधिकारी के लिए विशेष फल का निर्देश करते हैं ।

आस्तिकतायुक्त बुद्धि का नाम 'श्रद्धा' है, जिसका उल्लेख १३२वें श्लोक में आया है और ऊपर के श्लोकों में भी भजन या तत्पर होना 'भक्ति' है, उसका वर्णन भी १३२ में आया है । आत्मा के सुख को आत्मसुख कहते हैं ।

वह भी १३२ में आया है। उस आत्मसुख और शान्ति आदि गुणों से सम्पन्न होता है ॥ १३६ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१३७॥

पुरुषोत्तम भगवान् के पुण्यात्मा भक्तों में क्रोध, मात्सर्य (पराये गुण में दोषदृष्टि करना), लोभ तथा अशुभ बुद्धि नहीं होती ॥ १३७ ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१३८॥

चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्रों से सहित स्वर्ग, आकाश, दिशाएँ तथा समुद्र ये सब वासुदेव भगवान् के वीर्य से ही धारण किये गये हैं ॥ १३८ ॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद् वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१३९॥

देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, सर्प और राक्षसों सहित यह सम्पूर्ण चराचर जगत् श्रीकृष्ण भगवान् के ही वश में है ॥ १३९ ॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१४०॥

इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, अन्तःकरण, तेज, बल, धृति तथा क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ—इन सब को वासुदेव भगवान् के स्वरूप कहा है ॥ १४० ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१४१॥

सब शास्त्रों में सबसे पहले आचार की ही कल्पना होती है, आचार से ही धर्म होता है और धर्म के प्रभु = अर्थात् अधिपति = स्वामी श्री अच्युत, जो कहीं भी किसी प्रकार से और किसी कर्म से भी च्युति अर्थात् अधःपतन से युक्त नहीं होते, भगवान् ही हैं। इस श्लोक में "सर्वागमानामाचारः" कहकर यह दिखलाया है कि आचारवान् पुरुष को ही सब धर्मों का अधिकार है। जैसा कि कहा भी है—'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।' अतः आचारवान् पुरुष को ही पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। अतः सब लोगों को अपने-अपने यथायोग्य तथा यथासम्भव आचार का परिपालनपूर्वक पाठ करना चाहिये ॥ १४१ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१४२॥

ऋषि, पितर, देवता, महाभूत, धातुएं और यह चराचर जगत् नारायण भगवान् से ही उत्पन्न हुए हैं ॥ १४२ ॥

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्या शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत् सर्वं जनार्दनात् ॥१४३॥

योग, ज्ञान, सांख्यादि विद्याएँ, शिल्पादि कर्म एवं सकल वेद, निखिल शास्त्र और विज्ञान ये सब श्रीजनार्दन भगवान् से ही हुए हैं ॥ १४३ ॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥१४४॥

एकमात्र विष्णु भगवान् ही महत्स्वरूप है । वह सर्वभूतात्मा विश्वभोक्ता अविनाशी प्रभु ही तीनों लोकों को व्याप्तकर नाना भूतों को तरह-तरह से भोगते हैं । इन १३४—'द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा' इत्यादि श्लोकों से स्तुति किये जाने योग्य भगवान् वासुदेव का माहात्म्य बतलाते हुए यह दिखलाते हैं कि उपर्युक्त फलों की प्राप्ति यथार्थ कथन है अर्थवादमात्र नहीं ॥ १४४ ॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१४५॥

जिस पुरुष को श्रेय अर्थात् (कल्याण) और सुख पाने की इच्छा हो वह श्रीव्यासजी के कहे हुए भगवान् विष्णु के इस स्तोत्र का पाठ करे । 'इमं स्तवं' इत्यादि से यह दिखाते हैं कि इस स्तोत्र को सहस्र शाखाओं के ज्ञाता सर्वज्ञ साक्षात् नारायण भगवान् कृष्णद्वैपायन ने ही बनाया है, अतः सभी कामनावालों को सब प्रकार का फल प्राप्त करने के लिए इसको श्रद्धापूर्वक पढ़ना चाहिए ॥ १४५ ॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥१४६॥

जो पुरुष विश्वेश्वर, अजन्मा और संसार की उत्पत्ति तथा लय के स्थान देवदेव पुण्डरीकाक्ष को भजते हैं, उनका कभी पराभव नहीं होता । विश्वेश्वर-मजम्' इत्यादि से यह दिखाते हैं कि वे स्तुति करनेवाले श्रीविश्वेश्वर भगवान् की उपासना से ही धन्य कृतकृत्य हो जाते हैं ॥ १४६ ॥

युधिष्ठिर उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरेश्वर ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥१४७॥

युधिष्ठिर महाराज ने कहा—कमल के पत्ते के समान नयनों से उपलक्षित, जिनकी नाभि में चराचर जगत् के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी का उत्पत्तिस्थान कमल है, देवताओं में सर्वश्रेष्ठ तथा समस्त प्राणियों को कर्मानुसार स्वर्ग, नरकादि लोकों में प्राप्त करानेवाले हे जनार्दन भगवान् जो आपमें अगाध प्रेमरूपा भक्ति करते हैं, उन अनुरक्त भक्तों का आप संरक्षण करें ।

श्रीभगवानुवाच

यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव ।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥१४८॥

तदनन्तर श्रीकृष्ण भगवान् ने कहने लगे—हे पाण्डु-पुत्र युधिष्ठिर महाराज, जो साधक सहस्रनामस्तोत्र से मेरी स्तुति करना चाहता है, उसके द्वारा एक ही श्लोक से भी वह मैं स्तुत हो जाता हूँ, इसमें जरा सा भी सन्देह नहीं है ॥१४८॥

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्र-कोटि-युग-धारिणे नमः ॥१४९॥

अनन्त गम्भीर होने के कारण जिनका अन्त नहीं किया जाता है, जो हजारों मूर्तियों से सम्पन्न हैं, जो हजार पाद, नयन, सिर, ऊरु और हाथों से उपलक्षित हैं उन विराट्स्वरूप अन्तरात्मा विष्णु भगवान् को नमस्कार है । जिनके हजार नाम हैं, जो निरन्तर अविकाररूप से विद्यमान हैं, जो चेतनाचेतन प्राणिमात्र की हृदयपुरी में अन्तर्यामी के रूप से शयन करते हैं, जो हजारों कोटि युगों को धारण करते हैं, उन्हीं विराट् रूप श्रीविष्णु भगवान् को नमस्कार है । यहाँ पर पाठकों को यह शङ्का उपस्थित होगी कि एक ही श्लोक से स्तुति करके सहस्र नामों से स्तुति करने का फल कैसे प्राप्त होगा ? यह शङ्का तो ठीक नहीं है, क्योंकि जैसे अर्जुन ने एक ही विराट्स्वरूप में सत्य लोक से लेकर पाताल तक के सभी लोकों तथा उनमें निवास करनेवाले सभी लोगों को भी देखा, उसी प्रकार से यहाँ भी सभी नामों की हृदय में भावना करके इसी एक श्लोक से स्तवन करेगा तो अवश्य वह फल मिलेगा । अतएव सभी नामों

की हृदय में भावना करके विराट्स्वरूप राम का नाम लेने के लिए शिवजी ने पार्वती को कहा। जैसे—"राम रामेतिरामेतिरमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥" इति।

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१५०॥

जिनकी नाभि में समस्त जगत् का कारणभूतसहस्रदल कमल है उन वासुदेव भगवान् को नमस्कार, जो क्षीर-सागर के जल में विराट् स्वरूप से शयन करते हैं उन आपको नमस्कार है तथा सृष्टि, स्थिति तथा संहार के लिए ब्रह्मा, विष्णु एवं शङ्कर रूप से उपलक्षित हे अनन्त केशव भगवान् आपको प्रणाम है एवं हे वसुदेवजी के सुपुत्र वासुदेव भगवन्, आपको नमस्कार है।

वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ॥
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१५१॥

सभी चराचर जगत् को आप ही स्वयं आधार बनकर धारण करते हैं तथा समस्त प्राणियों को ही अपना आधार बनाकर उनके हृदय में अन्तर्यामी रूप से निवास करके विलक्षणतापूर्वक विभिन्न प्रकार के खिलौना बनाकर स्वयं आप ही विहार करते है। इस प्रकार आधेय और आधार दोनों बनकर आपका अधिवासन सिद्ध होने के कारण तीनों भुवन आपके द्वारा वासित अर्थात् आच्छादित अथवा व्याप्त हैं। सम्पूर्ण भूतसमूह के आप ही निवासस्थान हैं अथवा आपका निवासस्थान ही समस्त चराचर भूतसमुदाय है। ऐसी विलक्षणता से सम्पन्न हे वसुदेव के पुत्र होकर भी सभी के अन्तरात्मा रूप वासुदेव भगवान् आप को नमस्कार है। इस प्रकार अन्तर्यामी रूप आपको प्रणाम करने से सबको प्रणाम हो जायगा।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ १५२ ॥

ब्राह्मणों का उपकार करने के लिए संसार में अवतरित होकर विहारादि करनेवाले, गायों और ब्राह्मणों के हितकारक श्रीकृष्ण परमात्मा को नमस्कार है एवं समस्त जगत् के हितकारक श्रीकृष्ण गोविन्द भगवान् को बारम्बार नमस्कार है।

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥ १५३ ॥

आकाश से नीचे धरातल में कहीं भी गिरा हुआ जल जैसे समुद्र को ही प्राप्त होता है, ठीक उसी प्रकार सभी देवताओं को उद्देश्य कर के किया हुआ नमस्कार भी केशव श्रीकृष्ण भगवान् को ही प्राप्त होता है।

एष निष्कण्टकः पन्था यत्र संपूज्यते हरिः।
कुपथं तं विजानीयाद्गोविन्दरहितागमम्॥ १५४॥

जिस शास्त्र में पाप के संहारकारक श्रीहरि के गुणगान द्वारा पूजा की जाती है वही कण्टकों (कांटों) से रहित सुगम सुयोग्य मार्ग है। जो शास्त्र गोविन्द भगवान् के गुणगान और पूजा से रहित है उसी को कण्टकों से परिपूर्ण दुर्गम तथा निन्दित मार्ग जानें।

सर्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्।
तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम्॥ १५५॥

सभी वेदों का पारायण करने पर जो पुण्य प्राप्त होता है, सभी तीर्थों की यात्रा करने से जो फल मिलता है, जनार्दन भगवान् की स्तुति करके वही फल मिलता है।

यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये।
द्विकालमेककालं वा क्रूरं सर्वं व्यपोहति॥ १५६॥
दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वे सदा ग्रहाः।
विलीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन् प्रकीर्तिते॥ १५७॥

जो साधक मनुष्य भगवान् विष्णु के मन्दिर में तीनों समय अथवा दोनों समय, दोनों समय में न हो सके तो एक ही समय भी नित्य पाठ करता है उसके सबके सब दुःख, दौर्भाग्य आदि का नाश हो जाता है। इस विष्णु-सहस्रनामस्तोत्र का कीर्तन करने पर उसके समस्त शत्रु भस्म हो जाते हैं तथा सर्वदा के लिए सभी ग्रह शुभ हो जाते हैं, एवं सब पाप विलीन हो जाते हैं॥ १५६, १५७॥

येन ध्यातः श्रुतो येन येनायं पठ्यते स्तवः।
दत्तानि सर्वदानानि सुराः सर्वे समर्चिताः॥ १५८॥

जिसके द्वारा यह विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का ध्यान किया गया, जिसके द्वारा सुना गया, जिसके द्वारा पाठ किया गया उसके द्वारा दान करने सुयोग्य वस्तुएँ दान दी गईं तथा सभी देव पूजित हो गये॥ १५८॥
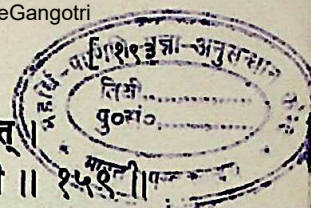
इह लोके परे वापि न भयं विद्यते क्वचित् ।
नाम्नां सहस्रं योऽधीते द्वादश्यां मम सन्निधौ ॥ १५९ ॥
शनैर्दहति पापानि कल्प-कोटि-शतानि च ।
अश्वत्थ-सन्निधौ पार्थ तुलसी-सन्निधौ तथा ॥ १६० ॥

भगवान् श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे पृथा के पुत्र युधिष्ठिर महाराज, द्वादशी के दिन मन्दिर में मेरे समीप जो सहस्रनामस्तोत्र का पाठ करता है उसको इस लोक में तथा परलोक में कहीं भी भय नहीं होता है। और धीरे-धीरे सैकड़ों कोटि कल्पतक भी किए हुए असङ्ख्य पापों को भी राख कर देता है।

हे पृथा के पुत्र युधिष्ठिर महाराज, अश्वत्थ वृक्ष के समीप तथा तुलसी के समीप रहकर विष्णुसहस्रनास्तोत्र का पाठ करेगा तो कोटि (करोड़) गायों का दान करने से जो फल प्राप्त होता है उसी फल को प्राप्त करेगा।

पठेन्नामसहस्रं तु गवां कोटि-फलं लभेत् ।
शिवालये पठेन्नित्यं तुलसी-वन-संस्थितः ॥ १६१ ॥
नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ।
ब्रह्महत्यादिकं घोरं सर्वपापं विनश्यति ॥ १६२ ॥

जो साधक बन भगवान् शङ्करजी के मन्दिर में तथा तुलसी के वन में (वृन्दावन में) रहकर सहस्रनामस्तोत्र का नित्य पाठ करेगा तो मुक्ति को प्राप्त होगा, जैसा कि अपने भक्तों की आपत्तियाँ दूर करने लिए चक्रधारी भगवान् श्रीकृष्णजी का ही कथन है। ब्रह्महत्या आदि सभी घोर पाप नष्ट हो जाते हैं।

विलयं यान्ति पापानि चान्य-पापस्य का कथा ।
सर्वपाप-विनिर्मुक्तो विष्णु-लोकं स गच्छति ॥ १६३ ॥

ब्रह्महत्यादि बड़े-बड़े पाप भी विलीन हो जाते हैं तो अन्य साधारण पापों की तो बात ही क्या ? समस्त पापों से मुक्त हुआ साधक विष्णु भगवान् के सर्वोत्तम लोक में जाता है।

इति श्रीमहाभारते शतसहस्र-संहितायां वैयासिक्यां शान्तिपर्वणि उत्तमानुशासने दानधर्मोत्तमे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(१)

केदारनाथो विदुषां वरिष्ठः
श्रीनील-कण्ठीय-मतं च शास्त्रम् ।
समीक्ष्य विष्णोः प्रतिनाम-टीकां
सहस्र-माम्नां कृतवानपूर्वाम् ॥ १ ॥

(२)

स्तुतिं मुमुक्षोः शरणं समेषां
सारातिसारां सरसामशेषाम् ।
आलोक्य हर्षः सहृदां च केषां
भूयान्न भूयान् विदुषां परेषाम् ॥ २ ॥

(३)

ध्यायं ध्यायं मनसि च मनोहारिणं देवदेवं
स्मारं स्मारं बहुगुण-गणं दिव्य-नाम्नां च दिव्यम् ।
पायं पायं सरस-मधुरां नाम पीयूषधारां
नामं नामं हरिमपि लिपिं कोमलोऽयं व्यतानीत् ॥

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् ।

(१) शिवोक्तेः तथा शङ्करोक्तेः का अर्थ शिवपुराण ऐसा किया गया है।

(२) ब्रह्मोक्तेः का ब्रह्माण्डपुराण किया गया है।

(३) जो नाम एक से अधिक वार प्रयुक्त हुए हैं उनमें अर्थभेद है। जैसे

१ ॐ ईश्वराय नमः (३६) में है। वहां मनुष्यदेह को धारण करने पर भी ये सर्वाधिक ऐश्वर्यवाले हैं, इसलिए इनका नाम 'ईश्वर' है। माधवतन्त्र के अनुसार सर्वप्रथम भागासुरि ऋषिने यह नाममन्त्र जपा है, अतः भागासुरि इस मन्त्र के ऋषि हैं। इसको जपने से भागासुरि उस समय के ऋषियों में सर्वप्रधान हुए। यह मन्त्र प्रधानता देनेवाला है। यह मन्त्र यजुर्वेद २५।१८ तथा ३१।४० मन्त्रों में उल्लिखित है। यही नाम पुनः (९४) में आया है ॐ ईश्वराय नमः (का अर्थ दूसरा है) ये समर्थ हैं अर्थात् अपार भोगस्थान में भी इनको आसक्ति नहीं होती, अतः इनका नाम 'ईश्वर' है। नारदपुराण के अनुसार सर्वप्रथम इन्द्रोत ऋषि ने यह नाम मन्त्र जपा है, अतएव इन्द्रोत इस मन्त्र के ऋषि हैं। शिवजी की आज्ञा से इसको जपने से इन्द्रोत मुक्त हुए। यह मन्त्र मुक्तिप्रद है। यह मन्त्र अथर्ववेद ११।४।४१ में उल्लिखित है। इसी प्रकार आगे भी जानना। दिग्दर्शन के लिए १म उदाहरण लिख दिया है।

२ ॐ अमोघाय नमः (११०) में है। पुनः (१५४) में आया है।
३ ॐ वेदविदे नमः (११८) में है। पुनः (१३१) में आया है।
४ ॐ माधवाय नमः (७२) में है। पुनः (१६१) में आया है।
५ ॐ श्रीमते नमः (२२) में है। पुनः (१७८) में आया है।
६ ॐ प्रजापतये नमः (६९) में है। पुनः (१९७) में आया है।
७ ॐ अजाय नमः (९५) में है। पुनः (२०४) में आया है।
८ ॐ सत्याय नमः (१०६) में है। पुनः (२१२) में आया है।
९ ॐ श्रीमते नमः (१७८) में है। पुनः (२२०) में आया है।
१० ॐ विष्णवे नमः (२) में है। पुनः (२५७) में आया है।
११ ॐ वसवे नमः (१०४) में है। पुनः (२६९) में आया है।
१२ ॐ प्रभवे नमः (३५) में है। पुनः (२९८) में आया है।
१३ ॐ प्राणाय नमः (१९६) में है। पुनः (३२०) में आया है।
१४ ॐ प्राणदाय नमः (६५) में है। पुनः (३३१) में आया है।
१५ ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः (१९६) में है। पुनः (३४६) में आया है।
१६ ॐ महीधराय नमः (३१७) में है। पुनः (३६९) में आया है।
१७ ॐ प्राणाय नमः (६६) में है। पुनः (४०७) में आया है।
१८ ॐ प्राणदाय नमः (३३१) में है। पुनः (४०८) में आया है।
१९ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः (७०) में है। पुनः (४११) में आया है।

२०	ॐ संवत्सराय नमः	(१९) में है।	पुनः	(४२२)	में आया है।
२१	ॐ सिंहाय नमः	(२००) में है।	पुनः	(४८८)	में आया है।
२२	ॐ अजाय नमः	(९५) में है।	पुनः	(५२१)	में आया है।
२३	ॐ गोविन्दाय नमः	(१८७) में है।	पुनः	(५३९)	में आया है।
२४	ॐ कृष्णाय नमः	(५७) में है।	पुनः	(५५०)	में आया है।
२५	ॐ आदित्याय नमः	(३९) में है।	पुनः	(५६४)	में आया है।
२६	ॐ सहिष्णवे नमः	(१४४) में है।	पुनः	(५६५)	में आया है।
२७	ॐ गोपतये नमः	(४९५) में है।	पुनः	(५९२)	में आया है।
२८	ॐ गोप्त्रे नमः	(४९६) में है।	पुनः	(५९३)	में आया है।
२९	ॐ निवृत्तात्मने नमः	(२२९) में है।	पुनः	(५९७)	में आया है।
३०	ॐ शिवाय नमः	(२७) में है।	पुनः	(६००)	में आया है।
३१	ॐ श्रीनिवासाय नमः	(१८३) में है।	पुनः	(६०७)	में आया है।
३२	ॐ श्रीमते नमः	(१७८) में है।	पुनः	(६१३)	में आया है।
३३	ॐ अनिरुद्धाय नमः	(१८५) में है।	पुनः	(६३८)	में आया है।
३४	ॐ शौरये नमः	(३४०) में है।	पुनः	(६४८)	में आया है।
३५	ॐ केशवाय नमः	(२३८) में है।	पुनः	(६४८)	में आयः है।
३६	ॐ कान्ताय नमः	(२९०) में है।	पुनः	(६५४)	में आया है।
३७	ॐ विष्णवे नमः	(२५७) में है।	पुनः	(६५७)	में आया है।
३८	ॐ वीराय नमः	(४०१) में है।	पुनः	(६५७)	में आया है।
३९	ॐ वसुप्रदाय नमः	(६९३) में है।	पुनः	(६९४)	में आया है।
४०	ॐ वासुदेवाय नमः	(३२२) में है।	पुनः	(६९५)	में आया है।
४१	ॐ वसवे नमः	(२६९) में है।	पुनः	(६९६)	में आया है।
४२	ॐ वसुमनसे नमः	(१०५) में है।	पुनः	(६९७)	में आया है।
४३	ॐ वासुदेवाय नमः	(३३२) में है।	पुनः	(७०९)	में आया है।
४४	ॐ अनलाय नमः	(७२) में है।	पुनः	(७३५)	में आया है।
४५	ॐ वीरघ्ने नमः	(१६६) में है।	पुनः	(७४१)	में आया है।
४६	ॐ चतुर्व्यूहाय नमः	(१३८) में है।	पुनः	(७६७)	में आया है।
४७	ॐ शुभाङ्गाय नमः	(५८६) में है।	पुनः	(७८२)	में आया है।
४८	ॐ महाकर्मणे नमः	(६७२) में है।	पुनः	(७८७)	में आया है।
४९	ॐ कृतागमाय नमः	(६५५) में है।	पुनः	(७८९)	में आया है।
५०	ॐ उद्भवाय नमः	(३७३) में है।	पुनः	(७९०)	में आया है।
५१	ॐ कुमुदाय नमः	(५८९) में है।	पुनः	(८०७)	में आया है।
५२	ॐ पद्मनाभाय नमः	(२९०) में है।	पुनः	(८११)	में आया है।

५३ ॐ अनिलाय नमः	(२३४)	में है। पुनः	(८१२)	में आया है।
५४ ॐ सर्वज्ञाय नमः	(४५०)	में है। पुनः	(८१५)	में आया है।
५५ ॐ सुव्रताय नमः	(४५५)	में है। पुनः	(८१८)	में आया है।
५६ ॐ सिद्धाय नमः	(९७)	में है। पुनः	(८१९)	में आया है।
५७ ॐ अनघाय नमः	(१४६)	में है। पुनः	(८३१)	में आया है।
५८ ॐ क्षामाय नमः	(४४३)	में है। पुनः	(८५४)	में आया है।
५९ ॐ सुपर्णाय नमः	(१९२)	में है। पुनः	(८५५)	में आया है।
६० ॐ वायुवाहनायनमः	(३३१)	में है। पुनः	(८४७)	में आया है।
६१ ॐ अपराजिताय नमः	(७१६)	में है। पुनः	(८६२)	में आया है।
६२ ॐ नियमाय नमः	(१६०)	में है। पुनः	(८६५)	में आया है।
६३ ॐ यमाय नमः	(१६१)	में है। पुनः	(८६६)	में आया है।
६४ ॐ सत्याय नमः	(१०६)	में है। पुनः	(२१२-८६९)	में आया है।
६५ ॐ अनन्ताय नमः	(६५९)	में है। पुनः	(८८६)	में आया है।
६६ ॐ हुतभुजे नमः	(८७९)	में है। पुनः	(८८७)	में आया है।
६७ ॐ भोक्त्रे नमः	(१४३)	में है। पुनः	(८८८)	में आया है।
६८ ॐ सुखदाय नमः	(४५९)	में है। पुनः	(८८९)	में आया है।
६९ ॐ अनिर्विण्णायनमः	(४३५)	में है। पुनः	(८९२)	में आया है।
७० ॐ विक्रमिणे नमः	(७५)	में है। पुनः	(९०९)	में आया है।
७१ ॐ दक्षाय नमः	(४२३)	में है। पुनः	(९१७)	में आया है।
७२ ॐ पुण्याय नमः	(६८७)	में है। पुनः	(९२५)	में आया है।
७३ ॐ वीरघ्ने नमः	(१६६)	में है। पुनः	(९४२)	में आया है।
७४ ॐ भुवे नमः	(४३७)	में है। पुनः	(९४२)	में आया है।
७५ ॐ भीमाय नमः	(३५७)	में है। पुनः	(९४८)	में आया है।
७६ ॐ प्राणदाय नमः	(६५)	में है। पुनः	(९५६)	में आया है।
	(३२१)	,, । ,,	(४०८)	में आया है।
७७ ॐ प्रणवाय नमः	(४०९)	में है। पुनः	(९५७)	में आया है।
७८ ॐ प्रमाणाय नमः	(४२८)	में है। पुनः	(९५९)	में आया है।
७९ ॐ यज्ञाय नमः	(४५०)	में है। पुनः	(९७१)	में आया है।
८० ॐ स्रष्ट्रे नमः	(५८८)	में है। पुनः	(९९०)	में आया है।
८१ ॐ चक्रिणे नमः	(९०८)	में है। पुनः	(९९५)	में आया है।
८२ ॐ अक्षोभ्याय नमः	(८०१)	में है। पुनः	(९९९)	में आया है।

प्राप्तिस्थान–

(१) कर्मकाण्डरत्न श्रीकेदारनाथ जैतली
के० २३।७९, मङ्गलागौरी, वाराणसी

(२) श्रीशम्भुनाथ जैतली काशीवाले
कटरादूलो, अमृतसर ।